दज्जाल

कौन? कब? कहां?

मुसन्निफ़

मुफ़्ती अबू लुबाबा शाह मंसूर

दज्जाल

कौन? कब? कहां?

अहादीस की अस्री तत्बीक़, दावते फ़िक्र,
लाइहे अमल व तदाबीर

मेहदवियात | मसीहियात | दज्जालियात

मुसन्निफ़

मुफ़्ती अबू लुबाबा शाह मंसूर

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ
फ़रीद बुक डिपो प्राईवेट लिमिटेड
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

दज्जाल

कौन? कब? कहां?

मुसन्निफ़: मुफ़्ती अबू लुबाबा शाह मंसूर

बएहतिमाम: मुहम्मद नासिर ख़ान

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹیڈ

फ़रीद बुक डिपो प्राईवेट लिमिटेड

FARID BOOK DEPOT (PVT.) Ltd

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Phones: 23247075, 23289786, 23289159, Fax:23279998, Res: 23262486

Dajjal — Kaun? Kab? Kaha'n?

Author : Mufti Abu Lubaba Shah Mansoor
Hindi Edition: 2011 Pages: 274

Our Branches:

Delhi: FARID BOOK DEPOT (PVT.) Ltd
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.:23265406, 23256590

Mumbai :FARID BOOK DEPOT (PVT.) Ltd
216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan,
Dongri, Mumbai-400009, Ph.:022-23731786, 23774786

Printed at: Farid Enterprises, Delhi

फेहरिस्त

पहला बाबः मेहदवियात

दूसरा बाबः मसीहियात

तीसरा बाबः दज्जालियात

इन्तिसाब

उन अह्ले ईमान के नाम
जो दज्जाली फ़ितना के हमनवाओं के ग़ैर मामूली
इक़्तिदार
......नीज़......
कुदरती कवानीन व वसाइल पर उनके हमागीर
आलमी क़ब्ज़े के बावजूद उनके सामने सर झुकाने
पर तैयार नहीं
और
ईमानी ज़िंदगी के साथ जीना और उसी पर मरना
चाहते हैं

اللهم اجعلنا منهم! برحمتک یا أرحم الراحمین.

तीसरी इशाअत का मुक़द्दमा

रहमते इलाही की जुस्तजू

हिकायात व शिकायात:

यह किताब किस तरह वजूद में आई? किस मक़्सद के लिये लिखी गई? इसके मज़ामीन के मआख़ज़ क्या हैं और किन हज़रात की तहक़ीक़ात की मदद से तरतीब दिया गया है? इसका अस्रे हाज़िर से क्या तअल्लुक़ है? मुस्तक़बिल क़रीब के हवाले से यह क्या रहनुमाई कर सकती है? इन हिकायात की तफ़सील और इन सब सवालात का जवाब किताब से इसके आख़िर में दी गई फ़ेहरिस्ते कुतुब से मिलता है। ज़ेरे नज़र मुक़द्दमे में वह चन्द बातें अर्ज़ करनी हैं जो पहली इशाअत के बाद सामने आईं।

सबसे पहले तो यह हुआ कि पहला एडीशन छपते ही तक़रीबन तीन हफ़्ते में ख़त्म हो गया। यह 1100 का नहीं, 3300 का एडीशन था। मुआसिरे पाकिस्तानी रिवायात और तारीख़ के मुताबिक़ इसे एक रिकार्ड क़रार दिया गया और दूसरे एडीशन की तलब उस वक़्त से सामने आने लगी जब पहला एडीशन छाप कर दम भी न लिया था......यह सब उन क़ारईन की नेक तमन्नाओं और ख़ुलूस दुआओं का नतीजा है जो ग़ाइबाना तौर पर बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में इल्तिजा करते है कि दावत का यह अमल मुअस्सिर व मुफ़ीद हो और ख़ल्क़े ख़ुदा के लिये इस्लाह व हिदायत का ज़रीआ साबित हो।

दूसरा एडीशन 2200 की तादाद में छपने के लिये दिया गया।

किताब की तसहीह का वक़्त था न नज़रे सानी की मोहलत। दूसरा एडीशन जिस दिन आया उसी दिन......या उस से अगले दिन......ख़त्म हो गया। किताब की रसद इतनी न थी जितनी इसकी तलब मुसलसल सामने आ रही थी और नाशिरीन के लिये क़ारईन की मांग पूरी करना मुश्किल होता जा रहा था, लेकिन साथ ही कुछ शिकायात भी सामने आईं। किताब महंगी है और आसानी से दस्तियाब नहीं। पहली शिकायत क़ारईन से ज़्यादा हमारे लिये परेशानी और आर का बाइस थी और दूसरी बदइन्तेज़ामी और नातजुर्बाकारी की ऐसी अलामत थी जिसका इज़ाला ज़रूरी था। वाक़िआ यह है बन्दा की किताबें दावती मक़ासिद के लिये शाए की गई थीं, उनको दीगर कुतुब की बनिस्बत सस्ती और आसान फ़राहमी के मरबूत निज़ाम के तहत दस्तियाब होना चाहिये था......लिहाज़ा बन्दा ने इसका अज़ ख़ुद जाइज़ा लिया कि इशाअत और तरसील के निज़ाम में ख़लल कहां है? और फिर उसकी फ़ौरी इस्लाह के लिये जो बन पड़ा, किया। क़ारईन से दरख़्वास्त है कि आईन्दा भी अपने ख़ैर-ख़्वाहाना मशवरों और मुस्लिहाना शिकायतों के लिये किताब के शुरू में दिये गये नम्बर पर इत्तिला देते रहें, ताकि दावते इलल-ख़ैर का यह मिशन मुशावरत और इज्तिमाइय्यत के साथ जारी रहे और हम सब की निजात और मग़फ़िरत का ज़रीआ बने।

तसहीह व तसहीलः

आपके हाथ में मौजूदा तीसरे एडीशन में इज़ाफ़ात कम हुए हैं। इस मौज़ू के हवाले से अहम इज़ाफ़ात "दज्जाल की आलमी रियासत" नामी नई किताब में इन्शाअल्लाह आएंगे। अलबत्ता तसहीह पर तवज्जुह दी गई है। नीज़ हत्तल-इम्कान मुश्किल अलफ़ाज़ की जगह आसान अल्फ़ाज़ लिखे गये हैं। बन्दा इन लोगों के लिये दुआ गो है और हमेशा रहेगा जिन्होंने अग़लात और सक़ील अल्फ़ाज़

की तरफ़ तवज्जुह दिलाई। वाज़ेह रहे कि जो अहादीस बन्दा ने हज़रत मौलाना मुहम्मद रफ़ी उस्मानी साहब दामत बरकातुहुम की किताब "अलामाते क़्यामत" से ली हैं उनके हवाल नहीं दिये। उन अहादीस के हवाले इसी किताब में देखे जा सकते हैं। इस किताब की तैयारी से लेकर इशाअत तक हर चीज़ में अल्लाह तआला की खुसूसी मदद और क़ारईन की दुआओं की बरकत शामिले हाल रही है। यह किताब तक़रीबन दो ढाई माह के अर्से में लिखी गई। कुछ अबवाब तो एक ही नशिस्त में तहरीर हुए। आमद का यह हाल था कि सुब्हानल्लाह! काग़ज़ कम पड़ जाते थे। अभी अख़बार में मज़ामीन क़िस्तवार छप रहे थे कि किताब प्रेस में जा चुकी थी। फिर जैसे ही छपी तो बाज़ नाक़दीन के मुताबिक़ "बेस्ट सैलर" साबित हुई। आगे का हाल खुदा को मालूम है लेकिन अब तक यह फ़रोख़्त के कई रिकार्ड तोड़ चुकी है। बहुत से अहबाब ने कई कई सौ नुस्ख़े ख़रीद कर फ़ी सबीलिल्लाह तक़सीम किये। उनके मुताबिक़ यह नज़रियए साज़ी में मुफ़ीद और तामीरे फ़िक्र व नज़र में इक्सीर है। ऐसे हज़रात के लिये किताब का पेपरबेक एडीशन शाए किया जाएगा। इन्शाअल्लाह तआला!

अव्वल व आख़िर

इस किताब की तसनीफ़ का अव्वल व आख़िर मक़सद "तज़कीर" था। यानी अपने मुसलमान भाइयों को रुजूअ़ इलल्लाह की दावत और इस फ़ित्ने का मुक़ाबला करने की तरग़ीब जो "तारीकी के देवता" की सरबराही में सच्चे और मेहरबान खुदा के ख़िलाफ़ और शैतान मर्दूद की हिमायत में बरपा किया जायेगा। इन्सानी तारीख़ के सबसे ज़्यादा ग़ैर मुअ़तदिल मिज़ाज, नफ़सियाती मरीज़, ज़ेहनी एबनोरमल और एहसासे बरतरी की मारी हुई क़ौम "यहूद" ने इंसानियत को खुदा के रास्ते से वरग़लाने और शैतान के

ग़ैर इंसानी रास्ते पर चलाने के लिये बड़े मुनज़्ज़म तरीक़े से और बड़ी मुस्तकिल मिज़ाजी के साथ जो कोशिशें की हैं, इस तहक़ीक़ी काम का मक़सद इन इब्लीसी कोशिशों को बेनक़ाब करना था। इन कोशिशों का मक़सद यह था कि सच्चे मसीह (जनाब सय्यदना ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम) के दुश्मन झूटे मसीह (अद्दज्जालुल अकबर) का रास्ता हमवार किया जाये और वह मौज़ूं हालात मुहय्या कराए जायें जिन में अलमसीहुल कज़्ज़ाब, अद्दज्जालुल अज़ीम, अलमलऊनुल अकबर का खुरूज मुमकिन हो सके। और इन कोशिशों का बेनक़ाब करने का मक़सद यह है कि इस किताब को जो मुस्लिम......या ग़ैर मुस्लिम......पढ़े, वह आने वाले वक़्त की संगीनी समझ सके। वह शैतान के दरबानों के मुक़ाबले में रहमानी लशकर का मुजाहिदीन बन सके। उस वक़्त से पहले जब हम कुछ करने के क़ाबिल न रहेंगे, जब हमें न्यू वर्ल्ड ऑर्डर (दज्जाल के आलमी शैतानी निज़ाम) में जकड़ लिया जायेगा, हमें बेदार हो जाना चाहिये। अब भी वक़्त है। हमें बेदार होना चाहिये। इससे पहले कि हमें नींद के दौरान हमेशा की नींद सुला दिया जाये, हमें बेदार हो जाना चाहिये। दुश्मन हमें दीने इस्लाम से दूर करना चाहता है, हमें हर क़ीमत पर दीन की तालीमात से चिमट जाना चाहिये और दुश्मन का फेंका हुआ गोला उसी की तरफ़ वापिस फेंक कर अपने उन भाइयों को भी जो दीन से दूर हो चुके हैं, ऐसा मुसलमान बनाने की कोशिश करनी चाहिये जिसके हर काम पर अल्लाह का हाथ होता है। जिसका हर क़दम दज्जाल के साए से बचते हुए अल्लाह की रहमत की तलाश में उठता है।

शाह मंसूर

रबीउस्सानीः 30 हिज्री

पहली इशाअत का मुक़द्दमा

अकाबिर के साए तले

ख़ूबी या ख़ामीः

यूं तो यह किताब "दज्जाल" के मुतअल्लिक़ है मगर "दज्जालियात" का उन्वान इसके बिल्कुल आख़िर में है। किताब की इब्तिदा में हज़रत मेहदी अलैहिस्सलाम का और उसके बाद सय्यदना हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का तज़किरा है। "मेहदवियात" और "मसीहियात" से गुज़रने के बाद ही "दज्जालियात" का ज़िक्र आपको देखने को मिलेगा।

यह इस वजह से कि दज्जाल के तज़किरे से पहले उसके ख़ातमे के लिये मबऊस की जाने वाली रूहानी शख़्सियात का तज़किरा हो जाना चाहिये। शर की ताक़तों का तज़किरा हो और उसके ख़ातमे के लिये ख़ैर की कुव्वतों का ज़िक्रे ख़ैर न हो तो यह मिज़ाजे शरीअत के ख़िलाफ़ है। लिहाज़ा क़ारी को अस्ल उन्वान (दज्जालियात) तक पहुंचने के लिये दो तम्हीदी उन्वानात "मेहदवियात और मसीहयात" के मुतालए से फ़रागत तक इन्तिज़ार करना होगा और "मसीहुलहुदा" के मुतालए के बाद ही वह "मसीहुज़्ज़ला" को पढ़ सकेगा। बाज़ किताबो के सरे वर्क़ या फ़ेहरिस्त में कुछ उन्वानात पुरकशिश अंदाज़ में होते हैं लेकिन मतन में उनका तज़किरा नहीं होता या ऐसी गर्म बाज़ारी नहीं होती जितनी उतनी ख़बर गर्म थी। इसके बरअक्स कभी ऐसा भी होता है कि मतन में "इज़ाफ़ियात" का वसी व अरीज़ खाता काफ़ी खुले हाथों से खोल लिया जाता है

लेकिन सरे वर्क़ में उनका तज़किरा नदारद। ज़ेरे नज़र किताब इसी दूसरी क़िस्म से तअल्लुक़ रखती है। कुछ नहीं कहा जा सकता कि यह ख़ूबी है या ख़ामी? लेकिन यह अर्ज़ ज़रूर है कि अन्दाज़े तालीफ़ की ख़ामियों पर कभी मक़सदे तालीफ़ की अहमियात पर्दा डाल दिया करती है। कारईन से इल्तिमास है कि अंदाज़ से क़तएं नज़र कर लें। मक़सद को पेशे नज़र रखें। इन्शाअल्लाह! किताब की मक़सदियत आपको मायूस नहीं करेगी।

तक़्दीम व ताख़ीरः

यह तो एक बात हुई। दूसरी यह कि अगरचे ज़मानी तसलसुल के लिहाज़ से वाक़िआत की तरतीब कुछ इस तरह बनती है कि पहले हज़रत मेहदी का ज़ुहूर होगा, फिर दज्जाल का ख़ुरूज होगा और फिर इस फ़ित्नए अज़ीम के ख़ातमे के लिये हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम आसमान से उतरेंगे। ......लेकिन ज़ेरे नज़र किताब में हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का ज़िक्र पहले और दज्जाल का बाद में है। वजह इसकी यही है कि रहमानी कुव्वतों के नुमाइन्दों का ज़िक्र इकट्ठे हो जाये और फिर शैतानी ताक़तों का तज़किरा इसके बाद आ जाये। फिर जो चाहे जिस सफ़ में शामिल हो जाये जिस फ़ेहरिस्त में नाम लिखवाना पसन्द करे। यह नसीबे की बात है।

इब्हाम और उलझनें:

आख़िरी और तीसरी बात यह है कि अलामाते क़्यामत के इब्हाम में जो इब्हाम दर इब्हाम पोशीदा है, वह बजाए ख़ुद एक क़्यामत है। इन अलामात की अस्री ततबीक़ में जो पेचीदगियां पेश आती हैं और क़वी तरीन क़राइन पर क़ायम अंदाज़े जिस तरह ऐन वक़्त पुरवक़ूई हक़ाइक़ से दूर......बहुत दूर......पेचीदा उलझनों में घिरे दिखाई देते हैं, उनकी बिना पर यह मौज़ू जितना दिलचस्प है, ज़माने के हालात पर इसकी ततबीक़ उतना ही कठिन और हौसला-शिकन

काम है। एहतियात का दामन थामते हुए और अकाबिर की तशरीहात के साए तले पनाह लेते हुए जो कुछ इस आजिज़ से हो सका, पेशे ख़िदमत है। हत्तलइम्कान इस बात का ख़्याल रखा गया है कि अहादीस की अस्री ततबीक़ के शौक़ में फ़रामीने नबवी को खींच तान कर कोई मख़सूस मफ़हूम न पहनाया जाए न मख़सूस हालात के मुताबिक़ बज़ोर ढाला जाए। सिर्फ़ वही बात कही जाए तो अब साफ़ साफ़ समझ आती है और इस पर भी इसरार न किया जाए।

......जाने या अल्लाह!

यहां यह सवाल ज़रूर उठेगा कि इस मौज़ू पर जो "माहज़र" जमा किया गया है, यह इससे क़ब्ल पेशे ख़िदमत करने में क्या मानेअ़ था? अगर हम आख़िरी ज़माने से क़रीब हैं और आख़िरी ज़मानों के फ़ित्नों की इतनी ही अहमियत है तो फिर आज तक इस मौज़ू से सर्फ़े नज़र की क्या हिक्मत थी? यह मस्लिहत थी या मुदाहिनत? दरीदह दानिस्ता चश्मपोशी थी या नावाक़फ़ियत? यह सवाल बज़ाते ख़ुद माक़ूल और बरमहल है और इसका जवाब किताब के पहले मज़मून में मुफ़स्सल व मुदल्लल है। हम आजिज़ इंसानों से जो कुछ हो सकता है वह......अलहम्दु लिल्लाह......हम कर गुज़रे। आगे रब की बातें वही जाने। मंगतो के पास अल्लाह से मन्नत व ज़ारी और बंदों से ख़ैरख़्वाही के इलावा धरा ही क्या है???

इत्तिफ़ाक़ में इख़्तिलाफ़:

यहां यह बात वाज़ेह हो जानी चाहिये कि इस वक़्त दुनिया में मौजूद तीन बड़े आसमानी मज़ाहिब (इस्लाम, यहूदियत, ईसाइयत) के मानने वाले, तो दुनिया की ग़ालिब अक्सरियत भी हैं, एक हस्ती का इन्तिज़ार कर रहे हैं जो आख़िरी ज़माने में ज़ाहिर होगी और इंसानियत के लिये नजात दहिन्दा साबित हो। हरआसमानी मिल्लत में इस "मसीह मौऊद" का वादा किया गया है......लेकिन इस इज्माली

इत्तिफ़ाक़ के बाद तीनों मिल्लतों में इसकी तफ़सील में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है।

अहले इस्लाम हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम के आसमान से नुज़ूल के मुन्तज़िर हैं। उनका अक़ीदा है कि वह नाज़िल होकर दज्जाल को क़त्ल करेंगे। सलीब तोड़ डालेंगे। ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेंगे (यानी दुनिया में सलीब की इबादत और इस पलीद जानवर का गोश्त खाना बंद कर दिया जायेगा) जिज़्या (ग़ैर मुसलमानों से लिया जाने वाला टैक्स) ख़त्म कर देंगे (क्योंकि कोई ग़ैर मुस्लिम बाक़ी नहीं रहेगा) और दुनिया भर में आदिलाना इस्लामी शरीअत क़ायम करेंगे।

ईसाई हज़रात भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नुज़ूल के मुन्तज़िर हैं। फ़र्क़ यह है कि उनके नज़दीक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मसलूब होने के तीन दिन बाद आसमान पर ले जाए गये और फिर आख़िर ज़माना में नाज़िल होकर ग़ैर ईसाइयों का ख़ातिमा कर देंगे। इस दौरान ईसाई हज़रत आसमान के बालाख़ानों में बैठ कर ग़ैर ईसाई इंसानियत के ख़ातिमे का मुशाहदा करेंगे। जबकि मुसलमानों के नज़दीक सय्यदना हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह पाक सही सालिम आसमान पर ले गये। यहूदी उनका बाल बीका नहीं कर सके। फिर क़्यामत के क़रीब आप आसमान से नाज़िल होकर यहूदियों का ख़ातिमा करेंगे और यहूदियों के साथ वह ईसाइ जो "सहवनी ईसाई" बन कर यहूदियों के मददगार थे, उनका भी ख़ातिमा हो जाएगा और बक़िया रहमदिल व हमदर्द ईसाई हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हाथ पर इस्लाम क़बूल कर लेंगे।

यहूदी जिस शख़्सियत का इन्तिज़ार कर रहे हैं वह उनके अक़ाइद के मुताबिक़ हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की औलाद से "अलक़ाइमुलमुंतज़िर" है और यहूदियों का अक़ीदा है कि वह इसकी बदौलत तमाम दुनिया पर हुकूमत करेंगे। "मसिय्या" (यानी

अलमसीहुद्दज्जाल, मसीहुश्शर वज़्ज़लाला) की आमद पर आलमी यहूदी रियासत क़ायम हो जायेगी। तमाम ग़ैर यहूदी, यहूदियों की इताअत कबूल कर लेंगे और यहूदी इनमें से सिर्फ़ इतने अफ़राद को ज़िंदा छोड़ेंगे जितनों की वह अपनी ख़िदमत के लिये ज़रूरत महसूस करेंगे।

आख़िरी मअरका:

इन तीनों उम्मतों के नज़रियात में यह बात भी क़द्रे मुश्तरक है कि "मसीहा" के ज़रीए इंसानियत को नजात मिलने से पहले क़ुहे अर्ज़ पर एक ज़बरदस्त और तबाहकुन जंग बरपा होगी। इस मअरकए अज़ीम में जिसे "उम्मुल मआरिक" यानी जंगों की माँ कहा जाता है कम अज़ कम दो तिहाई इंसानी आबादी मलियामेट हो जायेगी। ज़िंदा बच जाने वाले एक तिहाई लोग इस दुनिया पर बिला शिर्कत ग़ैरे हुकूमत करेंगे। अब वह एक तिहाई क़ौम कौन होगी? और दुनिया पर किस नज़रियो के तहत हुक्मरानी करेगी? इसका फ़ैसला होना बाक़ी है और यह फ़ैसला फ़लस्तीन के क़रीब "हिरमजदून" की वादी में होगा जिसे अहले मग़रिब "आरमैगाडॉन" कहते हैं। ईसाई और यहूदी दोनों इस फ़ैसलाकुन मअरके की ज़बरदस्त तैयारी कर रहे हैं......सही यह है कि कर चुके हैं......और सिर्फ़ एक क़्यामतख़ेज़ धमाके के मुंतज़िर हैं जो (मआज़ अल्लाह) "गुंबदे सुख़्रा" के इन्हिदाम पर होगा क्योंकि उनके (फ़रसूदा नज़रियात और मनघड़त मज़हबी दासतानों के मुताबिक़) हैकल की मिस्मारशुदा इमारत "गुंबदे सुख़्रा" के नीचे है। जब गुंबद की बुन्यादें उखड़ कर हैकल आसार बरआमद होंगे तो "मसिय्या" निकल आयेगा और उसकी आमद पर ग़ैर यहूदियों का वह क़त्ले अज़ीम बरपा होगा जिसके बाद ग़ैर यहूदी व ईसाई इंसानियत (ख़ुसूसन अहले इस्लाम) का ख़ातिमा हो जाएगा और अहले मग़रिब (यहूदी या ईसाई) बिला शिर्कत ग़ैरे इस क़रहे अर्ज़ के हुक्मरान होंगे।

वाहिद राहे नजातः

इस एतिबार से आज की दुनिया तीसरी जंगे अज़ीम के दहाने पर खड़ी है। वह वक़्त दूर नहीं जब मग़रिब व मशरिक़ इस जंग की आग में झोंक दिये जायेंगे। फ़र्क़ इतना है कि अह्ले मग़रिब ने इसकी तैयारी कर रखी है। वह लोग खुद को माद्दियत पसंद कहलवाते हैं और गैबी हकाइक़ व पशेगोइयों के क़ायल नहीं समझे जाते......लेकिन उन्होंने दरपर्दा तौरात व इंजील और तालमूद की तहरीफ़ शुदा पेशगोइयों के मुताबिक़ खुद को तैयार कर लिया है......जबकि अह्ले मशरिक़ आतिश फ़शां के दहाने पर खड़े होकर भी इस हौलनाक इन्फ़िजार से बेख़बर हैं जिसकी उनके नबी पाक अस्सादिकुल मुसद्दिक़ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़बर दी है और उनकी दी गई इताअत हर्फ़ बा हर्फ़ पूरा होते हुए मुकम्मल होने के क़रीब पहुंच चुकी हैं। यह किताब अह्ले इस्लाम की ख़िदमत में दुहाई है, फ़रियाद है, मन्नत व ज़ारी और आजिज़ाना इल्तिजा है। मग़रिब से उठने वाला तूफ़ान अनक़रीब हम पर चढ़ दौड़ने वाला है। हमें अपने नजात दहिन्दा क़ाइदीन हज़रत मेहदी व हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मईय्यत में ईमाने रासिख़ व अमले सालेह अपनाते हुए जिहाद यानी क़िताल फ़ी सबीलिल्लाह के लिये तैयार हो जाना चाहिये। यही वाहिद, पहली और आख़िरी मुअय्यन राहे नजात है।

अल्लाह तआला हम सब को आख़िरत की फ़िक्र नसीब फ़रमाए और क़्यामत से पहले जो क़्यामतें हमारी मुंतज़िर हैं, उनसे सुरखुरूई के साथ गुज़रने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन।

पहला बाब

मेहदवियात

हज़रत मेहदी कौन होंगे?
हज़रत मेहदी के साथी कौन होंगे?
हज़रत मेहदी की जद्दो जेहद किस नोइय्यत की होगी?
हज़रत मेहदी कब, कहां और किस तरह ज़ाहिर होंगे?
हज़रत हारिस व मंसूर का किर्दार क्या होगा?
मग़रिब की अज़ीमुश्शान माद्दी ताक़त के ख़िलाफ़
आप क्योंकर कामयाब होंगे?

हज़रत मेहदी के नाम एक ख़त

दारुल उलूम देवबंद के सबसे पहले मुहतमिम हज़रत मौलाना रफ़ीउद्दीन साहब रहिमहुल्लाह ज़ाहिरी व बातिनी उलूम के जामेअ़ थे। नक्शबन्दिया ख़ानदान के अकाबिर में से थे। आख़िर उम्र में हिजरत फ़रमाकर मक्का मुकर्रमा आये। वहीं उनकी वफ़ात भी हुई और वहीं कब्र भी है। आपको आख़िर ज़माना में अलामाते क़्यामत के ज़ुहूर ख़ुसूसन हज़रत मेहदी की क़्यादत में आलमी ईमानी जद्दो जेहद से ख़ुसूसी दिलचस्पी थी। हज़रत मेहदी का ज़ुहूर मक्का मुकर्रमा में होना था। दूसरी तरफ़ उन्हें यह हदीस मालूम थी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शैबी ख़ानदान को फ़त्हे मक्का के मौके पर बैतुल्लाह की कुंजियां सिपुर्द की हैं और बैतुल्लाह चूंकि क़्यामत तक बाक़ी रहेगा इसलिये मक्का में चाहे सारे ख़ानदान उजड़ जायें, शैबी का ख़ानदान क़्यामत तक बाक़ी रहेगा।

चुनांचे मौलाना रफ़ीउद्दीन साहब रहिमहुल्लाह की जब आख़िरी उम्र हुई और उन्हें शदीद इश्तियाक़ था कि हज़रत मेहदी के हाथ पर बैअत और उनकी क़्यादत में जिहाद नसीब हो जाए तो उनको अजीब तरकीब सूझी कि जब यह ख़ानदान क़्यामत तक बाक़ी रहेगा तो ला महाला ज़ुहूरे मेहदी के ज़माना में भी मौजूद रहेगा। जब हज़रत मेहदी का ज़ुहूर होगा और वह कअबतुल्लाह की दीवार से टेक लगाए मुसलमानों को बैअत करेंगे तब कअबतुल्लाह की कुंजियां शैबी ख़ानदान के किसी फ़र्द की हाथ में होंगी। चुनांचे इसी के पेशे नज़र उन्होंने एक हमाइल शरीफ़ और एक तलवार ली और एक ख़त हज़रत मेहदी के नाम लिखा। इस ख़त का मज़मून यह है: "फ़क़ीर रफ़ीउद्दीन देवबंदी मक्का मुअज़्ज़मा में हाज़िर है और आप जिहाद की तरतीब कर रहे हैं। ऐसे मुजाहिदीन आपके साथ हैं जिनको वह अज्र मिलेगा जो ग़ज़वए बदर के मुजाहिदीन को मिला था। सो रफ़ीउद्दीन

की तरफ़ से यह हमाइल तो आपके लिये हदिया है और यह तलवार किसी मुजाहिद को दे दीजिये कि वह मेरी तरफ़ से जंग में शरीक हो जाए और मुझे भी वह अज्र मिल जाए।" और ये तीनों चीज़ें शैबी के ख़ानदान वालों के सिपुर्द कीं और उनसे कहा कि तुम्हारा ख़ानदान क़्यामत तक रहेगा। यह हज़रत मेहदी के लिये अमानत है। जब तुम्हारा इन्तिक़ाल हो तो तुम अपने क़ायम मक़ाम को वसियत कर देना और उनसे कह देना कि वह अपने क़ायम मक़ाम को वसियत करे और हर एक यह वसियत करता जाये। यहां तक कि यह अमानत हज़रत मेहदी तक पहुंच जाए। (ख़ुत्बाते हकीमुल इस्लामः जि02, स098)

इब्तिदाई तीन बातें

हज़रत मेहदी के हवाले से तीन बातें समझना बहुत अहम हैं:

1) हज़रत मेहदी कौन होंगे?

2) ज़ुहूर के बाद क्या करेंगे?

3) कब ज़ाहिर होंगे?

इनको अगर कुछ समझ लिया जाए तो इस मौज़ू से मुतअल्लिक़ बहुत सी ग़लत फ़हमिया ख़त्म हो जाती हैं। आज तक इस हवाले से जो गुमराहियां फैलाई गईं या जो ग़फ़लत बर्ती गई, इसकी गुंजाइश भी नहीं रही।

पहली बात: हज़रत मेहदी कौन होंगे?

सबसे पहला सवाल यह है हज़रत मेहदी कौन होंगे? इस सवाल का जवाब दो तरह से दिया जा सकता है:

1-हज़रत मेहदी का ग़ाइबाना तआरुफ़:

हज़रत का ग़ाइबाना तआरुफ़ तो मुतअय्यन है कि वह हसनी सादात में से होंगे। उनका नाम नामी मुहम्मद या अहमद और वालिद का नाम अब्दुल्लाह होगा। मेहदवियात के मुहक़्क़िक़ अल्लामा सय्यद बरज़न्जी फ़रमाते हैं: मुझे उनकी वालिदा के नाम के बारे में काई सही रिवायत नहीं मिली। अलबत्ता बाज़ हज़रात ने वालिदा का नाम "आमिना" तहरीर किया है। मेहदी इनका नाम नहीं, लक़ब है। बमअनी हिदायत याफ़्ता। यानी उम्मत को उनके दौर में जिन उमूर

की ज़रूरत होगी और जो चीज़ें उसकी कामयाबी और बरतरी के लिये ज़रूरी होंगी और पूरी रूए ज़मीन के मुसलमान बेतहाशा क़ुर्बानियां देने के बावजूद महज़ इन चंद चीज़ों के न होने की वजह से कामयाब न हो रहे होंगे, हज़रत मेहदी को क़ुदरती तौर पर इनका इदराक होगा और इन कोहताइयों की तलाफ़ी और चंद मतलूबा सिफ़ात को बआसानी अपनाकर उम्मत के लिये मिसाली किर्दार अदा करेंगे और चंद सालों में वह कुछ कर लेंगे जो सदियों से मुसलमानों से बन न पड़ रहा होगा? वह पहले से पैदा नहीं हुए। आम इंसानों की तरह पैदा होंगे। 40 साल की उम्र में उम्मते मुस्लिमा उनको अपना क़ाइद बनाएगी और उनके हाथ पर बैअत करके कुफ़्र के बरपाकर्दा मज़ालिम के ख़िलाफ़ वह अज़ीम जिहाद शुरू करेगी जिसका इख़्तिताम आलमी ख़िलाफ़ते इस्लामिया के क़्याम पर होगा। यह तो इनका सीधा साधा तआरुफ़ है जो अक्सर अहादीस में मौजूद है।

2-हज़रत मेहदी का हाज़िराना तआरुफ़:

जहां तक बात हाज़िराना तआरुफ़ की है तो इस सिलसिले में सबसे पहले यह याद रखनी चाहिये कि वह शख़्स सच्चा मेहदी हो ही नहीं सकता जो मेहदी होने का दावा करे। दावाए मेहदवियत और हक़ीक़ी मेहदवियत में आग और पानी का तज़ाद है। इसके कई दलाइल हैं। चूंकि झूटे मुद्दई हर दौर में फ़ितना फैलाते रहे हैं......हमारे ज़माने में भी इस रूहानी मन्सब पर फ़ाइज़ होकर दुन्यवी मफ़ादात बटोरने वालों की कमी नहीं, लिहाज़ा हम झूटे मुद्दइयों के फ़ितने की तरदीद में चंद मज़बूत दलाइल पेश करने की कोशिश करेंगे:

1) "मेहदवियत" एक रूहानी मन्सब है और मेरे शैख़ व मुर्शिद, महबूबुल उलमा व अस्सल्हा हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद नक़्शबन्दी दामत बरकातुहुम अकाबिर का एक मक़ौला नक़्ल

फरमाया करते हैं: "तसव्वुफ़ के मैदान में मुद्दई की सज़ा फांसी है।" फिर बात यह है कि हसनी सादात को ज़ुहूरे मेहदी का इनाम मिला ही इसलिये है कि वह अपने जाइज़ दावे और हक़ से दस्तबरदार हो गए थे तो अब सच्चे मेहदी के लिये दावे के ज़रीए यह अज़ीम मंसब हासिल करने की क्या गुंजाइश रह गई है? तफ़सील इस इजमाल की यह है कि नवासए रसूल सय्यदना हज़रत हसन रज़ि0 अज़ीम ईसार का मुज़ाहिरा करते हुए सय्यदना हज़रत मुआविया रज़ि0 के हक़ में ख़िलाफ़त से दस्तबरदार हो गये थे और महज़ मुसलमानों में इत्तिफ़ाक़ और सुलह की ख़ातिर अपना यह हक़ छोड़ दिया था। इसके बदले आख़िर ज़माने में जब उम्मत को इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद की ज़रूरत होगी तो अल्लाह पाक उन्ही की औलाद में से एक मुजाहिद लीडर आलमी सतह पर ख़िलाफ़त के क़्याम के लिये मुंतख़ब फ़रमायेंगे क्योंकि अल्लाह तआला का क़ानून यही है कि जो शख़्स अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर कोई चीज़ छोड़ देता है तो अल्लाह तआला उसको या उसकी औलाद को उससे बेहतर चीज़ इनायत फ़रमा देते हैं। चुनांचे महदूद इलाक़े में ख़िलाफ़त छोड़ने के बदले हज़रत हसन रज़ि0 की औलाद को आलमी ख़िलाफ़त का इन्आम मिलेगा। आपके हसनी होने की दूसरी वजह उलमाए किराम ने यह लिखी है जिस तरह हज़रत इस्हाक़ अलै0 की औलाद से बुत से अंबियाए किराम आये और हज़रत इसमाईल अलै0 की नस्ल में अल्लाह तआला ने सिर्फ़ एक नबी भेजे जो "ख़ातिमुल अंबिया" थे। इसी तरह हज़रत हुसैन रज़ि0 की नस्ल से बहुत से औलिया आए जबकि हज़रत हसन रज़ि0 की औलाद से एक ही बहुत बड़े वली आयेंगे जो "ख़ातिमुल औलिया" होंगे। (देखियेः मुल्ला अली क़ारी की मरक़ातुल मफ़ातीहः147/10 और मौलाना इदरीस कांधलवी की अत्तअलीकुल सबीहः197/6)

2) मेहदवियत का अज़ ख़ुद दावा करने वाले के झूटे होने की

दूसरी दलील यह है कि हज़रत मेहदी तो हदीस शरीफ़ की बयानकर्दा वाज़ेह अलामत और सच्चे अल्लाह वालों के तरीक़े के मुताबिक़ इमामत व उहदा और मंसब क़बूल करने से जितना उनसे बन पड़ेगा, गुरेज़ करेंगे, हत्ता कि वह सात उलमा तो दुनिया के मुख़्तलिफ़ हिस्सों (मुम्किना तौर पर पाकिस्तान व अफ़ग़ानिस्तान, उज़बेकिस्तान, तुर्की, शाम, मराकश, अलजज़ाइर, सूडान) से हज़रत मेहदी की तलाश में आये होंगे और हर एक के हाथ पर तीन सौ दस से कुछ ऊपर अफ़राद ने बैअत कर रखी होगी और यह सब मिल कर सरगर्मी से उस शख़्स को तलाश कर रहे होंगे जिसके हाथ पर बैअत से उम्मत में इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ होगा, मरकज़ी क़्यादत नसीब होगी, फ़ित्नों का ख़ातमा होगा। यूरोप के सलीबियों और अमरीका व इस्राईल के यहूदियों की साज़िशें दम तोड़ देंगी और हुकूमते इलाहिया क़ायम होगी, यह सब अह्ले इल्म व सलाह भी होंगे और अपनी अपनी जमाअत से मौत तक जिहाद की बैअत भी लिये हुए होंगे (ऐ अह्ले इस्लाम! इल्मे दीन, तसव्वुफ़े शरई और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह के हामिलीन व दाइयों से तुम कहां वरग़ला ले जाते हो?) ये सातों हज़रात मिल कर हज़रत मेहदी को हरमैन में तलाश करेंगे। जब हज़रत मेहदी तक पहुंच जाएंगे और उनमें तमाम अलामतें पायेंगे तो तस्दीक़ के लिये उनसे पूछेंगेः "आप फ़लां बिन फ़लां हैं?" हज़रत मेहदी उनको ख़ूबसूरती से टालते हुए कहेंगेः "मैं तो एक अंसारी हूं।" यानी अल्लाह के दीन की मदद करने वाला! और यह कहकर मक्का मुकर्रमा से छिप कर मदीना मुनव्वरा चले जायेंगे। ये हज़रात आपको तलाश करते करते मदीना शरीफ़ पहुंच जायेंगे। हज़रत मेहदी इमामत का उहदा दिये जाने से बचने से पहले उनसे छिप कर फिर मक्का मुकर्रमा आ जायेंगे। ये उलमाए किराम बेताब होंगे कि हमने दुनिया भर में जिहाद किया। इस्लाही कोशिशें कीं। जान, माल, इज़्ज़त आबरू बेहिसाब क़ुर्बानियां दीं। मंज़िल फिर भी हाथ आके

नहीं दे रही। कुफ़्र का ज़ोर टूट रहा है न कुफ़्रियात का ग़लबा ख़त्म हो रहा है। उम्मत को जिस क़ाइद की ज़रूरत है, जिस में अक़्ल व सूझबूझ भी हो, जुराअत व शुजाअत भी और कुदरत की तरफ़ से हिदायत व नुसरत भी, उसके क़रीब पहुंच कर भी हम फिर महरूम रह गये। ये आपको खोजते खोजते फिर हरमे मक्की आ पहुंचेगे। इस तरह तीन चक्कर हरमैन के दरमियात लगेंगे। आख़िरकार ये उलमा तीसरी मर्तबा हज़रत मेहदी को हज्रे असवद के पास जा लेंगे। आप कअबा के साथ चिमट कर, चेहरा कअबा की दीवार पर रगड़ते हुए उम्मत की हालत पर रो रहे होंगे। ये उलमा आपको पहले खुदा का वास्ता देकर कहेंगे कि अगर आपने बैअत के लिये हाथ न बढ़ाया तो जितनी उम्मत मज़लूमियत की हालत में मारी जा रही है, इस सब का गुनाह आपके सर पर होगा। इस पर हज़रत मेहदी मजबूर होकर मक़ामे इब्राहीम और हज्रे असवद के दरमियान बैठकर उनसे कहेंगे कि आओ! फिर आख़िरी फ़तह तक इकट्ठे जीने मरने का अहद करते हैं। अमीर और मामूर के इस अहद को शरीअत की इस्तिलाह में "बैअत" कहते हैं। चुनांचे वह उन उलमाए किराम से शरीअत की इत्तिबा और मरते दम तक जिहाद पर बैअत लेंगे। इस हिज्रत और जिहाद के नतीजे में आलमी सतह पर ख़िलाफ़त क़ायम हो जाएगी। हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा हिज्रत फ़रमाकर जिहाद का अमल जारी किया था। हज़रत मेहदी मदीना मुनव्वरा से मक्का मुकर्रमा हिज्रत मअकूस फ़रमाकर जिहाद की सुन्नत को फिर से ज़िंदा फ़रमायेंगे और मुसलमानों की उम्मीदों, तमन्नाओं और ख़्वाबों की ताबीर मिल जाएगी।

3) एक और दलील जो हुब्बेजाह के मरीज़ों की तरफ़ से मेहदी होने का दावा करने वालों को झूटा साबित करती है, यह है कि ज़ुहूर से पहले ख़ुद हज़रत मेहदी अपने मक़ाम से नावाक़िफ़ होंगे। उनकी

अपनी सलाहियतें खुद उन पर मख़फी होंगी और वह एक आम आदमी की ज़िंदगी गुज़ार रहे होंगे......भला वह कैसे मेहदी होने का दावा कर सकेंगे? हज़रत अली रज़ि0 से एक रिवायत मन्कूल है:

"اَلْمَهْدِیُّ مِنَّا اَهْلَ الْبَیْتِ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یُصْلِحُهُ اللّٰهُ فِیْ لَیْلَةٍ".

(इब्ने माजा, बाब खुरूजुल मेहदी: 310/4, व मुस्नद अहमद 106/1)

तरजुमा: रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया: मेहदी हम अहले बैत में से होंगे, अल्लाह तआला एक ही रात में उनको यह सलाहियत अता फ़रमा देगा।

इस हदीस की शरह में शैख़ अब्दुल ग़नी देहलवी रहि0 फ़रमाते हैं:

یُصْلِحه اللّٰهُ فی لیلةٍ، ای یُصلِحه للإمارةِ والخلافه بغاءةً وبغتةً.

(इन्जाहुल हाजा अला हामिश इब्ने माजा)

यानी अल्लाह तआला एक ही रात में अचानक उनको इमारत और ख़िलाफ़त की यह सलाहियत अता फ़रमा देगा।

अल्लामा इब्ने कसीर रहि0 इस हदीस की शरह में फ़रमाते हैं:

"ای یتوبُ علیه ویُوَفّقُهٗ ویُلهِمه ویُرشدهٗ بعدَ أن لم یکن کذلک".

(अलबिदाया वन्निहाया फ़िलफ़ितन वलमलाहिम31/1)

यानी अल्लाह तआला अपने ख़ुसूसी फ़ज़्ल व तौफ़ीक़ से सरफ़राज़ फ़रमाकर पहले उन्हें (हकीकत का) इल्हाम करेंगे और उस मक़ाम से आशना करेंगे, जिस से वह पहले नावाक़िफ़ थे।

हज़रत मौलाना बदर आलम मेरठी मुहाजिर मदनी रहि0 फ़रमाते हैं: एक अमीक़ हक़ीक़त इससे हल हो जाती है और वह यह है कि यहीं पर बाज़ ज़ईफ़ुल ईमान कुलूब में यह सवाल उठ सकता है कि जब हज़रत मेहदी ऐसी खुली हुई शोहरत रखते हैं तो फिर उनका तआरुफ़ अवाम व ख़्वास में कैसे मख़्फ़ी रह सकता है? इसलिये

मसाइब व आलाम के वक़्त उनके ज़ुहूर का इन्तिज़ार माकूल मालूम नहीं होता है, लेकिन इस लफ़्ज़ (يصلحه الله فى ليلة) ने यह हल कर दिया कि यह सिफ़ात ख़्वाह कितने ही अशख़ास में क्यों न हों, लेकिन उनके वह बातिनी तसर्रूफ़ात और रूहानियत मशियत इलाहिया के मातहत ओझल रखी जायेगी। यहां तक कि जब उनके ज़ुहूर का वक़्त आएगा तो एक ही शब के अंदर अंदर उनकी अंदरूनी ख़ुसूसियात मंज़रे आम पर आ जायेंगी। गोया यह भी एक करिशमए क़ुदरत होगा कि उनके ज़ुहूर के वक़्त से क़ब्ल कोई शख़्सियत उनको पहचान न सकेगी और जब वक़्त आएगा तो क़ुदरते इलाहिया शब भर में वह तमाम सलाहियतें उनमें पैदा कर देगी जिनके बाद उनका मेहदी होना ख़ुद उन पर और तमाम दुनिया पर भी मुन्कशिफ़ हो जाएगा।

(तरजुमानुस्सुन्नाः 404/4)

इस सारी तफ़सील से जो मुस्तनद किताबों में मज़कूर है (इस वक़्त बन्दे के सामने दो दर्जन के करीब किताबें मौजूद हैं जिनकी फ़ेहरिस्त इस किताब के आख़िर में है) मालूम हुआ कि मेहदी होना जिहादी और अस्करी क़्यादत के साथ साथ एक तरह से रूहानी मंसब है और रूहानियत के मक़ाम पर फ़ाइज़ लोग मंसब का दावा नहीं किया करते। अलबत्ता उनकी कारकर्दगी और सलाहियत ऐसी होती है कि लोग उहदों और मनासिब को अज़ख़ुद उन पर सद्क़े वारी करते हैं। फिर मेहदी की मस्नद फूलों की सेज नहीं, कांटों भरा ताज है। इसमें यूं नहीं होगा कि मेहदी मौऊद होने का दावा करके कोई साहब मस्नद नशीन हो जाएं, नज़राने वसूल फ़रमाते रहें और उम्मत के मसाइल हल करने और उसकी कश्ती को मंझदार से निकालने के लिये क़ुर्बानी देने के बजाए ख़ुद एक नया मसला बनकर सदर नशीन हो जाएं। मेहदी होने का मतलब पूरी दुनियाए कुफ़्र की मुख़ालिफ़त, उससे टकराव, जान पर खेल कर मज़लूम मुसलमानों की

इम्दाद, आग के दरया से गुज़र कर फ़तह का हुसूल और खून का समन्दर पार करके "ख़िलाफ़ते इलाहिया अला मिनहाजुन्नुबुव्वा" का क़याम है। अब फ़रमाइये कि इसमें दावा की गुंजाइश कितनी है और अमल व किर्दार की सच्चाई कितनी ज़रूरी है? मिर्ज़ा क़ादियानी की तरह के मर्दूदों और हर शाही किस्म के पाजियों का यहां क्या गुज़र है?

यहां यह बात खुसूसियत से मलहूज़ रहे कि हज़रत मेहर्दी जिस तरह कअबे के पर्दों से चिमट कर दीवारे कअबा पर मुंह रगड़ते हुए उम्मत की बदहाली पर रो रहे होंगे, उसी तरह ये सात उलमा भी उनकी जुस्तजू में बेचैन व बेताब होंगे। उनके साथ मौजूद तीन सौ के लगभग अफ़राद भी दुनिया भर से उनकी तलाश में हरमैन पहुंच चुके होंगे और अपना सब कुछ अमीर के एक इशारे पर लुटाने के लिये तड़प रहे होंगे। उम्मते मुस्लिमा के लिये अमीर और मामूर की यह तड़प और कुढ़न वह चीज़ है जिस पर अल्लाह तआला उम्मत की ख़िदमत का काम लेने, मुश्किल चीज़ों को आसान करते और सही वक़्त पर सही चीज़ की ग़ैबी तौफ़ीक़ अता फ़रमाते हैं। पस जिसे हज़रत मेहदी के मुतअल्लिक़ मालूमात का शौक़ है, उसे पहले तो अपनी हालत सुधारनी चाहिये, हुक़ूक़ुल्लाह व हुक़ूक़ुल इबाद की अदाइगी का एहतिमाम करना चाहिये और फिर अपने बजाए इस्लाम के लिये सोचना चाहिये। उम्मते मुस्लिमा की बिगड़ी बनाने में उलमा, मशाइख़ और मुजाहिदीन का हाथ बटाना चाहिये। अपने जान, वसाइल में मुसलमानों के लिये वाफ़िर हिस्सा रखना चाहिये। ऐसे ही लोग या उनकी नस्लें इस मुबारक लश्कर में शामिल हो सकती हैं। महज़ अंदाज़े, क़्यासात, तख़ैयुलात और अमल के बेग़ैर हुब्बे मंशा नताइज की उम्मीद या क़ुर्बानी के बेग़ैर निरे जज़्बात किसी काम के नहीं।

इन दो जवाबों के बाद बाज़ क़ारईन की नज़र में पहला सवाल

ख़त्म हो गया होगा, लेकिन दरहक़ीक़त यहीं से यह सवाल एक नये पहलू से सर उठाता है। हज़रत मेहदी कौन होंगे? इस सवाल पर अब तक जो बात हुई है वह किताबी या इल्मी और ज़ेहनी है। लेकिन क्या महज़ इस से तशफ़्फ़ी हो जाती है? इस तख़ैयुलाती तआरुफ़ को अस्री तत्बीक़ की शक्ल दिए बग़ैर बात पूरी हो जाएगी? यह आजिज़ समझता है कि बात को यहीं तक लाकर छोड़ने से गुमराह और नफ़्स परस्त क़िस्म के लोगों को मौक़ा मिल जाता है कि वह जहां चाहें तत्बीक़ करते फिरें और जिसे चाहें मेहदी मान कर उसके लिये बहाई गई रूहानियत और नफ़्सियानी मुराअत की गंगा में हाथ धोते रहें......हमारे यहां चूंकि तबीअतें और दिमाग़ फ़िल्लाज़ह हैं इसलिये झूटे मुद्दइयों के पीछे चलने वाले बहुत हैं और सच्चे मेहदी की तलब रखने वाले कम हैं। क्योंकि जो यह तलब रखेगा उसे उसके तक़ाज़े भी पूरे करने पड़ेंगे और नाआसूदा हसरतों और तिश्ना तमन्नाओं के मारे हुए आज के मुसलमानों के लिये यही वह चीज़ है जिस से हमारी जान जाती है। दूसरी तरफ़ यह भी हक़ीक़त है कि अल्लाह तआला और उसके सच्चे पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़यामत की तरह इसकी अलामात को भी किसी क़द्र मुब्हम रखा है। उनकी सही तअय्युन किसी के बस की बात नहीं। बहुत से मुहक़्क़िक़ीन के अंदाज़े भी ग़ैर वाक़ई साबित हुए हैं। अलबत्ता हत्मी तअय्युन और मुकम्मल इब्हाम के दरमियान महज़ इम्कानी तत्बीक़ और मुम्किना मिस्दाक़ की हद तक बात की जाए, इसकी सिहत पर इसरार न किया जाए, न उसकी बुनियाद पर शरीअत के ख़िलाफ़ या अकाबिरीन के मशरब से हट कर कोई तावील की जाए और उलमाए किराम व मशाइख़े इज़ाम की तौजीहात व तंबीहात को कबूल कर लेने के लिये तैयार रहा जाए तो ज़बान खोलना शायद मम्नू न होगा, खुसूसन इसलिये कि मक़्सद सिर्फ़ और सिर्फ़ आम्मतुल मुस्लिमीन को

इस्लाहे नफ़्स और जहदो जेहद व जिहाद की दावत देना हो। तो आइये! एक नज़र ज़रा इस पहलू पर डालते हैं।

وبالله التوفيق، وهو العاصم من الشرور والفتن.

दम मस्त क़लन्दर

दूसरी बातः हज़रत मेहदी कौन होंगे?

हज़रत मेहदी कौन होंगे? यह सवाल जितना अहम है उतना ही अहम यह है कि उनके साथा चलने वाले कौन होंगे? अमीर की पहचान जितना लाज़मी है उतना ही लाज़मी यह भी है कि उसके मामूर और उसके गिर्द मौजूद जमाअत की पहचान हो ताकि हज़रत मेहदी को कोई पा सके या न पा सके, इन सिफ़ात को तो पा जाए जो मौत से क़ब्ल मौत की तैयारी में काम आ सकती हैं।

क़ारईने मुहतरम! अहादीस में दो इशारे ऐसे मिलते हैं जिन से आख़िरी ज़माने के कामयाब क़ाइद और उसके ख़ुशनसीब कारकुन दोनों की किसी क़द्र पहचान हो जाती है और आदमी को हक़ व बातिल में फ़र्क़ करने, हक़ के लिये क़ुर्बानी देने और बातिल के ख़िलाफ़ डट जाने का हौसला मिल जाता है। ये दोनों अहादीस बन्दा के सामने अरबी में बा हवाला मौजूद हैं। हवाला मुस्लिम शरीफ़ और मिश्कात शरीफ़ का है। लेकिन अगर हम अरबी इबारत की तरफ़ गए तो यह तहक़ीक़ी मज़मून बन जाएगा जबकि बंदा तहक़ीक़ का अहल नहीं। तहक़ीक़ के लिये हमेशा अपने अकाबिर की तरफ़ रुजू करता है। अल्लाह पाक ने हमारे अकाबिर उलमाए देवबंद को जिस इल्म और तक़्वा से नवाज़ा, वह रासिख़ है और जो फ़ह्म व बसीरत

अता की, वह कामिल है। हमारी खुशनसीबी यह है कि उनको देख देख कर, उनसे पूछ पूछ कर चलते रहें और उनकी तक़लीद में एहतियात और नजात को मुज़्मर समझें। हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद रफ़ी उस्मानी साहब दामत बरकातुहुम ने अपने वालिद हज़रत मुफ़्तीय आज़म मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब रहि0 की लिखी हुई जिस मअरकतु आरा किताब की तहक़ीक़ की है और उसके आख़िर में "फ़ेहरिस्त अलामाते क़्यामत" के उन्वान के तहत तीसरी अलामत यूं तहरीर है: "नुजूले ईसा तक इस उम्मत में एक जमाअत हक़ के लिये बरसर पैकार रहेगी जो अपने मुख़ालिफ़ीन की परवा न करेगी। इस जमाअत के आख़िरी अमीर इमाम मेहदी होंगे।" (स0: 142) इसमें आख़िरी जुम्ला (इस जमाअत के आख़िरी अमीर इमाम मेहदी होंगे) बहुत अहम है। इससे साफ़ मालूम होता है हज़रत मेहदी न किसी ग़ैर जिहादी जमाअत के अमीर होंगे न किसी और क़िस्म के फ़िक्री या तन्ज़ीमी गिरोह के, वह जिहादी जमाअतों के आख़िरी अमीर होंगे। अह्ले हक़ की तमाम जिहादी जमाअतें और उनके ज़िम्मेदार अपनी अपनी जमाअतों को उनके हाथ में देकर उनके साथ ज़म हो जाएंगे और दुनिया भर में अलग अलग जो कोशिशें हो रही हैं, वह हज़रत मेहदी के झण्डे तले जब इकट्ठी होंगी तो मुजाहिदीन की बेमिसाल क़ुर्बानियां और हज़रत मेहदी की ज़ेहन और जुर्अतमंद क़्यादत मिलकर मुसलमानों को वह गुमशुदा चाबी वापस दिलवा देगी जो अर्सा हुआ गुम हो गई है और फ़तह व नुस्रत और तरक़्क़ी व कामयाबी की गाड़ी के चारों टायर (इल्म, तक़्वा, दावत, जिहाद) मौजूद होने के बावजूद चल के नहीं दे रही।

अब मामूरीन और कारकुनों की पहचान की तरफ़ आइये! मसला ही बिल्कुल साफ़ हो जाएगा। दुनिया में इस वक़्त मुसलमानों के तीन मुख़ालिफ़ीन हैं: यहूद, हुनूद (मुश्रिकीन), ईसाई। हज़रत मेहदी की जंग ईसाइयों (यूरपी यूनियन) से होगी। यहूद और उनके सरबराह

अद्दज्जालुल अज़ीम के ख़ातमे के लिये हज़रत ईसा अलै0 नुज़ूल फ़रमायेंगे। इसकी एक हिक्मत तो यह है कि यहूद ने हज़रत ईसा अलै0 को बेतहाशा सताया। जान लेने की कोशिश की। आप के हवारियों ने आप के गिर्द जानें देकर आपकी हिफ़ाज़त न की। इन्ही यहूद ने मुश्रिकीन के साथ मिल कर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल0 को भी बहुत सताया। जान लेने के दर पे हो गए। आप के सहाबा ने आप के गिर्द अपने जिस्मों की दीवार खड़ी कर दी। मुहाजिर सहाबा तो निकले ही कश्तियां जला कर थे लेकिन अंसार का हाल भी यह था कि जब तक एक भी ज़िंदा था, मुम्किन न था कि इस पर से गुज़रे बेग़ैर कोई आप तक पहुंच सकता। अल्लाह तआला इस वफ़ा और फ़िदाइय्यत पर उम्मते मुहम्मदिया को यह इन्आम देंगे कि जिस तरह इस उम्मत के शुरू के लोगों ने अपने पैग़ंबर के साथ मिल कर "यहूदे मदीना" के ख़ातमे का कारनामा अंजाम दिया, इसी तरह इस उम्मत के आख़िरी लोग "यहूदे आलम" के कुल्ली ख़ातमे के लिये भी दोबारा बहैसियत उम्मती आए हुए पिछले पैग़म्बर सय्यदना हज़रत ईसा अलै0 के साथी बन कर साबिक़ीन की याद ताज़ा करेंगे।

दूसरी वजह यह कि दज्जाल को ग़ैर मामूली साइन्सी ताक़तें हासिल होंगी। मग़रिब की तजुर्बागाहों में मसरूफ़कार तमाम दुनिया के ज़ेहन तरीन दिमाग़ जो कुछ ईजाद कर रहे हैं, यह दरअसल दज्जाल के ज़ुहूर के लिये मैदान हमवार कर रहे हैं। यह अपनी सारी टेक्नॉलोजी उसके दामन में ऐसे ही डाल देंगे जैसे कि अह्ले हक़ में से ख़ुशनसीब लोग हज़रत मेहदी का ज़ुहूर और हज़रत ईसा अलै0 का नुज़ूल होने पर अपना सब कुछ उनके पलड़े में डाल देंगे। अमरीका और दुनिया भर से खींच कर अमरीका आए हुए ज़ेहन ज़हीन दिमाग़ों की ईजादात कहां तक जा पहुंचेगी? इसका अंदाज़ा हुज़ूर पाक सल्ल0 की उन अहादीस से लगाया जा सकता है जिस में साइंस के बल बूते पर दज्जाल की ग़ैर मामूली "शोबदा बाज़ियां"

बयान की गई हैं। एक ताज़ा तरीन ईजाद सुन लीजिये। "बरमूदा ट्राई एंगल" नामी मक़्नातीस तिकोन में जो लहरें कारफ़रमा हैं, उन्हें महफ़ूज़ कर लिया गया है। इनको अगर किसी इंसान, जहाज़ या किसी भी देवहैकल चीज़ पर डाला जाए तो वह वैसे ही ग़ायब हो जाएगी जैसे बरमूदा के तिकौन में सालिम हवाई और बहरी जहाज़ ग़ायब हो जाते हैं। यह चीज़ हासिल होने के बाद महफ़ूज़ हो चुकी है। अन्क़रीब जब हालात की भट्टी में जंग की आग मज़ीद गर्म होगी तो इस ईजाद का इस्तिमाल माद्दापरस्तों की आंखों को ख़ीरा कर डालेगा और वह अर्ज़ी ख़ुदाओं की झूटी ख़ुदाई के पहले से ज़्यादा क़ायल हो जाएंगे जबकि ख़ुदा मस्त मलंगों को उसकी वैसी ही परवाना होगी जैसा कि साबिक़ा हदीस में बयान हुआ है और जैसा के आज दुनिया अपनी आंखों से देख रही है। दज्जाले आज़म को हासिल इस तरह की ग़ैर मामूली साइंसी कुव्वतों के मुक़ाबले के लिये ही हज़रत ईसा अलै0 को ग़ैर मामूली मोजिज़ाना कुव्वतें दी गई हैं।

जब हज़रत मेहदी की यूरपी ईसाइयों से जंग होगी, इसमें हज़रत के साथ बारह हज़ार के क़रीब मुजाहिद होंगे:

"बारह हज़ार की तादाद को कमी की बिना पर शिकस्त नहीं दी जा सकती।" (हदीस शरीफ़)

दूसरी तरफ़ मुत्तहिदा यूरपी फ़ौज में नौ लाख सात हज़ार का टिड्डी दल होगा। बारह झण्डे होंगे और हर झण्डे के नीचे अस्सी हज़ार सूरमा होंगे (12×80,000=9,60,000)। यह लोग यूरप के दरवाज़ा कुस्तुनतुनिया (इस्तन्बूल जो एशिया व यूरप के संगम पर है) से गुज़र कर शाम की सरज़मीन पर आए हुए होंगे। गोया ज़ाहिर में दोनों फ़रीक़ों में कोई जोड़ ही न होगा। इस पर "यूरपियन कोलेशन" हज़रत मेहदी और उनके रुफ़क़ा पर रहम खाकर एक पेशकश करेगी। एक आसान मुतालबा रखेगी कि यह पूरा कर दो, हम वापस चले जाते हैं। तुम सिर्फ़ इतना करो: "तुमने हमारे जो आदमी क़ैद

किये थे और वे हमारा मज़हब छोड़कर तुम्हारा मज़हब अपना चुके हैं, अब तुम्हारे साथ मिलकर हम से लड़ने के लिये आये हैं, तुम हमारे और उनके दरमियान से हट जाओ हम सिर्फ़ उनसे लड़ने के लिये आए हैं। तुम से हमें कोई सरोकार नहीं।"

आपने ग़ौर फ़रमायाः चंद गोरी चमड़ी वाले यूरपी जंगी क़ैदी मुसलमानों का हुस्ने सुलूक देखकर मुसलमान हो चुके हैं। वह आबाई मुसलमान नहीं, नो मुस्लिम हैं और हज़रत मूसा अलै0 के ज़माने के जादूगरों की तरह इनका ईमान इतना कामिल हो चुका है कि बारह हज़ार के लशकर के साथ शामिल होकर साढ़े नौ लाख से टकराने के लिये तैयार हैं। इन चंद नो मुस्लिम अफ़राद की हवालगी पर दुनिया की तरक़्क़ी याफ़ता तरीन मुत्तहिदा क़ुव्वतों का लशकर वापस जाने पर तैयार है और चंद हज़ार टूटे फूटे मुजाहिदीन की जांबख़्शी इससे मशरूत है जिन्हें मौत सामने नज़र आ रही है……लेकिन इन चंद कामिलुल ईमान जिहादियों का जवाब सुनियेः

"अल्लाह की क़सम! ऐसा हर्गिज़ नहीं हो सकता। वह इस्लाम कबूल करके हमारे भाई बन चुके हैं। हम उन्हें किसी सूरत में अकेला नहीं छोड़ेंगे।"

अल्लाहु अकबर! बताइये यह जुरअत इस वक़्त रूए ज़मीन पर मौजूद किस तबक़े में है? कौन है जो एक सुपर पावर नहीं, तमाम सुपर पावर्ज़, नॉन पार्टनर्ज़ को टका सा जवाब दे सकते हैं कि मुल्क जाता है तो जाए, हुकूमत छिनती है तो सौ बार छिने, हम किसी मुसलमान को कुफ़्फ़ार के हवाले करने की बेग़ैरती कभी नहीं कर सकते। वे और होंगे जो चंद डालरों के इवज़ अह्ले बैत को बेचते हैं और फिर मां की गाली खाते हैं।

बताइये! पहचान में कोई मुश्किल रह गई है? कोई समझ कर भी न समझे तो उसकी मर्ज़ी……वरना कोई हिजाब, कोई रुकावट, कोई हाइल नहीं।

"जब तुम देखो कि खुरासान की जानिब से सियाह झण्डे निकल आए तो उस लशकर में शामिल हो जाओ, चाहे तुम्हें इसके लिये बर्फ़ पर घिसट कर (क्रालिंग करके) क्यों न जाना पड़े, कि इस लशकर में अल्लाह के आख़िरी ख़लीफ़ा मेहदी होंगे।"

यहां पहुंच कर पहला सवाल काफ़ी हद तक हल हो चुका है। ग़ाइबाना तआरुफ़ से हाज़िराना तआरुफ़ तक मसला काफ़ी सनसनीख़ेज़ होता है। इसमें बहुत लोग या तो निहायत जल्दी करते हैं और झूटे मुद्दइय्यों को सच्चा समझने लगते हैं (एक झूटे मुद्दई शहबाज़ काज़िब की हाल ही में गिरिफ़्तारी के बाद फ़ैसलाबाद सैन्ट्रल जेल में उसके चेलों ने उसकी पेशगोइयां झूटी साबित होने पर ठुकाई लगाई है) और कुछ लोग उसके निहायत दूर दराज़ और तवीलुल मीआद होने के क़ाइल हैं। दरअसल सही तअय्युन तो मुम्किन ही नहीं, न इस मसले की न इस जैसे दीगर मसाइल की, लेकिन मुकम्मल इब्हाम भी क़ाबिले क़द्र रोश नहीं। हत्मी अंजाम और हत्मी तअय्युन के दरमियान का रास्ता मुहतात और महफ़ूज़ रवय्या है। हदीस शरीफ़ में एक और जुम्ले की कुछ वज़ाहत के बाद हम आगे चलेंगे। फ़रमाने नबवी है: "नुज़ूले ईसा तक इस ज़मीन में एक जमाअत हक़ के लिये बरसरे पैकार रहेगी जो अपने मुख़ालिफ़ीन की परवा न करेगी।"

इसमें जमाअते हक़ की दो मख़सूस सिफ़ात बयान की गई हैं: (1) जिहाद और मुसलसल जिहाद। (2) मुख़ालिफ़ीन की परवा न करना। आज कौनसी सरज़मीन है जहां जिहाद नामी फ़रीज़ा मिट जाने के बाद ज़िंदा हुआ और मुसलसल ज़िंदा है। दुनिया में जिहाद की कोई क़िस्म न होगी जो यहां न लड़ी गई हो। मुन्किरीन, मुलहिदीन, बाग़ीन, मुरतद्दीन और अब मुत्तहिदा काफ़िरीन के ख़िलाफ़, ग़र्ज़कि हर नौअ़ का जिहाद यहां हुआ और हो रहा है। मुख़ालिफ़ीन की परवा न करना (क़रारी दा, शी नश्ता: सब ठीक है।

किसी किस्म का कोई मस्ला नहीं। पुश्तो का एक जुम्ला तालिबान अक्सर इस्तिमाल करते हैं) किसका मख़सूस मिज़ाज है? न्यूज़ वीक की ताज़ा रिपोर्ट है:

"तालिबान जिस किस्म की RESILIENCE और FEROCITY का मुज़ाहिरा कर रहे हैं, इससे वाशिंगटन और नेटो तन्ज़ीम के दूसरे दारुल हुकूमतों में ख़तरे की घंटियां बजना शुरू हो गई हैं और SOUL SEARCHING का एक नया दौर जन्म ले रहा है कि एक निस्बतन RAGTAG बग़ावत ने किस तरह दुनिया की ताक़तवर तरीन अफ़वाज को अपने क़रीब तक आने से रोका हुआ है।"

सुब्हानल्लाह! एक तरफ़ एक ऐसी बिखरी हुई मुन्तशिर और टूटी फूटी बे वसाइल जमाअत है जिनका अपना मुल्क भी इसके ख़िलाफ़ है। दूसरी तरफ़ 43 ऐसे मुमालिक हैं जिन में से कोई एक भी दुनिया के किसी मुल्क को धमकी दे तो उसके औसान ख़ता हो जाएं......लेकिन नतीजा क्या है? जो आज से सात आठ साल पहले था कि फ़ज़ाई हमलों से इब्तिदा होकर वापस फ़ज़ाई हमलों पर बात चली गई है। क़रीब आना तो दूर की बात है, ज़मीन पर आने की जुरअत करना मुश्किल हो गया है। 43 मुमालिक "एसाफ़" में शामिल मुल्कों को अच्छी तरह गिनने के बाद सामने आए हैं। माद्दी ताक़त के लिहाज़ से तो अमरीका अकेला ही काफ़ी था। किसी को घर बैठे आंखे ही दिखा दे तो उसका काम हो जाता है। फ़ोन कर दे तो कंधे के बेज ही भूल जाते हैं। इससे अकेले बन न पड़ा तो "اجمعوا امرکم وشرکائکم" के तहत इसने नेटो को पुकारा। 26 मुमालिक दौड़े चले आए। जबकि दुनिया फ़तह करने के लिये उनमें से दस भी काफ़ी थे......लेकिन बात फिर भी न बनी। ग़ैर मुनज़्ज़म

और ग़ैर तरबियत याफ़्ता जंगजू फिर भी भारी पड़ने लगे तो नान नेटो मुमालिक को मिला लिया गया। दस मज़ीद पार्टनर्ज़ के आने से बात 36 तक जा पहुंची। अब तो ज़मीन के अलावा किसी और सय्यारे को रौंदना भी मुम्किन था......लेकिन मालूम हुआ कि अफ़ग़ानिस्तान क़ौम जब से मुसलमान हुई, चीज़ें दीगरास्त। चुनांचे सात के करीब नान नेटो और नान पार्टनर्ज़ भी आ पहुंचे। उनमें "बी मैन्डकी को भी जुकाम हुआ" के मिस्दाक़ सिंगापूर जैसे नाग के झपट्टे भी शामिल हैं और न्यूज़ीलैंड जैसे दूर दराज़ वाक़े भगोड़े गोरे जिनका तालिबान से कोई सरोकार नहीं, भी मौजूद हैं। इन 43 मुमालिक के बाद खुद अपना मुल्क अफ़ग़ानिस्तान भी ख़िलाफ़ है। हज़रत तालूत के कलील लशकर का जालूत के मुत्तहिद लशकर से मुक़ाबले के बाद, बदर और अहज़ाब के बाद, अय्यूबी की सलीबी जंगों के बाद, इंसानी तारीख़ में किसी ने ऐसा मंज़र देखा होगा कि एक तरफ़ तो 44 मुमालिक और दूसरी तरफ़ कोई मुल्क नहीं, फ़ौज नहीं, मुनज़्ज़म ताकत नहीं, बिखरी हुई "लाहूत लामकान" में रहने वाली जमाअत जिस का कोई फ़र्द सरे आम अपनी शिनाख़्त भी नहीं करवा सकता......लेकिन उसकी खुद एतिमादी का हाल यह है कि पूरी दुनिया की ख़ौफ़नाक तरीन अस्करी ताक़तों की उसे ज़र्रा बराबर परवाह नहीं। "दम मस्त कलंदर" का नारा लगाते तो बहुत से लोग हैं लेकिन निभाया उसे किसी किसी ने ही है।

कामयाबी का राज़

दूसरा सवालः हज़रत मेहदी की जद्दो जेहद क्या होगी और किस तरह होगी?

हज़रत मेहदी के मुतअल्लिक़ दूसरा अहम सवाल यह है कि ज़ुहूर के बाद उनकी जद्दो जहद की नौइयत क्या होगी और जो कुछ वह करेंगे वह उनके लिये क्योंकर मुम्किन होगा? बैअ़ते जिहाद के बाद क़्यामे ख़िलाफ़त तक उन्हें दुनिया भर की तरक़्क़ी याफ़्ता तरीन ताक़तों से जिस क़्यामत ख़ेज़ मअरका आराई का सामना होगा, उसकी गर्मी से वह क्योंकर सुरख़ुरू होकर निकलेंगे? जबकि आज की दुनिया में सियासी, फ़िक्री, मआशी, अस्करी ग़र्ज़ हर सतह पर ताग़ूती ताक़तें नाक़ाबिले शिकस्त तौर पर ग़ालिब नज़र आ रही हैं। ज़मीन पर और समंदरों में उनकी हुक्मरानी है। फ़िज़ा और ख़ला में उनही बरतरी का शोर है। बज़ाहिर ऐसी कोई सूरत मुस्तक़बिले क़रीब में दूर दूर तक नज़र नहीं आती कि मुसलमान इस ग़ल्बे के तिलस्म को तोड़ सकेंगे? एक एक मल्टी नैशनल कम्पनी का बजट कई मुस्लिम मुल्कों से ज़्यादा है। एक एक थिन्क टैंक ऐसा है कि अकेला ही मग़रिब को सौ साल की मंसूबाबंदी करके दे रहा है। इत्तिहाद भी उनमें ऐसा है कि अमरीका और रूस आपस में रिवायती दुश्मनी और

बोअदल मुश्रिकीन का अमली मिस्दाक़ होते हुए भी पाकिस्तान की मुख़ालिफ़त में बेग़ैर किसी की तरग़ीब के खुद बखुद इकट्टठे हो जाते हैं। फिर दूसरों का तो कहना ही क्या, उनका इत्तिहाद तो वजूद में ही "दहशतगर्दी" के ख़ातमे और "आलमी हुकूमत" के क़्याम के लिये आया है। दुनिया भर की मेआरी तरीन यूनिवर्सिटियां मग़रिब में हैं। अमरीका में 5758 यूनिवर्सिटियां हैं। जबकि पूरी मुस्लिम दुनिया के 57 मुल्कों में यूनिवर्सिटियों की मज्मूई तादाद सिर्फ़ 500 है और पूरे आलमे इस्लाम में एक भी यूनिवर्सिटी ऐसी नहीं जिसे दुनिया की टॉप 500 यूनिवर्सिटियों में शुमार किया जा सकता हो। मग़रिबी हुकूमतें पूरी मुस्लिम दुनिया के ज़ेहन तरीन दिमाग़ों और आला तरीन हुनरमंदों को पुरकशिश मुराअत के इवज़ खींच कर अपने तिलस्म में जकड़ लेती हैं और फिर वह हमेशा वहीं का होकर रह जाता है। मुसलमानों के हाथ फ़क़त नाअहल, मफ़ाद परस्त और हुब्बुल वतनी से आरी कचरा माल ही मौजूदा ब्यूरो क्रैसी की शक्ल में बाक़ी रह जाता है। मुसलमानों में नज़्म व ज़ब्त, तालीम व तरबियत, आला अख़लाक़ियात, बुलंद नज़री, इज्तिमाइय्यत, सब्र व तक़्वा......ग़र्ज़ यह कि हर वह चीज़ जो किसी इंसानी गिरोह को क़ौम और फ़तहगर को फ़ातेह बनाती है, हर उस चीज़ की एक एक करके कमी पाई जाती है। मुसलमानों की ज़िहानत का लोहा तो आज भी दुनिया मानती है मगर यही ज़िहानत और बेमिसाल सलाहियत मग़रिब के आंगन में रौशनी फैलाने के अलावा किसी काम आके नहीं दे रही??? जूं जूं वक़्त आगे बढ़ रहा है, हर सुब्ह मग़रिब की किसी नई अनोखी तरक़्क़ी की नवीद और हर शाम मुसलमानों की मज़ीद बदहाली की ख़बरें ला रही है। इस सूरते हाल में क्या हम यह तसलीम कर लें कि हज़रत मेहदी किसी "मावराउल फ़ित्रत" कुव्वत के मालिक होंगे कि इन तमाम माद्दी कुव्वतों को तबई क़वानीन से हट कर शिकस्त देना उनके लिये मुम्किन होगा? क्या महज़ ख़िलाफ़ आदत ज़ाहिर होने

वाली करामात से वह उन तमाम साइंसी ईजादात को पामाल कर डालेंगे जिनकी मिसाल इंसानी तारीख़ में नहीं मिल रही......या उसमें उनकी और उनके साथियों की फ़िक्री, अमली और अस्करी जद्दो जेहद का अमल दख़ल भी होगा? और अगर होगा तो अचानक यह काया कैसे पलट जायेगी कि मग़रिब के हक़ में रुख़ करके चलने वाली हवाएं मश्रिक़ के मज़लूमों के लिये दादरसी की नवीद बन जायेगी???

इस सवाल का जवाब यह है कि दुनियाए कुफ़्र के इस फ़ित्नाख़ेज़ ग़ल्बे का तोड़ हज़रत मेहदी की बेलोस और अह्ले क़्यादत, और मुसलमानों की बिखरी हुई सलाहियत और मुंतशिर जद्दो जेहद दोनों मिल कर करेंगी। इसमें शक नहीं कि हज़रत मेहदी के हाथ पर अल्लाह तआला मुहैयरूल उक़ूल करामात को भी ज़ाहिर फ़रमायेगा लेकिन उनकी जो सबसे बड़ी करामत होगी वह यह कि जब वह अपने साथियों को गुनाहों से सच्ची तौबा करवा कर मिटी हुई सुन्नतों को ज़िंदा करेंगे तो इसकी बरकत से उनके तमाम साथियों को यक्सूई और यक फ़िक्री नसीब हो जायेगी। इन सब की सोच एक, फ़िक्र ही नहीं, अंदाज़े फ़िक्र भी एक और तर्ज़े अमल भी एक होगा। उनके दिल से हसद व बुग्ज़, कीना व इनाद निकल जायेगी। वे बाहमी इख़्तिलाफ़ात और अमीर की नाफ़रमानी की नुहूसत से आज़ाद हो जाएंगे। वे जीने मरने में हज़रत मेहदी की कामिल इताअत करेंगे और मौत को सामने देखकर भी मुंह नहीं मोड़ेंगे। मौत से मुराद तबई मौत ही नहीं होती, तबीअत की मौत भी होती है। यानी बहुत से लोग कुर्बानियां दे रहे हैं। मौत को ख़ुशी ख़ुशी गले लगा रहे हैं लेकिन बात जब नफ़्स की मौत की आती है तो वह उस पर वैसा ग़ल्बा नहीं पा सकते जैसा कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 ने हज़रत उमर रज़ि0 की इताअत करते हुए इस नबवी तरबियत का मिसाली मुज़ाहिरा किया था। हज़रत मेहदी की

बेनफ़्सी और इज्तिमाई मक़सद के हुसूल की लगन और इस लगन में फ़नाइय्यत इस क़दर वाज़ेह होगी कि तमाम रूए अर्ज़ के सालेह मुसलमान अपने आप को मिटा कर अपना सब कुछ बनाके सौंप देंगे और उन पर वैसा एतिमाद करेंगे जैसा कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी पर उस दौर के मुसलमानों ने किया था। तारीख़ के तलबा पर यह बात मख़्फ़ी नहीं होनी चाहिये कि पूरे यूरप की मुत्तहिद सलीबी अफ़वाज के मुक़ाबले में सुलतान की अपनी फ़ौज (मिस्र व शाम की फ़ौज) कुछ इतनी ज़्यादा न थी, अलबत्ता मुख़्तलिफ़ इलाक़ों से आए हुए मुजाहिद क़बाइल जब उनको देखते कि वे मैदाने जंग में घोड़े पर सवार एक जानिब से दूसरी जानिब तक यूं चक्कर लगा रहे हैं जैसे इक्लौते बच्चे की मां उसकी तलाश में बोलाई बोलाई फिरती है। आंखों में आंसू हैं और ज़ुबान पर एक ही नारा है: "يـــا لـلاسـلام، يـــا لـلاسلام!" ऐ मुसलमानों! इस्लाम की मदद करो। ऐ मुसलमानों! इस्लाम की ख़बर लो।" तो यह क़बाइल जो अपनी असबियत, सरकशी और इंफ़िरादी मिज़ाज में मशहूर थे, सब कुछ छोड़ छाड़ कर सुलतान के साथ जीने मरने का अहद कर लेते थे और तारीख़ गवाह है कि सुलतान के पास ख़र्च न होता तो अपने ख़र्च पर, अपने अस्लहे से, जी जान से मैदान में डटे रहते थे और सुलतान का साथ छोड़ कर जाने का कुफ़्र व इर्तिदाद से ज़्यादा सख़्त आर वाली बात समझते थे। उनको यक़ीन था कि अगर शिकस्त हुई तो सुलतान उनको छोड़ कर भागेगा नहीं और अगर फ़तह हुई तो उसके फ़वाइद सुलतान ख़ुद हर्गिज़ नहीं समेटेगा बल्कि यह सारे समरात व नताइज इस्लाम की झोली में जायेंगे। कोई क़्यादत अपने कारकुनों को यह यक़ीन दिल दे तो ख़ुदा की क़सम! काया पलटने में इतने ही दिन लगेंगे जितने क़ाइद को अपनी बेनफ़्सी और इस्लाम के लिये फ़िदाइय्यत व वफ़ाइय्यत साबित करने में लगते हैं।

हज़रत मेहदी की कामयाबी का राज़ यही होगा कि वह बैअत से

पहले ही क़्यादत की इस मुमताज़ सिफ़त को साबित कर देंगे (इसकी तफ़सील पहले गुज़री है) तब दुनिया भर में बिखरे हुए क़ाबिल व लायक़ उलमा, तलबा (या तालिबान), मुजाहिदीन, इंजीनियर, डॉक्टर, प्रोफ़ेसर, साइंसदान, सरमायादार, इन्तिज़ाम के माहिर, अस्करियत से वाक़िफ़......ग़र्ज़ यह कि महारतों के हामिल अफ़राद अपना सब कुछ इस्लाम की ख़ातिर उनके क़दमों में ला डालेंगे और दिल से उनकी कामिल इताअत करते हुए अपने आप की, अपनी अना की, अपनी ख़्वाहिशात और मिज़ाजों की इन्फ़िरादियत की मुकम्मल नफ़ी कर डालेंगे। यह वह यादगार मंज़र और वह मुबारक रूहानी कैफ़ियत होगी जो बदर से पहले सहाबा किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम से मशवरे के दौरान आसमान ने देखी थी, जिस ने "हतीन" के मअरके से क़ब्ल अय्यूबी की आंखें ठन्डी की थीं और जिसे नाटो और नान नैटो मुमालिक का इत्तिहाद आज आंखों से देख रहा है और जिसे दुनिया एक बार फिर बिलआख़िर आख़िर मअरके से क़ब्ल देखेगी और जब देखेगी तो सारे स्टाइल और हीरोशिप, सारी चौकड़ियां, उड़न खटोलियां, सारी परवाज़े भूल जाएगी।

"अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तानी कबाइली इलाक़ों में लड़ाई के शर्तें इख़्तियार करने के बाद आलमी तज्ज़िया निगारों ने यह कहना शुरू कर दिया है कि दहशतगर्दी के ख़िलाफ़ जंग का आठ साल गुज़रने के बाद अब यह वाज़ेह हो रहा है कि जंग दरअसल इत्तिहादी नहीं बल्कि अलक़ाइदा और तालिबान जीत रहे हैं। इसी तनाज़ुर में यूरप के कई आला उहदेदारों ने अलक़ाइदा के साथ अमन मुआहिदों के लिये राह हमवार करना शुरू कर दी है। नार्वे के दारुल हुकूमत उसूलो से शाए होने वाले मक़ामी अख़बार "डाक्स उवैसन" ने लिखा है कि नार्वे शायद अब मुस्लिम गुरूपों से अपने तअल्लुक़ात बेहतर बनाने की पॉलिसी पर अमल कर रहा है। अख़बार का मज़ीद कहना है कि जब नाइब वज़ीरे ख़ारजा से इस बारे में पूछा गया कि क्या वह

दहशतगर्दी के ख़िलाफ़ जंग से पीछे हट रहे हैं? तो उनका कहना था कि दरअसल दोस्तों के साथ तो अमन और मुज़ाकिरात चलते ही रहते हैं मगर हक़ीक़ी अमन के लिये उन लोगों के साथ भी अमन मुज़ाकिरात होने चाहियें जिन्हें आप अपना दुश्मन क़रार देते हैं। नाइब वज़ीरे ख़ारजा राए मौनडेव हानसन का कहना था कि वह इस मामले में तन्हा नहीं हैं बल्कि दीगर यूरपी मुमालिक भी यह ख़्वाहिश रखते हैं। वाज़ेह रहे कि इससे कुछ ही क़ब्ल स्वीटज़रलैंड भी इस ख़्वाहिश का इज़हार कर चुका है कि वह अलक़ाइदा और उसामा बिन लादिन से मुज़ाकिरात और अमन मुआहिदा करना चाहता है और इस सिलसिले में किसी भी इब्तिदाई इक़्दामात के लिये बिल्कुल तैयार है। वह नहीं चाहता कि अमरीका की वापसी के बाद इन्तिक़ामी कारवाइयों का निशाना बने।"

तीन ख़ुशनसीब तबक़े

चंद साल क़ब्ल बन्दा एक मज्लिस में कुछ नौजवानें से गुफ़्तगू कर रहा था। बात आलमें इस्लाम के हालात और मुसलमानों का दरपेश हमाजेहत मअरका आराई के हवाले से उनके किर्दार की तरफ़ मुड़ गई। एक साहब ला तअल्लुक़ से बैठे थे। नौजवान मायूसी की बातें करते, इम्कानियत के फ़ुक़्दान का शिक्वा करते और मैं उन्हें हौसला दिलाता कि सफ़र एक हज़ार मील का हो तो फिर भी शुरू एक क़दम से ही होता है। इतने में इन बड़े साहब से न रहा गया। बन्दा से मुख़ातिब होकर बोलेः

"मौलाना साहब! आप बच्चों को वैसे ही वरग़ला रहे हैं। सीधे साधे मान क्यों नहीं लेते कि आप सूरए फ़ील पढ़ कर फूंकने से मैदान नहीं मार सकते। मग़रिब बहुत आगे जा चुका है। आप के तसव्वुर से भी बहुत आगे।"

"आप मग़रिब को जितना आगे देख रहे हैं, हम उसको इससे भी बहुत आगे देख रहे हैं। मौजूदा ज़माने के मालूमाती इंसानों के तसव्वुर भी आगे, काफ़ी आगे जाते हुए देख रहे हैं। जब तक मग़रिब की मस्नूई ताक़त, फ़ितरी कुव्वतों से आगे (बज़ाहिर न हक़ीक़त में) न जाएगी, आख़िरी मअरका ही बरपा न होगा। और आख़िरी मअरका को सूरए फ़ील वाले ही जीतेंगे बशर्तिया कि उनको सूरए

कहफ़ भी याद हो।"

मुहतरम मौसूफ़ तो हक्का बक्का होकर बंदा की शक्ल देखने लगे कि यह कैसा झरलो घुमाओ किस्म का आदमी है? बात को कहां से कहां फेर देता है? उनको तो कुछ न सूझी अलबत्ता जिन नौजवानों से गुफ़्तगू चल रही थी, उनमें से एक बोलाः

"जनाब शाह साहब! लगता तो यही है अगर हज़रत मेहदी भी आ जाएं तो उनको हालात सुधारने में बहुत अर्सा लगेगा।"

"न मेरे अज़ीज़ ना! चंद साल भी न लगेंगे। इसलिये कि मग़रिब की चकाचौंध जो आप को नज़र आ रही है, उसमें मुसलमानों का खून पसीना शामिल है तो यह चिराग़ जल रहे हैं। अब मग़रिब अपनी इस कामयाबी के पीछे मुस्लिम दुनिया के क़ाबिल तरीन दिमाग़ों और मेहनती तरीन बा कमाल हुनरमंदों की मौजूदगी का एतिराफ़ करे या न करे बल्कि उनकी मेहनत पर भी अपनी ट्रेडमार्क लगा ले......लेकिन एक दुनिया जानती है कि मुसलमान अपनी क़्यादत की तरफ़ से हौसला अफ़ज़ाई और एतिराफ़ व तहसीन न होने की वजह से मग़रिब की चांद गाड़ी का अपनी सलाहियतों से ईंधन दे रहे हैं। गोरों में इतने जीन्स नहीं पैदा होते जितनें हम में......हमसे मुराद आलमे इस्लाम और बिलख़ुसूस पाकिस्तान है......पैदा होते हैं। जब इज्तिमाइय्यत की पुरख़ुलूस आवाज़ लगेगी और क़्यादत का बेलोसपन सामने आएगा तो यह सब दौड़े दौड़े आएंगे तब आप गर्मिये बाज़ार देखियेगा।"

"लेकिन आप तो एक मज़मून में कह रहे थे कि दुनिया में इस वक़्त मुख़्तलिफ़ उलूम व फ़नून में ख़ुसूसन जीनयाती और अस्करी साइंस में यहूदियों का बहुत बड़ा हिस्सा है। उनके नोबल इन्आम याफ़्ता साइंसदानों की खेप है जो उनको दज्जाल की क़्यादत में दुनिया पर ग़ल्बा दिलाने और मौत पर भी क़ाबू पाने के लिये काम कर रही है।"

"यह बात आप ने खूब उठाई है। दुनिया की तारीख़ को यक्सर तबदील कर देने वाली हर ईजाद के पीछे यहूदी हैं। मसलनः माइक्रो प्रोसेसिंग चिप" के पीछे स्टेनले। न्यूक्लियर चीन रिएक्टर के पीछे लियो। ऑपटिकल फ़ाइबर कैवल के पीछे पीटर। ट्रेफ़िक लाइट के पीछे चारलीस एडलर। स्टैनलैस स्टील के पीछे बैनौस्टर्स। वीडयो टेप के पीछे चार्ल्स किन्सरबर्ग .....यहूद ने माइन्ड कंट्रोल टेक्नोलोजी हासिल की है जिस से वह इंसानी ज़ेहनों को अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ फेरने की सलाहियत किसी कदर हासिल कर चुके हैं। यह दज्जाल का सबसे बड़ा हथियार होगा। इसका नाम ऐम के अल्ट्रा है। सी आई ए जैसे इदारे के डायरेक्टर सीलन फील्ड ने 1977 में सरे आम तसलीम किया था कि लाखों डालर्ज़ जादू टोने, नफ़सियात और रूहानियात के मुतालआ पर ख़र्च किये गये हैं। मौसीकी की धुनों में "बेक ट्रेकिंग" के ज़रीये बेहूदा शैतानी पैग़ामात (मसलनः Kil your Mum) रीवर्स ट्रेक में छिपा कर पूरी दुनिया में नश्र किये जा रहे हैं। 1940 ई० में एक अमरीकी यहूदी साइंसदान निकोला टीसलाने" "मौत की शुआएं" (Deat hray) ईजाद करने का ऐलान किया। 1987 ई० से यहूदी साइंसदानों की सरबराही में ज़मीन की क़ुदरती गर्दिश को मुतअस्सिर करके "ज़मीन की नब्ज़" से छेड़छाड़ की कोशिशें शुरू हैं हत्ताकि ज़मीन का मक़्नातीसी मैदान ख़त्म हो जाएगा और उसकी गर्दिश थम कर हदीस शरीफ़ में बयानकर्दा ज़ुहूरे दज्जाल की अलामात के मुताबिक़ सुस्त हो जाएगी। एक दिन एक साल के बराबर, फिर एक दिन एक माह के बराबर, फिर एक दिन एक हफ़्ते के बराबर होगा। ऑक्सफ़ार्ड की प्रोफ़ेसर सूस गिरीन फ़िल्ड ने कहा है कि इंसानी दिमाग़ की पूरी मैमोरी कम्प्यूटर में फीड करना मुम्किन हो चुका है। इस प्रोफ़ेसर साहिबा ने अगले मरहले का इन्किशाफ़ नहीं किया। वह हम फ़क़ीर किये देते हैं। अगला अमल इसका अक्स होगा यानी किसी कम्प्यूटर की मैमूरी

किसी इंसानी ज़ेहन में आप लोड कर दी जाएगी ताकि सुपरमैन (अद्दज्जालुल आज़म) का रास्ता हमवार हो जाए जो क़तई तौर पर ग़ैर फ़ानी लगेगा। यहूदी साइंसदानों ने इंसानी जीनयाती कोड पढ़ लिया है। तीन अरब हुरूफ़ का इम्तिज़ाज है। मज़कूरा कामयाबी को इंसानी तारीख़ की सबसे बड़ी कामयाबी क़रार दिया गया है। यह सब मुहैयरूल उक़ूल क़िस्म की ईजादात अपनी जगह......लेकिन जब हज़रत मेहदी आएंगे तो सालेह और क़ाबिल मुसलमानों के अलावा (लगता है) दो क़िस्म के तब्क़े उनके साथ शामिल हो जाएंगे।

1) एक तो वह यहूदी जो आजकल की मुतअस्सिब सियासी यहूदियत यानी सेहवनियत से बेज़ार हैं। (सेहवनियत से मुराद सियासी इस्राईलियत है। इसलिये सहीवनी हर वह शख़्स है जो इस्राईल का हामी हो, चाहे वह ग़ैर यहूदी हो या ग़ैर इस्राईली) उनके ख़्याल में जब "मसीहा" की क़्यादत में यहूदी रियासत का क़्याम और यहूदियत का आलमी ग़ल्बा होगा, वही यहूद को तारीख़ी ज़िल्लत से नजात दिलायेगा, तो इस्राईल के क़्याम के लिये लाखों फ़िलस्तीनियों का घर से बेघर करने और उसके इस्तिहकाम के लिये हज़ारों को क़त्ल करने और करते रहने की ज़रूरत ही क्या है? क्यों न हम मसीहा का काम उसके ज़िम्मे छोड़ दें और इस मक़सद के लिये अपने यहूदियों को न मरवायें जो वह मसीहा की आमद से पहले हासिल कर ही नहीं सकते। यह मोअ़तदिल फ़िर्क़ा "हसीदी" कहलाता है। यह इसका क़दीम नाम है। इनका जदीद नाम "हैरेडी" है। यह इंतिहाई क़दीम मज़हबी यहूदी हैं जिनके असल मराकिज़ न्यूयार्क और लंदन हैं। उनको यक़ीन है कि सहीवनी तहरीक ने जो इस्राईल क़ायम किया है वह दरहक़ीक़त "नफ़रत की रियासत" का वह ख़ित्ता है जिस में तौरात की पेशगोई के मुताबिक़ यहूदी आख़िरी ज़माने (एन्ड ऑफ़ टाइम) में आकर इकट्ठे होंगे और अल्लाह के ग़ज़ब व इन्तिक़ाम का शिकार होकर नाबूद हो जाएंगे।

रबाई हर्श उनका मशहूर मज़हबी रहनुमा है। अरफ़ात की फ़लस्तीनी अथारिटी में यहूदी मुआमलात का तो वज़ीर रखा गया था वह इसी तब्के से तअल्लुक रखता था। मशहूर फ़लसफ़ी और माहिरे लिसानियत नौम चौमस्की, अगरचे इस फ़िर्के से नहीं लेकिन वह उसके नज़रिये को तसलीम करते हैं। वे भी "ग़ैर सहीवनी" यहूदी हैं। यानी वह मज़हबी तौर पर इस बात के क़ाइल नहीं लेकिन ग़ैर मज़हबी सियासी तौर पर इस नुक्ताए नज़र को तसलीम करते हैं। बरतानिया में मुख़्तलिफ़ मवाक़े पर इस फ़िर्के के लोग फ़िलस्तीनियों पर इस्राईली मज़ालिम के ख़िलाफ़ अपना रद्दे अमल रिकार्ड करवाते रहे हैं। हज़रत मेहदी जब ज़ाहिर होंगे और यहूदियों के गुमकर्दा मुक़द्दस आसारे क़दीमा यानी ताबूते सकीना, असाए मूसवी, अलवाहे तौरात के टुक्ड़े, माइदए बनी इस्राईल, मन्न व सलवा के मख़सूस बर्तन, तख़्ते दाऊदी (यह गुमशुदा नहीं, मुल्के बरतानिया की कुर्सी में नस्ब है। तफ़सील के लिये देखिये: बंदा की किताब "अक़्सा के आंसू") को बरआमद कर लेंगे तो यह मोअ़तदिल मिज़ाज यहूदी अपनी ईसा पसंदी की बिना पर हज़रत पर ईमान ले आयेंगे। इनको यक़ीन हो जाएगा कि हमारे बड़ों ने अपने गुनाहों और बदआमालियों की नहूसत से जिस चीज़ को गुम किया, उसको दरयाफ़्त करने वाला ही आख़िरी मसीहा (हज़रत मुहम्मद सल्ल0) का पैरूकार और सच्चे मसीह (हज़रत ईसा अलै0) का साथी है। ताबूते सकीना को देखकर चंद यहूदियों के ईमान लाने का ज़िक्र हदीस शरीफ़ में है अलबत्ता उनकी इस मज़कूरा बाला फ़िर्के पर तत्बीक़ बंदा की ख़्याली काविश है। यह यहूदी अपने साथी तो सरमाया और टेक्नोलोजी लेकर मुसलमानों से आ मिलेंगे, इससे मुसलमनों की माद्दी ताक़त भी "किसी हद तक" बेहतर हो जाएगी।

चंद साल की बात बंदा ने इसलिये की है कि हज़रत मेहदी अपने ज़ुहूर के बाद (जो चालीस साल की उम्र के लगभग होगा) सात

साल तक दुनिया की तीन बड़ी कुफ़्रिया ताक़तों में से दो के ख़िलाफ़ जिहाद फ़रमायेंगे। कुफ़्रिया ताक़तों और ईसाइयों के ख़िलाफ़ शानदार फ़तह हासिल करेंगे। अब पीछे सिर्फ़ यहूदी रह जाएंगे। आठवें साल दज्जाल ज़ाहिर होगा और मुसलमानों की किल्लत और ईसाइयों की शिकस्त से फ़ित्नए यहूद उरूज पर पहुंच जायेगा जो दरहक़ीक़त शैतानी ताक़तों का फ़ित्ना है। इसी साल हज़रत ईसा अलै० नुज़ूल फ़रमायेंगे। नवां साल दज्जाल के क़त्ल और "शर के घर" इस्राईल के ख़ातमे के बाद मुस्तहकम तरीन आलमी इस्लामी ख़िलाफ़त के क़याम और इस्तिहक्काम का होगा। 49 साल की उम्र में हज़रत मेहदी इन्तिक़ाल कर जायेंगे। हज़रत ईसा अलै० उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर बैतुल मुक़द्दस में उनको दफ़्न फ़रमाएंगे। इसके बाद हज़रत ईसा अलै० 38 साल तक ज़मीन पर रहेंगे। इस तरह हज़रत मेहदी ज़ुहूर के बाद ज़मीन पर नौ साल रहेंगे। हज़रत ईसा अलै० से पहले हज़रत मेहदी सात साल और वफ़ाते मेहदी के बाद हज़रत ईसा अलै० अढ़तीस साल दुनिया में रहेंगे। बीच के दो साल दोनों क़ाइदीन इकट्ठे गुज़ारेंगे।

2) इस तफ़सील के बाद अब हम उस दूसरी क़ुव्वत का तज़किरा करने के क़ाबिल हो गए हैं जो अपनी टेक्नोलोजी और सरमाए से मुसलमानों को दरकार माद्दी ताक़त की कमी पूरी करेगी। यानी वे ख़ुशनसीब ईसाई हज़रात जो रहमदिल हैं और इंसानियत की ख़िदमत इख़्लास से करते हैं। वे हज़रत ईसा अलै० के मुसलमानों की जिहादी जमाअत में नुज़ूल के बाद उनको भी "दहशतगर्दी का ताना" देने के बजाए उन पर ईमान ले आएंगे। उन्हें यह सआदत उनकी रिवायती रहमदिली और इंसाफ़ पसंदी के सबब मिलेगी। ये लोग यूरप और अमरीका की हैरानकुन साइंसी ताक़त में से "कुछ हिस्सा" का लफ़्ज़ जानबूझ कर इस्तिमाल किया है। यह इस वजह से कि मुसलमानों की कामयाबी की असल टेक्नोलोजी बातिन में बुग्ज़ व

हसद के ख़ातमे और ज़ाहिर में तक़्वा व जिहाद के अपनाने में है। यानी ऐसा नहीं होगा कि मुसलमान भी साइंस व टेक्नोलोजी और असकरी व मआशी वसाइल में इस हद तक पहुंच जायेंगे कि कुफ़्र के ग़ल्बे का माद्दी ताक़त के ज़रीए ख़त्म कर दें। न मेरे मुहतरम भाइयो ना! ऐसा नहीं होगा। ग़ज़वात हमेशा ग़ैर मसावी ताक़तों के दरमियान लड़े गये हैं। अल्लाह वालों और शैतानी कुव्वतों में ज़ाहिरन ज़मीन आसमान का फ़र्क़ रहा है। अगर ऐसा न हो तो हक़ और बातिल की तरक़्क़ी और फ़तह के पैमाने तो एक जैसे हो जायेंगे। अल्लाह की नुसरत और कुदरते कामिला का मुसलमानों के हक़ में ज़ुहूर का वक़्त फिर कब आयेगा?

अब भी वक़्त है!

कुछ बातें फ़क़ीर लोग अपनी मौज में कह देते हैं। अभी सुनने वाले यही सोच रहे होते हैं कि इसका मतलब क्या है और सोंस क्या है? कि इतने में उनकी तसदीक़ खुली आंखों सामने आ जाती है। पिछले मज़मून में बंदा के क़लम से ये जुम्ले निकल गये थे: "1987 ई0 से ज़मीन की कुदरती गर्दिश को मुतअस्सिर करके "ज़मीन की नब्ज़" से छेड़छाड़ की कोशिशें शुरू हैं हत्ताकि ज़मीन का मक़्नातीसी मैदान ख़त्म हो जाएगा और उसकी गर्दिश थम कर हदीस शरीफ़ में बयानकर्दा ज़ुहूरे दज्जाल की अलामात के मुताबिक़ सुस्त हो जाएगी। एक दिन एक साल के बराबर, फिर एक दिन एक माह के बराबर, फिर एक दिन एक हफ़्ते के बराबर होगा।"

ये जुम्ले बंदा ने किस तनाज़ुर में कहे थे? पहले इसे समझ लें तो आगे चलते हैं। हदीस शरीफ़ में आता है: "क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक पहाड़ अपने मर्कज़ से हट न जायेंगे।" इस तरह हदीस शरीफ़ में है कि क़्यामत के क़रीब सूरज मग़रिब से तुलू होगा। जब यह निशानी ज़ाहिर हो जाए तो तौबा का दरवाज़ा बंद कर दिया जाएगा। इसके बाद कोई ईमान लाए या तौबा करना चाहे तो मक़्बूल न होगी। जब हम फ़ल्कियात पढ़ते पढ़ाते थे (अक्सर क़ारईन के इल्म में होगा कि जामिअतुर्रशीद में इस इल्म पर ख़ुसूसी तवज्जोह दी जाती है। हमारे शोबा फ़ल्कियात की तहक़ीक़ात

को दुनिया के मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम के नामवर माहिरीने फ़ल्कियात क़द्र की नज़र से देखते और सौ फ़ीसद क़ाबिले एतिमाद समझते हैं) फ़ल्कियात में जब क़िब्ला रखने की बहस आती है तो आम लोग "क़ुतुब नुमा" को इस्तिमाल करते हैं। जबकि हमारे हां उसे क़ाबिले एतिमाद ज़रीआ नहीं समझा जाता। इसलिये कि क़ुतबीन के पास मौजूद मक़्नातीसी लहरों का देवहैकल ज़ख़ीरा अपना मक़ाम बदलता रहता है जिस से क़ुतुब नुमा की सूई मुतअस्सिर होती है। (तफ़सील के लिये देखिये: अहसनुल फ़तावा, जि0:2, स0:347) बाज़ लोग तो मुरव्वजा "क़िब्ला नुमा" इस्तिमाल करते हैं जबकि यह "क़ुतुब नुमा" से भी ज़्यादा मख़्दूश ज़रीआ है। इसमें दस से बारह दर्जे का नुमायां फ़र्क़ पाया जाता है। लिहाज़ा अवाम को चाहिये कि मसाजिद का क़िब्ला रखते वक़्त या जांच करवाते वक़्त मुस्तनद उलमा से राबता करें। ख़ुद से इस फ़न के शनावर बनने का दावा न करें जिस की अब्जद से भी आम लोग वाक़िफ़ नहीं होते।

यह तो एक बात हुई दूसरी बात यह कि क़्यामत के क़रीब सूरज मग़रिब से तुलू होगा? उसकी फ़ल्कियाती तौजीह करते हुए दिमाग़ चकरा जाता था। ज़मीन तो वैसे ही "चकराती गोला" है लेकिन जब आप तलबा को इस चकराहट की तशरीह समझाना शुरू करते हैं तो थोड़ी देर के लिये दिमाग़ चक्कर खाके रह जाता है। इसकी आसान तशरीह सोचते सोचते और इस बारे में अर्ज़ियाती साइंस का मुतालआ करते करते वह बात हाथ लगी जो पिछले कालम में बरसबील तज़किरा आ गई थी और जिस की तसदीक़ इस चौंका देने वाली ख़बर से हो रही है जो इसी हफ़्ते सुर्ख़ियों के साथ पूरी दुनिया के बासियों को अपनी तरफ़ मुतवज्जोह कर रही है लेकिन अफ़सोस कि इसके पसपर्दा मक़ासिद पर कम ही लोग तवज्जोह देंगे। अब पहले एक नज़र इस ख़बर और इसमें मज़कूर इस तजरबे के मक़ासिद और मुतवक़्क़े ख़तरात पर, फिर इंशाअल्लाह वे नताइज

जिनसे हदीस शरीफ़ की पेशगोई पूरी होती नज़र आती है। यह ख़बर 11 सितम्बर 2008, बरोज़ जुमेरात मुल्क के तमाम क़ौमी अख़बारात में छपी है:

"न्यूकलियाई रिसर्च के यूरपी इदारे "सरन" के ज़ेरे एहतिमाम दुनिया में तबइय्यात का सबसे ताक़तवर तजुर्बा शुरू हो गया है जिसका मक़्सद काइनात की तख़्लीक़ का राज़ जानना है। दुनिया में तबइय्यात का सबसे ताक़तवर तजुर्बा जिसके बारे में तीन दहाइयां क़ब्ल सोचा गया था [तसदीक़ मुलाहिज़ा हो। बंदा ने अपने मज़मून में 1987 ई० लिखा था जो आज (2008 ई०) से पूरी तीन दहाइयां क़ब्ल बनती है] 27 किलोमीटर लम्बी सुरंग में ज़र्रात की पहली बीम या शुआ छोड़ दी गई है। पांच अरब पाउंड लागत से तैयार होने वाली इस मशीन में ज़र्रात को दहशतनाक ताक़त से आपस में टकराया जाएगा ताकि नई तबइय्यात में तबाही की अलामतों को आशकारा किया जा सके। इस तजरबे का बुन्यादी मक़्सद काएनात में बिग बैंग से चंद साने बाद के हालात को अज़सरे नो तख़्लीक़ करना है। फ़्रांस और स्वीटज़रलैंड की सरहद के नीचे खोदी गई इस बहुत बड़ी सुरंग में एक हज़ार सिलन्डर की शक्ल के मक़्नातीसों को साथ साथ रखा गया है। इन मक़्नातीसी सिलन्डरों से प्रोटॉन ज़र्रात की एक लकीर पैदा होगी जो सत्ताईस किलोमीटर तक दाएरए की शक्ल में बनाई गई सुरंग में घूमेगी। सुरंग में प्रोटॉन ज़र्रात के टकराने से दो लकीरें पैदा होंगी जिन्हें इस मशीन के अंदर रौशनी की रफ़्तार से मुख़ालिफ़ सिम्त में सफ़र कराया जाएगा, इस तरह एक सिकेण्ड में ये लकीरें ग्यारह हज़ार जिस्त मुकम्मल करेंगी। बी बी सी के मुताबिक़ साइंसदान काइनात के वजूद में आने की थियोरी "बिग बैंग" के हालात को जानने के लिये जो तजरबा कर रहे हैं, इसके हवाले से कुछ नाक़दीन ने ख़दशा ज़ाहिर किया है कि इस तजरबे के नतीजे में कहीं वह कैफ़ियत पैदा न हो जाए जिसे "ब्लैक होल"

कहते हैं। ब्लैक होल उस वक़्त ख़तरनाक होता है जब उसकी ज़िंदगी और तवानाई काफ़ी ज़्यादा हो। फिर उसमें चीज़ों को अपनी जानिब खींच सकने की सलाहियत होती है।"

ख़बर के आख़िर में साइंसदानों ने जो ख़दशात ज़ाहिर किये हैं, हक़ीक़त में बात इससे आगे की है। काएनात को तसख़ीर करने का जो मन्सूबा "यहूदी बिग बिरादर्ज़" ने बनाया है, यह तजरबा इसका हिस्सा है। इसमें जो 80 साइंसदान (बशमूल दो पाकिस्तानियों के जो ताली बजाने पर इक्तिफ़ा कर रहे थे) शरीक हैं, उनकी अक्सरियत यहूदी है। इस पर जो दस अरब डालर सरमाया ख़र्च हुआ है, वह यहूद का कमाया हुआ सूद है। ये दरअसल करना क्या चाहते हैं? ये झूटे ज़मीनी ख़ुदा (मसीह काज़िब, अद्दज्जालुल अक्बर) के ज़ुहूर से क़ब्ल ज़मीन को इतना मुसख़्ख़र कर लेना चाहते हैं कि इसकी गर्दिश, इससे पैदा होने वाले मौसम, बारिशें, हवाएं, फ़सलें, पानी, नबातात, जमादात व जंगलात......ग़र्ज़ हर चीज़ पर उन्हें कंट्रोल हासिल हो जाए ताकि ज़मीन पर उसे ज़िंदा रहने दें जो दज्जाल को ख़ुदा माने और जो उसकी झूटी ख़ुदाई को धुतकार दे उस पर ज़मीन तंग कर दी जाए। यह दरहक़ीक़त उस इब्लीसी मिशन की तकमील है जिसके मुताबिक़ दज्जाल जिसको चाहेगा ग़िज़ा देगा, जिसको चाहेगा फ़ाक़े कराएगा। (दुनिया में ग़िज़ाई मवाद तैयार करने वाली तमाम बड़ी कम्पनियां ख़ालिस यहूदी मिलकियत हैं) जिसकी ज़मीन में चाहेगा फ़सलें उगेंगी, जिसकी ज़मीन से चाहेगा बारिश भी रोक देगा। (बीज पेटेन्ट होंगे और बारिश मस्नूई होंगी। क़ुदरती बारिश के अमल को किसी हद तक मुतअस्सिर करने का एक मुज़ाहिरा बीजिंग के हालिया ओलम्पिक गैम्ज़ 2008 ई0 में हो चुका है)

ये तो इस मंसूबे के मक़ासिद हैं। इसके नताइज क्या होंगे? वक़्त थम जाएगा और दज्जाल के ख़ुरूज की शर्त मुकम्मल हो जाएगी। मशहूर हदीस शरीफ़ के मुताबिक़ जब दज्जाल निकलेगा तो

ज़मीन पर चालीस दिन रहेगा। पहला दिन एक साल के बराबर, दूसरा एक महीने के बराबर और तीसरा एक हफ़्ते के बराबर होगा। बक़िया सैंतीस दिन आम दिनों के बराबर होंगे। इस तरह उसके दुनिया में ठहरने की कुल मुद्दत एक साल दो महीने और चौदह दिन के बराबर बनती है। बाज़ मुहद्दिसीन ने फ़रमाया था कि ये दिन हक़ीक़त में लम्बे न होंगे। परेशानी के बाइस लोगों को तवील मालूम होंगे। लेकिन अल्लामा नववी रहि0 शरहे मुस्लिम में फ़रमाते हैं कि अक्सर उलमाए हदीस के नज़दीक हदीस से इसका ज़ाहिरी मअनी ही मुराद है यानी ये दिन फ़िल वाक़े इतने लम्बे होंगे जितना कि हदीस शरीफ़ में ज़िक्र है। इस बात पर नबी करीम सल्ल0 का यह फ़रमान खुली दलील है कि बाक़ी दिन आम दिनों की तरह होंगे। मालूम हुआ कि पहले तीन दिन आम दिनों से अलग क़िस्म के होंगे। नीज़ दज्जाल का फ़ित्ना ऐसा नहीं कि उससे पैदा होने वाली परेशानी तीन दिन में ख़त्म हो जाए। बहरहाल! अल्लाह तआला उन उलमा और मुहद्दिसीने किराम को बेहतरीन जज़ाए ख़ैर दे जिन्होंने हदीस शरीफ़ को हम तक असल शक्ल में पहुंचाया और इसका जो मअनी भी क़रीने क़्यास हो सकता था, वह बयान किया। कुछ मअनी ऐसे थे जो गुज़िश्ता दौर में समझ नहीं आ सकते थे लेकिन आज उनको समझना आसान है। आइये देखते हैं कि कैसे?

समझा जाता था कि ज़मीन की गर्दिश अपने मह्वर में हर सदी के दौरान 1.4 मिली सैकेण्ड सुस्त हो रही है। इस गर्दिश के सबब दिन रात बनते हैं, लेकिन जदीद तहक़ीक़ात के नतीजे में साइंसदानों ने दरयाफ़्त किया है कि रफ़तार में यह कमी बाज़ औक़ात तेज़ी से मज़ीद गिरती है और इसके तीन बड़े असबाब हैं:

1) मुख़्तलिफ़ सय्यारों के कशिशे सिक़्ल इस रफ़तार में कमी लाने का सबब बनती है क्योंकि वे ज़मीन को अपनी तरफ़ खींचती हैं।

2) गर्दिश की रफ़्तार को सुस्त करने के अमल में हवाओं का किर्दार भी है। हक़ीक़त यह है कि फ़ौरी गर्दिश में सुस्ती लाने का 90 फ़ीसद अमल हवाओं की तबदीली ही करती है। अगर हवा की रफ़्तार बढ़ जाती है तो कुर्रहये अर्ज़ की रफ़्तार सुस्त हो जाती है।

3) तीसरा और अहम सबब Haarp नामी इदारा है। यहूदी सरमाए के बलबूते पर यहूदी साइंसदानों की ज़ेरे निगरानी चलने वाला यह इदारा मौसमों के अंदाज़ में तबदीली, ज़मीन की महवरी गर्दिश में सुस्ती लाने, नीज़ कुर्रहये अर्ज़ में ज़लज़लों के इज़ाफ़े का भी ज़िम्मेदार है। Haarp एक प्रोजेक्ट है। इसका मअनी है: "हाई फ्रिक्वेन्सी इक्टोआरोरल रिसर्च प्रोजेक्ट"......1987-92 ई0 के दौरान इस इदारे के साइंसदानों ने एक ऐसा हथियार पेटेन्ट कराया जो ज़मीन के आयूनीकुर्रह या मक़्नातीसी कुर्रह के किसी हिस्से को तबदील कर सकता है। 11/अगस्त 1987 ई0 को रजिस्टर होने वाले इस अस्करी हथियार को मशहूर यहूदी साइंसदान बरनार्ड जे इसटलेन्ड ने ईजाद किया था। 1994 ई0 में अमरीकी महकमए दिफ़ा के सबसे बड़े मिलिट्री कंट्रीकट्रज़ "ई सिस्टम्ज़" ने यह हथियार ख़रीदा और दुनिया में सबसे बड़ा आयूनी हीटर तामीर करने का ठेका लिया। यह हथियार माहौलियात दबाव पैदा करके कुर्रहये अर्ज़ की फ़ित्री कुव्वतों में रद्दो बदल और ज़लज़लों की शिद्दत में इज़ाफ़ा ला सकता है। यह रद्दो बदल दज्जाली मिशन की तक्मील और दज्जाल के ज़ुहूर को क़रीब लाने की कोशिश है। आपने देखा होगा कि गुज़िश्ता चंद सालों से ज़मीन के मौसम में ग़ैर मामूली तबदीलियां आ रही हैं। यहूदी साइंसदान माहौल (फ़िज़ा) में किस तरह दबा व पैदा करते हैं और क्या वह वाक़ई फ़िज़ा में दबा पैदा कर लेते हैं? इसका जवाब है कि वह फ़िज़ा को आयोनाइज़ या डी आयोनाइज़ करके दबाव पैदा कर लेते हैं। 1958 ई0 में वाइट हाउस के मुशीरे मौसमियात, कैप्टन हावर्ड टीओरवेल ने कहा था कि महकमए दिफ़ा जाइज़ा ले रहा है कि

वे तरीके तलाश किये जायें जिनके ज़रीए ज़मीन और आसमान में आने वाले तबदीलियों को इस्तिमाल करके मौसमों पर असरअंदाज़ हुआ जा सके। मसलनः किसी मख़्सूस हिस्से में फ़िज़ा को एक इलेक्ट्रोनिक बीम के ज़रीए आयोनाइज़ या डी आयोनाइज़ किया जा सके। यह 1958 ई0 की बात है और अब 2008 ई0 है। यहूदी साइंसदानों की ज़मीन के कुदरती निज़ाम से छेड़छाड़ और उसे अपने कब्ज़े में लेने की कोशिश बहुत आगे जा चुकी है और शायद वह वक़्त दूर नहीं जब वह कोई ऐसी हरकर करेंगे कि हमारी ज़मीन की कुदरती गर्दिश किसी "बिग बैंग" के नतीजे में शदीद मुतअस्सिर हो। वक़्त कुछ देर के लिये थम जाएगा और फिर कुछ देर बाद अपनी असली हालत पर आए। मसलन तीन दिन बाद जिनमें से पहला दिन बहुत लम्बा (महीने के बराबर) और तीसरा और कम (हफ़्ते के बराबर) हो। इस इज्माल की तफ़सील थोड़ी सी तशरीह चाहती है। आइये! इस पर एक नज़र डालें।

हमारी ज़मीन एक देवहैकल मक्नातीस है जो गर्दिश के मुख़्तलिफ़ दर्जों के साथ मक्नातीसी मैदान तख़्लीक़ करती है। ज़मीन जिस क़दर तेज़ी से गर्दिश करती है उसी क़दर ताक़तवर और कसीफ़ मक्नातीसी मैदान बनता है। एक और कुव्वत भी है जो ज़मीन की गर्दिश से बराहे रास्त तअल्लुक़ रखती है और यह "ज़मीन की गुमक का तवातुर" है। यह तवातुर बुन्यादी गुमक का तवातुर या Schumman cavity Resonance कहलाता है। दूसरे लफ़्ज़ों में इसे "ज़मीन की नब्ज़" भी कह सकते हैं। इसकी शनाख़्त 1899 ई0 में होती थी। तब से 1980 ई0 के अश्रे के दरमियान तक ज़मीन की नब्ज़ 7.8 हर्ट्ज़ या 7 साइकिल फ़ी सेकेण्ड थी लेकिन 1986-87 ई0 के बाद जब से कुर्रहये अर्ज़ की फ़िज़ा से बरनार्ड जे ईसटलेन्ड के ईजादकर्दा आलात के ज़रीए छेड़छाड़ शुरू की गई है, नब्ज़ की रफ़तार में तेज़ी आ गई है। 1995 ई0 के आख़िर तक एक अंदाज़े

के मुताबिक़ यह 8.6 हर्ट्ज़ थी और अब सुना है कि यह 10 के क़रीब पहुंच गई है। इसमें मज़ीद इज़ाफ़ा हो रहा है। मज़कूरा बाला तजुर्बे और इस जैसे मज़ीद तजुरबों से इसमें तेज़ी से इज़ाफ़ा होगा। ग़ालिब इम्कान है कि जब ज़मीन की गुमक 13 साइकिल्ज़ फ़ी सेकेण्ड तक पहुंचेगी तो एक ऐसा वक़्त आयेगा कि मक़्नातीसी फ़ील्ड ज़ीरो के क़रीब जो जाएगा। Awakening to Zero point नामी तहलकाख़ेज़ साइंसी इन्किशाफ़ात पर मब्नी किताब का मुसन्निफ़ क्रेग बरीडन इस वक़्त को "ज़ीरो प्वाइंट" कहता है जब ज़मीन का मक़्नातीसी मैदान बिल्कुल ख़त्म हो जाएगा क्योंकि हमारे सय्यारे की गर्दिश रुक जायेगी।

दज्जाल के ख़ातमे के बाद जब हज़रत मसीह अलै0 फ़ौत हो जायेंगे और दुनिया आख़िरी वक़्त के क़रीब पहुंच जाएगी तो ज़मीन कुछ लम्हों के लिये अपनी मह्वरी गर्दिश रोक देगी और फिर मुख़ालिफ़ सिम्त में अपने मह्वर पर घूमेगी तो सूरज एक दिन के लिये मग़रिब से तुलू होगा, फिर इसके बाद गर्दिश अपने मामूल पर आ जाएगी और हस्बे मामूल सूरज मश्रिक़ से तुलू होगा।

ऐन मुम्किन है कि इसका ज़ाहिरी सबब भी काइनात के फ़ित्री निज़ाम में यहूद की ग़ैर फ़ित्री मुदाख़लत की वह कोशिश हो जो वह ज़ुहूरे दज्जाल से पहले इसके इस्तिक़्बाल के लिये करते रहे। इसके कुछ असरात तो ज़मीन की गर्दिश थम कर तीन दिन तक मुतअस्सिर हो जाने से ज़ाहिर हों और कुछ अस्रात दज्जाल की हलाकत के बाद क़्यामत से ज़रा पहले ज़ाहिर हों। यह महज़ एक इम्कानी तौजीह है। इससे ज़्यादा कुछ नहीं। हर चीज़ का हक़ीक़ी सबब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का हुक्म है। वह क़ादिरे मुत्लक़ किसी ज़ाहिरी सबब का मुहताज नहीं......और अगर कोई चीज़ उसके हक़ीक़ी हुक्म का ज़ाहिरी सबब बन जाए तो यह उसकी "अम्रे कुन" की तक्मील का ज़रीआ है। न कोई चीज़ उसके क़ब्ज़ए क़ुदरत से बाहर है और न

कोई ताक़त उसकी मंशा के ख़िलाफ़ कुछ कर सकती है। ऊपर जो कुछ लिखा गया है वह यह नाक़िस समझ का नाक़िस इज़्हार है। हक़ीक़त तो अल्लाह बेहतर जानता है। यहां इस सारी तफ़्सील का मक़्सद एक याद दिहानी है। हदीस शरीफ़ में आता है तीन वाक़िआत ऐसे नमूदार होंगे जो एक दूसरे के बाद रूनुमा होंगे और फिर फ़ारिग़ वक़्त वालों के पास भी वक़्त न रहेगा। "अल्लाह के नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः जब ये तीन बातें रूनुमा होंगी तो फिर किसी ऐसे शख़्स का ईमान लाना उसको फ़ायदा न देगा जिसने पहले ईमान क़बूल नहीं किया था या उसने अपने ईमान से कोई ख़ैर का काम नहीं किया थाः

1) जब सूरज अपने गुरूब होने के मक़ाम से तुलू होना शुरू करेगा।

2) दज्जाल नमूदार होगा।

3) और ज़मीन का जानवर नमूदार होगा।"

इसी वक़्त के बारे में अल्लाह तआला ने कुर्आन पाक में फ़रमाया हैः "जिस रोज तुम्हारे रब की बाज़ मख़्सूस निशानियां नमूदार होंगी तो फिर किसी ऐसे शख़्स को उसका ईमान लाना कुछ फ़ाइदा न देगा जो पहले ईमान न लाया हो और जिसने अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई हो।" (अलकुर्आन) जब ये निशानियां नमूदार हो जायेंगी तो फिर तौबा का दरवाज़ा बंद कर दिया जायेगा। फिर ईमान लाने का कोई फ़ाइदा नहीं होगा। गोया कि हमारे पास अब भी वक़्त है। आइंदा नहीं मालूम कि यह वक़्त हमारे हाथ में रहता है या यहूद की छेड़छाड़ से थम जाता है। ऐ मेरे भाइयो! इस रमज़ान को सच्ची तौबा का रमज़ान बना लो। (यह मज़मून रमज़ान में लिखा गया था) इस मर्तबा के रोज़ों को हक़ीक़ी तक़्वा का ज़रीआ बना लो। जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह के लिये जान माल लगाने, इज़्ज़त

आबरू लुटाने का अज़्म कर लो......वर्ना किसे मालूम कि मुहलत ख़त्म हो जाए......ख़ातमे की इब्तिदा जो जाए और हम हाथ मलते रह जाएं।

जब लाद चलेगा बंजारा

हज़रत मेहदी की मुआविन तीन कुव्वतें:

अब हम असल सवाल की तरफ़ फिर लौटते हैं: हमने माना कि हज़रत मेहदी के साथ तीन तरह की कुव्वतें हो जाएंगी:

1) सालेह और क़ाबिल मुसलमान।

2) नेकबख़्त यहूदी, उनका सरमाया और इल्म।

3) सआदतमंद ईसाई और उनका तजुरबा व टेक्नोलोजी।

फिर ख़ुद हज़रत मेहदी की क़ाबिलियत, ज़िहानत, जुरअत और उनके साथ ग़ैबी नुसरत व हिदायत (यानी हर मौके पर दुरुस्त फ़ैसले की सलाहियत) भी होगी......लेकिन इस सब के बावजूद सात साल के क़लील अर्से में आख़िर किस तरह वह ताक़त कि उन पहाड़ों को जगह से हिला सकेंगे जो गुज़िश्ता दो तीन सौ सालों में मग़रिब ने थप्पी लगाकर खड़े किये हैं? इस सवाल का जवाब यह है कि ज़ाहिर में सुन्नत की कामिल इत्तिबा और बातिन में रब तआला से कामिल तअल्लुक की बरकत से अल्लाह पाक उनकी जद्दो जेहद और जिहाद व क़िताल में ऐसी बरकत अता फ़रमाएगा कि काइनात में कारफ़रमा ग़ैबी कुव्वतें उनके साथ हो जाएंगी। मग़रिब की दज्जाली ताक़त महज़ माद्दापरस्ती पर मब्नी है। माद्दा अल्लाह की नज़र में पस्त और हक़ीर है। अल्लाह तआला को परवाह नहीं कि वह हक़ीर और

नफ़्सपरस्त लोगों को यह हक़ीर चीज़ दे दे। इसके मुक़ाबले में हज़रत मेहदी और हज़रत ईसा अलै0 बुलंद मरतबा रूहानी शख़्सियात होंगी। उनको ग़ैर मामूली करामाती और मोजिज़ाती ताक़त दी जाएगी।

☆ ......"दुनिया के ख़त्म हो जाने का वक़्त क़रीब है। इसलिये मैं तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल की इताअत, कुर्आन करीम के अहकाम पर अमल, बातिल को ख़त्म करने और सुन्नतों को ज़िंदा करने की दावत देता हूं।" (बैअत के बाद हज़रत मेहदी के पहले खुत्बे से इक़्तिबास)

☆ ......"हज़रत मेहदी को अल्लाह तआला एक रात में सलाह (के बुलंद मक़ाम) तक पहुंचा देंगे।" (हदीस शरीफ़)

☆ ......"हज़रत मेहदी के ख़िलाफ़ निकलने वाला लशकर जिसका सरबराह सुफ़यानी नाम का शख़्स होगा, ज़मीन में धंसा दिया जाएगा।"

☆ ......हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि (एक मर्तबा) हुज़ूर सल्ल0 ने सहाबा किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम से पूछाः क्या तुमने किसी ऐसे शहर के मुतअल्लिक़ सुना है जिसके एक जानिब ख़ुश्की और दूसरी जानिब समंदर है? सहाबा ने अर्ज़ कियाः जी हां या रसूलुल्लाह! फ़रमायाः क़्यामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक कि बनी इसहाक़ के सत्तर हज़ार अफ़राद इस शहर के लोगो से जिहाद कर लें। चुनांचे मुजाहिदीन जब वहां पड़ाव करेंगे तो न अस्लहा से लड़ेंगे और न तीर फेंकने की नौबत आएगी, सिर्फ़ एक मर्तबा "لا الـه الا الـلّـه واللّه اكبر" कहने से शहर की हिफ़ाज़ती दीवार का एक हिस्सा गिर जाएगा।"

एक अहम नुक्ताः

इस रिवायत में एक लफ़्ज़ "سبـعون ألفاً من بنی اسحق" आया है यानी बनू इसहाक़ में से सत्तर हज़ार मुजाहिदीन। इसके बारे में

बाज़ मुहद्दिसीन की राए यह है कि दरअसल यहां "بنی اسمٰعیل" मुराद हैं यानी मुसलमान, क्योंकि बनी इसहाक़ तो अहले किताब हैं। वे क्योंकर मेहदी के साथ मिलकर जिहाद करेंगे। ताहम मुस्लिम शरीफ़ के तमाम नुस्ख़ों में "من نبی اسحق" ही वारिद है।

अल्लामा नववी रहि0 लिखते हैं:

"قال القاضی: کذا ھو فی جمیع أُصول صحیح مسلم: "من بنی اسحق" قال: قال بعضھم: المعروف المحفوظ "من بنی اسمٰعیل" وھو الذی یدل علیه الحدیثُ وسیاقُه؛ لأنه انما أراد العربَ، وھذ المدینة ھی القسطنطنیه."

(नववी अला हामिश मुस्लिम: 396/4)

तर्जुमा: "क़ाज़ी अयाज़ ने कहा है: "من بنی اسحق" का लफ़्ज़ ही मुस्लिम के तमाम नुस्ख़ों में आया है, अलबत्ता मशहूर मुस्तनद बात यह है कि मुराद "بنی اسمٰعیل" हों चूंकि इस मअनी पर हदीस की दलालत भी है और सियाक़े हदीस का मंशा भी यही है चूंकि उनसे मुराद अरब हैं और शहर से मुराद कुस्तुन्तुनिया है।"

कुस्तुन्तुनिया तुर्की दारुल हुकूमत इस्तंबुल का पुराना नाम है। इस शहर का कुछ हिस्सा एशिया में है और कुछ यूरप में। लगता है यूरपी यूनियन इस्तंबुल के उस हिस्सा पर क़ब्ज़ा कर लेगी जो यूरप में है। मुसलमान जिहाद करके इसको यूरप से वापस ले लेंगे।

बनी इस्माईल के लिये बनी इसहाक़ का लफ़्ज़ लाने की एक तावील यह भी हो सकती है कि हज़रत इसहाक़ अलै0 बनी इस्माईल के चचा हैं, और "عمُّ الرجل صِنوأبیه" (चचा वालिद के क़ायम मक़ाम होता है) के क़ानून के मुताबिक़ चचा की तरफ़ निस्बत भी दुरुस्त है।

बाज़ मुहक़्क़िक़ीन का कहना है कि अगर हदीस को उसके

ज़ाहिरी मअनी पर ही रखें तो बनी इसहाक़ से मुराद वह अह्ले किताब होंगे जो उस ज़माना में मुसलमान होकर लशकरे मेहदी में शामिल हो जाएंगे जैसा कि बाज़ रिवायात में आता है।

और बाज़ का कहना है कि यहां बनू इसहाक़ ही दुरुस्त है और इससे मुराद पठान मुजाहिदीन है कि मुअर्रिख़ीन के एक तब्क़ा के मुताबिक़ नस्ली तौर पर यह अह्ले किताब हैं और तालिबान की शक्ल में हज़रत मेहदी के साथ होंगे।

एक अहम वज़ाहतः

फिर यह देखिये कि हदीस शरीफ़ में वज़ाहत हैः "न अस्लहा से लड़ेंगे न तीर फैंकने की नौबत आएगी।" इस से मालूम हुआ कि मुसलमान अपने तौर पर जो बेहतरीन वसाइल दस्तियाब हों, उन्हें हासिल करें और ग़ल्बए दीन के लिये क़ुर्बानियां दें और देते रहें, आगे एक वक़्त पर अल्लाह पाक ख़ुद ही ग़ैब से कोई सूरत पैदा फ़रमाएंगे।

यह बात उस वक़्त और भी वाज़ेह हो जाती है जब हम हज़रत ईसा अलै0 के नुज़ूल के बाद के वाक़िआत का जाइज़ा लेते हैं। हज़रत ईसा अलै0 जिस दिन फ़ज्र की नमाज़ में नाज़िल होंगे, उस दिन फ़ज्र के बाद वह दज्जाल और उसकी यहूदी फ़ौज (अमरीकन व इस्राईली आर्मी) के ख़िलाफ़ जिहाद शुरू करेंगे। दज्जाल उनको देखते ही दुम दबाकर फ़रार होगा। उसकी सारी शैतानी और माद्दी ताक़तें सल्ब हो जाएंगी और शाम तक हर दरख़्त और पत्थर पुकार कर मुजाहिदीन से कहेगाः "ऐ अल्लाह के बंदे! यह यहूदी मेरे पीछे छिपा है। इसे आकर ख़त्म कर दे।" अब बताइये! जब दज्जाल उनको देखते ही पिघलना शुरू हो जाएगा। (शायद इसमें सिक्स मिलियन डालर मैन या टरमीनेटर की तरह जुज़्वी तौर पर धात के आज़ा शामिल कर दिये गये होंगे) फ़ित्ना परदाज़ यहूदी, मुजाहिदीन के हाथों

शाम तक बरबाद हो जाएंगे तो एक दिन में कौनसी साइंस टेक्नोलोजी होगी जो अह्ले हक़ को हासिल हो जाएगी?

अगर आप इस अम्र की तसरीह चाहते हैं कि तक़्वा और जिहाद के बलबूते पर ग़ैबी क़ुव्वतें कमज़ोर व नातवां मुसलमानों के हमराह होंगी और बातिल की माद्दी ताक़त को पिघला डालेंगी, लिहाज़ा हमें माद्दी ताक़त हस्बे हैसियत हासिल तो करना चाहिये लेकिन इससे डरना या इसको हर्फ़े आख़िर नहीं समझना चाहिये……तो इसकी वज़ाहत भी मिल सकती है। "अलामाते क़यामत" (मुसन्निफ़ हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद रफ़ी उस्मानी साहब) में अद्दुर्रुल मंसूर के हवाले से यह हदीस मौजूद है:

"ईसा बिन मरयम नाज़िल होंगे। पस लोगों की आंखों और टांगों के दरमियान से तारीकी हट जाएगी (यानी इतनी रौशनी हो जाएगी कि लोग टांगों तक देख सकें) उस वक़्त ईसा अलै० के जिस्म पर एक ज़िरह होगी। पस लोग उनसे पूछेंगे आप कौन हैं? वह फ़रमायेंगे: मैं ईसा बिन मरयम अल्लाह का बंदा और रसूल हूं और उसकी (पैदा कर्दा) जान और उसका कलिमा हूं (यानी बाप के बेग़ैर महज़ इसके कलिमे "कुन" से पैदा हुआ हूं) तुम तीन सूरतों में से एक को इख़्तियार कर लो: (1) अल्लाह दज्जाल और उसकी फ़ौजों पर बड़ा अज़ाब आसमान से नाज़िल कर दे। (2) उनको ज़मीन में धंसा दे……या (3) उनके ऊपर तुम्हारे अस्लहा मुसल्लत कर दे और उनके हथियारों को तुम से रोक दे।" मुसलमान कहेंगे: "ऐ अल्लाह के रसूल! यह (आख़िरी) सूरत हमारे क़ुलूब के लिये ज़्यादा तमानीनत का बाइस है। चुनांचे उस रोज़ तुम बहुत खाने पीने वाले (और) डील व डोल वाले यहूदी को (भी) देखोगे कि हैबत की वजह से उसका हाथ तलवार न उठा सकेगा। पस मुसलमान (पहाड़ से) उतर कर उनके ऊपर मुसल्लत हो जाएंगे और दज्जाल जब (ईसा) इब्ने मरयम को देखेगा तो सीसी की तरह पिघलने लगेगा हत्ता कि ईसा अलै०

क़्यामत तक मुसलसल हक़ पर क़िताल करती रहेंगी (और) ग़ालिब रहेगी। फ़रमायाः फिर (उनमें) ईसा बिन मरयम अलै0 नाज़िल होंगे तो उनका अमीर कहेगाः आइये! हमें नमाज़ पढ़ाइये! वे कहेंगे नहीं! बल्कि तु में से बाज़ लोग बाज़ पर अमीर हैं (चुनांचे उम्मती आगे बढ़ कर साबिक़ा नबी को नमाज़ पढ़ायेगा ताकि ख़त्मे नुबुव्वत का मस्ला वाज़ेह हो जाए) उम्मत की इंदल्लाह इज़्ज़त व इक्राम की ईमान वालों को चाहिये कि ख़ुद को उस वक़्त के लिये ज़ेहनी व जिस्मानी तौर पर तैयार कर लें जब जिहाद ही ईमान का मेयार होगा। हज़रत मेहदी के साथ वही जा पाएगा जिसने पहले से जिहाद की तैयारी कर रखी होगी······ऐन वक़्त पर तो बंजारा लाद चलेगा, सब ठाठ पड़ा रह जाएगा।

दो-धारी तलवार

तीसरी बातः हज़रत मेहदी कब ज़ाहिर होंगे?

यह सवाल कि हज़रत मेहदी कब ज़ाहिर होंगे? इतना अहम नहीं जितना नाज़ुक है। यह ऐसी दो-धारी तलवार है कि ज़रा सी फिस्लन कहीं से कहीं पहुंचा सकती है। पहले तो कुर्आन करीम की हिदायात मुलाहिज़ा फरमाइये। यह अगर्चे क़्यामत के मुतअल्लिक़ हैं लेकिन बंदा एक से ज़ाइद मर्तबा अर्ज़ कर चुका है कि अलामाते क़्यामत भी क़्यामत की तरह मुब्हम आर पेचीदा हैं। उनमें अलामती ज़बान इस्तिमाल की गई है और इस मौज़ू का सारा मज़ा ही तजस्सुस में है जो इस इब्हाम और ज़ू मअनी अलामती लानत से पैदा होता है।

सूरह बनी इस्राईल में हैः "قُلْ عَسىٰ اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيباً" (ऐ नबी!) कह दीजिये ऐन मुम्किन है कि वह वक़्त बिल्कुल ही करीब आ गया हो!" (आयतः 51) बिल्कुल इसी तरह की एक बात सूरतुल मआरिज में भी वारिद हुई हैः "اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا، وَّنَرَاهُ قَرِيْبًا۔" "ये लोग इसे दूर समझ रहे हैं जबकि हम इसे बिल्कुल क़रीब देख रहे हैं।" (आयातः 6,7) कुर्आन हकीम में मुतअद्दिद बार आया है। "وَاِنْ اَدْرِىْ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ؟" (ऐ नबी!) कह दीजिये मैं नहीं जानता कि जिस चीज़ का तुम से वादा किया जा रहा है वह क़रीब आ चुकी है या अभी दूर है!" (सूरतुल अंबियाः 109) "قُلْ اِنْ اَدْرِىْ

"اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّيْٓ اَمَدًا" "और (ऐ नबी!) कह दीजिये कि मैं नहीं जानता कि जिस चीज़ का यादा तुम से किया जा रहा है वह अंक़रीब पेश आने वाली है या अभी मेरा रब इसके ज़िम्न में कुछ ताख़ीर फ़रमाएगा!" (सूरतुल जिन्नः 25)

हुज़ूर नबी करीम सल्ल0 से एक साहब ने पूछाः "क़्यामत कब आएगी?" आपने फ़रमायाः "तुमने इसके लिये क्या तैयारी की है?" बिल्कुल यही बात इस सवाल के मुतअल्लिक़ कही जा सकती है। मेहदवियात के मौज़ू का सबसे सनसनीख़ेज और तजस्सुस आमेज़ सवाल यही है। इसका जवाब भी यही है कि हम ने इसके लिये क्या तैयारी की है? क्योंकि जिस तरह हज़रत मेहदी का साथ देने वाले बमुताबिक़ हदीस शरीफ़ रूए अर्ज़ के सालेह तरीन मुसलमान होंगे और उनकी फ़ज़ीलत अस्हाबे बदर वाली है, इसी तरह उनका साथ छोड़कर भागने वालों के लिये वईद भी उतनी ही सख़्त है। हदीस शरीफ़ में हैः

"इस पर (यानी मुसलमानों को काफ़िरों के हवाले न करने पर) जंग शुरू हो जाएगी और मुसलमान तीन गिरोहों में बट जाएंगेः (1) एक तिहाई लशकर तो मैदाने जंग से भाग जाएगा, उनकी तौबा अल्लाह तआला कभी क़बूल नहीं फ़रमाएगा। (2) एक तिहाई लशकर शहीद हो जाएगा, यह अल्लाह के नज़दीक अफ़ज़लुश शुहदा होंगे। (3) एक तिहाई लशकर को फ़तह नसीब होगी, यह आइंदा किसी फ़िल्ने में मुब्तिला न हो सकेंगे।" (मुस्लिम शरीफ़)

हज़रत का साथ छोड़कर भागने वाले कौन होंगे? जिन्होंने शिर्क व बिद्अत को दीन समझ रखा है। जिन्होंने अपने मुंह या शर्मगाह को हराम से आशना कर रखा है। जिनके दिलों में हसद, बुग्ज़ और कीना है। ज़बान पर ग़ीबत, तोहमत और झूट है। आंख में ख़यानत, हिर्स और हवस है। हाथ में ज़ुल्म, करप्शन और फ़राड है। मुन्करात से तौबा नहीं की और दुनिया से मुन्करात के ख़ातमे के लिये जिहाद

करने वालों में शामिल होने का शौक़ है। ये वे लोग हैं जो हज़रत को ऐन मैदाने जंग में अकेला छोड़कर भाग जाएंगे।

तो मेरे भाइयो! अहम यह नहीं कि हज़रत मेहदी कब ज़ाहिर होंगे? अहम यह है कि अगर वह ज़ाहिर हो गए तो हम में से किसने इसके लिये कितनी तैयारी की है? कहीं ऐसा न हो कि जब वह ज़ाहिर हों तो हम किसी ऐसे फ़ित्ने का शिकार हों कि उनका साथ देने के बजाए पीठ दिखा दें या उनके मुक़ाबले पर उतर आएं। जी हां! कुछ बदनसीब नाम निहाद मुसलमान सबसे पहले उनकी मुख़ालिफ़त में ख़म ठोंक कर निकलेंगे और दर्दनाक तरीक़े से बरबाद होंगे। अहादीस से वाज़ेह तौर पर मालूम होता है कि हज़रत के ज़माने में नाम निहाद मुसलमानों का एक तब्क़ा और होगा जो हज़रत का साथ छोड़कर भागने वालों से भी ज़्यादा बदबख़्त होगा। वह इस्लाम का दावेदार होने के बावजूद हज़रत के मुख़ालिफ़ीन में से होगा और उसे अल्लाह तआला सारी दुनिया की आंखों के सामने दर्दनाक अज़ाब में गिरिफ़्तार करेगा। वह ज़िंदा जिस्मों के साथ ज़मीन में धंसा दिये जाएंगे। ये वे लोग होंगे जो आज कल के सबसे बड़ फ़ित्ने यानी "फ़िक्री इर्तिदाद" का शिकर हो चुके होंगे और उनका सरबराह "अब्दुल्लाह सुफ़्यानी" नामी शख़्स होगा।

यह सुफ़्यानी कौन होगा? यह यहूदियों का तैयार कर्दा एक मुस्लिम लीडर होगा जिसको आलमी मीडिया मुसलमानों के हीरो और अक़ाइद के तौर पर पेश करेगा। बाज़ जंगों में वह मग़रिब के ख़िलाफ़ फ़ातिहाना किर्दार अदा करने का ड्रामा रचाएगा और फिर जब मुसलमानों में मक़्बूलियत हासिल कर लेगा तो असल रूप में ज़ाहिर हो जाएगा। नईम बिन हम्माद की "किताबुल फ़ितन" में है कि उसका नाम अब्दुल्लाह होगा और उसकी ख़ुरूज मग़रिबी शाम में "اَنْدَر" नामी जगह से होगा। यह लफ़्ज़ असल में "عَيْنُ دَوَرْ" है यानी दौर का चश्मा। अवाम की ज़बान में बिगड़ कर "اَنْدَر" हो

गया। "اَنْدَر" इस वक़्त शुमाली इस्राईल के ज़िला "अन्नासिरा" का एक क़स्बा है जिस पर इस्राईल ने 24 मई 1948 ई० में क़ब्ज़ा कर लिया था। बाज़ रिवायात से पता चलता है यह शुरू में मुसलमानों का हमदर्द और ख़ैरख़्वाह होगा, बाद में इसका दिल बदल जाएगा। इसका मतलब है कि इसे बातिल क़ुव्वतें मुसलमानों की जाली क़्यादत के लिये तैयार करेंगी जैसा कि आक्सफ़ोर्ड और कैम्बरिज के तिलस्म ख़ानों में होता है और जब वह मुसलमानों में मक़्बूलियत हासिल कर लेगा तो असल प्लान पर अमल शुरू करके हज़रत मेहदी के ख़िलाफ़ सफ़ आरा हो जाएगा। इसकी सोच व फ़िक्र का ख़ुलासा "फ़िक्री इर्तिदाद" है।

फ़िक्री इर्तिदाद यह है कि इस्लाम के हलाल को हलाल और हराम को हराम न समझा जाए। शरई तालीमात को हर्फ़े आख़िर न माना जाए। इतने शुकूक व शुबहात और वसवसे पैदा किये जाएं कि शराब व ज़िना और सूद व जूए जैसी क़तई हराम चीज़ों को भी प्रोपेगन्डे के ज़ोर पर हलाल क़रार दिलवाया जाएगा।

☆ ......"उस दिन वह शख़्स सबसे बड़ा महरूम होगा जो बनूकल्ब के माले ग़नीमत से महरूम रहा (यानी हर साहबे ईमान मुजाहिद उस माले ग़नीमत में से कुछ न कुछ ज़रूर ले) अगर्चे ऊंट को बांधने की रस्सी ही क्यों न हो? सहाबा किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ कियाः या रसूलुल्लाह! वे लोग उनके मुसलमान होने के बावजूद उनके अमवाल को ग़नीमत और उनके बच्चों को क़ैदी कैसे बना लेंगे? फ़रमायाः "वे शराब और ज़िना को हलाल समझने की वजह से काफ़िर क़रार दिये जाएंगे।"

☆ ......"सुफ़यानी ज़मीन में फ़साद बरपा किये हुए होगा हत्ता कि एक ओर से दिन के वक़्त दमिश्क़ की जामा मस्जिद में शराब की एक मज्लिस में बदकारी की जाएगी। इसी तरह एक औरत सुफ़यान की रान पर आकर बैठ जाएगी जबकि वह जामे दमिश्क़ की

मेहराब में बैठा होगा। उस वक़्त एक ग़ैरतमंद मुसलमान से मस्जिद की यह बेहुरमती और यह करीह मंज़र देखा न जाएगा और वह खड़ा होकर कहेगा कि अफ़सोस है तुम पर, ईमान लाने के बाद कुफ़्र करते हो? यह नाजाइज़ है। सुफ़यानी को हक़ की यह बात कड़वी लगेगी और वह उसको कलमए हक़ कहने की पादाश में मौत के घाट उतार देगा और सिर्फ़ उसी को नहीं बल्कि जिसने भी उसकी ताईद की होगी उसको भी क़त्ल कर देगा।"

यह है वह "फ़िक्री इर्तिदाद", यह है अल्लाह के अहकाम (हुदूदुल्लाह) की पामाली जो आज के "थिन्क टैंक्स" का बरपा कर्दा अज़ीम तरीन फ़ित्ना है। इससे जो वसवसे जन्म लेते हैं उनकी बिना पर आदमी सुब्ह को मुसलमाना होता है, शाम को काफ़िर। शाम को मुसलमान होता है तो सुब्ह को काफ़िर। इस फ़ित्ने की एक झलक देखनी हो तो हज़रत अल्लामए दौरां जावेद अहमद ग़ामदी और उनके तैयार कर्दा लाजवाब क़िस्म के बाकमाल फ़ित्ना पर्दाज़ों के प्रोग्रामों में देख लीजिये। जहां सीधे साधे नौजवानों से यह सवाल होते हैं: ख़ुदा का वजूद है भी या नहीं? हुदूद की तारीफ़ क्या है और तारीफ़ किसने की है? चेहरे के पर्दे का तकल्लुफ़ किसने जारी किया? वग़ैरा वग़ैरा। इन लोगों की बदनसीबी यह है कि इनके प्रोग्रामों की फ़ेहरिस्त देख लीजिये। एक भी तामीरी उन्वान नहीं मिलेगा। इस्लाही मौज़ूआत से इन्हें कोई सरोकार नहीं। इनका सारा ज़ोर तश्कीक फैलाने और वसवसा पैदा करने पर है। कोई दुनियादार मुसलमान दीन की तरफ़ आ जाए, इसकी उनको काई फ़िक्र नहीं। सारा ज़ोर इस पर है कि जो बचे खुचे मुसलमान दीन पर टूटा फूटा अमल कर रहे हैं, वे किसी तरह से आज़ाद ख़्याल हो जाएं? तहारत के मसाइल न जानने वालों को इल्मी कलामी मबाहिस में उलझाने का आख़िर और क्या मतलब हो सकता है?

तो जनाबे मन! शराब व ज़िना को हलाल और सूद व जूए को

मेहराब में बैठा होगा। उस वक़्त एक ग़ैरतमंद मुसलमान से मस्जिद की यह बेहुरमती और यह करीह मंज़र देखा न जाएगा और वह खड़ा होकर कहेगा कि अफ़सोस है तुम पर, ईमान लाने के बाद कुफ़्र करते हो? यह नाजाइज़ है। सुफ़यानी को हक़ की यह बात कड़वी लगेगी और वह उसको कलमए हक़ कहने की पादाश में मौत के घाट उतार देगा और सिर्फ़ उसी को नहीं बल्कि जिसने भी उसकी ताईद की होगी उसको भी क़त्ल कर देगा।''

यह है वह ''फ़िक्री इर्तिदाद'', यह है अल्लाह के अहकाम (हुदूदुल्लाह) की पामाली जो आज के ''थिन्क टैंक्स'' का बरपा कर्दा अज़ीम तरीन फ़ित्ना है। इससे जो वसवसे जन्म लेते हैं उनकी बिना पर आदमी सुब्ह को मुसलमाना होता है, शाम को काफ़िर। शाम को मुसलमान होता है तो सुब्ह को काफ़िर। इस फ़ित्ने की एक झलक देखनी हो तो हज़रत अल्लामए दौरां जावेद अहमद ग़ामदी और उनके तैयार कर्दा लाजवाब क़िस्म के बाकमाल फ़ित्ना पर्दाज़ों के प्रोग्रामों में देख लीजिये। जहां सीधे साधे नौजवानों से यह सवाल होते हैं: ख़ुदा का वजूद है भी या नहीं? हुदूद की तारीफ़ क्या है और तारीफ़ किसने की है? चेहरे के पर्दे का तकल्लुफ़ किसने जारी किया? वग़ैरा वग़ैरा। इन लोगों की बदनसीबी यह है कि इनके प्रोग्रामों की फ़ेहरिस्त देख लीजिये। एक भी तामीरी उन्वान नहीं मिलेगा। इस्लाही मौज़ूआत से इन्हें कोई सरोकार नहीं। इनका सारा ज़ोर तशकीक फैलाने और वसवसा पैदा करने पर है। कोई दुनियादार मुसलमान दीन की तरफ़ आ जाए, इसकी उनको काई फ़िक्र नहीं। सारा ज़ोर इस पर है कि जो बचे खुचे मुसलमान दीन पर टूटा फूटा अमल कर रहे हैं, वे किसी तरह से आज़ाद ख़्याल हो जाएं? तहारत के मसाइल न जानने वालों को इल्मी कलामी मबाहिस में उलझाने का आख़िर और क्या मतलब हो सकता है?

तो जनाबे मन! शराब व ज़िना को हलाल और सूद व जूए को

यह सदी होगी या अगली? अल्लाह ही को बेहतर मालूम है। हमें वह दौर देखना नसीब होगा या हमारी अगली तीन नस्लों को उनका ज़माना मिलेगा? आलिमुल ग़ैब के अलावा किसी को इसका इल्म नहीं। इतनी बात है कि कुफ़्र का ग़ल्बा जहां तक पहुंच चुका है और मुसलमान जितने तवील अर्से से मज़लूमियत का शिकार हैं और कुर्बानियों के बावजूद पिसे चले जा रहे हैं, यह कुछ और ही बताता है।

कोई इब्हाम सा इब्हाम है!

हज़रत मेहदी कब ज़ाहिर होंगे?

अहादीसे मुबारका में जुहूरे मेहदी की जितनी अलामात बयान की गई हैं, उनमें से कुछ में गुफ़्तगू अलामतन व इस्तिआरतन है। कुछ अलामतें बिल्कुल वाज़ेह हैं लेकिन उनके हक़ीक़ी जुहूर से क़ब्ल उनके वक़्ते जुहूर के बारे में कुछ कहना बहुत मुश्किल है। ज़ेल में इन दोनों के अक़्साम में से कुछ नुमायां निशानियों और अक्सर अहादीस में मुश्तर्का तौर पर मज़कूरा अलामात को ज़िक्र किया जाता है।

☆ ......एक अलामत यह बताई गई है कि आसमान से फ़लक शिगाफ़ निदा आएगी जो इमामे मुजाहिद के जुहूर की मुनादी करेगी। इस अलामत का हक़ीक़ी मिस्दाक़ तो बिल्कुल वाज़ेह है लेकिन अव्वल तो यह उनके जुहूर के बाद होगी जबकि हम क़ब्ल जुहूरे इमाम उनके ज़मानए जुहूर के अंदाज़ा लगाने की फ़िक्र में हैं। दूसरे मुम्किन है इसमें भी अलामती गुफ़्तगू की गई हो। यानी यह सदा डंके की चोट पर आसमान से आएगी ज़रूर, लेकिन आजकल कौन सी जगह ऐसी है जिसमें सैटिलाइट सिस्टम से वाबस्ता जदीद ज़राए इब्लाग़ मौजूद नहीं या कौन शख़्स है जिसकी इन ज़राए तक रसाई नहीं? हज़रत का ख़ाना काबा में जुहूर और इसका रद्दे अमल ताज़ा

बा ताज़ा ख़ैर की सूरत में मस्नूई सय्यारे लम्हा बा लम्हा नश्र करेंगे और आसमान से सनसनीख़ेज़ इतलाआत के सिग्नल भेजेंगे।

☆ ......एक अलामत यह है कि आप सदी के मुजद्दिद होंगे। सदी के मुजद्दिद का इसके शुरू में आना ज़रूरी नहीं, वसत से पहले पहले आने वाले को इसी सदी का मुजद्दिद माना जाएगा। अब खुदा जाने कि वह यही पुर आशूब सदी है जिसमें कोई सितम नहीं जो मुसलमानों पर ढाया न गया हो और कोई कुर्बानी नहीं जो मुसलमान ज़ुअमा व मुजाहिदीन ने न दी हो और अगर यह सदी नहीं तो क्या हम तसलीम कर लें कि इतनी ज़बरदस्त कुर्बानियों के बावजूद भी कुफ़्र हम पर मज़ीद कई सदियों तक बेधड़क हुक्मरानी करेगा???

हज्जाज ने कहाः "उसने हज़रत अली रज़ि0 ने सुना कि रसूले अकरम सल्ल0 ने फ़रमायाः चाहे दुनिया के लिये सिर्फ़ एक दिन बाक़ी हो, अल्लाह तआला हम में से एक आदमी को भेजेगा जो दुनिया को इंसाफ़ से भर देगा जिस तरह यह ज़ुल्म व सितम और नाइंसाफ़ी से भरी होगी। (मुस्नद अहमद)

☆ ......एक अलामत यह है कि फ़रात दरिया से पानी हट जाएगा और उसमें सोने का पहाड़ ज़ाहिर होगा। दज्ला और फ़रात दोनों तुर्की से निकलते हैं और इराक़ से गुज़रते हुए ख़लीजे अरब में गिरते हैं। तुर्की ने फ़रात पर मुतअद्दिद डेम बनाए हैं जिन में से "अतातुर्क डेम" दुनिया के बड़े डेमों में से एक है। इसकी वुस्अत 816 मुरब्बा किलोमीटर है। ख़िलाफ़ते उस्मानिया के बाद तुर्की में फ़िरी मिसन इक़्तिदार में रहे हैं। अगर तुर्की चाहे तो फ़रात का पानी इराक़ से बआसानी रोक सकता है और नबी करीम सल्ल0 की पेशगोई दुनिया आंखों से देखेगी कि सोने का पहाड़ ज़ाहिर होते ही दुनिया उस पर टूट पड़ेगी और सौ में से निन्नानवे इस लालच में मारे जाएंगे कि शायद मैं ही वह ख़ुशनसीब हूं जो इस सोने का मालिक बनेगा।

बा ताज़ा ख़ैर की सूरत में मस्नूई सय्यारे लम्हा बा लम्हा नश्र करेंगे और आसमान से सनसनीख़ेज़ इत्तलाआत के सिग्नल भेजेंगे।

☆ ......एक अलामत यह है कि आप सदी के मुजद्दिद होंगे। सदी के मुजद्दिद का इसके शुरू में आना ज़रूरी नहीं, वसत से पहले पहले आने वाले को इसी सदी का मुजद्दिद माना जाएगा। अब ख़ुदा जाने कि वह यही पुर आशूब सदी है जिसमें कोई सितम नहीं जो मुसलमानों पर ढाया न गया हो और कोई कुर्बानी नहीं जो मुसलमान ज़ुअमा व मुजाहिदीन ने न दी हो और अगर यह सदी नहीं तो क्या हम तसलीम कर लें कि इतनी ज़बरदस्त कुर्बानियों के बावजूद भी कुफ़्र हम पर मज़ीद कई सदियों तक बेधड़क हुक्मरानी करेगा???

हज्जाज ने कहाः "उसने हज़रत अली रज़ि0 ने सुना कि रसूले अक्रम सल्ल0 ने फ़रमायाः चाहे दुनिया के लिये सिर्फ़ एक दिन बाक़ी हो, अल्लाह तआला हम में से एक आदमी को भेजेगा जो दुनिया को इंसाफ़ से भर देगा जिस तरह यह ज़ुल्म व सितम और नाइंसाफ़ी से भरी होगी। (मुस्नद अहमद)

☆ ......एक अलामत यह है कि फ़रात दरिया से पानी हट जाएगा और उसमें सोने का पहाड़ ज़ाहिर होगा। दज्ला और फ़रात दोनों तुर्की से निकलते हैं और इराक़ से गुज़रते हुए ख़लीजे अरब में गिरते हैं। तुर्की ने फ़रात पर मुतअद्दिद डेम बनाए हैं जिन में से "अतातुर्क डेम" दुनिया के बड़े डेमों में से एक है। इसकी वुस्अत 816 मुरब्बा किलोमीटर है। ख़िलाफ़ते उस्मानिया के बाद तुर्की में फ़िरी मिसन इक़्तिदार में रहे हैं। अगर तुर्की चाहे तो फ़रात का पानी इराक़ से बआसानी रोक सकता है और नबी करीम सल्ल0 की पेशगोई दुनिया आंखों से देखेगी कि सोने का पहाड़ ज़ाहिर होते ही दुनिया उस पर टूट पड़ेगी और सौ में से निन्नानवे इस लालच में मारे जाएंगे कि शायद मैं ही वह ख़ुशनसीब हूं जो इस सोने का मालिक बनेगा।

☆ ......एक मशहूर अलामत हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु अन्हा की रिवायत में है कि ज़मीन उस लशकर को निगल जाएगी जो हज़रत से लड़ने के लिये निकलेगा। इसका मअनी यह भी हो सकता है कि ज़मीन यक लख़्त फट जाएगी और उस बदनसीब फ़ौज को देखते ही देखते लुक़्मा बना लेगी जो मुसलमान होने की दावेदार होकर भी मुसलमान के नजाते दहिन्दा क़ाइद से लड़ने निकलेगी। यह भी इम्कान है कि यह लशकर जब शाम से आएगा (शाम के लफ़्ज़ में लब्नान और फ़लस्तीन......यानी मौजूदा इस्राईल......के अलावा उर्दुन भी शामिल है, जहां काफ़ी अर्से से हरमैन का एक ग़द्दार ख़ानदान हुक्मरान है जिसकी मलिकाएं अमरीकन यहूदी या बर्तानवी ईसाई होती हैं और मुसलमान हुक्मरानों को लुभाने के फ़न में ताक़ होती हैं) और उसकी मदद वह अमरीकी अफ़्वाज करेंगी जो अर्ज़े हरमैन में छावनियां बनाकर लम्हए मौऊद के इन्तिज़ार में बैठी हैं तो फ़रीक़ैन में जदीद आलाते हर्ब के इस्तिमाल से ज़मीन में भारी भरकम गोले बड़े बड़े गढढे छोड़ जाएंगे। इसी गड़हों और मुहीब खडडों से दाग़दार ज़मीन जब अस्सादिक़ुल मुसद्दिक़ सल्ल० को दिखाई गई तो आप ने बिला तवक़्क़ुफ़ इसकी हक़ीक़त के क़रीब तरीन शानदार मंज़र कशी फ़रमाई।

इन अहादीस से एक बात यह सामने आई कि हज़रत अलइमाम को मुसलमानों की तरफ़ से फ़ौरी और आलमी पज़ीराई नहीं मिलेगी। इसलिये कि साहबे इख़्तियार हुक्मराने वक़्त, इस्लाह की अलमबरदार रूहानी हस्तियों को अपने असर व रुसूख़ के लिये हमेशा से ख़तरा समझते चले आये हैं। "इसी तरह आप से पहले भी हमने जिस बस्ती में कोई डराने वाला भेजा वहां के आसूदा हाल लोगों ने यही जवाब दिया कि हमने अपने बाप दादा को एक राह पर और एक दीन पर पाया और हम तो उन्ही के नक़्शे पा की पैरवी करने वाले हैं। (अलज़ुख़रुफ़:32)

हज़रत मेहदी न रसूल हैं और न नबी, वह तो मुस्लेह और मुजाहिद हैं......लेकिन उमरा का वतीरा रहा है कि शम्ए हक़ के मशअल बिरादरों की तदहीक व तहक़ीर करें चाहे वह जिस हैसियत में हों। इस मर्तबा तो उनको कुछ ऐसे उलमाए सू का सहारा भी हासिल होगा जो दुनिया परस्ती में मुन्हमिक हो चुके हैं और साहिबान इक़्तिदार से कुर्ब ने उनको हक़गोई से रोक रखा है या वह बिद्आत के मुरतकिब और ऐश परस्ती के आदी हैं। सुन्नत का इत्तिबा और जिहाद व क़िताल उनके नज़दीक गंवार तालिबान का काम है। जो दुनिया के पसमांदा तरीन ख़ित्ते "खुरासान" से आएंगे जो पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान के चंद इलाक़ों पर मुशतमिल इलाक़े का क़दीम जुग़राफ़ियाई नाम है। इन उलमा के लिये उलमाए यहूद की मिसाल सादिक़ आती है कि वह दिल से हुज़ूर सल्ल0 को अच्छी तरह पहचान कर भी ज़बान से इसका इज़्हार और तसदीक़ के बजाए मुख़ालिफ़त करते थे।

☆ ......एक अलामत यह बयान की गई है कि इस साल ज़ुलहिज्जा में मिना में खून रेज़ी होगी लेकिन यह बहुत करीब की अलामत है, इसलिसे कि इस ज़िल हिज्जा के फ़ौरन बाद मुहर्रम में आशूरा की रात हज़रत के हाथ पर बैअते जिहाद होगी। इसलिये यह क़रीब तरीन अलामत हमारी बहस से ख़ारिज है। हम तो वक़्ते ज़ुहूर से पहले की अलामात पर बहस कर रहे हैं।

☆ ......एक अलामत यह भी है कि एक ख़लीफ़ा के इन्तिक़ाल पर शदीद इख़्तिलाफ़ होगा। इस इख़्तिलाफ़ की नौइयत बज़ाहिर यह लगती है कि सऊदी तख़्त पर इत्तिहादी अफ़वाज अपनी मर्ज़ी का आदमी बिठाना चाहेंगी जबकि अह्ले इस्लाम किसी ऐसे शख़्स को पसंद करते होंगे जिसके नज़रियात इत्तिहादियों को एक आंख नहीं भाते होंगे। मेहदवियात पर नज़र रखने वाले कुछ हज़रात इसका मिस्दाक़ शाह फ़हद को समझते थे लेकिन जब उसका इंतिक़ाल हुआ

और शाह अब्दुल्लाह की जानशीनी का अमल बख़ैर ख़ूबी अंजाम पा गया तो उनके अंदाज़ों को ज़बरदस्त धच्का लगा लेकिन अंदाज़े तो अंदाज़े होते हैं। कुछ हज़रात के नज़दीक शाह अब्दुल्लाह के इंतिक़ाल पर इस तरह की सूरते हाल का अन्देशा निस्बतन ज़्यादा है।

अब हम दूसरी क़िस्म की अलामत की तरफ़ आते हैं जो इस लम्हए मौऊद की तरफ़ इशारा करती है, लेकिन मस्ला यहां यह है कि हम इस अलामत की क़तइय्यत के बावजूद क़ब्ल अज़ वक़्त उसे दरयाफ़्त नहीं कर सकते। यह वही अलामत है जिसने चंद साल क़ब्ल अवाम को गहरे तजस्सुस में मुब्तिला करने वाले पैग़ामात सुनने का मौक़ा पैदा किया था लेकिन इसमें फ़न्नी तौर पर एक अहम फ़ल्कियाती नुक्ते से तवज्जुह हट जाने के बाइस यह सनसनी ख़ेज़ी वाक़िआत की सान पर न चढ़ सकी। असल पेशगोई यूं है कि हज़रत मेहदी के माहे मुहर्रम में ज़ुहूर से क़ब्ल माहे रमज़ान में चांद और सूरज दोनों को गिर्हन लगेगा। नहीं! ऐसा हर्गिज़ नहीं। यह तो पहले भी होता रहा है। असल अनोखी बातें दो हैं और दोनों फ़ल्कियात के क़वानीन के एतिबार से आम तौर पर मुम्किन नहीं। इनका अदम इम्कान ही इनको मुहैयरुल उक़ूल अलामत बनाता है। पहली बात यह है कि फ़ल्कियात की रू से चांद गिर्हन हमेशा इस्लामी महीने के वसत में और सूरज गिर्हन आख़िर में होता है जबकि इस मर्तबा चांद गिर्हन शुरू में और सूरज गिर्हन वसत में होगा। दूसरी बात यह है कि एक महीने में दो मर्तबा चांद को गिर्हन नहीं होता। इस साल एक रमज़ान में दो मर्तबा चांद को गिर्हन लगेगा। यह वाज़ेह तरीन अलामत होगी कि तीन माह बाद मुहर्रम में हज़रत मेहदी का ज़ुहूर होने वाला है। अब इसे इफ़रात व तफ़रीत के अलावा क्या कहा जाए कि कुछ लोग तो इन अलामतों के बग़ैर राह चलते शोबदा बाज़ों को मेहदी जैसी मुक़द्दस शख़्सियत मान लेते हैं और कुछ लोग इस वाज़ेह अलामात के बाद भी हज़रत को मानने से वैसे ही इंकार

करेंगे जैसा कि यहूद हुज़ूर सल्ल0 को पहचान लेने के बाद भी व वजूहे ईमान लाकर न देते थे बल्कि मुख़ालिफ़त पर कमर बांध कर हमेशा हमेशा के लिये रुसवा हो गए।

आज कल किसी भी फ़ल्कियाती वेबसाइट पर आप मुस्तिक़बिल में किसी भी लम्हे चांद सूरज की हरकात और गिर्हन का शिडूल देख सकते हैं लेकिन यह दोनों अनोखी अलामतें चूंकि हैं ही ख़िलाफ़े मामूल, इसलिये कोई माहिरे फ़ल्कियातदान भी इनका वक़्त बताने से क़ासिर है। आख़िरी रमज़ान से पहले और उनके वुक़ू से पहले वक़्त की तअय्युन मुम्किन नहीं। इस हवाले से दर्ज ज़ेल मज़मून में कुछ तफ़सील दी गई है:

दो गिर्हन चांद

आजकल मोबाइल फ़ोनों पर एक मेसेज चल रहा है जिसका ख़ुलासा कुछ यह है: "क़्यामत की आख़िरी निशानी। आसमान में दो चांद नज़र आएंगे। बी बी सी पर भी बताया गया है कि 27 अगस्त को दो चांद नज़र आएंगे। यही हज़रत मेहदी के ज़ाहिर होने का वक़्त है। क़ुर्आन पाक में है जब क़्यामत की आख़िरी निशानी नज़र आ जाएगी उसके बाद तौबा क़बूल नहीं होगी। इस पैग़ाम को जितना हो सके दूसरों तक पहुंचाएं।"

इस मेसेज पर तब्सिरा तो हम बाद में करेंगे, पहले हज़रत मेहदी के ज़ुहूर की अलामात में से जिस अलामत की तरफ़ इस पैग़ाम में मुब्हम, नाक़िस और ग़लत इशारा किया गया है, उसकी वज़ाहत हो जाए। अव्वल तो यह मुस्तनद हदीस नहीं। फिर इसके हवाले से जो कुछ इस पैग़ाम में कहा गया है वह भी दुरुस्त नहीं। तफ़सील इस इज्माल की यह है कि जुस्तजू की जाए तो 30 अलामात ऐसी मिलती हैं जो हज़रत मेहदी के ज़ुहूर से पहले काएनात में ज़ाहिर होंगी और दुनिया को मुतवज्जेह करेंगी कि मुसलमानों की मुसीबतों के ख़ातमे

(अगर्चे यह अच्छा वक़्त आग और ख़ून के दरिया से गुज़रने का हौसला रखने वालों के लिये आएगा) और कुफ़्र की उम्मीदों पर पानी फिरने का वक़्त करीब आ गया है। इनमें से एक चीज़ ऐसी है जो दुनिया की पैदाइश से आज तक नहीं हुई और एक मर्तबा के बाद आइंदा भी नहीं होगी क्योंकि अल्लाह तआला की मुक़र्रर कर्दा फ़ल्कियाती तरतीब के मुताबिक़ यह मुम्किन ही नहीं।

इल्मुल फ़ल्कियात की रू से यह एक तैशुदा और मुसल्लमा क़ानून है कि चांद गिर्हन हमेशा क़म्री महीन के वसत और सूरज गिर्हन हमेशा महीने के आख़िर में ही मुम्किन है। यह मसला फ़ल्कियात का बिल्कुल इब्तिदाई और आम सा मसला है। इसकी वजह इस फ़न के मुब्तदी भी जानते और बआसानी समझ सकते हैं। दूसरे अल्फ़ाज़ में चांद गिर्हन हमेशा इस्लामी तारीख़ के हिसाब से 13, 14, 15 और सूरज गिर्हन हमेशा 27, 28, 29 को होगा। इससे आगे पीछे नहीं हो सकता। अल्लाह पाक ने फ़ल्की निज़ाम ही कुछ ऐसा रखा है। अलबत्ता हज़रत मेहदी के हाथ पर जिस साल के मुहर्रम में आशूरा की रात को हज्रे अस्वद और मक़ामे इब्राहीम के दरमियान बैअते जिहाद व ख़िलाफ़त होगी और उस मुहर्रम से पहले ज़िल हिज्जा में मिना में सख़्त ख़ूरेज़ी होगी, उस साल रमज़ान में अल्लाह तआला की क़ुदरते कामिला से चांद गिर्हन 13, 14, 15 रमज़ान के बजाए यकुम रमज़ानुल मुबारक की रात को होगा और सूरज गिर्हन 27, 28, 29 रमज़ान के बजाए 15 रमज़ानुल मुबारक को होगा। यह दोनों बातें न मुम्किन हैं और न तख़्लीक़े काइनात से आज तक हुई हैं, लेकिन क़ानून से हट कर पेश आने वाली चीज़ों की अलामत भी आम क़वानीन से हट कर होती है।

1423 ई0 के बमुताबिक़ 2002 ई0 के रमज़ान में चांद और सूरज गिर्हन दोनों के इकट्ठे गिर्हन होने का वाक़िआ पेश आया था......लेकिन इसकी नोइय्यत यह थी कि दोनों गिर्हन आम क़ानून के

मुताबिक़ अपने अपने वक़्त पर हुए थे यानी चांद गिर्हन माहे रमज़ान के वसत में और सूरज गिर्हन महीने के आख़िर में। रसदगाहों का रिकार्ड देखा जाए तो ऐसा 2002 ई० से पहले कई मर्तबा हो चुका है। इस मौक़ा पर दर्जे बाला मेसेज की तरह के जो सनसनीख़ेज़ मज़ामीन शाए हुए थे, उनमें यह तकनीकी ग़लती हो गई थी कि चांद व सूरज के इकट्ठे गिर्हन को वह अलामत समझ लिया गया था जो इकट्ठे होने के अलावा अपने वक़्त से पहले होने से मशरूत थी। बल्कि मुतअल्लिक़ा आसार को देखा जाए तो चांद सूरज दोनों के इकट्ठे गिर्हन होने के साथ यह भी होगा कि चांद गिर्हन एक महीने में दो मर्तबा होगा। एक तो यकुम रमज़ान को और दूसरे माहे रमज़ान के बीच में किसी और दिन। अब यह तसरीह नहीं कि दूसरा गिर्हन हस्बे मामूल 13, 14, 15 को होगा या वह भी मामूल से हट कर किसी और तारीख़ में होगा। याद रहे कि एक क़म्री महीने में दो चांद गिर्हन या दो सूरज गिर्हन नहीं हो सकते अलबत्ता शम्सी महीने में हो सकते हैं। जैसा कि 2003 ई० के जुलाई में हुआ कि यकुम और 31 जुलाई को दो सूरज गिर्हन हुए। गोया दूसरी निशानी भी ख़िलाफ़े मामूल होगी। आज कल जो हज़रात हज के मौक़ा पर हज़रत मेहदी की जुस्तजू में होते हैं, उन्हें हज से पहले ऐसे रमज़ान की जुस्तजू करनी चाहिये......लेकिन मुश्किल यह है कि चांद सूरज की आइंदा कई सौ साल की सेकेण्ड सेकेण्ड की हरकत का हिसाब बताने वाले फ़ल्कियाती क़वाइद और वेबसाइट्स इस मौक़े पर इसलिये कोई मदद नहीं कर सकतीं कि ये दोनों गिर्हन ख़िलाफ़े मामूल होंगे और फ़ल्कियात का फ़न उनका सुराग़ पाने से आजिज़ है। इसलिये जो हज़रात "फ़ल्कियात" या "मेहदवियात" से मुनासिबत रखते हैं वह इस तरह की मुतअय्यन पेशगोइयों और ग़ैर सका पैग़ामात को अहमियत नहीं देते।

अब उस नाक़ाबिले एतिबार मेसेज की तरफ़ वापस आते हैं जो

गुज़िश्ता चंद दिनों से ग़ैर सका होने का सुबूत देते हुए सनसनी फैला रहा है। इतना तो आप समझ गये होंगे कि 27 अगस्त को न रमज़ान है न दोनों गिर्हन न दो चांद गिर्हन......लिहाज़ा यह मेसेज राहे अमल से फ़रार के ख़्वाहिशमंदों के लिये वक़्ती तसकीन व तफ़रीह तो हो सकता है, हक़ीक़त से इसका कोई तअल्लुक़ नहीं। अब इसकी हक़ीक़त समझिये! 27 अगस्त 2003 ई0 को मरीख़ 50 हज़ार साला तारीख़ में पहली बार ज़मीन के इंतिहाई क़रीब और ख़ूब रौशन था। इसको बाज़ नावाक़िफ़ मेहरबानों ने चांद समझ लिया और अब हर साल अगस्त में मुसलमानों के जज़्बात से खेलने के लिये कुछ शरारत पसंद ऐसा मेसेज सबको भेजते हैं और तहक़ीक़ के बेग़ैर सादा लोह मुसलमान इसे आगे चला देते हैं। इसलिये बंदा हमेशा अपने अहबाब को ताईद करता है कि हमेशा जय्यद उलमाए किराम की सोहबत इख़्तियार करें और सिर्फ़ मुस्तनद किताबें पढ़ा करें। हमारे अकाबिर अल्लाह तआला ने इल्मे रासिख़ के साथ अक़्ले कामिल अता फ़रमाई थी। इन्ही पर एतिमाद करें और इन्ही के क़दमों में पड़े रहने में अपनी नजात समझें। हज़रत मेहदी के ज़ुहूर के लिये माह व सन का तअय्युन दुरुस्त नहीं। अल्लाह तआला ने क़यामत की तरह अलामाते क़यामत को भी मुब्हम रखा है......ताकि ग़फ़लत में पड़े हुए मुसलमान ज़िंदगी के हर दिन को आख़िरी दिन और हर रात को क़यामत की रात समझ कर बदअम्ली और बेअम्ली से तौबा कर लें और अपनी तख़्लीक़ के मक़सद को पूरा करने में जुत जायें।''

☆ ...... ☆ ...... ☆

नतीजा क्या निकला? अहम अलामतों पर गुफ़्तगू के बाद भी ज़ुहूरे मेहदी के वक़्त की मुतअल्लिक़ इब्हाम बाक़ी है। अगर हम तौरात की तरफ़ जाएं तो वहां एक ऐसी पेशगोई मिलती है जिस से कुछ मुहक़्क़िक़ीन ने वक़्ते मौऊद का अंदाज़ा लगाने की कोशिश की है।

मुहलत का इख़्तिताम

हज़रत दानियाल अलै0 (अल्लाह की रहमत और सलामती उन पर हो) बनी इस्राईल के मुक़द्दस पैग़म्बर थे। जब यहूद की बदआमालियों की पहली सज़ा के तौर पर अल्लाह तआला ने बुख़्त नस्र बादशाह को उन पर मुसल्लत किया और उसने इराक़ से आकर योरोशलम को ताराज कर डाला। हैकले सुलैमानी की ईंट से ईंट बजा दी। तौरात के नुस्ख़े जला डाले। यहूद का क़त्ले आम किया। शहर को बरबाद व वीरान किया। बाक़ी बचे खुचे यहूदियों को गुलाम बनाकर अपने साथ बाबिल ले गया। तो जिस ज़माने में यहूद वहां गुलामों की ज़िंदगी गुज़ार रहे थे, अल्लाह तआला ने उन पर खाते हुए इस अज़ाब से नजात के लिये उनमें फिर से अंबिया भेजने शुरू किये। इन्ही अंबिया में से एक हज़रत दानियाल अलै0 थे। हज़रत दानियाल अलै0 अपनी शख़्सियत व किर्दार में सय्यदना हज़रत यूसुफ़ अलै0 से गहरी मुमासिलत रखते हैं। बनी इस्राईल के इन दोनों पैग़म्बरों को आग़ाज़ में गुलाम बना लिया गया था और फिर अजनबी मुल्क में अजनबी व मज़लूम शख़्स की हैसियत में अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरते कामिला से उनकी जिस्मानी परवरिश और रूहानी तरबियत की हत्ताकि वह पैग़म्बर बनने के साथ दुन्यावी एतिबार से

भी बड़े उहदों तक पहुंचे। दोनों को अल्लाह तआला ने ख़्वाबो की ताबीर का खुसूसी इल्म अता किया था। वह मुश्किल हालात में भी लोगों को खुदाए वाहिद की तरफ़ बुलाते। जबर व जुल्म के माहौल में कलमए हक़ बिला ख़ौफ़ व झिझक कहते रहे। दोनों पर फ़ित्ना परदाजों ने तुहमत लगाई जिसकी नौइय्यत अलग अलग थी लेकिन अल्लाह तआला ने अपनी कुदरते कामिला से उनकी पाकीज़गी और पाकदामनी ऐसे दलाइल से ज़ाहिर फ़रमाई कि दुश्मन भी इंकार न कर सके और मआफ़ी मांगने पर मजबूर हो गए।

बुख़्त नस्सर के बाद "नेबूशाने ज़ार" बादशाह हुआ। उसने एक ख़्वाब देखा। जिसका मतलब समझने में वह इतना उलझा कि परेशान होकर रह गया। उसने मुल्क के तमाम मशहूर नुजूमियों, जादूगरों, काहिनों और मुस्तक़बिल का हाल बताने वाले को जमा किया और ख़्वाब की ताबीर पूछी। जब इल्म का बेजा दावा करने वाले सब आजिज़ आ गए तो किसी ने उसे बनी इस्राईल के दानिशमंद और साहिबे फ़ह्म नौजवान दानियाल की इत्तिला दी। उसने उनको बुला भेजा। हज़रत दानियाल अलै0 ने अल्लाह तआला से फ़रयाद कि उन पर यह इल्म मज़ीद खोला जाए और उस ख़्वाब की सही सही ताबीर उन्हें समझा दी जाए। अल्लाह तआला ने उनकी यह दुआ कबूल कर ली और उनके दिल में ख़्वाब का सही सही मतलब इल्क़ा कर दिया गया।

नेबूशाने ज़ार के इस ख़्वाब में उस वक़्त के बादशाह से लेकर क़्यामत तक आने वाले मुख़्तलिफ़ अदवार, हुकूमतों और बादशाहों के मुतअल्लिक़ जो पेशगोइयां की गई हैं, वे हैरतअंगेज़ तौर पर दुरुस्त साबित हुई हैं। मा सिवाए उन चंद बातों के जिन में यहूदी और ईसाई हज़रात ने तहरीफ़ कर दी है और उसे तोड़ मरोड़ कर कहीं और मुन्तबिक़ करने की नाकाम कोशिश की है, हज़रत दानियाल अलै0 के कलाम में आख़िरी नबी ख़ातिमुन्नबीय्यीन सल्ल0 के

मुतअल्लिक़ वाज़ेह पेशगोई है और यह कि एक अब्दी पैग़ाम और हमेशा क़ायम रहने वाला दीन ज़ाहिर होगा। अह्ले किताब की बदनसीबी कि ये हक़ीक़त का इंकार उस वक़्त करते हैं जब वह उनके सामने वाज़ेह हो जाती है। सरे दस्त हमारा मौज़ू इस ख़्वाब में से अददी पेशगोइयों पर मुशतमिल वह हिस्सा है जो हर दौर में बहस व तहक़ीक़ का मौज़ू रहा है और अब तो उनके ज़ुहूर के दिन उफ़क़ से वरे नहीं, उरे दिखाई देते हैं।

अब आगे चलने से पहले एक वाक़िआ यह बयान करते चलें जिसे इब्ने इस्हाक़, इब्ने अबी शैबा, इमाम बैहिक़ी, इब्ने अबी अद्‌दुन्या और दीगर मुहद्दिसीन ने बयान किया है। ये हज़रात फ़रमाते हैं:

''हज़रत उमर रज़ि0 के दौर में ''तसतूर'' नामी शहर फ़तह हुआ तो फ़ातेह फ़ौज में शामिल सहाबा व ताबईन ने वहां हज़रत दानियाल अलै0 का मज़ार दरयाफ़्त किया। आपका जिस्म मुबारक एक ताबूत में बिल्कुल असल हालत में बेग़ैर किसी क़िस्म की तबदीली व तग़य्युर के मौजूद था। उनके सर पर कपड़े का एक ख़त था जिस पर अजनबी ज़बान में कुछ लिखा हुआ था। दरयाफ़्त कुनिन्दा जमाअत में जिन ताबईन के नाम हैं उनमें अबुल आलिया और मुतरफ़ बिन मालिक मशहूर हैं। ये हज़रात यह तहरीर लेकर सय्यदना हज़रत उमर रज़ि0 की ख़िदमत में पहुंचे। आपने मशहूर सहाबी हज़रत कअब अहबार रज़ि0 (जो पहले अह्ले किताब यहूद में से थे और सच्चा इस्लाम ले आए थे। अल्लाह उनसे राज़ी हो) से यह तहरीर पढ़कर अरबी में तर्जुमा करने की दरख़्वास्त की। हज़रत अबुल आलिया ताबई फ़रमाते हैं कि इस तर्जुमे शुदा तहरीर को पढ़ने वाला पहला शख़्स मैं था। उसमें दर्ज था: ''तुम्हारी तमाम तारीख़ और मुआमलात, तुम्हारी तक़रीर की सेहर आफ़रीनी और बहुत कुछ जो अभी वाक़े होने वाला है।'' (इब्ने कसीरः अलबिदाया वन्निहाया

जि0 1, स0 40-42, बैहिक़ी: दलाइलुन्नुबुव्वा जि0 1, स0 381, इब्ने अबी शैबा: अलमुसन्निफ़ 7, 4, अलकर्मी: शिफ़ा अस्सुदूर स0 336)

तौरात में हज़रत उमर रज़ि0 के बैतुल मुक़द्दस में फ़ातिहाना दाख़िले का भी तज़किरा है। मसलनः "ज़करिया" की सूरत में यह आयत दी हुई है:

"ऐ सहीवन की बेटी! ख़ुशी से चिल्लाओ। ऐ योरोशलम की बेटी! मुसर्रत से चीख़ो। देखो! तुम्हारा बादशाह आ रहा है। वह आदिल है और गधे पर सवार है। ख़च्चर या गधी के बच्चे पर। मैं यूफ़रैम से गाड़ी को ऊपर योरोशलम से घोड़े को अलाहिदा कर दूंगा। जंग के पर तोड़ दिये जाएंगे। इसकी हुक्मरानी समंदर और दरिया से ज़मीन के किनारे तक होगी।"

यह अल्फ़ाज़ वाज़ेह हैं लेकिन ईसाई उस ईसा बिन मरयम अलै0 के योरोशलम में तन्हा मुसाफ़िर की हैसियत से दाख़िले को मुराद लेते हैं। ऊंटनी के लफ़्ज़ को उन्होंने इसी लिये गधे से तब्दील किया है। यह इन हज़रात की दीदा दानिस्ता पैदा कर्दा ग़लतफ़हमी है। इसलिये कि बेशक मज़्कूरा पेशगोइयों में "इस्लामी फ़ुतूहात" और "हज़रत उमर रज़ि0" का नाम नहीं दिया गया। लेकिन फ़ारसियों और रूमियों में से कोई भी हुक्मरान ऐसा नहीं गुज़रा कि जिसने फ़ारिस के साहिल से बह्र मुतवस्सित और बहीरए तब्रिया से अदन तक पूरे इलाक़े पर हुक्मरानी की हो। यह हक़ीक़त सिर्फ़ हज़रत उमर रज़ि0 और उनके साथियों पर सादिक़ आती है।

अब हम असल वाक़िए की तरफ़ लौटते हैं। बादशाह ने हज़रत दानियाल अलै0 को बुला भेजा। जब यह उसके पास पहुंचे तो उसने कहा: "मैंने तेरे बारे में सुना है कि इलाहों की रूह तुझ में है और नूर और दानिश और कमाल हिक्मत तुझ में हैं। हकीम और नुजूमी मेरे हुज़ूर हाज़िर किये गए ताकि इस तहरीर को पढ़ें और इसका मतलब मुझ से बयान करें लेकिन वह इसका मतलब बयान नहीं कर सके

और मैंने तेरे बारे में सुना है कि तू ताबीर और हल्ल मुश्किलात पर क़ादिर है। पस अगर तू इस तहरीर को पढ़े और इसका मतलब मुझसे बयान करे तो अरग़वानी ख़िलअत पाएगा और तेरी गर्दन में ज़रीन तौक़ पहनाया जाएगा और तू ममलिकत में तीसरे दर्जे का हाकिम होगा।" तब दानियाल अलै0 ने बादशाह को जवाब दिया: "तेरा इन्आम तेरे ही पास रहे और अपना सिला किसी और को दे तो भी मैं बादशाह के लिये इस तहरीर को पढूंगा और इसका मतलब उस से बयान करूंगा।" (सूरह दानियाल: ब0 5, आयत 18,3)

इसके बाद बादशाह ने ख़्वाब सुनाया और हज़रत ने इसकी ताबीर बताई। इसमें दुनिया की तारीख़ के मुख़्तलिफ़ अदवार और मुख़्तलिफ़ हुकूमतों के आग़ाज़ व अंजाम के मुतअल्लिक़ पेशगोइयां हैं। इनमें से जिस पेशगोई का तअल्लुक़ हमारे दौर और हमारे ज़माने में हज़ारों साल बाद एक ख़ास हुकूमत के क़्याम से है इसका नाम उन्होंने "नफ़रत की रियासत" और "गुनाहों की ममलकत" रखा है। इस रियासत के क़्याम से दुनिया के अंजाम का आग़ाज़ होगा और इसमें गुनाहों की भरमार से यह आग़ाज़ अपने अंजाम की तरफ़ बढ़ेगा और यही वक़्त दो मुक़द्दस रूहानी शख़्सियतों (जनाब मेहदी और हज़रत ईसा बिन मरयम अलै0) और दो बड़े फ़ित्नों (अद्दज्जालुल अकबर और याजूज व माजूज) के ज़ुहूर का होगा।

हज़रत दानियाल अलै0 की इस पेशगोई के जिस हिस्से से हमें दिलचस्पी है वह यह है: "शिमाली बादशाह की जानिब से फ़ौजें तैयार की जाएंगी और वे मुहतरम क़िले को नापाक कर देंगी। फिर वे रोज़ाना की क़ुर्बानियों को छीन लेंगी और वहां नफ़रत की रियासत क़ायम करेंगी।"

इस इबारत में मुहतरम क़िले को नापाक करने से मस्जिद अक़्सा पर यहूदी क़ब्ज़ा और वहां ख़िन्ज़ीर के समोसों के साथ शराब नोशी मुराद है। रोज़ाना की क़ुर्बानियां छीनने से नमाज़ों पर पाबंदी की

तरफ़ इशारा है। रोज़ाना की कुर्बानी से इबादत मुराद है क्योंकि नमाज़ रोज़ होती है जबकि कुर्बानी रोज़ नहीं होती। नफ़रत की रियासत जो अलकुद्स (योरोशलम) पर कब्ज़ा करके यहां "गुनहगार मम्लकत" क़ायम करेगी, इससे मौजूदा इस्राईली रियासत मुराद है। यह रियासत क़ायम कैसे होगी? और इसके करतूत क्या होंगे? मुलाहिज़ा फ़रमायें:

"और अफ़वाज इसकी मदद करेंगी और वह मुहकमे मुक़द्दस को नापाक और दाइमी कुर्बानी को मौक़ूफ़ करेंगे और उजाड़ने वाली मक्रूह चीज़ नस्ब करेंगे। और वे उहदे मुक़द्दस के ख़िलाफ़ शरारत करने वालों को बरगश्ता करेगा लेकिन अपने ख़ुदा को पहचानने वाल तक़वियत पाकर कुछ दिखाएंगे।" (तौरातः स0 846......दानियालः ब0 11, आयतः 32, 31)

नफ़रत की रियासत की मदद करने वाली अफ़वाज अमरीका और बर्तानिया हैं। उजाड़ने वाल मक्रूह चीज़ की तन्सीब से मस्जिदे अक़्सा की जगह दज्जाल के क़स्र सदारत का क़्याम है। शरारत करने वालों को बरगश्ता करने से मुराद ईसाई दुनिया को वरग़ला कर सहीवनी मक़ासिद की तक्मील के लिये इस्तिमाल करना है। अपने ख़ुदा को पहचानने वालों के कुछ करने से फ़लस्तीनी फ़िदाईन की बेमिसाल मज़ाहमत की तरफ़ इशारा है और ये उनकी ख़ुदा परस्ती और ख़ुदा के हां मक़्बूलियत की वाज़ेह ख़ुशख़बरी है जो इन मज़लूमों के ज़ख़्मों का मरहम है।

यह रियासत कब क़ायम होगी? यह हमारी इस बहस का अहम तरीन सवाल है। हज़रत दानियाल अलै0 फ़रमाते हैं:

फिर मैंने दो मुक़द्दस ग़ैबी आवाज़ों को कहते सुनाः "यह मुआमला कब तक इसी तरह चलेगा कि मीज़ान और मुक़द्दस मक़ाम को क़दमों तले रौंद दिया जाए?" इस पर दूसरी आवाज़ ने जवाब दियाः "दो हज़ार तीन सौ दिनों तक के लिये। फिर ये

मुक़द्दस मक़ाम पाक साफ़ कर दिया जाएगा।'' (तौरातः स0 846......दानियालः ब08 आयतः 13, 14)

इस पेशगोई से मालूम हुआ कि नफ़रत की रियासत 2300 साल बाद क़ायम होगी। किस लम्हे से 2300 साल बाद??? यह हम आगे चल कर बताएंगे। पहले आख़िरी पेशगाई जिस से पता चलता है कि यह रियासत 45 दिन बाद ख़त्म हो जाएगी।

हज़रत दानियाल अलै0 फ़रमाते हैं: ''अगर्चे मैंने फ़रिश्तों की यह बात सुन ली मगर मैं इसे समझ नहीं सका। चुनांचे मैंने अल्लाह से दुआ कीः ''ऐ अल्लाह! खेल किस तरह ख़त्म होगा? अल्लाह ने जवाब दियाः दानियाल अपने काम से काम रखो। अल्फ़ाज़ पर कुफ़्ल चढ़ा दिये गए हैं और मुआमलात पर मुहर लगा दी गई है। अब आख़िरी वक़्त आने पर सारा राज़ फ़ाश होगा जिस दिन कि कुर्बानियां छीन ली जाएंगी और नफ़रत की रियासत क़ायम कर दी जाएगी। इसके बाद से एक हज़ार दो सौ नब्बे दिन बाक़ी रह जाएंगे। मुबारक हैं वे लोग जो एक हज़ार दो सौ पैंतीस के इख़्तिताम तक पहुंच जाएंगे। लेकिन (ऐ दानियाल!) तुम अपना काम दुनिया के इख़्तिताम तक करते रहो। तुम्हें आराम दिया जाएगा।'' (तौरातः स0 849, ब0 12, आयत, 8, 13)

ईसाई और यहूदी शारिहीन यहां पहुंच कर सख़्त तज़बज़ुब का शिकार हो जाते हैं उन्हें समझ नहीं आता कि इसमें वक़्त का जो तअय्युन किया गया, इस से क्या मुराद लिया जाए? क्योंकि दुनिया में ऐसी रियासत नहीं जो 2300 दिनों के बाद क़ायम हुई हो और महज़ 45 दिन क़ायम रहने के बाद ख़त्म हो गई हो। (1290−1235=45)

मगर वे तौरात से ही मदद लें और आईना देखने से न डरें तो तौरात में दिनों से मुराद साल लिया जाता है। मसलन हज़क़ील में है: ''मैंने तुम्हारे लिये एक दिन को एक साल के बराबर कर दिया है।''

लिहाज़ा आयत में 45 दिनों से मुराद 45 साल हैं। अब पेशगोई के मुताबिक़ उस रियासत का क़्याम 2300 साल बाद होगा। तौरात व इंजील के शारिहीन के मुताबिक़ इन सालों का आग़ाज़ सिकंदरे आज़म के एशिया फ़तह करने से होता है जो 333 क़ब्ल मसीह में हुआ। चुनांचे नफ़रत की रियासत (Abomination Of Desolation) का क़्याम 333 क़ब्ल मसीह के 2300 साल बाद होगा (2300−333=1967) यानी 1967 ई0 में। यही वह साल है जिस में इस्राईली अफ़्वाज अलक़ुद्स में दाख़िल हुईं और मस्जिदे अक़्सा की हौलनाक आतिशज़दगी का वाक़िआ पेश आया। इस्राईल अगर्चे 1948 ई0 में बना लेकिन अलक़ुद्स (यरोशलम) जिस तक रसाई यहूद का असल मक़्सद है, वह 1967 ई में इस्राईलियों के क़ब्ज़े में गया। अब अगर यह रियासत अपने क़्याम के 45 साल बाद तबाह व बरबाद होती है और उसकी बरबादी हज़रत ईसा अलै0 और हज़रत मेहदी की अफ़्वाज के हाथों होगी और यह दज्जाल और गुस्ताख़ यहूदियों के कुल्ली ख़ातमे पर ख़त्म होगी तो फिर बाज़ मुहक़्क़क़ीन का कहना है कि (ई0 1967+45=2012) के फ़ार्मूले से नफ़रत की इस गुनहगार ममलिकत का इख़्तिताम......या इख़्तिताम के आग़ाज़......का ज़माना 2012 ई0 के आसपास बनता है। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

"वे पूछते हैं: ये सब कब होगा? कह दीजिये: शायद यह अन्क़रीब ही हो जाए।"

आलमें अरब के मशहूर हक़गो आलिम डाक्टर सफ़र बिन अब्दुर्रहमान अलहवाली जिन्हें हक़गोई की पादाश में मुतअद्दिद मर्तबा क़ैद व बंद की सुऊबतें बर्दाश्त करनी पड़ी हैं, उनका कहना है: "यह कोई हत्मी साल नहीं है। हां! अगर यहूदी हज़रात हम से शर्त लगाना चाहें जैसे कि अह्ले क़ुरैश ने हज़रात अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 से शर्त लगाई थी तो हम बिला किसी तर्दीद के कह सकते हैं कि वह अपनी

शर्त हम से हार जाएंगे।" (यौमूल ग़ज़बः तर्जुमा रज़ीउद्दीन सय्यद, स0: 174)

यहूद यह शर्त हारें या न, इनका अर्ज़े फ़लस्तीन हारना और आख़िरी बरबादी का शिकार होना यक़ीनी है। और तौरात के मुताबिक़ मुबारक है वे लोग जो तक़्वा और जिहाद पर कारबंद रहते हुए मज़लूमों का साथ दिल, ज़बान या हाथ से देते हैं, उनके लिये तन्हाइयों में रोते और दुआएं करते हैं, उनके लिये नेक जज़्बात रखते हैं और उनके साथ हश्र के मुतमन्नी हैं।

नफ़रत की रियासत के ख़ातमे पर अह्ले हक़ ख़ुशी के तराने पढ़ेंगे, योरोशलम पाक साफ़ हो जाएगा। तमाम अह्ले ज़मीन और आसमानी मख़्लूक़ात यह कहते हुए अल्लाह तआला की तारीफ़ करेंगीः

"अलहम्दु लिल्लाह! नजात, अज़्मत, इज़्ज़त और ख़ौफ़ सब के लिये हम ख़ुदा के सज़ा वार हैं जो हमारा रब है। उसके फ़ैसले दुरुस्त हैं क्योंकि उसने उस तवाइफ़ को सज़ा दी जिसने अपनी बदकारी से रूए ज़मीन को भर दिया था। उसने अल्लाह के बंदों का ख़ून बहाया था और अल्लाह ने उससे इसका इंतिक़ाम लिया।"

रूए ज़मीन को ज़ुल्म से भरने वाला अमरीका है और अल्लाह की सज़ाओं से मुराद हुआ, तूफ़ान, ज़ल्ज़ले, और ताऊन (एड्ज़) हैं जो अमरीका को हर तरफ़ से घेर लेंगे। आलमी शर के ख़ातमे के बाद आलमी ख़ैर का वक़्त आएगा और ख़ुदा अपने उन वफ़ादार बंदों को इन्आम देगा जो हक़ की फ़तह पर आजिज़ी के साथ उसका शुक्र अदा करते हैं।

"क्योंकि फिर मैं लोगों के लिये एक पाकीज़ा ज़बान दूंगा जो अल्लाह का नाम पुकारेंगे और जो कंधा से कंधा मिलाकर अल्लाह की इबादत करते हैं।"

यहां पहुंच कर ईसाई व यहूदी मुहक़्क़िक़ीन गुंग हो जाते हैं कि

अगर आख़िरी फ़तह उनकी हुई तो फिर कंधे से कंधा मिला कर हम्द के गीत वे किस तरह गाएंगे? यह उनका तजाहुले आरिफ़ाना और अल्लाह की आयात में मअनवी तहरीफ़ है। पूरी दुनिया ख़ुसूसन ईसाई और यहूदी अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं कि इस्लाम के इलावा दुनिया में कोई मज़हब नहीं जिस में इबादत गुज़ार "बुन्याने मर्सूस" की मानिंद नमाज़ में कंधे से कंधा मिला कर खड़े होते हैं और उनकी ज़बान पर पाकीज़ा तक्बीरात और हम्द का तराना (सूरह फ़ातिहा) जारी होता है।

शर्त हम से हार जाएंगे।" (यौमूल ग़ज़बः तर्जुमा रज़ीउद्दीन सय्यद, स0: 174)

यहूद यह शर्त हारें या न, इनका अर्ज़े फ़लस्तीन हारना और आख़िरी बरबादी का शिकार होना यक़ीनी है। और तौरात के मुताबिक़ मुबारक है वे लोग जो तक़्वा और जिहाद पर कारबंद रहते हुए मज़लूमों का साथ दिल, ज़बान या हाथ से देते हैं, उनके लिये तन्हाइयों में रोते और दुआएं करते हैं, उनके लिये नेक जज़्बात रखते हैं और उनके साथ हश्र के मुतमन्नी हैं।

नफ़रत की रियासत के ख़ातमे पर अह्ले हक़ खुशी के तराने पढ़ेंगे, योरोशलम पाक साफ़ हो जाएगा। तमाम अह्ले ज़मीन और आसमानी मख़्लूक़ात यह कहते हुए अल्लाह तआला की तारीफ़ करेंगीः

"अलहम्दु लिल्लाह! नजात, अज़्मत, इज़्ज़त और ख़ौफ़ सब के लिये हम खुदा के सज़ा वार हैं जो हमारा रब है। उसके फ़ैसले दुरुस्त हैं क्योंकि उसने उस तवाइफ़ को सज़ा दी जिसने अपनी बदकारी से रूए ज़मीन को भर दिया था। उसने अल्लाह के बंदों का खून बहाया था और अल्लाह ने उससे इसका इंतिक़ाम लिया।"

रूए ज़मीन को ज़ुल्म से भरने वाला अमरीका है और अल्लाह की सज़ाओं से मुराद हुआ, तूफ़ान, ज़ल्ज़ले, और ताऊन (एड्ज़) हैं जो अमरीका को हर तरफ़ से घेर लेंगे। आलमी शर के ख़ातमे के बाद आलमी ख़ैर का वक़्त आएगा और खुदा अपने उन वफ़ादार बंदों को इन्आम देगा जो हक़ की फ़तह पर आजिज़ी के साथ उसका शुक्र अदा करते हैं।

"क्योंकि फिर मैं लोगों के लिये एक पाकीज़ा ज़बान दूंगा जो अल्लाह का नाम पुकारेंगे और जो कंधा से कंधा मिलाकर अल्लाह की इबादत करते हैं।"

यहां पहुंच कर ईसाई व यहूदी मुहक़्क़िक़ीन गुंग हो जाते हैं कि

की मुहर सब्त कर दी जाए। उनका कहना था हदीस शरीफ में जिस शख़्स को हारिसुल हरास कहा गया है, आख़िर उसका इम्कान तो है कि वह मैं हूं। तो आप हज़रात इस आजिज़ाना तज्वीज़ पर मुहरे तसदीक़ सब्त फरमाएं ताकि एक अहम ख़ला पुर हो। उनके पास काग़ज़ात का जो पुलंदा था उसमें दुनिया जहां के दस्तख़त, तस्दीक़ात और मुहरें थीं। उनके पास मौजूद क़िस्मा क़िस्म तसदीक़ात देखकर ऐसा लगता था कि उन्हें मुहरों के नमूने जमा करने का शौक़ है, जैसा कि कुछ लोगों को टिकट, सिक्के या माचिस की डिबिया वग़ैरा जमा करके गिनीज़ बुक ऑफ़ दी वर्ल्ड रिकार्ड में नाम लिखवाने या और किसी तरह का एज़ाज़ पाने का शौक़ होता है। ऐसा मैं इसलिये कह रहा हूं कि आज तक मेहदवियत का दावा करने वाले तो बहुत से कज़्ज़ाब सामने आए। ये सारे कज़्ज़ाब शैतान सिफ़त होते थे या नफ़्स परस्त, जाह परस्त और माल परस्त। हज़रत मेहदी के साथी होने का दावा करने वाला पहली बार सामने आया था और वह था भी ऐसा मरंजान मरंज, भोली भाली और मासूम व बे ज़रर शख़्सियत कि उस पर गुस्सा के बजाए उससे शुग्ल करने और लुत्फ़ लेने का दिल चाहता था। बंदा ने उनसे अर्ज़ की कि यह रूहानी मनासिब कुछ करके दिखाने वालों के लिये हैं। उनमें ऐसा नहीं होता कि पहले किसी को मुक़द्दस शख़्सियत बनाकर रूहानी मंसब पर फ़ाइज़ कर दिया जाए और फिर उससे दरख़्वास्त की जाए कि अब वह हमारी तजवीज़ और ताईद की लाज रखने के लिये नज़राने की वसूलियों के अलावा भी कुछ करके दिखाया करे......लेकिन उनका बस यही इसरार था कि पहले किसी शख़्स को (बिल तअय्युन उन्ही को) हारिस मान लिया जाए फिर बात आगे बढ़ेगी। बाबा जी मिज़ाज के बुरे न थे। बस उनके दिमाग़ में किसी तरह यह सौदा समा गया था। बंदा ने उनको शाम तक अपने साथ रखा और जब दारुल इफ़्ता का वक़्त ख़त्म हो गया तो उन्हें साथ "फ़क़ीरी थल्ले" पर ले गया। बंदा

की मस्जिद साथ एक थल्ला था जिस का नामयार लोगों ने "फ़क़ीरी थल्ला" रखा छोड़ा था। मग़रिब से इशा और मा बाद इशा तक वहां मुतालआ और पढ़ाई होती थी और काम से फ़रागत के बाद तआम व कलाम फ़क़ीरी नशिस्तें। यहां हमने बाबा जी को खूब जांचा परखा। टटोल टटोल कर देखा। दिल इस पर था कि अगर यह किसी फ़ित्ने का आग़ाज़ है तो उनके पास मौजूद तसदीक़नामे और काग़ज़ात का पुलिंदा ग़ायब कर दिया जाए और अगर महज़ बेज़रर क़िस्म के शख़्स को एक शौक़ चढ़ गया है और आगे चल कर ऐसा कोई ख़तरा नहीं तो उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया जाए। खूब छान फटक के बाद यही सामने आया कि बाबा जी न तो कोई बात अच्छी तरह कर सकते हैं न तालीम याफ़्ता हैं। न दस्तख़त और मुहरों के नक़्श जमा करने से आगे का कोई मंसूबा है। ज़ाहिर में जितने मासूम नज़र आते हैं हक़ीक़त में इससे भी ज़्यादा भोले हैं। इसलिये एक दो रोज़ मेहमानी के बाद रुख़सत कर दिया। बवक़्ते रुख़सती उनको शिक्वा था कि तुम सारी बात करते हो लेकिन अपनी दस्तख़त और मुहर नहीं देते। बताइये! ऐसा शख़्स भी हारिसुल हरास हो सकता है जिसे यह भी ख़बर न हो कि हम उनके पास मौजूद बक़िया तसदीक़ी ज़ख़ीरे को ठिकाने लगाना चाहते हैं और वह हम से हमारी तसदीक़ न मिलने पर शिक्वा कर रहा है।

हारिस और मंसूर दो लक़ब है। दो ज़िम्मेदारियां हैं। दो अज़ीम ख़िदमात हैं, जो ये हज़रात दीने इस्लाम की बुलंदी के लिये अंजाम देंगे। जब हज़रत मेहदी सात उलमा के मजबूर करने पर इमारत क़बूल करते हुए इस्लाह व जिहाद पर बैअत लेंगे तो पहले पहल उन्हें दुनियाए कुफ़्र से ज़्यादा अपने उन लोगों से ख़तरा होगा जो ग़फ़लत, दुन्या परस्ती, फ़ितनए माद्दियत में मुब्तला हो जाने या अहादीस की अस्रे हाज़िर पर तत्बीक़ न कर सकने की वजह से उन्हें इस्लाही व जिहादी क़ाइद मानने से इंकार करेंगे। इस वक़्त से पहले हज़रत

मेहदी की कोई जमाअत, कोई तहरीक या तंज़ीम वग़ैरा कुछ नहीं होगी। बल्कि उन्हें पता भी न होगा कि वह "मेहदी" हैं। एक यका व तन्हा, ग़रीब व मुसाफ़िर शख़्स जिसके साथ चंद उलमा और इन उलमा के मुकल्लिद चंद जांबाज़ होंगे। इसे ग़ैरों के अलावा अपनों की भी शदीद मुख़ालिफ़त का सामना होगा। इसको जिसकी नुसरत और इआनत की ज़रूरत होगी इसके लिये अल्लाह तआला तो अफ़राद को तौफ़ीक़ देगा कि एक उनकी माली किफ़ालत व ख़बरगीरी करेगा और दूसरा उनके लिये अस्करी कुमक व रसद का इंतिज़ाम करेगा। पहले को हदीस शरीफ़ में "हारिस" यानी किसान कहा गया है कि वह ज़िराअत वग़ैरा के ज़रीए किसानों की तरह मेहनत करेगा और दौलत कमा कर हज़रत की ख़िदमत में पेश करके इंफ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह का वह अमल ज़िंदा करेगा जो सहाबा किराम रज़ि0 अजमईन की प्यारी सुन्नत है। दूसरे को "मंसूर" यानी वह शख़्स जिसकी ग़ैबी मदद की जाए, का अलामती नाम दिया गया है। वह अस्करी उमूर का माहिर जो क़ाबिल और दिलैर सालार होगा और हज़रत मेहदी के दुश्मनों को रौंदता हुआ और हज़रत मेहदी के लशकर की राह हमवार करता हुआ बढ़ता चला जाएगा और कुदरत की ग़ैबी मदद की बदौलत उसका और उसके साथ मौजूद सरफ़रोश मुजाहिदीन का रास्ता कोई न रोक सकेगा। इसकी मिसाल अगर समझना चाहें तो आज के दौर में आलमे कुफ़्र को मतलूब दो अहम शख़्सियात में से एक ने तागूत से बरसर पैकार लशकरे इस्लाम की अस्करी मदद की है, उनको पनाह फ़राहम की है और दूसरी अल्लाह के लिये कमाए गए अमवाल में से अल्लाह के सिपाहियों पर अल्लाह कि लिये ख़र्च कर रहा है। यह हत्मी तअय्युन हर्गिज़ नहीं, बतौर मिसाल और नमूना है। हदीस शरीफ़ का बिऐनिही मिस्दाक़ ये दो शख़्सियतें हों या न हों लेकिन बमुताबिक़ हदीस इस तरह की शख़्सियात की मदद करना उम्मत के हर मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है।

इन शख़्सियात को तसदीक़ी दस्तख़त और मुहरों से नहीं, उनके कारनामों और दीन के लिये दी गई क़ुर्बानियों से पहचाना जाता है।

हज़रत हारिस व हज़रत मंसूर यानी जिहाद बिलमाल और जिहाद बिन्नफ़्स के फ़रीज़े को अदा करने के लिये अपना तन मन धन लगाने वाली यह मुबारक शख़्सियात जो हज़रत मेहदी का दस्त रास्त होंगी, के अलावा अहादीस में उन सात उलमा का तज़किरा भी हज़रत मेहदी के तज़किरे के ज़िम्न में आता है जिहोंने तीन सौ से कुछ ऊपर अफ़राद से दीने इस्लाम की ख़ातिर जीने मरने की बैअत ले रखी होगी और वह कुर्रए अर्ज़ के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में ग़ल्बए दीन की कोशिशों की क़्यादत कर रहे होंगे और फिर आख़िरकार हज़रत मेहदी की तलाश में अपने साथियों के साथ हरमैन जा पहुंचेंगे। ये लोग उम्मत को अपनी तरफ़......अपनी शख़्सियत की तरफ़......नहीं बुलाएंगे......लेकिन मस्ला यहां भी वही आ जाता है कि उनके साथ भी वही चल सकेगा जो अपने दिल को ग़ैर अल्लाह से और अपने अमल को शरीअत की मुख़ालिफ़त से पाक साफ़ करके फ़िदाइय्यत हासिल कर चुका होगा। हज़रत मेहदी के साथी बहुत थोड़े लेकिन असहाबे बदर की तरह बहुत मुंतख़ब लोग होंगे। उनकी क़लील तरीन तादाद को देखकर ही आम मुसलमान कहेंगे कि यह तो दहशतगर्द दीवानों का टोला है। पूरी दुनिया की मुत्तहिद व मुनज़्ज़म फ़ौज के ख़िलाफ़ लड़ कर ख़ुदकशी का शौक़ पूरा करने चला है। यह तो शरीअत की सिखाई हुई हिक्मत के ख़िलाफ़ चल रहा है। यह तो ख़ुद भी मरेगा और हमें भी ''पत्थरों के दौर'' में पहुंचा कर छोड़ेगा।

सो मेहदी मौऊद की इस दुनिया में तशरीफ़ आवरी लाचार और बेयार व मददगार मसाकीन की इआनत के लिये होगी जो बमुश्किल अपने कमज़ोर वजूद को कांधा दिये हुए होंगे। अपने गर्द व पेश की

प्रागंदगी से बेपरवाह अपने ईमानों को सीनों से लगाए नहीं जानते कि रहनुमाई के लिये किधर का रुख़ करें। "अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है।" यह वह हकीकत है जो कुर्आन में बारबार दोहराई गई है। तारीख़ गवाह है कि हमेशा दुनिया के कमज़ोर तरीन ही सबसे पहले आगे बढ़कर नूरे हिदायत को सीनों से लगाते हैं और अब्दी नजात पाते हैं। हमेशा की तरह, यह ग़रीब व आजिज़ हैं जो हज़रत मेहदी से वफ़ादारी औ इताअत शिआरी की बैअत करेंगे। बिना हिचकिचाहट और बेग़ैर किसी लालच या दलील के। ये इन जज़्बात व एहसासात का निहायत तलातुम ख़ेज़ जोश ज़ुहूरे सानी होगा जो आंहुज़ूर सल्ल0 ने अपने अव्वलीन सहाबा किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम में मोजज़न कर दिये थे। हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि0 से मर्वी एक हदीस तसदीक़ करती है कि हज़रत मेहदी भी उम्मत में अक़ीदत व मुहब्बत के नफ़ीस एहसासात उजागर कर देंगे। जिसके मुक़द्दर में हिदायत पाना लिखा है वह आप की पुरकशिश और दिलरुबा शख़्सियत पर फ़रेफ़्ता हो जाएगा। अक़्ल व इश्क़ के यही दोराहे हैं जहां हक़ शनास दिल शक्की मिज़ाज दिमाग़ पर सबक़त ले जाता है और फ़ह्म व फ़रास्त किसी काम नहीं आती। ख़ालिस इल्म व दानिश अगर किसी काम आ सकता तो अबू जहल व अबू लहब ईमान लाने वालों में आगे होते। क्योंकि ये एक वजीह ग़ैर मामूली आदमी थे और अपनी फ़ित्री ज़िहानत और समझबूझ की वजह से इज़्ज़त व एहतिराम वाले थे, लेकिन वे हक़ की तलब न होने के बाइस पड़े रह गए और हब्शी व रूमी दुनिया व आख़िरत की इज़्ज़त पा गए। अलग़र्ज़......ख़ुलासा यह कि हज़रत मेहदी के ज़ुहूर से पहले ये दो शख़्सियात उनके लिये राह हमवार कर रही होंगी और इस्लाम की नश्अते सानिया के लिये अपने क़ाइद के साथ मिल कर

वफ़ादारी और जांबाज़ी की शानदार रिवायात को ताज़ा करके इस्लाम और मुसलमानों के ग़ल्बे की नवीद साबित होंगी।

चंद बातें

इस ज़मीमे के बाद यह मौज़ू तक़रीबन मुकम्मल हो चुका है। आख़िर में चंद बातें अर्ज़ करनी हैं:

1) बाज़ हज़रात को इशकाल है कि यह बहस छेड़ने का क्या फ़ाइदा? बंदा को भी अर्से तक तरद्दुद था......लेकिन इसका जवाब इस सिलसिलए मज़ामीन के आग़ाज़ में अर्ज़ किया जा चुका है कि इस से इंशाअल्लाह नुक़्सान कोई नहीं, अलबत्ता फ़ाइदे की उम्मीद ज़रूर है। नुक़्सान तो इंशाअल्लाह इसलिये नहीं कि झूटे मुद्दइय्यों की अलामात खोल कर मुकर्रर, सह कर्रर बयान की गई हैं, ये मज़ामीन पढ़ने वाले इंशाअल्लाह ऐसे किसी काज़िब के चक्कर में नहीं आएंगे बल्कि उसकी मुख़ालिफ़त में किर्दार अदा करेंगे......और इफ़ादियत का पहलू इस तरह है कि अगर हज़रत मेहदी का ज़माना क़रीब हुआ तो उम्मते मुस्लिमा के सालेह और फ़हीम अफ़राद के लिये ख़ुद को तैयार कर लेंगे, मुजाहिदीन की हौसला अफ़ज़ाई होगी, मायूस लोगों को तक़्वियत मिलेगी। और अगर ऐसा न हुआ तो इस तज़्किरे का पहला और आख़िरी मक़्सद इस्लाहे ज़ात और इक़ामते शरीअत की जद्दो जेहद है। अगर कोई मुसलमान इसमें लग जाता है तो चाहे वह हज़रत मेहदी का ज़माना पा ले......या न पा सके......लेकिन उनके साथियों के लिये मैदान हमवार कर जाए, इससे बढ़कर और सआदत क्या हो सकती है? मौलाना रूम मसनवी शरीफ़ में फ़रमाते हैं कि सूफ़िया लोगों से कहते हैं: "मौत क़रीब है, तैयारी कर लो।" फ़लसफ़ी कहता है: "साठ सत्तर साल से पहले मरना नहीं, जल्दी की क्या ज़रूरत है?" यह ऐसा ही है जैसे कोई हमदर्द शख़्स किसी मुसाफ़िर से कहे: "इज़ाफ़ी बोझ उठाने की क्या ज़रूरत है? पानी

उसके मक़्बूल बंदों से इस्लाह का तालिब हूं। अल्लाह तआला हम सबको हिदायत पर इस्तिक़ामत और अपने अकाबिरीन से मज़बूत तअल्लुक़ नसीब फ़रमाए। हक़ की पहचान और अह्ले हक़ की नुसरत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

निहायत शदीद है। यहूदी, ईसाई और मुसलमान तीनों किसी मसीहा के इंतिज़ार में हैं। मुसलमान और ईसाई तो हज़रत मसीह अलै० के इंतिज़ार में (जिनके साथ हज़रत मेहदी का लशकर होगा) और यहूदी "मुख़ालिफ़ मसीह" (Anti Christ) यानी दज्जाले अक्बर के इंतिज़ार में हैं। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि यहूद और ईसाई इसके लिये तैयारी कर रहे हैं। मैदान हमवार कर रहे हैं जबकि उनकी मज़हबी पेशगोइयों में तहरीफ़ होकर कुछ का कुछ बना लिया गया है। सिर्फ़ मुसलमानों के पास सच्चे नबी का सच्चा कलाम बिला तग़य्युर व तब्दील मौजूद है लेकिन वह इस से बेफ़िक्र हैं, बेसुध हैं और जगाने वालों पर नाराज़ हैं कि क्यों नींद ख़राब करते हो? अभी तो दिल्ली बहुत दूर है।

३) पाकिस्तान के हुक्मरानों ने क़्यामे पाकिस्तान से आज तक अल्लाह तआला से इतनी बद अहदियां की हैं कि यह तक्वीनी तौर पर अपने वजूद का जवाज़ खो चुका है। निफ़ाज़े इस्लाम के वादे से इन्हिराफ़ और हमाक़िस्म निफ़ाक़ को फ़रोग़ देने तक कोई चीज़ ऐसी नहीं जिस में कोई कसर छोड़ी गई हो, लेकिन यहां के अवाम का पुरख़ुलूस ईमान और दीन से बेलोस तअल्लुक़ के इलावा कुछ काम ऐसे हैं जो अल्लाह तआला मुख़लिस और दर्दमंद पाकिस्तानियों से (और अफ़ग़ानों) से लेगा। इस बिना पर यह मुल्क आज तक जैसा तैसा बाक़ी है और चल रहा है। हमें अपनी नजात से और बक़ा के इस वाहिद सहारे के तज़किरे से ग़फ़लत किसी तरह ज़ेबा नहीं है।

आख़िरी बात यह कि बंदा ने यह सब कुछ खुद से नहीं लिखा। ज़ख़ीरए अहादीस में से जो रिवायात हमारे अकाबिर ने अपनी किताबों में ली हैं, उनकी असरी तत्बीक़ की कोशिश की है। अगर यह दुरुस्त है तो अल्लाह रब्बुल आलमीन की तरफ़ से है और अकाबिर की बरकात हैं। बंदा तो महज़ नाक़िल है। और अगर इसमें कोई ग़लती है तो बंदा की कज फ़हमी है। अल्लाह से तौबा और

उसके मक़्बूल बंदों से इस्लाह का तालिब हूं। अल्लाह तआला हम सबको हिदायत पर इस्तिक़ामत और अपने अकाबिरीन से मज़बूत तअल्लुक़ नसीब फ़रमाए। हक़ की पहचान और अह्ले हक़ की नुसरत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

दूसरा बाब

मसीहयात

सच्चे और झूटे वादों की कशमकश
सच्चे और झूटे मुद्दइय्यों का तआरुफ़
दस सवालात, दस जवाबात
इब्हाम की तशरीह, उलझनों की सुलझन

इस्लाम और आलमे इस्लाम के लिये धड़कते ज़ख़्मी दिलों की तसकीन का सामान

हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के हाथों मग़रिबी दज्जालियत की पामाली की रूदाद

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 की वसीयत उम्मते मुहम्मदिया के नाम

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ: "يَنْزِلُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ، فَيَدُقُّ الصَّلِيبَ، وَيَقْتُلُ الْخِنْزِيرَ، وَيَضَعُ الْجِزْيَةَ، وَيُهْلِكُ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ فِي زَمَانِهِ الدَّجَّالَ، وَتَقُومُ الْكَلِمَةُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ" قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ: "أَفَلَا تَرَوْنِي شَيْخًا كَبِيرًا قَدْ كَادَتْ أَنْ تَلْتَقِيَ تَرْقُوَتَايَ مِنَ الْكِبَرِ، إِنِّي لَأَرْجُو أَنْ لَا أَمُوتَ حَتَّى أَلْقَاهُ، وَأُحَدِّثَهُ عَنْ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيُصَدِّقُنِي، فَإِنْ أَنَا مِتُّ قَبْلَ أَنْ أَلْقَاهُ وَلَقِيتُمُوهُ بَعْدِي، فَاقْرَءُوا عَلَيْهِ مِنِّي السَّلَامَ."

(अस्सुनन लिद्दानी : 242 रक़्म 691)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है: "ईसा इब्ने मरयम अलै0 नाज़िल होंगे तो सलीब को तोड़ देंगे, ख़िन्ज़ीर को क़त्ल कर देंगे और जिज़्या को मंसूख़ फ़रमा देंगे। अल्लाह तआला उनके ज़माने में दज्जाल को हलाक फ़रमाएंगे। अल्लाह के दीन का बोलबाला होगा।"

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 ने फ़रमाया: "क्या तुम मुझे नहीं देखते हो कि मैं बिल्कुल बूढ़ा हो चुका हूं? मेरी हंसली की हड्डियां बुढ़ापे के सबब मिल जाने के क़रीब हैं। मेरी यह तमन्ना है कि मेरी मौत

उस वक़्त तक न आए जब तक कि मैं आप (हज़रत ईसा अलै0) से मिल न लूं और मैं उनको नबी करीम सल्ल0 की अहादीस सुनाऊं और आप मेरी तसदीक़ करें। अगर मैं आप की मुलाक़ात से पहले मर जाऊं और तुम्हारी उनसे मुलाक़ात हो जाए तो आप (हज़रत ईसा अलै0) का मेरा सलाम अर्ज़ करना।''

मसीह का मअनी

मसीह मीम ज़बर, सीन के नीचे ज़ेर और आख़िर में हा। यह लफ़्ज़ हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिमा अस्सलाम और दज्जाल दोनों पर बोला जाता है, लेकिन जब इससे मुराद दज्जाल हो तो मसीह के साथ दज्जाल का लफ़्ज़ ज़रूर आता है, यानी "मसीह दज्जाल"। लिहाज़ा ईसा अलै0 "मसीह अलहुदा" और दज्जाल "मसीहुज़्ज़लाला" है।

हज़रत ईसा बिन मरयम अलै0 का नाम "मसीह" क्यों रखा गया? अह्ले इल्म ने इसकी कई वुजूहात बयान की हैं:

(1)......मसीह के मअनी छूने के हैं। आपको मसीह इसलिये कहा गया कि आप जिस भी मुसीबत ज़दा को छूते थे वह अल्लाह के इज़्न से सिहतयाब हो जाता था।

(2)......मसीह के एक मअनी सियाहत के हैं। आप ने दावत इलल्लाह का काम करते हुए ज़मीन में सियाहत की इसलिये आप को मसीह कहा गया।

इन दो अक्वाल की बुनियाद पर मसीह बमअनी मासिह (इस्मे फ़ाइल) यानी छूने वाला या सियाहत करने वाला होगा।

(3)……उनके पांव पूरे ज़मीन पर लगते थे, तल्वों में ख़ला नहीं था इसलिये मसीह कहा गया।

4)……चूंकि उन्हें बरकत के साथ मसह किया गया या गुनाहों से पाक किया गया, इसलिये वह बाबरकत थे।

इन दो अक्वाल के मुताबिक़ मसीह बमअनी मम्सूह (इस्मे मफ़ऊल) के होगा।

नामों की इन वुजूहात में कोई तज़ाद नहीं। इस क़िस्म के तमाम फ़ज़ाइल ही उनमें जमा थे, लिहाज़ा ये तमाम वजूहात अपनी जगह दुरुस्त हैं।

जिस तरह हज़रत ईसा अलै0 को मसीह कहते हैं, दज्जाले अक्बर को भी मसीह दज्जाल कहा जाता है। दज्जाले अक्बर का नाम मसीह क्यों रखा गया? इसके बारे में बहुत सारे अक्वाल हैं मगर सबसे ज़्यादा वाज़ेह क़ौल यह है कि दज्जाल को मसीह कहने की वजह यह है उसकी एक आंख और अबरू नहीं है। इब्ने फ़ारिस कहते हैं: "मसीह वह है जिसके चेहरे के दो हिस्सों में से एक हिस्सा मिटा हुआ हो, उसमें न आंख हो और न ही अबरू। इसी लिये दज्जाल को मसीह कहा गया है।" फिर उन्होंने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि0 की सनद से रसूलुल्लाह सल्ल0 की इस हदीस से इस्तिदलाल किया है:

"وَاَنَّ الدَّجَّالَ مَمْسُوْحُ الْعَيْنِ، عَلَيْهَا ظَفْرَةٌ غَلِيْظَةٌ."

"बिला शुबा दज्जाल मिटी हुई आंख वाला है जिस पर एक ग़लीज़ भद्दा नाख़ूना (फुल्ली) है।"

मसीहा का इंतिज़ार

अलामाते क़्यामत का जब भी तज़किरा होगा तो हज़रत मसीह अलै0 का ज़िक्र लाज़िमन आएगा। क्योंकि ख़ुद कुर्आन करीम में इर्शाद है: "और वह (ईसा अलै0) क़्यामत की (निशानियों में से) एक निशानी हैं।" हज़रत मसीह अलै0 अल्लाह तआला के वह सच्चे पैग़म्बर थे जिन्हें यहूद की आख़िरी तंबीह के लिये भेजा गया था। यहूद ने आप से पहले बहुत से अंबिया की तक्ज़ीब की, उन्हें सताया, गुस्ताख़ी की, बहुत सों को शहीद भी किया। दो मर्तबा जिला वतनी की सज़ा, हैकल सुलैमानी की बर्बादी और योरोशलम की तबाही के बावजूद वह मान कर न दिये। अल्लाह तआला ने अब बनी इस्राईल में से आख़िरी नबी उनके पास भेजा कि उसकी पैरवी करें। यह उनके दीन की तजदीद करेंगे। यहूद की तहरीफ़ात को ख़त्म करके असल दीन को उसकी असली शक्ल में ज़ाहिर करेंगे और यहूद के लिये सच्चे मसीहा साबित होंगे। हज़रत ईसा अलै0 को पहले दिन से ही अल्लाह तआला ने सच्चे पैग़म्बर होने की मुतअद्दिद अलामात के साथ मबऊस फ़रमाया। आप बग़ैर बाप के कुन्वारी मुक़द्दस मरयम के बतन से पैदा हुए। आप मां की गोद में ही बातें करने लगे थे।

बचपन से ही बहुत नेक सालेह थे। आप की मन मोहनी शख़्सियत और पाकीज़ा किर्दार सबको गरवीदा कर लेता था। सिवाए यहूद के कि उनकी बदबख़्ती ने उनको कहीं का न छोड़ा। उनके अहबार (उलमाए सू) और रुहबान (जाली पीर) ने अपनी रिवायती दुनिया परस्ती, दीन बेज़ारी, संगदिली और हटधर्मी दिखाते हुए जनाब मसीह अलै0 की नुबुव्वत का इंकार किया। उनकी मुक़द्दस व मुतह्हिर मां पर बुहताने अज़ीम लगाया। उनको तरह तरह से सताया। उनके मानने वालों का मज़ाक़ उड़ाया। अपना तमाम तर इल्म व फ़ज़्ल आपकी दावत की मुख़ालिफ़त करने, मुअ़तरज़ाना इशकालात उठाने और आपकी शख़्सियत के ख़िलाफ़ मन्फ़ी प्रोपेगेन्डा करने पर ख़र्च किया......हत्ताकि हाकिमाने वक़्त को आप के ख़िलाफ़ वरग़ला कर झूटे इल्ज़ामात के तहत आपके क़त्ल का हुक्म जारी करवा दिया। ग़र्ज़ यह कि "आख़िरी तंबीह" को "आख़िरी मोहलत" समझने के बजाए मुसलसल "आख़िरी ग़लती" पर इसरार करते रहे। बिल आख़िर जब उनकी नफ़्स परस्ती और शयतनत आख़िरी हद को पहुंच गई तो अल्लाह तआला ने जनाब मसीह अलै0 के हवाले से एक और मोजज़ा ज़ाहिर फ़रमाया जो इंसानी तारीख़ का अजीब वाक़िआ है। आप को बहिफ़ाज़त ज़िंदा सलामत आसमानों पर उठा लिया गया। यहूद अपना सा मुंह लेकर रह गए। आपका बाल भी बीका न कर सके। इसके बाद एक आख़िरी और अज़ीम मोजज़ा फिर ज़ाहिर होगा कि बदी का मह्वर और सरापा शर "अद्दज्जालुल अक्बर" जो अपनी मसनूई और फ़र्ज़ी ख़ुदाई का मुज़ाहिरा करके पूरे रूए ज़मीन पर इंसानी बग़ावत को सबसे अज़ीम मुज़ाहिरा करते हुए काइनात की तसख़ीर का नापाक इरादा लेकर दनदना रहा होगा और हज़रत मेहदी और उनके साथ मौजूद फ़ातेह यूरप व ईसाइयत मुजाहिदीन को सख़्त मशक़्क़त में डाल चुका होगा, उसको क़त्ल करने और ज़मीन से तमाम दज्जाली क़ुव्वतों (यहूद और उनके हमनवाओं) का ख़ातमा

करने के लिये हज़रत मसीह अलै0 के हवाले से एक बार फिर ग़ैर मामूली वाक़िए का ज़ुहूर होगा। आपको आसमान से ज़मीन पर भेजा जाएगा और ऐसी ग़ैर मामूली कुव्वतें अता की जाएंगी जो रहमानी होंगी और दज्जाल की शैतानी कुव्वतों से सामना होते ही उनको पिघला कर ख़ाक कर छोड़ेंगी। यह रूए अर्ज़ पर दिज्ल व फ़रेब के अलमबरदारों का आख़िरी दिन होगा।

ज़ेरे नज़र मज़मून में हम सय्यदना मसीह अलै0 के हवाले से उन अहम पहलुओं का तज़किरा करेंगे जिनका अस्रे हाज़िर में जीने वाले मुसलमानों का जानना ज़रूरी है। सच्चे वादों और झूटे दावों के दरमियान कश्मकश में घिरे बिरादराने इस्लाम को हक़ व बातिल की अज़ीम मअरका आराई के दौरान हक़ पर इस्तिक़ामत और बातिल के ख़िलाफ़ मुक़ावमत के लिये ज़रूरी है कि सच्ची हदीसों को बयान किया जाए और झूटे कज़्ज़ाबों के दिज्ल से बचा जाए। हमारी यह तहरीर दस सवालात या यूं कहें कि हज़रत मसीह अलै0 के हवाले से दस उन्वानात पर मुशतमिल है जो इंशाअल्लाह इस पूरी बहस का जामे ख़ुलासा होंगे......लेकिन ये सवालात या उन्वानात बाद में......इससे क़ब्ल चंद बातों को सामने रखने से बहुत सी उलझनें हल हो सकती हैं।

मुसल्लमा अक़ीदा:

1) अल्लाह के महबूब पैग़म्बर सय्यदना हज़रत ईसा अलै0 का ज़िंदा आसमानों पर उठाया जाना और क़ुर्बे क़यामत में दोबारा ज़मीन पर नाज़िल होना अह्ले इस्लाम का मुसल्लमा अक़ीदा है। यह अक़ीदा अहादीसे मुतवातिरा से साबित है और इसका इंकार कुफ़्र है। माज़ी बईद में फ़िर्क़ए जह्मिया और बाज़ मुअतज़ला और माज़ी क़रीब में सरसय्यद और मिर्ज़ा क़ादियानी और हाल में चंद गुमराह इस्कालर्ज़ के इलावा किसी ने इसका इंकार नहीं किया। इस अक़ीदे (हयाते

मसीह) पर उम्मत का इज्मा है। लिहाज़ा इस अक़ीदे पर ईमान लाना वाजिब है और इसका इंकार कुफ़्र तक ले जाने वाली गुमराही है। जिन्होंने इसका इंकार किया वे मुअ़तज़ला की तरह अक़्ल परस्त थे या मिर्ज़ा क़ादियानी की तरह नफ़्स परस्त (कि ख़ुद को मसीह क़रार दिलवाना चाहते थे) या यहूदियत ज़दा जदीदियों की तरह ज़र परस्त कि जिहाद के इंकार के लिये (हज़रत मसीह अलै0 इमामुल मुजाहिदीन होंगे) हज़रत मसीह अलै0 के नुज़ूल का इंकार कर बैठे। अल्लाह तआला बदबख़्ती की हर शक्ल से महफ़ूज़ फ़रमाए।

मोजज़ात की हिक्मतः

2) सय्यदना हज़रत ईसा अलै0 को जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के सच्चे मोजज़ात दिये गये थे मसलनः ख़तरनाक बीमारियों में मुब्तला बीमारों को अच्छा और मुर्दों को ज़िंदा करना, मिट्टी के बने परिंदों में फूंक मारने से उनका ज़िंदा होकर परवाज़ कर जाना, मादर ज़ाद अंधों की बीनाई लौटा देना, वग़ैरा वग़ैरा। बाज़ हज़रात ने इसकी हिक्मत यह बयान की है कि उस दौर में यूनान के अतिब्बा के हाथों फ़न्ने तिब्ब उरूज पर पहुंच चुका था, अल्लाह तआला ने उसके मुक़ाबले में आपको वह यदशिफ़ा अता फ़रमाया कि जिस तक माहिरीने तिब्ब की सोच भी नहीं पहुंच सकती। यह हिक्मत अपनी जगह हक़ीक़त है। इसके साथ यह बात भी पेशे नज़र रखिये कि हज़रत के इन मोजज़ात का तअल्लुक़ एक और नुक्ते से भी है। यहूद बुरी तरह से माद्दियत परस्ती का शिकार थे। यानी दुनिया की मुहब्बत और लज़्ज़तों की शह्वत के आगे अल्लाह और यौमे आख़िरत को भूल चुके थे। हिर्स व हवस ने उनकी नज़रें ग़ैबी हक़ाइक़ से हटा दी थीं और वह सुफ़ला ख़्वाहिशात के गुलाम होकर हलाल व हराम की तमीज़ भुला बैठे थे। मामूली मफ़ादात की बिना पर अल्लाह की किताब में तहरीफ़ से भी नहीं चूकते थे। यही चीज़ दज्जाल के फ़ित्ने का ख़ुलासा होगी, यानी ख़ुदा बेज़ारी और माद्दियत परस्ती। फ़ानी

रौशनियों की चकाचौंध के सामने जन्नत की नेमतों को भुला देना और वक़्ती लज़्ज़तों और आरज़ी मफ़ादात के बदले जहन्नम का दाइमी अज़ाब ख़रीदने पर तैयार हो जाना। हज़रत ईसा अलै0 ने अपने रूहानी मोजज़ात से यहूद की इस अक़्लियत पसंदी और माद्दियत परस्ती पर ज़र्ब लगाई और उन्हें एहसास दिलाया कि अल्लाह की ताक़त तमाम माद्दी ताक़तों से बाला व बरतर है। ज़मीनी कुव्वतों का ग़ुलाम होकर आसमान वाले को भुला देना बदतरीन हिमाक़त है। आपने दीनी रूहानी कुव्वतों के इज़्हार से माद्दियत परस्तों को सबक़ दिया कि सब कुछ सिर्फ़ वह ही नहीं जो आंखों से नज़र आता है, इस से आगे जहां और भी हैं। यहूद ने आप की बात न मानी बल्कि इसी मर्ज़ में मुब्तला हैं और उनका सरबराहे आज़म, मसीहे काज़िब, दज्जाले अक्बर चूंकि माद्दियत परस्ती (जो आज कल मग़रिब का नज़रयए हयात है) का सबसे बड़ा अलमबरदार हागो और उसकी सफ़ों में यहूदी पेश पेश होंगे, इसलिये अल्लाह तआला आप को दोबारा दुनिया में भेजेगा कि अपनी रूहानी कुव्वतों से दज्जाल की शैतानी और यहूद की साइंसी कुव्वतों को एक नज़र में पामाल कर डालें। चुनांचे दज्जाल आपको देखते ही यूं पिघलना शुरू हो जाएगा, जैसे नमक पानी में घुलता है या चर्बी धूप में गल्ती है। आपकी सांस जिस काफ़िर तक पहुंचेगी उसी वक़्त मर जाएगा और जहां तक आपकी नज़र जाएगी वहां तक आपका सांस पहुंचेगा। यहूद जिस पत्थर या दरख़्त के पीछे छिपेंगे वही उनके ख़िलाफ़ मुख़्बरी करेगा। इस तरह अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर के हाथों इस काइनात का सबसे झूटा शख़्स और सबसे फ़रेबी और मक्कार गिरोह अपने अंजाम को पहुंचेगा।

राहे वफ़ा के राहीः

३) ईसाई हज़रात ने (अल्लाह उनको नेक हिदायत दे) हज़रत ईसा अलै0 से मुहब्बत तो बहुत की लेकिन मुहब्बत की कठिन राहों

पर चलते हुए जब इम्तिहाने इश्क़ में सरखुरूई का मरहला आया तो सच्ची मुहब्बत के दो तक़ाज़े फ़रामोश कर गएः (1) एक तो मुकम्मल इताअत और जांनिसारी। (2) दूसरे महबूब के दुश्मनों से नफ़रत और बेज़ारी। लिहाज़ा इनका मस्ला यह हुआ कि हज़रत ईसा अलै0 की इताअत के बजाए उनको खुदा बना लिया और आपके दुश्मनों से जिहाद के बजाए उनसे दोस्ती गांठ ली। दुनिया में ऐसी कौम न होगी जो अपने पैग़म्बर के साथ मिल कर जान देने वालों से तो नफ़रत और जंग करे जबकि पैग़म्बर की जान लेने की कोशिश करने वालों की हिमायत में इतनी आगे चली जाए कि उनकी "गुनहगार रियासत" का दिफ़ाई हिस्सा बन ज़ाए। सितम ज़रीफ़ी है कि ईसाई हज़रात बावजूद इस अक़्ल व दानिश के जिसने मग़रिब की मुहैयरुल उक़ूल माद्दी तरक़्क़ी को परवान चढ़ाया, यही कुछ कर रहे हैं। मुसलमान इनके पैग़म्बर हज़रत मसीह अलै0 के साथ यक जान व यक क़ालिब होकर आख़िरी दौर का अज़ीम तरीन जिहाद करेंगे और यहूद, मसीह मुख़ालिफ़ "दज्जाले अक्बर" के साथ मिलकर ईसाइयों के पैग़म्बर के ख़िलाफ़ हौलनाक जंग लड़ेंगे। इसके बावजूद ईसाइयों की नफ़रत और जंग मुसलमानों से है जो सिवाए मुहब्बत और अदब के उनके पैग़म्बर का तज़किरा नहीं करते और उनकी मुहब्बत व हिमायत यहूद से है जो तमाम अंबिया की तरह ईसाइयों के मुक़द्दस पैग़म्बर के भी गुस्ताख़ और बज़ुअमे खुद क़ातिल हैं।

आख़िरी मअरके का मैदानः

4) हज़रत मसीह अलै0 का इंतिज़ार दुनिया के तीनों बड़े मज़ाहिब कर रहे हैं। इस्लाम, यहूदियत और ईसाइयत। तीनों में किसी "मसीहे मुंतज़िर" की पेशगोई है जो नजात दहिंदा के तौर पर सामने आएगा। फ़र्क़ इतना है कि यहूद मसीहे काज़िब को सादिक़ समझ कर रहनुमा मानते हैं और मुसलमान व ईसाई मसीहे सादिक़

के मुंतज़िर हैं......लेकिन हम ने जो फ़र्क़ अहमियत के साथ ज़िक्र करना है वह यह कि अस्रे हाज़िर के यहूदी और ईसाई निहायत शिद्दत से मसीहाए ग़ाइब के ज़ुहूर के मुतमन्नी हैं। अह्ले मग़रिब की अक्सरियत ला मज़हब या बेदीन होने की शोहरत रखती है लेकिन इसके बावजूद वह इस हवाले से निहायत पुरजोश, मुतजस्सिस और सरगर्म है। अमरीका में तक़्रीबन 80 हज़ार बुन्याद परस्त पादरी मौजूद हैं जिनमें से बहुत से पादरी एक हज़ार क्रिस्चन रेडियो स्टेशनों से तक़रीर नश्र करते हैं और उनके एक सौ क्रिस्चन टेलीविज़न स्टेशन भी हैं। उनमें एक ख़ासी बड़ी तादाद Dispensationalism की है। ये वे लोग हैं जो हज़रत मसीह अलै0 की अंक़रीब आमद और अज़ीम तरीन जंग पर यक़ीन रखते हैं। इनकी तादाद बराबर बढ़ रही है। बड़ी और बा असर तालीमगाहें जो Dispensationalist अक़ीदे की तालीम देती हैं, उनमें दी बाइबल इंस्टीट्यूट ऑफ़ शिकागो, फ़्लाडिफ़िया कालेज ऑफ़ बाइबल, दी बाइबल इंस्टीट्यूट ऑफ़ लास एंजलिज़ और इन जैसे तक़्रीबन दो सौ कालिज और इंस्टीट्यूट शामिल हैं। 1998 ई0 में बाइबल स्कूलों के तलबा की तादाद एक लाख से ज़्यादा थी। इनमें 80 से 90 फ़ीसद असातिज़ा और उनके तालिबे इल्म भी Dispensationalist हैं। बाइबल कालेज के ग्रेजुएट यहां से निकल कर पादरी बनेंगे और अपने अक़ाइद की तबलीग़ करेंगे या अपना अलग बाइबल स्कूल खोल लेंगे और उनमें तालीम देंगे। ये लोग इस अक़ीदे पर कामिल यक़ीन रखते हैं कि एक ख़ौफ़नाक तबाही आने को है लेकिन उन्हें एक पल की भी तकलीफ़ नहीं होगी क्योंकि उन्हें पहले ही नजात (Rapture) मिल चुकी होगी। इस अक़ीदे के मुक़ल्लिद अपने मसलक में शदीद बुन्याद परस्त हैं और इस वक़्त अमरीकी बाशिंदों की तक़्रीबन एक चौथाई तादाद इसकी मानने वाली है। इस तंज़ीम को माली इम्दाद फ़राहम करने वाले बड़े

बड़े और मशहूर मालदार अमरीकी हैं। यह तहरीक बड़ी तेज़ी से फैल रही है। इसका मक़सद एक बिलियन डालर जमा करना है ताकि कुरए अर्ज़ के हर फ़र्द तक मसीह का पैग़ाम पहुंचा दें। सोलह हज़ार मसीह पादरी जिनकी तादाद में हर रोज़ इज़ाफ़ा हो रहा है, सालाना दो बिलियन डालर के बजट से मुस्तफ़ीद होते हैं। इनके इलावा कुल वक़्ती मुबल्लिग़ दो करोड़ अफ़राद तक अपना पैग़ाम पहुचाते हैं और आधे बिलियन डालर से ज़्यादा अतयात इकट्ठा कर लेते हैं। इन लोगों का असर अमरीकी अवाम के हर तब्क़े पर है। अमरीका की मशहूर सियासी और बैनुल अक़्वामी शख़्सियात उनसे मुतअस्सिर नज़र आती हैं। हत्ताकि रोनाल्ड रैगन से लेकर बुश जुनियर तक के अजीब व ग़रीब बयानात सामने आते रहे हैं जिनकी तौसीक़ न हो चुकी होती तो यक़ीन भी न आता कि ऐसे जिद्दत पसंद ऐसी क़दामत पसंदी पर मुशतमिल बात कह सकते हैं। मसलनः सदर रैगन ने पादरी जिम बेकर से 1981 ई० में बातचीत करते हुए कहा थाः

"ज़रा सोचिये! कम से कम बीस करोड़ सिपाही मशरिक़ से होंगे और करोड़ों मग़रिब से होंगे। सलतनते रूम (यानी मग़रिबी यूरप) की तजदीदे नो के बाद फिर ईसा मसीह पर हमला करेंगे जिन्होंने उनके शहर योरोशलम को ग़ारत किया है। इसके बाद वे उन फ़ौजों पर हमला करेंगे जो आरमेगाडोन की वादी में इकट्ठे होंगे। इसमें कोई शक नहीं कि योरोशलम से दो सौ मील तक इतना खून बहेगा कि वह ज़मीन से घोड़ों की बाग के बराबर होगा। यह सारी वादी जंगी सामान और जानवरों और इंसानों के ज़िंदा जिस्मों और ख़ून से भर जाएगी। ऐसी बात समझ में नहीं आती। इंसान दूसरे इंसान के साथ ऐसे ग़ैर इंसानी अमल का तसव्वुर भी नहीं कर सकता लेकिन उस दिन ख़ुदा इंसानी फ़ित्रत को यह इजाज़त दे देगा कि अपने को पूरी तरह ज़ाहिर कर दे। दुनिया के सारे शहर लंदन, पेरिस, टोक्यो, न्यूयार्क, लास एन्जिलज़, शिकागा, सब सफ़हए हस्ती से नाबूद हो

जाएंगे।"

मशहूर अमरीकी मुसन्निफ़ा ग्रीस हाल सील अपनी मअरकतुल आरा किताब जिसका तर्जुमा "अमरीका की आलमे इस्लाम पर यलग़ार क्यों?" के नाम से बंदा के मज़ामीन और मुसन्निफ़ के तआरुफ़ के साथ शाए हो चुका है, लिखती हैं:

"अमरीका में आठ साल तक एक ऐसा सदर भी (रोनाल्ड रेगन) रहा है जिसे यक़ीन था कि वह वक़्त के ख़ातमे पर (क़ुर्बे क़यामत के दिनों में) ज़िंदा रहेगा बल्कि यह आस लगाए बैठा था कि यह वाक़िआ उसके इंतिज़ामी ज़माने में ही पेश आएगा।"

सदर बुश ने एक मर्तबा सदा लगाई: "मुझे बराहे रास्त ख़ुदा से हिदायात मिलती हैं।" एक मर्तबा एक फ़ज़ाई सफ़र के दौरान सदर साहब मौसूफ़ ने जो बुन्याद परस्तों के ख़िलाफ़ मुहिम में पेश पेश हैं, तय्यारे में ही एक दुआइया तक़रीब मुनक़्क़िद की जिसमें मुहतरमा कोन्ड वलीज़ा राइस साहिबा ने फ़ज़ाई दुआ गुज़ारों को कट्टर मज़हबी रुसूमात के मुताबिक़ सर्विस फ़राहम की।

यह तो दो मशहूर अमरीकी सदर की कारगुज़ारियां थीं। दीगर अमरीकियों की ज़ेहनियत से आगाही के लिये आइये! मज़कूरा बाला मुसन्निफ़ा की तहरीर से मज़ीद कुछ इक़्तिबासात देखते हैं:

☆ ......"रीवन्ड क्लाइड लोट एक बंटी कोस्टल पादरी हैं। उन्होंने बाइबल की एक इबारत की इस तरह तफ़सीर की है कि यहूदियों के तीसरी हैकल की तामीर लाज़मी तौर पर यरोशलम में मसीह की दूसरी बार आमद से पहले होगी। क्लाइडर सुर्ख़ बैल या कंवारी गाए को जो बिल्कुल बेदाग़ हो, ज़बह करने के लिये कहते हैं जिसके बाद आइंदा हैकल की तामीर की रसम पूरी होगी। इसकी ख़ातिर क़दीम इस्लामी इबादतगा हों (मस्जिदे अक़्सा और गुंबदे सुख़्रा) को मिस्मार कर देना होगा। क्लाइड को यक़ीन है कि ख़ुदा की शिराकत से यह काम मुनासिब वक़्त में हो जाएगा।" (न्यूयार्क

टाइम्ज़ः 27 दिसम्बर 1998 ई0)

☆ ......"1998 ई0 के अवाख़िर में एक इस्राईली ख़बरनामा, वेबसाइट पर देखा गया जिसमें कहा गया कि इसका मक्सद मुसलमानों की इबादतगाहों को आज़ाद कराना और उनकी जगह एक यहूदी हैकल की तामीर है। ख़बरनामें में लिखा है कि इस हैकल की तामीर का निहायत मौजूं वक़्त आ गया है। ख़बरनामे में इस्राईली हुकूमत से मुतालबा किया गया था कि मुल्हिदाना इस्लामी क़ब्ज़े को मस्जिद की जगह से ख़त्म कराए। तीसरे हैकल की तामीर बहुत क़रीब है।"

☆ ......इस्राईल को अपने आख़िरी अज़ीम तारीख़ी ड्रामे में स्टेज की मुकम्मल तैयारी के लिये बस एक वाक़िआ होना बाक़ी है। यह है इसकी क़दीमी ज़मीन पर इबादत के लिये एक क़दीमी इबादतगाह की अज़सरे नो तामीर। हज़रत मूसा अलै0 के फ़रामीन की रू से एक ही जगह है जहां इस इबादतगाह को तामीर किया जाना है। यह है माउंट मोरया (Mount Moriah)। वही जगह जहां इससे पहले की इबादतगाहें तामीर की गई थीं यानी ऐन मस्जिदे अक़्सा और गुंबदे मेराज पर।"

अलग़र्ज़! क़िस्सा मुख़्तसर! मग़रिब अपनी माद्दियत परस्ती के बावजूद इस क़दर इंतिहा पसंद है कि शिद्दत से "मसीहा" का इंतिज़ार कर रहा है। उसका अक़ीदा यह है कि "मुक़द्दस बाप" के आने के बाद उन्हें आसमान पर उठा लिया जाएगा जहां से वे आख़िरी हौलनाक जंग का मुज़ाहिरा बाला ख़ानों (Grand Stand Seats) में बैठ कर करेंगे।

जबकि दूसरी तरफ़ मुसलमान मज़हब पसंद होने के बावजूद अपने नबी सल्ल0 की सच्ची पेशगोइयों की तरफ़ ऐसे मुतवज्जेह नहीं हैं जैसाकि दौरे हाज़िर में इन पेशगोइयों के आसार क़रीब देख कर

चौकना और मुतवज्जे होना चाहिये। हज़रत मसीह अलै० का साथ जिन लोगों ने देना है, "मसीहा के इंतिज़ार" से उनकी ग़फ़लत समझ में न आने वाली बात है।

बीच की कड़ी

क़्यामत की अलामात तीन क़िस्म की हैं: (1) अलामाते बईदाः यानी वह अलामात जो हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम के ज़माने में या उनके ज़माने के बाद लेकिन आज से काफ़ी पहले ज़ाहिर हो चुकी हैं और उनके और क़्यामत के दरमियान निस्वतन ज़्यादा फ़ासला है। (2) अलामाते मुतवस्सिताः वह अलामतें जो ज़ाहिर हो गई हैं मगर अभी इंतिहा को नहीं पहुंची। जब यह उरूज को पहुंचेंगी तो तीसरी क़िस्म के अलामात की इब्तिदा जो जाएगी। (3) अलामाते क़रीबाः यह अलामात क़्यामत के बिल्कुल क़रीब की हैं। एक दूसरे के बाद पै दर पै ज़ाहिर होंगी और जब यह सब (कुल दस के क़रीब हैं) ज़ाहिर हो चुकेंगी तो किसी भी वक़्त क़्यामत अचानक आ जाएगी।

पहली और तीसरी क़िस्म की अलामात का तअल्लुक़ काइनात में होने वाले वाक़िआत से है जबकि बीच की दूसरी क़िस्म का तअल्लुक़ इंसानों के आमाल से है। मसलनः पहली क़िस्म में ये अलामात आती हैं: आख़िरी नबी रसूलुल्लाह सल्ल0 की बेअ़सत और वफ़ात, शक़्क़ुल क़मर का वाक़िआ, फ़ित्नए तातार वग़ैरा। दूसरी क़िस्म वह गुनाह और बद आमालियां हैं जिनमें इंसान मुब्तला होकर

जाइज़ व नाजाइज़ को भुला देंगे। बुराइयों का इतना चलन होगा कि मसाजिद व मदारिस भी मौसीक़ी की ग़ैर ज़रूरी मोबाइल घंटियों और दाएं बाएं से कान में पड़ने वाली गाने बजाने की आवाज़ों से मुतअस्सिर होंगे। ये सत्तर से कुछ ऊपर गुनाह हैं जो अहादीसे शरीफ़ा में तफ़सील से मज़्कूर हैं।

तीसरी क़िस्म का तअल्लुक़ अजीब व ग़रीब काइनाती वाक़िआत से है। ये दस हैं और इनमें से पांच का तअल्लुक़ हज़रत ईसा अलै0 के नुजूल तक है और पांच का आप के नुजूल के बाद से। इन आख़िरी पांच को अलामाते कुब्रा या कुब्रा भी कहा जाता है कि इनके बाद क़्यामत बस यूं बपा हो जाएगी जैसे हामिला ऊंटनी के आख़िरी दिन, कि न जाने कब बच्चा जन दे। पहली पांच अलामात तक दुनिया पर ख़ैर का ग़ल्बा होगा और आख़िरी पांच शर के कुल्ली ग़ल्बा तक होंगी। बिलआख़िर सब इंसान चाहे ख़ैर के आमिल हों या शर पर कारबंद, आख़िरी हिसाब के लिये पेश हो जाएंगे।

इन पांच पांच अलामात से पहले यह समझिये कि हज़रत मेहदी अलामाते मुतवस्सिता और अलामाते क़रीबा के दरमियान की कड़ी होंगे यानी जब दुनिया पर हमागीर शर और ज़ुल्म ग़ालिब होकर दाइमी और हत्मी ग़ल्बा के क़रीब होगा और अह्ले हक़ की क़यादत के लिये हज़रत मेहदी का ज़ुहूर होगा जबकि हज़रत ईसा अलै0 की वफ़ात अलामाते क़रीबा और अलामाते कुब्रा की दरमियानी कड़ी होगी यानी हज़रत ईसा अलै0 के हाथों पूरी दुनिया में इस्लाम का निफ़ाज़ होगा, फिर उनकी वफ़ात के बाद हालात बदलने शुरू हो जाएंगे हत्ताकि कि रूए ज़मीन पर शरीर तरीन लोग रह जाएंगे जो सड़कों पर खुल्लम खुल्ला गधों की तरह बदकारी से भी नहीं शरमाएंगे।

पांच "अलामाते क़रीबा" ये हैं: (1) ज़ुहूरे मेहदी (2) ख़ुरूजे दज्जाल (3) नुज़ूले मसीह (4) हिरमज्दवन (Armegadon) नामी

आलमगीर जंग जो इस्राईल का ख़ातमा करेगी और (5) याजूज माजूज……पांच अलामाते कुर्बा ये हैं: (1) ख़स्फ़ यानी ज़मीन में धंस जाने के तीन वाक़िआत। एक मशरिक़ में, एक मग़रिब में और एक जज़ीरतुल अरब में। (2) काइनात में हर तरफ़ फैला हुआ धुंआ (3) सूरज का मग़रिब से तुलू होना (4) ज़मीन से एक अजीबुल ख़िलक़त जानवर का निकलना जो लोगों से बातें करेगा और उन्हें आख़िरी मर्तबा बदआमालियों के बुरे अंजाम से डराएगा। (5) यमन से ज़ाहिर होने वाली आग जो लोगों को हंका कर शाम की तरफ़ ले जाएगी।

जबकि हज़रत मेहदी और हज़रत ईसा अलै0 अलामाते क़्यामत में से आख़िरी अक़्साम की बीच की कड़ी हैं और हज़रत मेहदी का ज़ुहूर उस वक़्त होगा जब ज़मीन गुनाहों से और आलमे इस्लाम कुफ़्र के ज़ुल्म व जबर से भर जाएगा, मुसलमान अपनी क़यादतों से नालां होंगे और किसी नजात दहिंदा क़ाइद का शिद्दत और बेचैनी से इंतिज़ार कर रहे होंगे और इस जबर के आलम में भी कुफ़्र की पेशक़दमी के सामने अपनी जिहादी मज़ाहमत जारी रखेंगे हत्ताकि पूरी दुनिया में थोड़ा सा टुकड़ा रह जाएगा जो उनकी पनाहगाह होगा……जब ये सब कुछ "एण्ड आफ़ टाइम" के आसार में से हैं तो फिर इस दौर में जीने वाले मुसलमानों को एक रात भी तौबा किये बेग़ैर बिस्तर पर जाना और एक सुब्ह भी जिहाद और मुजाहिदीन की इआनत की नियत के बेग़ैर घर से निकलना रवा नहीं। इन तहरीरों का ख़ुलासा और हासिल है। अल्लाह तआला नेक तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

इस तम्हीद के बाद हम हज़रत मसीह अलै0 के मुतअल्लिक़ चंद अहम बातें ज़िक्र करते हैं तो इस मौज़ू को वाज़ेह और साफ़ कर देंगी इंशा अल्लाह! इसमें हमने यह तरीक़ा अपनाया है कि ख़ुद से कुछ कहने के बजाए दस सवाल उठाएंगे और जवाब में हदीस शरीफ़ का तर्जुमा मुकम्मल नक़्ल कर देंगे ताकि दिलचस्पी का अन्सुर भी पैदा

हो और मौजू की सक़ाहत भी क़ायम रहे। हवाले के लिये हम हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद रफ़ी उस्मानी साहब की किताब "अलामाते क़्यामत और नुज़ूले मसीह" से मदद लेंगे। ज़ेल में दी गई अहादीस का तर्जुमा मज़्कूरा किताब से बिऐनिही लिया गया है। जो हज़रात इन अहादीस का हवाला या मज़ीद तफ़सील देखना चाहें वह असल किताब का मुतालआ करें।

मसीहियात से मुतअल्लिक़ दस सवाल

(1) आप ही क्यों?

मसीहियात के हवाले से सबसे पहला सवाल ज़ेहन में यह जन्म लेता है कि यहूद और दज्जाल के क़त्ल के लिये अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलै0 का ही इंतिख़ाब क्यों किया? और क्या वजह है कि उन्ही को यह काम सिपुर्द फ़रमाया गया? हदीस शरीफ़ हमें बताती है:

"हज़रत कअब अह्बार रह0 का इर्शाद है कि जब हज़रत ईसा अलै0 ने देखा कि उनकी पैरवी करने वाले कम और तक्ज़ीब करने वाले ज़्यादा हैं तो इसकी शिकायत अल्लाह तआला से की। अल्लाह ने उनके पास वह्य भेजी कि मैं तुम को (अपने वक़्ते मुक़र्ररा पर तबई मौत से) वफ़ात दूंगा (पस जब तुम्हारे लिये तबई मौत मुक़र्रर है तो ज़ाहिर है कि उन दुश्मनों के हाथों फांसी वग़ैरा पर जान देने से महफ़ूज़ रहोगे) और (फ़िलहाल) मैं तुमको अपने (आलमे बाला) की तरफ़ उठाए लेता हूं और जिस को मैं अपने पास उठा दूं वह मुर्दा नहीं। और मैं इसके बाद तुमको काने दज्जाल पर भेजुंगा और तुम उसको क़त्ल करोगे (आगे फ़रमाते हैं कि) यह बात रसूलुल्लाह सल्ल0

की उस हदीस की तसदीक़ करती है जिसमें आपने फ़रमाया है: "ऐसी उम्मत कैसे हलाक हो सकती है जिसके शुरू में मैं हूं और आख़िर में ईसा?" (अद्दुर्रुल मंसूर ब हवाला इब्ने जरीर)

(2) आप की पहचान कैसे होगी?

बहुत से लोग मसीह होने का दावा करते करते दुनिया को अंधेरों से निकालने के बजाए गुमराही में धकेल कर चले गए। अह्ले हक़ मुसलमान सच्चे मसीह को कैसे पहचानेंगे? ज़बाने नुबुवत जवाब देती है: "हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्ल0 ने फ़रमाया: मेरे और उनके यानी ईसा अलै0 के दर्मियान कोई नबी नहीं, और वह नाज़िल होंगे। जब तुम उनको देखो तो पहचान लेना। उनका क़द व क़ामत दर्मियाना और रंग सुर्ख़ व सफ़ेद होगा। हल्के ज़र्द रंग के दो कपड़ों में होंगे। सर के बाल अगर्चे न हों तब भी (चमक और सफ़ाई की वजह से) ऐसे होंगे कि गोया उनसे पानी टपक रहा है। इस्लाम की ख़ातिर कुफ़्फ़ार से क़िताल करेंगे। पस सलीब तोड़ डालेंगे, ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेंगे और जिज़्या लेना बंद कर देंगे। और अल्लाह उनके ज़माने में इस्लाम के सिवा तमाम मज़ाहिब को ख़त्म कर देगा और (उन्ही के हाथों) मसीह दज्जाल को हलाक करेगा। पस ईसा अलैहिस्सलाम ज़मीन में चालीस साल रहकर वफ़ात पाएंगे, और मुसलमान उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ेंगे। (अबू दाऊद, इब्ने अबी शैबा, मुस्नद अहमद, सही इब्ने हिब्बान, इब्ने जरीर)

सही बुख़ारी की एक हदीस में हज़रत ईसा अलै0 की मज़ीद अलामात बयान फ़रमाई गई हैं: "ईसा अलै0 निहायत हसीन गंदुमी रंग के होंगे। बाल बहुत घुंघरियाले नहीं होंगे। बालों की लम्बाई कंधों तक होगी। सर से पानी टपकता होगा। मुअ़तदिल जिस्म व क़ामत के होंगे। सुर्ख़ी माइल रंग होगा। जैसे अभी हम्माम से (गुस्ल करके)

आए हों।" (सही बुख़ारी, हदीसः 3182, 3184)

(3) आप के साथी कौन होंगे?

आप अलैहिस्सलाम किन लोगों के दर्मियान नाज़िल होंगे? किस वक़्त और किस कैफ़ियत में नाज़िल होंगे? जिन ख़ुशनसीब लोगों में आप उतरेंगे वे किन सिफ़ात की बिना पर इस अज़ीम सआदत के मुस्तहिक़ होंगे कि अल्लाह तआला के मुक़द्दस बंदे की रिफ़ाक़त उनको नसीब होगी? लिसाने नुबुवत हमें आगाह फ़रमाती हैः

☆ ......"हज़रत जाबिर रज़ि0 का बयान है मैंने रसूलुल्लाह सल्ल0 को यह फ़रमाते हुए सुना कि मेरी उम्मत में एक जमाअत (क़ुर्ब) क़्यामत तक हक़ के लिये सरबुलंदी के साथ बरसरे पैकार रहेगी। फ़रमायाः पस ईसा बिन मरयम अलै0 नाज़िल होंगेः तो इस जमाअत का अमीर उनसे कहेगाः "आइये! नमाज़ पढ़ाइये" आप फ़रमायेंगे नहीं! अल्लाह ने इस उम्मत को एज़ाज़ बख़्शा है इसलिये तुम (ही) में से बाज़ बाज़ के अमीर हैं। (मुस्लिम व अहमद)

☆ ......"वह आख़िरी बार उर्दुन के इलाक़े में "अफ़ीक़" नामी घाटी पर नमूदार होगा। [यह दो मील लम्बी घाटी उर्दुन में वाक़े है] उस वक़्त जो शख़्स भी अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता होगा उर्दुन के इलाक़े में मौजूद होगा। (मुसलमानों और दज्जाल के लशकर के दरमियान जंग होगी जिसमें) वह एक तिहाई मुसलमानों का क़त्ल कर देगा। एक तिहाई को शिकस्त देकर भगा देगा और एक तिहाई को बाक़ी छोड़ेगा। रात हो जाएगी तो मुसलमान एक दूसरे से कहेंगे कि तुम्हें अपने रब की रज़ा के लिये अपने (शहीद) भाइयों से जा मिलने (शहीद हो जाने) में अब किस चीज़ का इंतिज़ार है? जिसके पास खाने की कोई चीज़ ज़ाइद हो वह अपने (मुसलमान) भाई को दे दे। तुम फ़ज्र होते ही (आम मामूल की बनिस्बत) जल्दी नमाज़ पढ़ लेना फिर दुश्मन के मुक़ाबले पर रवाना हो जाना।

पस जब ये लोग नमाज़ के लिये उठेंगे तो ईसा अलै० उनके सामने नाज़िल होंगे और नमाज़ उनके साथ पढ़ेंगे। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर वह (हाथ से) इशारा करते हुए फ़रमायेंगे: मेरे और दुश्मने ख़ुदा (दज्जाल) के दर्मियान से हट जाओ (ताकि मुझे देख ले) अबू हाज़िम (जो इस हदीस के रावियों में से एक हैं) कहते हैं कि अबू हुरैरा रज़ि० ने फ़रमाया: दज्जाल (हज़रत ईसा अलै० को देखते ही) ऐसा पिघलेगा जैसे धूप में चिकनाई पिघलती है और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने यह फ़रमाया कि (ऐसा घुलेगा) जैसे नमक पानी में घुलता है और अल्लाह दज्जाल और उसके लशकर पर मुसलमानों को मुसल्लत कर देगा चुनांचे वह सबको क़त्ल कर देंगे। हत्ताकि शजर व हजर भी पुकारेंगे कि ऐ अल्लाह के बंदे! ऐ रहमान के बंदे! ऐ मुसलमान! यह यहूदी है। इसे क़त्ल कर दे। ग़र्ज़ अल्लाह तआला इन सबको फ़ना कर देगा और मुसलमान फ़तहयाब होंगे। पस मुसलमान सलीब को तोड़ेंगे, ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेंगे और जिज़्या बंद कर देंगे।"

☆ ......"अब ईसा बिन मरयम नाज़िल होंगे। लोगों की आंखों और टांगों के दर्मियान से तारीकी हट जाएगी (यानी इतनी रौशनी हो जाएगी कि लोग टांगों तक देख सकेंगे) उस वक़्त ईसा अलै० के जिस्म पर एक ज़िरह होगी। लोग उनसे पूछेंगे आप कौन हैं? वह फ़रमाएंगे: "मैं ईसा इब्ने मरयम अल्लाह का बंदा और रसूल हूं और उसकी (पैदा कर्दा) जान और उसका कलिमा हूं (यानी बाप के बग़ैर महज़ इस लफ़्ज़ "कुन" से पैदा हुआ हूं) तुम तीन सूरतों में से एक को पसंद कर लो: (1) अल्लाह दज्जाल और उसकी फ़ौजों पर बड़ा अज़ाब आसमान से नाज़िल कर दे। (2) उनको ज़मीन में धंसा दे। (3) उनके ऊपर तुम्हारे अस्लिहा को मुसल्लत कर दे और उनके हथियारों को तुम पर बेकार कर दे। मुसलमान कहेंगे: "ऐ अल्लाह के रसूल! यह (आख़िरी) सूरत हमारे लिये और हमारे दिलों के लिये ज़्यादा इतमीनान का ज़रीआ है। चुनांचे उस रोज़ तुम बहुत खाने पीने

वाले (और) डील डोल वाले यहूदी को (भी) देखोगे कि हैबत की वजह से उसका हाथ तलवार न उठा सकेगा। पस मुसलमान (पहाड़ से) उतर कर उनके ऊपर मुसल्लत हो जाएंगे और दज्जाल जब (ईसा) इब्ने मरयम को देखेगा तो सीसी की तरह पिघलने लगेगा। हत्ताकि ईसा अलै0 उसे जा लेंगे और क़त्ल कर देंगे।''

(4) आपका मिशन क्या होगा?

हज़रत ईसा अलै0 किन कामों के लिये तशरीफ़ लाएंगे?

हज़रत ईसा अलै0 एक पैग़म्बर की हैसियत से नहीं आएंगे क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के बाद कोई नबी या पैग़म्बर नहीं आएगा। इस पर सबका इत्तिफ़ाक़ है। अलबत्ता उनकी आमद इसलिये होगीः

''ईसा इब्ने मरयम महज़ मेरी उम्मत के एक मुन्सिफ़ हुक्मरान होंगे। वह सलीब को तोड़ेंगे, ख़िन्ज़ीर को हलाक करेंगे और जिज़्या ख़त्म करेंगे।'' (इब्ने माजा, किताबुल फ़ितनः 4077)

मुन्सिफ़ हुक्मरान से मालूम हुआ कि हज़रत ईसा अलै0 का मिशन इस्लाम की हुक्मरानी को पूरी दुनिया पर क़ायम करना होगा। ख़िंज़ीर को हलाक करने और सलीब का तोड़ने का मतलब यह है कि जो लोग सलीब की इबादत करते हैं वह उसकी इबादत छोड़ देंगे और जो ख़िंज़ीर खाते हैं वह उसे खाना छोड़ देंगे। दरअसल इन दो लफ़्ज़ों में दो अहम हक़ीक़तों का इज़्हार किया गया है। ईसाइयत ने यहूदियत की साज़िश से जनाब मसीह अलै0 के दीन में जो बेअसल अक़ाइद और आमाल दाख़िल किये उन अक़ाइद में सबसे ज़्यादा ग़लत और ख़तरनाक वह अक़ीदा है जिसे सलीब ज़ाहिर करती है और आमाल में सबसे ज़्यादा बुरा अमल ख़िंज़ीर खाना है। हज़रत ईसा अलै0 मौजूदा तहरीफ़ शुदा ईसाइयत की तन्सीख़ और दुनिया से इसका ख़ातमा करने के लिये अलामती तौर पर सलीब तोड़ेंगे और

ख़िज़ीर खाने पर पाबंदी आइद कर देंगे। जो इस बात की अलामत होगी कि दुनिया में अब हुक्मरानी सिर्फ़ इस्लामी अहकाम की है। आपके हाथों इस महल की तक्मील जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल0 का एक मोजज़ा और आपकी सदाक़त की एक और दलील होगी कि खुद ईसाइयत (आजकल के मग़रिबी दुनिया) के मुक़द्दस पैग़म्बर आकर इस्लाम की हक़्क़ानियत को साबित और उसे अमलन नाफ़िज़ करेंगे। अल्लाह तआला ने अह्ले हक़ की ख़ुशख़बरी और बातिल परस्ती की क़ला क़मा के लिये यह चीज़ मुक़द्दर कर दी है और ज़रूर होकर रहेगी। इस हदीस का एक और अहम पहलू यह है कि इसमें कहा गया है हज़रत ईसा अलै0 आकर जिज़्या (टैक्स) ख़त्म कर देंगे। अगर आप दुनिया पर एक नज़र डालें तो हर मुल्क ने अपनी रिआया पर टैक्स आइद कर रखा है चाहे वह मुस्लिम हो या ग़ैर मुस्लिम। हक़ीक़त यह है कि मुसलमान मुमालिक का मग़रिब, आइ एम एफ़ और वर्ल्ड बैंक के ज़रीए मजबूर करता है कि यह टैक्स नाफ़िज़ करे। क्योंकि यह एक आलमी हुकूमत का हिस्सा है और अलजस्सासा का एक तरीक़ा है जिसके ज़रीए हर फ़र्द की जासूसी (उसके कवाइफ़ से आगाही) मुम्किन है। कुर्रए अर्ज़ पर बसने वाले हर शख़्स के कवाइफ़ का अलम टैक्स के निज़ाम के तहत ही हासिल करना मुम्किन है। ये सब कुछ मसीह मुख़ालिफ़ है क्योंकि हज़रत ईसा अलै0 टैक्स के ख़िलाफ़ होंगे और उसे ख़त्म कर देंगे। यूं हम वुसूक़ के साथ कह सकते हैं कि मुरव्वजा टैक्स का निज़ाम दज्जाल का निज़ाम है।

(5) मख़्सूस वक़्त

हज़रत ईसा अलै0 एक ख़ास वक़्त में ज़ाहिर होंगे। इसकी हिक्मत क्या है?

अल्लाह तआला ठीक उस वक़्त ख़ास तौर पर हज़रत मसीह

बिन मरयम को भेजेगा जब दज्जाल एक नौजवान को मारकर ज़िंदा करने का तमाशा दिखा रहा होगा। किसी और वक़्त क्यों नहीं? इसलिये कि ज़िंदगी और मौत पर इख़्तियार एक ऐसी बात होगी जो लोगों ने अपनी ज़िंदगियों में नहीं देखी होगी और लोगों के गिरोह के गिरोह यह समझते हुए कि दज्जाल उनका ख़ुदा है, उसके क़ाल हो जाएंगे (उसका मज़हब कबूल कर लेंगे) बअलफ़ाज़ दीगर दज्जाल और दज्जाली कुव्वतों की साइंसी तरक़्क़ी अपने उरूज पर होगी। दूसरी तरफ़ हज़रत ईसा अलै0 नबी की हैसियत से और अल्लाह के हुक्म से यह मोजज़े (मुर्दों को ज़िंदा करना) दिखा चुके हैं। वह यह मोजज़ा दोबारा दिखा सकते हैं। यह मोजज़ाती कुव्वतों का साइंसी कुव्वतों से एक मुक़ाबला होगा। मोजज़ाती कुव्वतें फ़तह पाएंगी और इस दफ़ा फिर अल्लाह तआला अपने मानने वालों को भटकने और दज्जाल को अपना ख़ुदा मानने की गुमराही से बचा लेगा।

(6) मुद्दते क़याम:

ज़मीन पर नुज़ूल और ख़ातमे के बाद आप अलैहिस्सलाम कितना अर्सा यहां रहेंगे? आलमी ख़िलाफ़ते इस्लामिया के क़याम के बाद आप का मुसलमानों के साथ रहन सहन और बूदोबाश कैसी होगी? आक़ाए मदनी सल्ल0 फ़रमाते हैं:

☆ ......"हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया: ईसा अलै0 दुनिया में (नाज़िल होने के इक्कीस साल बाद) निकाह करेंगे और (निकाह के बाद) दुनिया में उन्नीस साल क़याम फ़रमाएंगे। (इस तरह दुनिया में क़याम की कुल मुद्दत चालीस साल हो जाएगी जैसा कि दूसरी सही अहादीस में आया है) (फ़त्हुल बारी बहवाला नईम बिन हम्माद)

☆ ......रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने क़बीलए जुज़ाम के वफ़्द से फ़रमाया: "शुऐब अलै0 की क़ौम और मूसा अलै0 की

सुसराल का (यानी तुम्हारा) आना मुबारक हो। और क़्यामत उस वक़्त तक न आएगी जब तक मसीह अलै0 तुम्हारी क़ौम में निकाह न करें और उनकी औलाद पैदा न हो।''

क़बीलए जुज़ाम क़ौमे शुऐब की एक शाख़ है और क़ौमें शुऐब का हज़रत मूसा अलै0 की सुसराल होना क़ुर्आने हकीम (सूरह क़सस, आयतः 27, 28) से साबित है। इस हदीस से मालूम हुआ कि हज़रत ईसा अलै0 ज़मीन पर नाज़िल होने के बाद क़बीलए जज़ाम की किसी ख़ातून से निकाह फ़रमाएंगे और उनकी औलाद भी होगी। इस तरह इस क़बीला को हज़रत मूसा अलै0 के इलावा हज़रत ईसा अलै0 के सुसराल होने का शर्फ़ भी हासिल हो जाएगा।

(7) मौज़ए नुज़ूलः

आप अलैहिस्सलाम कहां नाज़िल होंगे?

हज़रत औस बिन औस अस्सक़फ़ी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमायाः ''ईसा इब्ने मरयम दमिश्क़ की मशरिक़ी जानिब में सफ़ेद मीनारे के पास नाज़िल होंगे।'' (अद्दुर्रुल मंसूर बहवाला तब्रानी, कंज़ुल उम्माल, इब्ने असाकिर वग़ैरा)

हज़रत कअब अह्बार रह0 फ़रमाते हैं कि मसीह अलै0 दमिश्क़ के मशरिक़ी दरवाज़ा पर सफ़ेद पुल के पास इस तरह नाज़िल होंगे कि उनको एक बादल ने उठा रखा होगा, वह अपने दोनों हाथ दो फ़रिश्तों के कांधों पर रखे हुए होंगे, उनके जिस्म पर दो मुलायम कपड़े होंगे जिनमें से एक को तहबंद बनाकर बांधा हुआ होगा, दूसरा चादर के तौर पर ओढ़ रखा होगा। जब सर झुकाएंगे तो उससे चांदी के मोती (की तरह पानी के क़तरें) टपकेंगे। (तारीख़े दमिश्क़ लिब्ने असाकिरः 218/1)

इन दोनों अहादीस पर ग़ौर फ़रमाएं। मशहूर यूं है कि जनाब मसीह अलै0 दमिश्क़ की जामा मस्जिद के मशरिक़ी मीनारे पर नुज़ूल

होंगे……लेकिन मुहक़्क़िक़ीन फ़रमाते हैं कि दमिश्क़ शहर के बाहर मशरिक़ी जानिब सफ़ेद पुल के पास नाज़िल होंगे। यह राए हदीस शरीफ़ के अल्फ़ाज़ के ज़्यादा क़रीब है।

(8) आलमी ख़िलाफ़त के क़याम के बाद के हालातः

(6) आप के दौर के हालात क्या होंगे?

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 से मन्कूल एक रिवायत के आख़िर में इर्शाद हैः "और ईसा इब्ने मरयम नाज़िल होकर इस (दज्जाल) को क़त्ल करेंगे। इसके बाद लोग चालीस साल तक ज़िंदगी से इस तरह लुत्फ़ अंदोज़ होंगे कि न कोई मरेगा, न कोई बीमार होगा (जानवर भी किसी को न माली नुक़्सान पहुंचाएंगे न जानी हत्ताकि) आदमी अपनी बकरियों और जानवरों से कहेगाः जाओ घास वग़ैरा चरो। (यानी चरने के लिये उन्हें बेग़ैर चरवाहे के भेज देगा) और वह बकरी दो खेतों के दरमियान से गुज़रते हुए खेत का एक ख़ोशा भी न खाएगी (बल्कि सिर्फ़ घास और वे चीज़ें खायेगी जो जानवरों के ही लिये हैं ताकि ज़िराअत का नुक़्सान न हो) और सांप और बिच्छू किसी को नुक़्सान न पहुंचाएंगे। और दरिंदे घरों के दरवाज़ों पर (भी) किसी को तकलीफ़ न देंगे और आदमी ज़मीन में हल चलाए बेग़ैर ही एक मुद गंदुम बोएगा तो उससे सात सौ मुद (गुंदम) पैदा होगा। (मुद एक क़िस्म पैमाने का नाम है)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमायाः "मसीह अलै0 के नुज़ूल के बाद ज़िंदगी बड़ी ख़ुशगवार होगी। बादलों को बारिश बरसाने और ज़मीन को नबातात उगाने की इजाज़त मिल जाएगी हत्ताकि अगर तुम अपनी बीज ठोस और चिकने पत्थर में भी बोओगे तो उग आएगा और (अम्न व आमान) का यह हाल होगा कि आदमी शेर के पास से गुज़रेगा तो शेर

नुक़्सान न पहुंचाएगा और सांप पर पांव रख देगा तो वह नुक़्सान न पहुंचाएगा। (लोगों के दरमियान) न बुख़्ल होगा न हसद और न बुग्ज़। (कंज़ुल उम्माल बहवाला अबू नईम)

(9) इंतिक़ाल और वफ़ातः

हज़रत आइशा रज़िअल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि उन्होंने पूछाः "या रसूलुल्लाह (सल्ल0)! मुझे ख़्याल होता है कि मैं आपके बाद ज़िंदा रहूंगी तो क्या आप मुझे इजाज़त देते हैं कि मैं आप के बराबर दफ़न की जाऊं?" आप ने फ़रमायाः "वह जगह तुम्हें कैसे मिल सकती है? वहां मेरी, अबू बक्र की, उमर की और ईसा बिन मरयम की क़ब्र के अलावा किसी की जगह नहीं है।"

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि0 का इर्शाद है कि तौरात में मुहम्मद सल्ल0 की सिफ़ात लिखी हुई हैं और (यह कि) ईसा इब्ने मरयम के पास दफ़न किये जाएंगे। (तिर्मिज़ी, अद्दुर्रुल मंसूर)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि0 की हदीसे मौक़ूफ़ में है कि ईसा अलै0 को रसूलुल्लाह सल्ल0 के साथ दफ़न किया जाएगा। नीज़ उन्ही की रिवायत में यह भी है कि "ईसा इब्ने मरयम को रसूलुल्लाह सल्ल0 के दो साथियों के साथ दफ़न किया जाएगा पस ईसा अलै0 की क़ब्र चौथी होगी।" (रवाहुल बुख़ारी फ़ी तारीख़िही व अत्तब्रानी कमा फ़िअद्दुर्रिल मंसूर)

(10) आप के बादः

दसवां और आख़िरी सवाल यह है कि आप के बाद मुसलमानों पर और इस दुनिया पर क्या बनेगी?

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमायाः "ईसा इब्ने मरयम नाज़िल होकर दज्जाल को क़त्ल करेंगे और चालीस साल (दुनिया में) रहेंगे। लोगों में अल्लाह की किताब और मेरी सुन्नत के मुताबिक़ अमल करेंगे और उनकी मौत के बाद

लोग ईसा अलै0 की वसियत के मुताबिक़ (क़बीलए) बनी तमीम के एक शख़्स को आपका ख़लीफ़ा मुक़र्रर करेंगे जिसका नाम "मक़अद" होगा। मक़अद की मौत के बाद लोगों पर तीस साल गुज़रने न पाएंगे कि क़ुर्आन पाक लोगों के सीनों और उनके मसाहिफ़ से उठा लिया जाएगा। बाज़ रिवायाते हदीस से बज़ाहिर मालूम होता है कि ईसा अलै0 की वफ़ात के बाद क़्यामत बहुत जल्द आ जाएगी और मज़कूरा बाला हदीस से मालूम होता है कि कम अज़ कम एक सौ बीस साल ज़रूर लगेंगे। इससे दोनों रिवायतों में तज़ाद का शुबह होता है। जवाब यह है कि अगर्चे एक सौ बीस साल की मुद्दत हो मगर यह एक सौ बीस साल निहायत तेज़ी से गुज़र जाएंगे। हत्ताकि एक साल एक महीना के बराबर और एक महीना एक हफ़्ते के बराबर, एक हफ़्ता एक दिन के बराबर और एक दिन एक घंटा के बराबर मालूम होगा। औक़ात में शदीद बेबरकती की पेशगोई मुस्नद अहमद की एक हदीसे मरफ़ूआ में सराहतन मौजूद है जिसे हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 ने रिवायत किया है। इन सब रिवायात को मिलाकर ग़ौर करने से मालूम होता है कि हज़रत ईसा अलै0 की वफ़ात के बाद क़्यामत तक कम अज़ कम एक सौ बीस साल ज़रूर लगेंगे मसलनः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अलआस रज़ि0 के असर में है कि ईसा अलै0 के बाद क़्यामत से पहले एक सौ बीस बरस तक अरब लोग शिर्क व बुत परस्ती में मुब्तला रहेंगे!!! और फ़त्हुल बारी में तो हज़रत अम्र बिन अलआस रज़ि0 का यह इर्शाद मंक़ूल है कि सूरज के मग़रिब से तुलू के बाद लोग दुनिया में एक सौ बीस साल तक रहेंगे फिर क़्यामत आएगी।

एक अहम सवाल का जवाब

मेहदवियात और मसीहयात के ज़िम्न में आप ने जिन जंगों या वाक़िआत का तज़किरा पढ़ा, उनमें क़दीम हथियारों, क़दीम माहौल और क़दीम अस्बाबे जंग का ज़िक्र है। क्या यह अलामती ज़बान है या हक़ीक़ी? गुफ़्तगू इस्तिआरे में की गई है या जदीद दुनिया वापस क़दामत की तरफ़ लौट जाएगी? कोई आलमी एटमी जंग इसे वापस सदियां पीछे ले जाएगी? अगर ऐसा है तो हज़रत मेहदी और हज़रत ईसा अलै0 के दौर से पहले एक और आलमी जंग क्योंकर होगी? तीसरी जंगे अज़ीम तो इन्ही के दौर में हुई है। अलग़र्ज़ यह सवाल बहुत अहम है कि आया हज़रत मेहदी के दौर में ज़माना दोबारा अपनी क़दीम रविश पर आ जाएगा या ये तमाम साइंसी ईजादात आप के ज़ुहूर के वक़्त मौजूद होंगी? इस सिलसिले में फ़क़ीहुल अस्र मुफ़्ती यूसुफ़ लुधयानवी साहब रहि0 से एक अहम सवाल और उसका जवाब नक़्ल किया जाता है।

सवालः रोज़नामा जंग में आप का मज़मून "अलामाते क़यामत" पढ़ा। इसमें कोई शक नहीं कि आप हर मसले का हल इतमीनान बख़्श तौर पर और क़ुर्आन व हदीस के हवाले से दिया करते हैं। यह मज़मून भी आप की इल्मियत और तहक़ीक़ का मज़हर है......लेकिन

एक बात समझ में नहीं आती कि पूरा मज़मून पढ़ने से अंदाज़ा होता है कि हज़रत मेहदी और हज़रत ईसा अलै0 के कुफ़्फ़ार और ईसाइयों से जो मअरके होंगे, उनमें घोड़ों, तलवारों, तीर कमान वग़ैरा का इस्तिमाल होगा। फ़ौजें क़दीम ज़माना की तरह मैदाने जंग में आमने सामने होकर लड़ेंगी।

आप ने लिखा है कि हज़रत मेहदी क़ुस्तुन्तुनिया (Istanbul) से नौ घुड़सवारों को दज्जाल का पता मालूम करने के लिये शाम भेजेंगे। गोया उस ज़माने में हवाई जहाज़ दस्तयाब न होंगे। फिर यह कि हज़रत ईसा अलै0 दज्जाल को एक नेज़े से हलाक करेंगे और याजूज माजूज की क़ौम भी जब फ़साद बरपा करने आएगी तो उसके पास तीर कमान होंगे। यानी वह स्टैन गन (Stan gun), राइफ़ल (Rifle), पिस्टल (Pistol) और तबाहख़ेज़ बमों (Explosive Bombs) का ज़माना न होगा। ज़मीन पर इंसान के वजूद में आने के बाद से साइंस बराबर तरक़्क़ी ही कर रही है और क़्यामत के आने तक तो उसमें क़्यामत ख़ेज़ तरक़्क़ी हो चुकी होगी।

दूसरी बात यह है कि आप ने लिखा है कि हज़रत ईसा अलै0, अल्लाह के हुक्म से चंद ख़ास आदमियों के हमराह याजूज माजूज की क़ौम से बचने के लिये कूहे तूर के क़िला में पनाह गुज़ीं होंगे। यानी दुनिया के बाक़ी अरबों इंसानों को जो सब मुसलमान हो चुके होंगे याजूज माजूज के रहम व करम पर छोड़ जाएंगे। इतने इंसान तो ज़ाहिर है उस क़िला में भी नहीं समा सकते। मैंने किसी किताब में यह दुआ पढ़ी थी जो हुज़ूर सल्ल0 ने फ़ित्नए दज्जाल से बचने के लिये मुसलमानों को बताई थी। मुझे याद नहीं रही। मंदर्जा बाला बातों की वज़ाहत के अलावा वह दुआ भी तहरीर फ़रमाएं तो इनायत होगी।

जवाबः इंसानी तमद्दुन के ढांचे बदलते रहते हैं। आज ज़राए मुवासलात (Communication system) और आलाते जंग

(War weapons) की जो तरक़्क़ी याफ़्ता शक्ल हमारे सामने है, आज से डेढ़ दो सदी पहले कोई शख़्स इसको बयान करता तो लोगों को इस पर "जुनून" का शुबा होता। अब ख़ुदा ही बेहतर जानता है कि यह साइंसी तरक़्क़ी इसी रफ़्तार से आगे बढ़ती रहेगी या ख़ुदकशी करके इंसाने तमद्दुन को फिर तीर व कमान की तरफ़ लौटा देगी?

ज़ाहिर है कि अगर यह दूसरी सूरत पेश आए जिसका ख़तरा हर वक़्त मौजूद है और जिस से साइंसदान ख़ुद भी लर्ज़ा बरअंदाम हैं तो इन अहादीसे तय्यबा में कोई इशकाल बाक़ी नहीं रह जाता जिन में हज़रत मेहदी और हज़रत ईसा अलै0 के ज़माने का नक़्शा पेश किया गया है।

फ़ित्नए दज्जाल से हिफ़ाज़त के लिये सूरह कहफ़ जुमा के दिन पढ़ने का हुक्म है। कम अज़ कम इसकी पहली और आख़िरी दस आयतें तो हर मुसलमान को पढ़ते रहना चाहिये। एक दुआ हदीस शरीफ़ में यह तलक़ीन की गई है:

"اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ، وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْمَاْثَمِ وَالْمَغْرَمِ."

(आप के मसाइल और उनका हल: 269, 268/1)

बाज़ अह्ले इल्म हज़रात ने हज़रत मेहदी के मअरकों में इस्तिमाल होने वाले सामाने जंग की जदीद ताबीरात भी की हैं, जिन से मालूम होता है कि आप जदीद ईजादात को भी जिहाद में इस्तिमाल फ़रमाएंगे। ताहम यह महज़ अंदाज़े ही हैं।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا هُوَ کَائِنٌ اَلْبَتَّةَ.

अल्लाह तआला इस अज़ीम फ़ित्ने और इसके ज़ुहूर से पहले

ज़ाहिर होने वाली ज़ेली फ़ित्नों के जरासीम से हम सबको महफ़ूज़ रखे। हमें और हमारी आल व औलाद व मुतअल्लिक़ीन को इस शैतानी फ़ितने के ख़िलाफ़ बरसरे पैकार रहनुमाई अफ़वाज के हरावल दस्ते में शामिल फ़रमाए। इस ख़्वाहिश को हमारी दिली आरज़ू और क़ल्बी तमन्ना में तब्दील फ़रमा दे ताकि हम इस रास्ते की मुश्किलात को हंसी खुशी और मर्दाना वार झेल कर मुक़र्रिबीन के ज़ुम्रे में शामिल हो जाएं। आमीन या रब्बुल आलमीन।

तीसरा बाब

दज्जालियात

☆ ......दज्जाल कौन है?

☆ ......दज्जाल कहां है?

☆ ......दज्जाल कब बरआमद होगा?

☆ ......दज्जाल की दावत, दज्जाली फ़ित्ना की नौइय्यत व हक़ीक़त

☆ ......दज्जाल के पैरूकार, दज्जाली कुव्वतों का तआरुफ़

☆ ......दज्जाल से बचने के लिये रूहानी व तज़्वीराती तदाबीर

झूटे मुद्दई की तीन निशानियां

"जब से अल्लाह ने जुर्रियते आदम को पैदा किया, दुनिया में कोई फ़ित्ना दज्जाल के फ़ित्ने से बड़ा नहीं हुआ और अल्लाह ने जिस नबी को भी मबऊस फ़रमाया उसने अपनी उम्मत को दज्जाल से डराया है और मैं आख़िरी नबी हूं और तुम बेहतरीन उम्मत (इसलिये) वह लामलाहा तुम्हारे ही अंदर निकलेगा। अगर वह मेरी मौजूदगी (ज़िंदगी) में निकला तो हर मुसलमान की तरफ़ उसका मुक़ाबला करने वाला मैं हूं, और अगर मेरे बाद निकला तो हर मुसलमान अपना दिफ़ा खुद करेगा। और अल्लाह हर मुसलमान का मुहाफ़िज़ व निगेहबान होगा। वह शाम व इराक़ के दरमियान एक रास्ते पर नमूदार होगा, पस वह दाएं बाएं (हर तरफ़) फ़साद फैलाएगा। ऐ अल्लाह के बंदो! तुम उस वक़्त साबित क़दम रहना। मैं तुम्हारे सामने उसकी वह अलामात बयान किये देता हूं, जो मुझसे पहले किसी नबी ने बयान नहीं कीं। वह सबसे पहले तो यह दावा करेगा कि मैं नबी हूं, हालांकि मेरे बाद कोई नबी नहीं, फिर यह दावा करेगा कि मैं तुम्हारा रब हूं (मगर उसे देखने वाले को पहली ही नज़र में ऐसी तीन चीज़ें नज़र आ जाएंगी जिन से उसके दावे की तक्ज़ीब की जा सकती है: (1) एक तो यह कि वह आंखों से नज़र आ रहा होगा) हालांकि अपने रब को मरने से पहले नहीं देख सकते (तो उसका नज़र आना ही इस बात की दलील होगा कि वह रब नहीं)

दज्जाल का नाम और उसका मअनी

यहूदी अपने इस नजाते दहिंदा का आख़िरी मालूम नाम यबुल, यूविल या हुबल बताते हैं जो हमारी इस्लामी इस्तिलाह में "तागूत" और बुतों का नाम है। और इसका लक़ब उनके यहां "मसीहा" या "मसिय्या" है।

दज्जाल का असल नाम मालूम नहीं......अहादीस में आया जो नहीं......यह अपने लकब से मशहूर है। इस्लामी इस्तिलाह में इसका लकब "दज्जाल" है और यह लफ़्ज़ इसकी पहचान और अलामत बन गया है।

दज्जाल का माद्दा "द, ज, ल" है। दज्जाल का लफ़्ज़ इस माद्दे से फ़अ्आल के वज़न पर मुबालग़ा का सेग़ा है। दजल का एक मअनी है ढांप लेना, लपेट लेना। दज्जाल इसलिये कहा गया है क्योंकि उसने हक़ को बातिल से ढांप दिया है या इसलिये कि उसने अपने झूट, मुलम्मा साज़ी और फ़रेबकारी के ज़रीए अपने कुफ़्र को लोगों से छिपा लिया है। एक क़ौल यह है कि चूंकि वह अपनी फ़ौजों से ज़मीन को ढांप लेगा, इसलिये उसे दज्जाल कहा गया है। इस लकब में इस बात की तरफ इशारा है कि "दज्जाले अक्बर" बहुत

दज्जाल का नाम और उसका मअनी

यहूदी अपने इस नजाते दहिंदा का आख़िरी मालूम नाम यबुल, यूविल या हुबल बताते हैं जो हमारी इस्लामी इस्तिलाह में "तागूत" और बुतों का नाम है। और इसका लक़ब उनके यहां "मसीहा" या "मसिय्या" है।

दज्जाल का असल नाम मालूम नहीं......अहादीस में आया जो नहीं......यह अपने लक़ब से मशहूर है। इस्लामी इस्तिलाह में इसका लक़ब "दज्जाल" है और यह लफ़्ज़ इसकी पहचान और अलामत बन गया है।

दज्जाल का माद्दा "द, ज, ल" है। दज्जाल का लफ़्ज़ इस माद्दे से फ़अ़्आल के वज़न पर मुबालग़ा का सेग़ा है। दजल का एक मअनी है ढांप लेना, लपेट लेना। दज्जाल इसलिये कहा गया है क्योंकि उसने हक़ को बातिल से ढांप दिया है या इसलिये कि उसने अपने झूट, मुलम्मा साज़ी और फरेबकारी के ज़रीए अपने कुफ़्र को लोगों से छिपा लिया है। एक क़ौल यह है कि चूंकि वह अपनी फ़ौजों से ज़मीन को ढांप लेगा, इसलिये उसे दज्जाल कहा गया है। इस लक़ब में इस बात की तरफ़ इशारा है कि "दज्जाले अक्बर" बहुत

बड़े बड़े फ़ित्नों वाला है। वह इन फ़ित्नों के ज़रीए अपने कुफ़्र को मुलम्मा साज़ी के साथ पेश करेगा और अल्लाह के बंदों को शुकूक व शुबहात में डाल देगा। नीज़ यह कि उसका फ़ित्ना आलमी फ़ित्ना होगा।

"दज्जाल" अरबी ज़बान में जालसाज़, मुलम्मा साज और फ़रेबकार को भी कहते हैं। "दजल" किसी नक़्ली चीज़ पर सोने का पानी चढ़ाने को कहते हैं। दज्जाल का यह नाम इसलिये रखा गया है कि झूट और फ़रेब उसकी शख़्सियत का नुमायां तरीन वस्फ़ होगा। वह ज़ाहिर कुछ करेगा, अंदर कुछ होगा। उसके तमाम दावे, मंसूबे, सरगर्मियां और प्रोग्राम एक ही महवर के गिर्द गर्दिश करेंगे और वह है: दजल और फ़रेब। उसके हर फ़ेअल पर धोकादही और ग़लत बयानी का साया होगा। उसकी कोई चीज़ कोई अमल, कोई क़ौल, इस शैतानी आदत के असर से ख़ाली न होगा।

उसका एक मअनी ऐसी मरहम या लैप जिसकी तह जिल्द पर बिछा कर बदनुमाई छिपाई जाती है। आप इस तारीफ़ को सामने रखें और इन ख़ुशनुमा अल्फ़ाज़ को देखें जिन्हें मग़रिबी मीडया (जो दज्जाल की पहली आलमी प्रेस कान्फ्रेंस से लेकर उसके आलमी वक़्ती इक़्तिदार तक उसकी नुमाइंदगी का फ़र्ज़ अंजाम देगा) ने वज़ा कर रखा है और उनके सहारे अपनी ख़ूंख़्वारी, संगदिली और क़त्ल व ग़ारतगरी को छिपा रखा है। मसलनः इंसानी हुक़ूक़, इश्तिराकियत, जमहूरियत, मआशी ख़ुशहाली, मुआशरती मसावात, फ़लाह व बहबूद की ख़ातिर ख़ानदानी मंसूबा बंदी, फ़ुनूने लतीफ़ा, क़ानून व दस्तूर......ये सब अल्फ़ाज़ महज़ नारे हैं। इनके पीछे सिर्फ़ सराब है।

दज्जाल को अहादीस में "मसीह दज्जाल" भी कहा गया है। दज्जाले अक्बर का नाम मसीह क्यों रखा गया? इसके बारे में बहुत सारे अक़्वाल हैं मगर सबसे ज़्यादा वाज़ेह क़ौल यह है कि दज्जाल

को मसीह कहने की वजह यह है कि उसकी एक आंख और अबरू नहीं है। इब्ने फ़ारिस कहते हैं: मसीह वह है जिसके चेहरे के दो हिस्सों में से एक हिस्सा मिटा हुआ हो, उसमें न आंख हो और न ही अबरू। इसीलिये दज्जाल को मसीह कहा गया है। फिर उन्होंने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि0 की सनद से रसूल सल्ल0 की इस हदीस से इस्तिदलाल किया है: "وَاِنَّ الدَّجَّالَ مَمْسُوْحُ الْعَيْنِ، عَلَيْهَا ظَفَرَةٌ غَلِيْظَةٌ۔" "बिला शुबा दज्जाल मिटी हुई आंख वाला जिस पर एक ग़लीज़ भद्दा सा नाखूना (फुल्ली) है।"

"फुल्ली" अरबी के लफ़्ज़ "ظَفَرَةٌ" का तर्जुमा है। यह उस गोश्त को कहते हैं जो बाज़ लोगों की आंख के किनारे पर उग आता है और बाज़ औक़ात आंख की पुत्ली तक फैल कर उसे ढांप लेता है।

वज़ाहत:

बाज़ अहादीस में दज्जाल को बाईं आंख से काना कहा गया है और बाज़ में दाईं आंख से। बज़ाहिर इसमें तआरुज़ का शुबा है मगर एक और अहादीस से पूरी हक़ीक़त वाज़ेह होती है कि दज्जाल की दोनो आंखें ऐबदार होंगी। बाईं आंख बेनूर होगी और दाईं आंख अंगूर की तरह बाहर को निकली होगी। हमारे यहां मसीह का लफ़्ज़ हज़रत ईसा अलै0 के लिये भी बोला जाता है। इसकी वजह और मसीहे सादिक़ और मसीहे काज़िब का फ़र्क़ हम मसीहियात के शुरू में बयान कर चुके हैं।

दज्जाल कौन है?

(1) दज्जाल कौन है? (2) कहां है? (3) कब बरआमद होगा?

फ़ित्नए दज्जाल का आग़ाज़ तो यक़ीनन हो चुका है। इसका सरबराहे आज़म कौन होगा? इसका नुक्तए उरूज कौन सा लम्हा होगा? और हम इस लम्हे से कितनी दूर हैं या हम दज्जाल के अहद में ही जी रहे हैं?

ये वे तीन सवाल हैं जो हर उस ज़ेहन में गर्दिश करते हैं जो दुनिया को सिर्फ़ दुनिया तक और माद्दियत तक महदूद नहीं समझता, आख़िरत पर यक़ीन और रूहानियत और माद्दियत के दर्मियान होने वाली ज़बरदस्त कशमकश पर नज़र रखता है और यह भी यक़ीन रखता है कि रोज़े क़यामत इससे ज़रूर इस हवाले से सवाल किया जाएगा कि ईमान व माद्दियत के इस अज़ीम मअरके में उसने अपना वज़न किस पलड़े में डाला था और इस हवाले से उसका रवय्या और किर्दार क्या था?

बंदा इस हवाले से अर्सए दराज़ तक मुतालआ, जुस्तजू और तफ़तीशी काविशों में लगा रहा लेकिन एक आध मर्तबा हल्का सा मुब्हम किस्म का ज़िक्र करने के अलावा कभी इस मौज़ू को बराहे

रास्त नहीं छेड़ा। अल्लाह तआला जज़ाए ख़ैर दे उन इल्मी शख़्सियात को जो इस मौज़ू पर उम्मत को बेहतरीन मालूमात से आगाह रखते और बरवक़्त नसीहतें करते रहते हैं। इन हज़रात के नाम बंदा की किताब "आलमी यहूदी तंज़ीमें" के मुक़द्दमे में दिये गए हैं और इस किताब के आख़िर में इनकी तसनीफ़ कर्दा मालूमाती किताबों का तज़किरा भी किया गया है। आलमे अरब में सऊदी अरब के डाक्टर अब्दुर्रहमान अलहवाली और मिस्र के उस्ताज़ मुहम्मद अमीन जमालुद्दीन और हिशाम मुहम्मद ने इस हवाले से शानदार काम किया है। डाक्टर अलहवाली किताबों का तर्जुमा रज़ीउद्दीन सय्यद ने और उस्ताद अलअमीन की किताबों का तर्जुमा प्रोफ़ेसर ख़ुर्शीद आलम, कुर्आन कालेज लाहौर ने किया है। हमारे बुज़ुर्गों में से मौलाना मनाज़िर अहसन गीलानी ने "दज्जाली फ़ित्ना के नुमायां ख़द्द व ख़ाल" और मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी रह0 ने "मअरकए ईमान व माद्दियत" में दज्जाल की शख़्सियत और और फ़ित्ने की नौइय्यत पर सूरह कहफ़ की रौशनी में मुफ़स्सल और मुहक़्क़क़ गुफ़्तगू की है जो लाइक़े दीद है। मुआसिरीन में रज़ीउद्दीन सय्यद और ज़कीउद्दीन शर्फ़ी (कराची) के अलावा इसरार आलम (भारत) ने बहुत कुछ लिखा है (मुअख़्ख़िरुज़्ज़कर का काम अगर्चे सब से वक़ी और मुफ़स्सल है लेकिन वह कुछ जगहों पर राहे एतिदाल से हट गये हैं और अपने क़लम को बहकने और अपनी फ़िक्र को जम्हूर की तावील व तफ़सीर, तशरीह व तौज़ीह से हट जाने से बचा नहीं सके। मसलन तफ़सीरी ज़ख़ीरा और फ़िक़्हे इस्लामी पर उनके ग़ैर मुनासिब तबसिरे बाइसे तअज्जुब व अफ़सोस हैं। अल्लाह तआला उनकी ख़िदमात को क़बूल फ़रमाए और कोताहियों से दरगुज़र फ़रमाए।) मौलाना आसिम उमर और आसिफ़ मजीद नक़्शबंदी ने हज़रत मेहदी और फ़ित्नए दज्जाल की अस्री तत्बीक़ में काफ़ी काविश की है। हाल ही में कामरान रअद की

"फ़री मैसज़ी और दज्जाल" नामी शानदार किताब तख़लीक़ात लाहौर से छप कर सामने आई है। अल्लाह तआला सब की मेहनतें कबूल फ़रमाए। बाइसे तअज्जुब यह है कि इतनी मुतअद्दिद काविशों के बावजूद और इतनी मुतनव्वोअ़ आवाज़ें लगने के बावजूद अवाम व ख़्वास में इस हवाले से ख़ास फ़िक्र व तशवीश और तैयारी व दिफ़ाअ़ के आसारे दौर तक दिखाई नहीं देते। दरअसल जब तक ख़्वास इस पर भरपूर तवज्जुह नहीं देंगे, अवाम कहां इसकी ज़हमत गवारा करेंगे कि इस आलमगीर फ़ित्ने से आगाही हासिल करें और इससे हिफ़ाज़त के तक़ाज़ों को समझें? ज़ेरे नज़र तहरीर का मक़सद तजस्सुस फैलाना नहीं, हिफ़ाज़ते ईमान की दावत को आगे बढ़ाना और शैतानी फ़ित्नों से अपनी, अपने मुतअल्लिक़ीन और अहूले इस्लाम के तहफ़्फ़ुज़ की तरफ़ मुतवज्जेह करना है, वल्लाह वलीयुत्तौफ़ीक़।

दज्जाल कौन है? इस हवाले से मुख़्तलिफ़ बातें की जाती रही हैं। बाज़ तो इतनी मज़हका ख़ेज़ हैं कि बेइख़्तियार हंसी आती है। हम इनसे सर्फ़े नज़र करते हुए यहां तीन मशहूर अक़्वाल ज़िक्र करके इन पर तब्सिरा करते हुए चलेंगे।

दज्जाल कौन है?

(1) सामरी जादूगरः

बाज़ हज़रात का कहना है कि हज़रत मूसा अलै० के ज़माने में बनी इस्राईल को गुमराह करके शिर्क में मुब्तला करने वाला सामरी दरहक़ीक़त दज्जाल था। दज्जाल का आलमे एशिया में तसर्रुफ़ का जो भरपूर इख़्तियार दिया गया है उसके तहत सोने से बनाए गए बछड़े को मुतहर्रिक, जानदार और आवाज़ लगाने वाला बना देना कुछ भी बईद नहीं। इसकी दलील यह है कि हज़रत मूसा अलै० ने सामरी से इतना ज़बरदस्त जुर्म सरज़द होने के बावजूद उसे जाने दिया और जो बनी इस्राईल उसके वरग़लाने पर शिर्क में मुब्तला हुए थे, उनकी

तौबा यह तै हुई कि उनको क़त्ल किया जाए। आपने सामरी से फ़रमायाः "وَاِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ" बेशक तेरे लिये एक वक़्त मुक़र्रर है जिस से तू आगे पीछे न हो सकेगा।" यह इसलिये कि सामरी को उस वक़्त क़त्ल किया जाना मक़्सूद न था। दज्जाल जो मसीहे काज़िब है, की मौत तो हज़रत ईसा अलै0 के हाथ पर लिखी हुई है जो मसीहे सादिक़ हैं। जब सामरी से कहा गयाः "فَاذْهَبْ، فَاِنَّ لَكَ فِى الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ" "चला जा तेरी यह सज़ा है कि ज़िंदगी भर कहेगा मुझे न छुओ।" तो दज्जाल अलमुसम्मा बिसामरी मजरूह हालत में वहां से ग़ायब हो गया और अब कहीं रूपोश है।

यह राए हाल ही में दज्जालियत के हवाले से शोहरत पाने वाले मुसन्निफ़ जनाब इसरार आलम की है। इसकी ताईद में कोई क़ौल बंदा को नहीं मिला और सामरी जादूगर के बारे में जो तफ़सीलाते कुतुब तफ़सीर व तारीख़ में वारिद हुई हैं वह दज्जाल पर मुंतबिक़ होती दिखाई नहीं देतीं। मसलनः वह यक चश्म न था। उसकी आंखों के दरमियान काफ़िर लिखा हुआ न था। हज़रत मूसा अलै0 ने उसे कहीं क़ैद नहीं किया था जबकि दज्जाल बेड़ियों में मुक़ैयद है। सामरी को ताहयात सज़ा दी गई थी कि वह हर आने वाले से यह कहता थाः "मुझे मत छुओ।" दज्जाल ऐसा न कहेगा। वह तो सारी दुनिया को अपने क़रीब करने की फ़िक्र में होगा। फिर अगर सामरी ही दज्जाल होता तो हदीस शरीफ़ में कहीं कोई इशारा मिलना चाहिये था। दज्जाल के मुतअल्लिक़ हदीस शरीफ़ में तफ़सीली अलामात हैं लेकिन कहीं यह ज़िक्र नहीं कि वह हज़ारों साल पहले वाला सामरी था।

(2) हीरम आबैफ़ः

बाज़ अहले इल्म की राए है कि इस से हीरम आबैफ़ (या सुख़्रा आसिफ़) मुराद है। यह सय्यदना हज़रत सुलैमान अलै0 के दौर में

हैकल सुलैमानी के नौ बड़े मेमारों (मास्टर मेसंज़) का सरबराह (ग्रेंड मास्टर) था और जिन्नात से तअल्लुक़ रखता था। यहूदी मज़हबी दासतानों के मुताबिक़ इसका (मआज़ अल्लाह) फ़रिश्तों ने काइनात की तामीर के जादूई राज़ बता दिये थे। इससे वे राज़ लेने के लिये इसे क़त्ल कर दिया गया। यहूद की बदक़िस्मती देखिये कि वह अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर हज़रत सुलैमान अलै0 से अपनी निस्बत करते हैं लेकिन उनकी इताअत नहीं करते। उन पर जादू के झूटे बोहतान लगाते हैं जब कि दूसरी तरफ़ वह हीरम आबैफ़ को देवता (उलूही शख़्सियत) तसव्वुर करते हैं। उनके मुताबिक़ कुर्आन शरीफ़ में जो यह मज़कूर है: "और (हमने) जिन्नों को उस (सुलैमान) का ताबे फ़रमान बना दिया जिनमें हर क़िस्म के मेमार और ग़ौताख़ोर थे।" इन मेमार जिन्नों में हीरम आबैफ़ भी था। नीज़ आयते कुर्आनी "और हमने आज़माया सुलैमान को और डाल दिया उसकी कुर्सी पर एक जिस्म......" से यही हरीम आबैफ़ मुराद है जिसने मस्ख़ शुदा यहूदी रिवायात के मुताबिक़ सुलैमानी अंगूठी चुराई थी और तख़्ते सुलैमानी पर क़ाबिज़ हो गया था। इस इस्राईली रिवायात को हमारे मुफ़स्सिरीन ने नक़्ल किया है और इस पर सख़्त तर्दीद की है। हज़रत क़तादा रह0 यह रिवायत बयान करते हैं जो अल्लामा इब्ने कसीर रहि0 के मुताबिक़ यहूदी उलमा से ली गई है:

"हज़रत सुलैमान अलै0 को हुक्म दिया गया कि बैतुल मुक़द्दस इस तरह तामीर करें कि लोहे की कोई आवाज़ सुनने में न आए। उन्होंने बहुत कोशिश की लेकिन कामयाब न हो सके। तब उन्होंने एक जिन्न के बारे में सुना जिसका नाम सुख़्रा या आसिफ़ था। वह उस तकनीक से आगाह था। हज़रत सुलैमान अलै0 ने आसिफ़ को बुलाया। उसने हीरे के साथ पत्थरों को काटने का अमल दिखाया। इस तरीक़े से शर्त पूरी हो गई। चुनांचे हैकले सुलैमानी या बैतुल मुक़द्दस तामीर हो गया। एक दिन हज़रत सुलैमान अलै0 गुस्ल के

लिये जा रहे थे। उन्होंने अपनी अंगूठी आसिफ़ के हवाले की। यह अंगूठी बहुत मुक़द्दस और सुलैमान अलै0 की सलतनत की मुहर थी (एक और रिवायत के मुताबिक़ सुलैमान अलै0 ने यह अंगूठी अपनी एक बीवी को दी जिस से आसिफ़ ने ले ली।) आसिफ़ ने यह अंगूठी समंदर में फैंक दी और खुद सुलैमान अलै0 का रूप धार लिया। अपना चेहरा और वज़ा क़ता तब्दील कर ली। इस तरह आसिफ़ ने सुलैमान अलै0 की सलतनत और तख़्त छीन लिया। आसिफ़ ने सुलैमान अलै0 की हर चीज़ पर इख़्तियार हासिल कर लिया सिवाए बीवियों के। अब उसने ऐसी बहुत सी चीज़ें करना शुरू कर दीं जो अच्छी नहीं थी।

हज़रत सुलैमान अलै0 के एक सहाबी थे जिस तरह उमर रज़ि0 हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के सहाबी थे। उनको शुब्ह हो गया कि सुलैमान अलै0 के रूप में आसिफ़ है। चुनांचे उन्होंने आसिफ़ का इम्तिहान लिया। साथी ने आसिफ़ से एक सवाल पूछा जिसका जवाब उसने तौरात की तालीमात के ख़िलाफ़ दिया। अब सब लोगों को अंदाज़ा हो गया कि यह शख़्स सुलैमान अलै0 पैग़म्बर नहीं। अंजामे कार हज़रत सुलैमान अलै0 ने अपनी सलतनत भी वापस ले ली और आसिफ़ को गिरिफ़्तार कर लिया।" (तफ़सीर इब्ने कसीर। जि0:4, स0: 400)

यहूदी चूंकि हज़रत सुलैमान अलै0 के सच्चे पेरूकार और मानने वाले नहीं थे उन्होंने इस दासतान में कई तौहीन आमेज़ वाक़िआत शामिल कर दिये हैं। अल्लामा इब्ने कसीर रहि0 फ़रमाते हैं: "अह्ले किताब (यहूदियों) का एक गिरोह इस बात पर ईमान नहीं रखता था कि हज़रत सुलैमान अलै0 अल्लाह के पैग़म्बर हैं। इसलिये ज़्यादा इम्कान यही है कि ऐसे लोगों ने यह दासतानें वज़अ़ कर ली हों।"

अलग़र्ज़ हीरम आबैफ़ नामी इंसानी जिन्न या जिन्नाती इंसान

यहूद की मुहर्रफ दासतानों के मुताबिक़ "काइनात का ग्रेन्डार गैसकिट" था। इस मुक़द्दस हैकल के कल्स पर ले जाया गया। यहूद की आलमी तंज़ीम "फ्री मेसन" की मख़्सूस अलामत हर्फ़े "G" का इशारा God की तरफ़ नहीं, यह The Grand Architect Of The Universe का मुख़फ़्फ़फ़ है।

यहूद इसको अपना देवता और मसीहा ख़्याल करते हैं और क्लोनिंग के ज़रीए इसको दोबारा ज़िंदा करने की उम्मीद पर साइंसी तजुर्बात किये जा रहे हैं। फ़री मेसन की तीसरी डिगरी की तक़रीब (यह आख़िरी डिगरी है जो ग़ैर यहूद को दी जाती है) में ये अलफ़ाज़ इस्तिमाल होते हैं। "माआत......नीब......सीन......आ, मा, आत, बा, आ......" यह क़दीम मिस्री ज़बान है। इसका मअनी है: "अज़ीम है फ़री मसेज़ी का मुस्तनद मास्टर, अज़ीम है फ़री मसेज़ी का जज़्बा।" इसमें "सीनियर मास्टर" से यही नीम इंसान नीम क़िस्म का बद अक़ीदा व बद अमल शख़्स मुराद है। यहूद चूंकि इस मुर्दा को ज़िंदा करके उठाने की फ़िक्र में हैं लिहाज़ा वे मास्टर मेसन बनाने की तक़रीब को Raise यानी "उठाने" की तक़रीब कहते हैं, बनाने की तक़रीब नहीं कहते। यहूद को अपने मास्टर और काएनात के ग्रेन्डार गेसकिट की नअश को जेनेटिक साइंस में महारत के ज़रीए उठाने की उम्मीद है।

यह राए यहूद की मख़्सूस मज़हबी रिवायात के मुताबिक़ तो दुरुस्त हो सकती है......मगर फ़िल हक़ीक़त किसी तरह सही नहीं। इसलिये कि हदीस शरीफ़ के मुताबिक़ दज्जाल मुर्दा नहीं, ज़िंदा है। उसकी नअश किसी साइंसी अमल से ज़िंदा नहीं होगी, अलबत्ता जब अल्लाह तआला का हुक्म होगा, उसके जिन्नाती क़िस्म के ज़िंदा वजूद को दुनिया में फ़साद फैलाने के लिये रिहाई मिल जाएगी। किसी मुफ़स्सिर, मुहद्दिस, मुअर्रिख़ या मुहक़्क़िक़ ने आज तक यह

बात नहीं कही कि दज्जाल हैकल सुलैमानी के मेमारों में शामिल था, फिर उसे मार दिया गया और फिर उसे यहूदी ज़िंदा करेंगे। जहां तक बात यहूदी मज़हबी दासतानों की है तो उनका कहना ही क्या? यहूद की बरबादी का सबब यही घड़नतू क़िस्से कहानियां ही तो हैं।

दज्जाल का शख़्सी ख़ाका

(३) अमरीका:

बाज़ हज़रात का कहना है कि अमरीका दज्जाल है। क्योंकि दज्जाल की एक आंख होगी और अमरीका की भी एक आंख है। उसकी माद्दियत की आंख खुली जबकि रूहानियत की आंख चौपट है। वह मुसलमानों को एक आंख से और ग़ैर मुसलमानों को दूसरी से देखता है। उसको अपने फ़ाइदे की चीज़ नज़र आती है दूसरे के नुक़्सान से उसे कोई सरोकार नहीं। उसकी करंसी पर एक आंख बनी हुई है......दज्जाली आंख......जो शैतानी तिकौन के ऊपर असरारे अलामात के बीच में है। उसकी सरज़मीन पर दज्जाली तहज़ीब जन्म ले चुकी है। परवान चढ़ रही है और माद्दी ताक़तों पर ग़ैर मामूली इक़्तिदार की बदौलत वह "न्यू वर्ल्ड आर्डर" के ज़रीए दुनिया में दज्जाली निज़ाम बरपा करना चाहता है। उसके एक सदर (जो जूता खाकर रुख़्सत हुआ) का बयान रिकार्ड पर है: "मुझे खुदा की तरफ़ से बराहे रास्त हिदायात मिलती हैं।" यह तो दावाए नुबुवत के मुतरादिफ़ है और दज्जाल पहले ऐसा ही दावा करेगा। सदर साहब मौसूफ़ यह भी फ़रमा चुके हैं: "हम तुम्हें पत्थरों के दौर में भेज देंगे।" यह फ़िरऔनी लहजा तो दावाए खुदाई के हम मअनी है और

दज्जाल आख़िर में ख़ुदाई का दावा करेगा। दज्जालियत दरअसल झूटी ख़ुदाई का दूसरा नाम है......वग़ैरा वग़ैरा।

जो हज़रात इस राए को अहमियत देते हैं वे दो तरह के हैं: (1) कुछ तो अहादीस का इल्म न होने और ग़लत फ़हमी की बिना पर ऐसा समझते हैं। उनके पेशे नज़र कोई ग़लत मक़्सद नहीं। ये लोग माज़ूर हैं। (2) कुछ जानबूझ कर किसी ख़ास मक़्सद (मसलन यहूदियत की ख़िदमत और मुसलमानों को दज्जाली फ़ित्ने से बेख़बर रखकर दज्जाल की राह हमवार करने) के लिये ऐसा करते हैं। ये ख़ुद दज्जाल हैं। क्योंकि हदीस शरीफ़ में आता है कि अद्दज्जालुल अक्बर से पहले तीस झूटे दज्जाल निकलेंगे। एक हदीस शरीफ़ में तो सत्तर से कुछ ऊपर दज्जालों का ज़िक्र है। दोनों बातें और दोनों आदाद अपनी जगह दुरुस्त हैं। कुछ दज्जाल बी कटेगरी के होंगे कुछ सी कटेगरी के। पहले तीस होंगे। दूसरी क़िस्म सत्तर से कुछ ऊपर होगी। अहादीस को जिसने सरसरी नज़र से भी देखा है उसे यक़ीन है कि दज्जाल कोई मुल्क नहीं, एक मुतअय्यन शख़्स है जिसको इंसानों की आज़माइश के लिये ग़ैर मामूली सलाहियत और ताक़तें दी गई हैं लेकिन वह उनको हमेशा ग़लत मक़ासिद के लिये इस्तिमाल करेगा। हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी रहि0 दज्जाल और दज्जालियत पर अपनी मशहूर किताब "मअरकए ईमान व माद्दियत" के सफ़्हा 135 पर फ़रमाते हैं:

"जिन अहादीस में दज्जाल का ज़िक्र आया है और उसके औसाफ़ व अलामात बयान किये गये हैं, वह तवातुर मआनी की हद तक पहुंच चुकी हैं, उनमें इस बात की साफ़ वज़ाहत है कि वह एक मुअय्यन शख़्स होगा जिसके कुछ मुअय्यन सिफ़ात होंगे। वह एक ख़ास और मुअय्यन ज़माना में ज़ाहिर होगा (जिसकी सही तारीख़ और वक़्त से हम को आगाह नहीं किया गया है) नीज़ एक मुअय्यन क़ौम में ज़ाहिर होगा जो यहूद हैं। इसलिये इन तमाम वज़ाहतों की

मौजूदगी में न इसके इंकार की गुंजाइश है न ज़रूरत। अहादीस में इसका भी तअय्युन कर दिया गया है कि वह फ़लस्तीन में ज़ाहिर होगा और वहां उसको उरूज व ग़लबा हासिल होगा। दरहक़ीक़त फ़लस्तीन वह आख़िरी स्टेज है जहां ईमान व माद्दियत और हक़ व बातिल की यह कशमकश जारी है और मंज़रे आम पर आने वाली है। एक तरफ़ अख़्लाक़ी और क़ानूनी हुक़ूक़ रखने वाली क़ौम है जिनका सबसे बड़ा हथियार और सबसे बड़ी दलील यह है कि वह दीन और दावते इलल्लाह के हामिल हैं और इंसानियत की फ़लाह और मसावात के दाई हैं। दूसरी तरफ़ वह क़ौम है जो एक ख़ास नस्ल और ख़ून के तक़द्दुस व बरतरी की क़ायल है और पूरे आलम और इंसानियत के सारे वसाइल को उस नस्ल और अज़्र के इक़्तिदार व सयादत के अंदर ले आना चाहती है और फ़न्नी सलाहियतों और उलूमे तबइया के वसाइल व ज़राए का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा उसको हासिल है। इंसानियत के इस हक़ीक़ी और फ़ैसलाकुन मअरके के आसार मशरिक़े अरबी और मशरिक़े इस्लामी के उफ़ुक़ पर अब ज़ाहिर हो चुके हैं और हालात व वाक़िआत वह मुनासिब फ़ज़ा और माहौल तैयार कर रहे हैं जिसमें यह कहानी अपने सच्चे किर्दारों के साथ दुहराई जाएगी।"

इस इबारत को ग़ौर से पढ़ा जाए तो मज़मून के शुरू में दिये गए तीनों सवालात के जवाबात आ जाते हैं (दज्जाल कौन है? कहां है? कब बरामद होगा?) लेकिन फ़िलहाल हम इन तीनों की तशरीह नहीं करते। इस वक़्त हम पहले सवाल पर चल रहे हैं।

ख़ुलासए कलाम यह कि अगर्चे अमरीका की दज्जाली खुसूसियात में शक नहीं लेकिन वह दज्जाल नहीं, अलबत्ता अमरीका की तहज़ीब जो सरासर माद्दियत परस्ती पर क़ायम है, दज्जाली तहज़ीबी ज़रूर है। बल्कि दज्जाल अपने ज़ुहूर के बाद जो काम दुनिया में करेगा, अमरीकी इस्तिमार यहूद के वरग़लाने से (दज्जाल को

सच्चा नजात दहिंदा समझ कर) इसकी राह हमवार कर रहा है। दज्जाल को हक़ीक़ी आसमानी ख़ुदाई के मुक़ाबले में फ़र्ज़ी ज़मीनी ख़ुदाई के लिये जो वसाइल दरकार हैं, अमरीका बल्कि पूरा मग़रिब उन्हें मुहय्या करने के लिये दिन रात साइंसी तहक़ीक़ात में लगा हुआ है और यहूदी साइंस दानों के साथ मिल कर नित नई मुहैयरुल उक़ूल चीज़ें ईजाद करके उसकी आलमी हुकूमत की बुन्यादें मज़बूत करने में अपना सारा ज़ोर सर्फ़ कर रहा है। लेकिन इस सब के बावजूद अमरीका दज्जाल नहीं। क्योंकि दज्जाल किसी मुल्क या हुकूमत का नाम नहीं, एक मुतअय्यन शख़्स का नाम है।

आइये! ज़रा एक नज़र उन अहादीस पर जिनसे साफ़ मालूम होता है कि अद्दज्जालुल अक्बर (मसीहे काज़िब) एक मख़्सूस हुलिया रखने वाला इंसान होगाः

☆ ......"वह (अद्दज्जाल, मसीहे काज़िब) एक नौजवान मर्द होगा। उसके बाल छोटे और घुंघरियाले होंगे और वह एक आंख से नाबीना (काना) होगा।" (सही मुस्लिम, 9015)

☆ ......रसूले मक़्बूल सल्ल0 ने एक दफ़ा ख़्वाब में देखा कि वह काबे का तवाफ़ कर रहे हैं कि इस दौरान उन्हें दज्जाल दिखाया गया। आप सल्ल0 ने फ़रमायाः "वो भारी भरकम जिस्म, सुर्ख़ रंगत, घुंघरियाले बाल और एक आंख से नाबीना है। उसकी आंख लटके हुए अंगूर के दाने जैसी है।" (सही बुख़ारी 2242)

☆ ......"उसकी पेशानी पर लफ़्ज़े काफ़िर लिखा हुआ होगा और हर ईमान वाला चाहे पढ़ा लिखा होगा या अनपढ़ वह उस लफ़्ज़ को पढ़ सकेगा।" (मुस्नद अहमद 369, 369-3)

मज़कूरा बाला अहादीस सराहत के साथ अलमसीहुद्दज्जाल के ख़द्द व ख़ाल और शख़्सियत को पेश करती हैं। उनके मुताबिक़ः अद्दज्जाल एक नौजवान होगा। वह तनोमंद और भारी भरकम होगा। उसका रंग सुर्ख़ होगा। उसके बाल घुंघरियाले और बहुत छोटे (कटे

हुए) होंगे। उसकी दोनों आंखों में ऐब होगा। वह आंख से अंधा होगा। उसकी दूसरी आंख इस तरह होगी जैसे अंगूर का लटकता हुआ दाना। उसकी पेशानी पर दोनों आंखों के दर्मियान लफ़्ज़े "काफ़िर" लिखा होगा (नेटो के जो टैंक ख़लीज की जंग और कौसूफ़ की जंग में इस्तिमाल हुए उन पर लफ़्ज़ Kofr लिखा हुआ था) हर ईमान वाला चाहे पढ़ा लिखा हुआ हो या अनपढ़......लेकिन वह "काफ़िर" का लफ़्ज़ उसकी पेशानी पर लिखा पढ़ लेंगे, जबकि काफ़िर आक्सफ़ॉर्ड का ग्रजुऐट हो या हार्वर्ड का मास्टर, वह यह लफ़्ज़ नहीं पढ़ सकेंगे। इसे ईमान की बरकत और कुफ़्र व निफ़ाक़ की नुहूसत के अलावा और क्या नाम दें? जो जितना ज़्यादा अस्री तालीम याफ़्ता होगा वह उतना ही उसके चुंगल में फंसेगा, क्योंकि अस्री तालीम अक़्ल्लियत पसंदी सिखाती है। जो जितना सीधा सादा वाजिबी दीनी तालीम वाला मोमिन होगा वह उससे उतना ही महफ़ूज़ रहेगा, क्योंकि दीनी तालीम अक़्ल्लियत के पार देखने की सलाहियत पैदा करती और रूहानियत सिखाती है। अब यह लफ़्ज़ तज्रीदी अंदाज़ में लिखा होगा या क़ाबिल इदराक अंदाज़ में? इसको ख़ुदा ही बेहतर जानता है। हमें इस तजस्सुस में पड़ने के बजाए इसकी फ़िक्र करनी चाहिये कि हम इसके फ़ित्ने से महफ़ूज़ रहें और वह हमारा ईमान गदला न सके। इसका तरीक़ा हमारे पास ख़ैर ख़्वाह, हुज़ूर पाक सल्ल0 ने बताया है और इस किताब के आख़िरी मज़मून में इसकी तफ़सील आ रही है।

बात दूर होती चली गई। बहस यह हो रही थी कि दज्जाल किसी मुल्क या तहज़ीब का नाम नहीं। यक़ीनी तौर पर एक इंसान का नाम है जो कुछ इज़ाफ़ी सलाहियतों और हैवानी जिबिल्लतों का मालिक है। अल्लाह तआला ने इंसानियत की आज़माइश के लिये उसे आम इंसानों की समझ में न आने वाली कुछ कुव्वतें अता की होंगी जिनकी बिना पर उसे फ़रेब देने की ज़बरदस्त सलाहियत

हासिल होगी। लोगों को आयात व अहादीस के ज़रीए यक़ीन दिलाया गया होगा कि यह झूटा खुदा है। सरापा शर है। उसके शुअबदे देखकर ईमान ख़राब न करो, लेकिन वह ईमान की कमज़ोरी, अह्ले इल्म से दूरी और मग़रिब की माद्दा परस्त और शह्वत परस्त तहज़ीब से मुतअस्सिर होने की बिना पर उस धोकेबाज़ की झूटी दलीलों के सहर में आ जाएंगे।

"जब से अल्लाह ने आदम को पैदा किया, दुनिया में कोई फ़ित्ना दज्जाल के फ़ित्ना से बड़ा नहीं हुआ और अल्लाह ने जिस नबी को भी मबऊस फ़रमाया उसने अपनी उम्मत को दज्जाल से डराया है और मैं आख़िरी नबी हूं और तुम बेहतरीन उम्मत (इसलिये) वह तुम्हारे ही अंदर निकलेगा। अगर वह मेरी मौजूदगी (ज़िंदगी) में निकला तो हर मुसलमान की तरफ़ से उसका मुक़ाबला करने वाला मैं हूं, और अगर मेरे बाद निकला तो हर मुसलमान अपना दिफ़ा खुद करेगा। और अल्लाह हर मुसलमान का मुहाफ़िज़ व निगेहबान होगा। वह शाम व इराक़ के दर्मियान एक रास्ते पर नमूदार होगा, पस वह दाएं बाएं (हर तरफ़) फ़साद फैलायेगा। ऐ अल्लाह के बंदो! तुम उस वक़्त साबित क़दम रहना। मैं तुम्हारे सामने उसकी वे अलामात बयान किये देता हूं जो मुझ से पहले किसी नबी ने बयान नहीं कीं। वह सबसे पहले तो यह दावा करेगा कि मैं नबी हूं, हालांकि मेरे बाद कोई नबी नहीं। फिर यह दावा करेगा कि मैं तुम्हारा रब हूं, (मगर उसे देखने वाले को पहली ही नज़र में ऐसी तीन चीज़ें नज़र आ जाएंगी जिनसे उसके दावे की तक्ज़ीब की जा सकती है। (1) एक तो यह कि वह आंखों से नज़र आ रहा होगा) हालांकि तुम अपने रब को मरने से पहले नहीं देख सकते (तो उसका नज़र आना ही इस बात की दलील होगा कि वह रब नहीं) और (2) दूसरी यह कि) वह काना होगा, हालांकि तुम्हारा रब काना नहीं (3) तीसरी यह कि) उसकी दोनों आंखों के दर्मियान "काफ़िर" लिखा होगा जो हर मोमिन

पढ़ लेगा, ख़्वाह वह पढ़ना जानता हो या न जानता हो।"

यह तो सीधी सादी बात हुई कि दज्जाल जिन्नाती कुव्वतों का हामिल एक नीम इंसानी नीम जिन्नाती क़िस्म की आज़माइशी मख़्लूक़ है।

"पस मुसलमान शाम के "जब्ले दुख़ान" की तरफ़ भाग जाएंगे। और दज्जाल वहां आकर उनका मुहासरा कर लेगा। यह मुहासरा बहुत सख़्त होगा उनको सख़्त मशक़्क़त में डाल देगा। फिर फ़जर के वक़्त ईसा इब्ने मरयम नाज़िल होंगे। वह मुसलमानों से कहेंगेः "इस ख़बीस कज़्ज़ाब की तरफ़ निकलने से तुम्हारे लिये क्या चीज़ मानेअ़ है? मुसलमान कहेंगे कि यह शख़्स जिन्न है लिहाज़ा इसका मुक़ाबला मुश्किल है।" (मुस्नद अहमद, मुस्तदरक हाकिम)

शारिहीने हदीस का फ़रमाना है कि दज्जाल की शेअबदा बाज़ी और मेस्मरीज़्म वग़ैरा को देख कर शायद बाज़ मुसलमानों को उसके जिन्न होने का गुमान हो या मुम्किन है मुसलमान यह बात बतौरे तश्बीह के कहेंगे कि इसकी हरकतें और ईजा रसानियां जिन्नात की तरह हैं।

अगर बिलग़र्ज़ दौरे हाज़िर में यहूदी साइंसदानों की होशरुबा ईजादात और मुहैयरुल उकूल तजुर्बों के तनाज़ुर में दज्जाली शख़्सियत को देखना चाहें तो दज्जाल की तसवीर कुछ यूं बनती दिखाई देती हैः

"एक ऐसा आदमी जो मुख़्तलिफ़ शोबों में मुहैयरुल उकूल महारत का हामिल हो। जो सुपर मैन क़िस्म का आदमी है। जो बयक वक़्त इंजीनियर, डॉक्टर, साइंसदान, सियासतदान, शाइर, मुक़रिर सब कुछ है। जिसके लिये नामुम्किन कोई चीज़ नहीं। हर चीज़ को वह अपनी दस्तरस में ले सकता है।"

अगर जदीदियत से मुतअस्सिर कोई शख़्स पूछेः आख़िर यह कैसे मुम्किन होगा? तो इसका जवाब यह है कि आज कल यह पूरी तरह

मुम्किन हो चुका है कि एक इंसानी दिमाग़ की पूरी मैमोरी, कम्प्यूटर में फ़ीड कर दी जाए। आक्सफ़र्ड की प्रोफ़ेसर सूसन ग्रीन फ़ैल्ड ने आज से दस साल पहले साइंसदानों के एक इज्तिमा से ख़िताब करते हुए कहा थाः

"अब हम इस क़ाबिल हैं कि एक इंसान की पूरी याद दाश्त (मैमोरी) को कम्प्यूटर पर डाउनलोड कर लें जो तक़्रीबन 100 ट्रेलीन ख़ल्यों (Cells) पर मुशतमिल होती है और जिन में 100 बिलियन ख़ल्ये गुफ़्तगू करने के लिये इस्तिमाल होते हैं।" (वी रिचर्ड डम्बले, लेक्चरर बी बी सी I, यकुम दिसम्बर 1999 ई0)

ज़रा सोचिये! आज दस साल बाद वह इस मंसूबे में कहां तक पहुंच गये होंगे?

एक ताक़तवर मुम्किना हक़ीक़त जिसका इन्किशाफ़ डाक्टर सूसन ने नहीं किया, यह कि अम्ले मअकूस (Reverse Action) ज़्यादा आसान है। अम्ले मअकूस यह है कि मैमोरी किसी कम्प्यूटर से इंसानी ज़ेहन को अपलोड की जाए। इस सलाहियत के साथ कांट छांट, हज़्फ़ करने और महारतों को नुमायां करने की कुव्वत भी आती है। मिसाल के तौर पर एक पी एच डी इंजीनियरिंग रखने वाले आदमी या किसी मुम्ताज़ इंजीनियर की याद दाश्त (मैमोरी) के साथ एक बेहतरीन सर्जन और साइंसदान की याददाश्त भी अपलोड कर दी जाए तो एक सुपर मैन की तख़्लीक़ का रास्ता हमवार हो जाएगा। एक ऐसा आदमी जो सब शोबों में महारत रखता होगा। बेहतरीन इंजीनियर, साइंसदान, सर्जन, सियासतदान, आलिम, मुक़र्रिर, शाइर, मंसूबा साज़, मैनेजमेन्ट का माहिर......न्यू वर्ल्ड आर्डर का मिसाली आदमी......बनी दाऊद का आलमी बादशाह, अद्दज्जालुल अक्बर, अलमलऊनुल आज़म।

मग़रिब की तजुर्बागाहों में इस पर दिन रात काम जारी है। आप ज़रा तसव्वुर करें इंसान की शख़्सियत उसकी याददाश्त ही तो होती

है। अगर यह याददाश्त किसी से चुरा ली जाए तो वह......वह नहीं रहेगा जो वह था। इसी तरह अगर एक फ़र्द की याददाश्त दूसरे फ़र्द को मुंतक़िल कर दी जाए तो वह......वह शख़्स बन जाएगा जिसकी याददाश्त चुरा ली गई थी। इस तरीक़े से मैमोरी को ज़िंदा रखकर इंसान को जामे मानेअ़ और दाइमी बनाया जा सकता है। दज्जाल वक़्ती तौर पर ग़ैर फ़ानी लगेगा। लेकिन इस सब कुछ के बावजूद वह अल्लाह तआला की नज़र में इतना हक़ीर, पस्त और ज़लील होगा कि अल्लाह तआला को और उस ज़माने के अह्ले ईमान मुकर्रिबीन को इसकी कुछ परवाह न होगी। जैसाकि यहूदी साइंसदानों को फ़र्ज़ी सुपर मैन बनाने के लिये वसाइल मुहय्या होने की अल्लाह रब्बुल आलमीन को कोई परवाह नहीं। साइंस के मैदान में उनकी सारी तुरत फुरत के बावजूद उन पर ज़िल्लत व ख़्वारी की मेहरान को रास्ता नहीं दे रही है।

तीन ज़िम्नी सवालात

दज्जाल कौन है? के ज़िम्न में चंद ज़ेली सवालात जन्म लेते हैं। इनको हल किये बेग़ैर दूसरे सवाल की तरफ़ जाना क़ब्ल अज़ वक़्त होगा। वे ज़ेली सवालात कुछ यूं हो सकते हैं:

(1) दज्जाल किस चीज़ की दावत देगा या दूसरे लफ़्ज़ों में उसके फ़ित्ने की नौइय्यत क्या होगी?

(2) दज्जाल के पेरूकार कौन लोग होंगे?

(3) उसको कौन कौनसी ग़ैर मामूली कुव्वतें हासिल होंगी? और किस बलबूते पर हासिल होंगी?

ज़ेल में हम इन तीन उन्वानात से मुतअल्लिक़ "माहज़र" एहतियात के साथ पेश करने की कोशिश करेंगे।

(1) दज्जाली मज़हब

दज्जाल एक नए मज़हब की दावत देगा। एक ऐसे नए और झूटे मज़हब कि जिस में पहले वह नुबुवत का दावा करेगा और फिर खुदाई का। उस बदबख़्त का सब से बड़ा फ़ित्ना यही होगा कि उसे अल्लाह तआला ने जितना कुछ नवाज़ा, वह उससे ख़ैर का काम लेने के बजाए शर का वह अज़ीम तूफ़ान बरपा करेगा कि हदीस शरीफ़

में आता है: "हज़रत आदम अलै0 की पैदाइश से लेकर क़्यामत क़ाइम होने तक दज्जाल के फ़ित्ने से बढ़ कर कोई फ़ित्ना नहीं।"

यह मज़हब फ़्री मैसज़ी का ख़ुफ़्या मज़हब होगा। यह उन नज़रियात पर मुशतमिल होगा जिसे दज्जाल की पेशगी तन्ज़ीम फ़्री मैसज़ी ने ईजाद किया और उसे फिर आहिस्ता आहिस्ता दुनिया ने कबूल कर लिया। मसलन: मग़रिबी जम्हूरियत जो फ़्री मैसज़ी के "बिरादर्ज़ और मास्टर्ज़" को बरसरे इक़्तिदार लाने का बेहतरीन ज़रीआ है। जदीद निज़ामे तालीम जो इंसानियत की ख़िदमत के बजाए शिकम परस्ती और नफ़्स परवरी सिखाता है। मग़रिबी निज़ामे मईशत जो सूद, जूए, ग़रर व ज़रर और बेहिसाब मुनाफ़ाख़ोरी पर मुशतमिल है। टेक्स के निज़ाम का कुल्ली रिवाज और ज़कात व सदक़ात के निज़ाम का इंहिदाम, यानी वह निज़ाम जिस में हुकूमतें देने के बजाए लेने का मिज़ाज बना लेती है और अपने ही अवाम को लूटती खसोटती हैं। मग़रिबी तहज़ीब जो इबाहियत और अक़्लियत परस्ती पर मुशतमिल है यानी वह्य की रहनुमाई में जाइज़ व नाजाइज़ की तअय्युन के बजाए अक़्ल और शह्वत की बुन्याद पर दुरुस्त व नादुरुस्त की तअय्युन......वग़ैरा वग़ैरा।

फ़्री मैसज़ी पर काम करने वाले तक़रीबन तमाम ही मुहक़्क़िक़ीन (बशमूल ईसाई व लामज़हब सहाफ़ियों के) इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि यह वह इक्लौती ख़ुफ़िया तंज़ीम है जो मज़हब का नाम लिये बग़ैर अपने नज़रियात, रुसूमात और इस्तिलाहात में एक मुकम्मल मज़हब की शक्ल रखती है। फ़्री मैसज़ी जिस नए आलमी निज़ाम की नक़ीब है वह दरहक़ीक़त एक "आलमी मज़हब" है और अफ़सोस है कि वह रूहानी नहीं, शैतानी मज़हब है। जो तहरीफ़ शुदा यहूदियत और नफ़्स व शैतान परस्ती का मलग़ूबा है। एक नज़र ज़ेल के इक़्तिबास पर डालिये जो फ़्री मैसज़ी के असली हद्फ़ "आलमी हुकूमत" का इज्माली ख़ाका पेश करता है:

"सिर्फ़ एक मज़हब की इजाज़त दी जाएगी और वह एक आलमी सरकारी कलीसा की शक्ल में होगा जो 1920 ई0 से वजूद में आ चुका है। शैतीनियत, इब्लीसियत और जादूगरी को एक आलमी हुकूमत का निसाब समझा जाएगा। [बताइये! यह किसी आसमानी मज़हब के पैरूकारों की तालीमात हो सकती हैं] कोई निजी या चर्च स्कूल नहीं होगा। तमाम मसीही गिर्जे पहले ही से ज़ेर व ज़बर किया जा चुके हैं। चुनांचे मसीहियत एक आलमी हुकूमत में क़िस्सए पारीना होगी। एक ऐसी सूरते हाल तशकील देने के लिये जिसमें फ़र्द की आज़ादी का कोई तसव्वुर न हो, किसी क़िस्म की जम्हूरियत, इक़्तिदारे आला और इंसानी हुकूक़ की इजाज़त नहीं होगी। क़ौमी तफ़ाख़ुर और नस्ली शिनाख़्त ख़त्म कर दी जाएंगी और उबूरी दौर में उनका ज़िक्र भी क़ाबिले ताज़ीर होगा।

हर शख़्स के ज़ेहन में यह अक़ीदा रासिख़ कर दिया जाएगा कि वह (मर्द या औरत) एक आलमी हुकूमत की मख़्लूक़ है और उसके ऊपर एक शनाख़्ती नम्बर लगा दिया जाएगा। यह शनाख़्ती नम्बर बरसल्ज़, बिलजियम के नेटो कम्प्यूटर में महफ़ूज़ होगा और आलमी हुकूमत की किसी भी ऐजेन्सी की फ़ौरी दस्तर्स में होगा। सी आई ए, एफ़ बी आई, रियासती और मक़ामी पुलिस ऐजेन्सियों, आई आर एस, फ़ैमा, सोशल स्क्यूरिटी वग़ैरा की मास्टर फ़ाइलें वसी करके उनमें लोगों के कवाइफ़ का इंदराज अमरीका में तमाम शहरों के ज़ाती रिकार्ड के अंदाज़ में किया जाएगा।" (डाक्टर जान कोलमैनः Conspirators Hierarchy)

फ़री मैसज़ी अपनी ख़ुफ़्या तक़रीबात में (जिनका कुछ ज़िक्र "आलमी यहूदी तन्ज़ीमें" में आ चुका है) जो इस्तिलाहात इस्तिमाल करती है, मसलनः मुक़द्दस दस्तूर (तौरात या तालमूद), मुक़द्दस शाही मेहराब मुक़द्दस दरख़्त (इकेशिया), मुक़द्दस कुर्बानी, मुक़द्दस इल्म (ज्योमैटरी), हैकल सुलैमानी के नौ मेमार (मास्टर मैसन्ज़), ज़ी वक़ार

मेमारे आला (ग्रेंड मास्टर) बारह सरदार, सत्तर दाना बुजुर्ग, दाऊद की नस्ल से अंक़रीब आने वाला आलमी बादशाह (दज्जाले अक्बर) वग़ैरा......ये सब इस्तिलाहात और इनके अलावा नामानूस अल्फ़ाज़ मसलन मैकीनी, जाह बल आन, जह्बलून वग़ैरा......ये सब इस अम्र की वाज़ेह अलामत हैं कि यह तंज़ीम अपनी तक़रीबात मुन्अक़िद करते वक़्त जिस चीज़ को ख़ुफ़्या रखना चाहती है वह दज्जाली यहूदी मज़हब की ख़ुफ़्या रुसूमात हैं और दज्जाली रुसूमात को अपनाने वाली यह तंज़ीम दरहक़ीक़त शैतानी मज़हब की अलमबरदार है। वह अपने आप को ज़ाहिर तो फ़लाही, व समाजी तंज़ीम की हैसियत से करती है लेकिन दरहक़ीक़त वह एक मुस्तक़िल ख़ुफ़्या मज़हब रखती है और यह तो हर एक समझता है कि रहमानी चीज़ें ख़ुफ़्या रखने के लिये नहीं होतीं, छिपा छिपा कर तो शैतानी काम किये जाते हैं।

दर्जे ज़ेल सुतूर में कुछ सवालात हैं जो फ़री मैसन कारकुन बनने वाले एक उम्मीदवार से किये गये और साथ ही उसके जवाबात हैं। यह मुकालमी फ़री मैसन की इब्तिदा में 1730 ई० में मुन्अक़िद होने वाली मास्टर मैसन की हलफ़ बरदारी की एक तक़रीब से तअल्लुक़ रखता है:

सवालः जब तुम इमारत के वस्त में पहुंचे तो तुमने क्या देखा?

जवाबः हर्फ़ G की मुशाबिहत।

सवालः G का हर्फ़ किस बात की निशानदही करता है?

जवाबः उस हस्ती का जो तुमसे बड़ी है।

सवालः मुझ से बड़ा कौन है? मैं एक आज़ाद और मुस्तनद मैसन हूं। मास्टर आफ़ लाज हूं।

जवाबः काइनात का मूजिद और सबसे बड़ा मेमार या "वह" जो मुक़द्दस मुअब्बद [हैकल सुलैमानी] के कल्स की चोटी पर ले जाया गया।

यहां हमें मालूम होता है कि फ़री मैसन की इस्तिलाह में हर्फ़ G

महज़ ख़ुदा के लिये नहीं बल्कि "उस" के लिये भी इस्तिमाल किया जाता है जो मुक़द्दस मुअब्बद या हैकल के कल्स की चोटी पर पहुंचाया गया। और यही वह नाम निहाद देवता और उलूही शख़्सियत है जिस की बदनसीब यहूद इबादत करते हैं। फ़री मैसज़ी बिरादरी के रिकार्ड पर नज़र डाली जाए तो यह शख़्स या जिन्न "हीरम आबैफ़" है जो हैकल सुलैमानी के नौ बड़े मेमारों (मास्टर मैसन्ज़) का सरबराह (ग्रैन्ड मास्टर) था। "आलमी यहूदी तंज़ीमें" में इसका तफ़सीली तज़किरा आ चुका है।

दज्जाल ज़ाहिर होगा तब भी उसे आम लोग नहीं पहचान पाएंगे जिस तरह कि यहूदियों के फ़रेब का शिकार लोग उनके ऐजेन्ट बन कर भी उनके शैतानी मज़हब को समझ नहीं पाए। दज्जाल जब ज़ाहिर होगा तो वह दज्जाल होने का दावा करेगा और न ही मज़हब का दाई होगा। वह जदीदियत का अलमबरदार और इंसानियत का दावेदार बन कर नमूदार होगा और यहूद अपने इस झूटे मसीहा को बहुत बड़ा दर्दमंद और इंसानियत के ख़ैरख़्वाह के रूप में पेश करेंगे। तभी तो लोग उस पर एतिमाद करेंगे क्योंकि उनको दज्जाली मज़हब की इस्तिलाहात पर एतिमाद करना सिखा दिया गया होगा। लोग मजबूर होकर नहीं, मुतअस्सिर होकर उसकी तरफ़ बढ़ेंगे। फ़री मैसेन्ज़ी के प्लेटफ़ार्म से ठीक यही कुछ हो रहा है। लोग इस तंज़ीम को और उसके ज़ेली इदारों (रोटरी क्लब, लाइंज़ क्लब, शराइंज़, मग़रिबी एन जी ओज़) में "मज़हब से बालातर होकर" इंसानियत की ख़िदमत के लिये शामिल होते हैं। और फिर उन्हें वे "रूहानी इतमीनान" मिले या न मिले जिसका उन्हें झांसा दिया गया था, एक नए शैतानी मज़हब की आग़ोश ज़रूर मिल जाती है।

नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "जो दज्जाल की ख़बर सुन ले वह उससे दूर रहे। अल्लाह की क़सम! आदमी अपने आप को मोमिन समझ कर [यह जुम्ला इंतिहाई क़ाबिले ग़ौर हैः राक़िम] उसके पास

आएगा और फिर उसके पैदा कर्दा शुब्हात में उसकी पैरवी करेगा।" (सुनन अबी दाऊद, रिवायत इमरान बिन हुसैन रज़ि0)

(2) दज्जाल के साथीः

"दज्जाल के पेरूकारों की अक्सरियत यहूदी और औरतें होंगी।" (मुस्नद अहमद)

अब यहां इशकाल हो सकता है कि यहूदियों की तादाद तो बहुत कम है उनके बलबूते पर वह आलमी निज़ाम और आलमी मज़हब के क़्याम की कोशिश कैसे करेगा? इसका जवाब यह है कि यहूदी धोका देकर अपने साथ सहीवनियों को मिला लेंगे। "सहीवनी" हर उस शख़्स को कहते हैं जो यहूदी हो या न, लेकिन यहूदी मक़ासिद (मसलन आलमी दज्जाली रियासत के क़्याम) की तक्मील में यहूद का आलए कार बन जाए। यहूदियों के फ़रेब का शिकार वह ईसाई, हिंदू और मुसलमान होंगे जो दज्जाल के फ़ित्ने से खुद को महफ़ूज़ नहीं रख सकेंगे और उसके फंदे में फंस जाएंगे। अमरीका और यूरपी मुमालिक यहूद के शिकंजे में कसे हुए हैं। वे यहूदियों से ज़्यादा इस्राईल के हामी हैं और उसकी हिमायत को अपने लिये बाइसे बरकत समझते हैं। मसीहे सादिक़ हज़रत ईसा बिन मरयम अलै0 के हवाले से वारिद हुई हैं, यहूद उनको दज्जाल पर मुंतबिक़ करते हैं और फिर ईसाइयों को धोका यह देते हैं कि हम मसीहे मौऊद का इंतिज़ार कर रहे हैं और मुसलमान मसीह मुख़ालिफ़ (Antichrist) हैं। जबकि हक़ीक़त यह है कि मुसलमान और ईसाई हज़रत मसीह अलै0 का और यहूद दज्जाले अक्बर के मुंतज़िर हैं जिसको हज़रत मसीह अलै0 मुसलमान मुजाहिदीन और खुशनसीब नो मुस्लिम ईसाइयों की मदद से क़त्ल करेंगे। यहूद तो ईसाइयों के और उनके मुक़द्दस पैग़म्बर के दुश्मन हैं। उन्होंने हज़रत ईसा अलै0 को सताया, तंग किया और बिलआख़िर उनके क़त्ल का मंसूबा बनाया जब्कि मुसलमान आज भी हज़रत ईसा अलै0 का इंतिहाई एहतिराम

करते हैं और इससे पहले भी करते थे और आइंदा भी उनके साथ मिलकर उनके दुश्मनों से जिहादे अज़ीम करेंगे। क्या दुनिया में ईसाइयों जैसी सादा क़ौम भी होगी जो अपने पैग़म्बर के क़ातिलों से तो दोस्ती और तअल्लुक़ रखे और जो उन के (और अपने, मुश्तरका) पैग़म्बर से बेपायां मुहब्बत रखती होगी, उससे नफ़रत और दुश्मनी रखे?

रह गए दज्जाली मुसलमान तो यह वे बदनसीब होंगे जो "फ़िक्री इर्तिदाद" का शिकर होंगे। (इस गिरोह के सरख़ील वे तमाम इस्कालर्ज़, डाक्टर्ज़, प्रोफ़ेसर्ज़ और नाम निहाद दानिशवर होंगे जो दीन का हुलिया बिगाड़ने में पेश पेश रहे।) जो माल व औलाद के फ़ित्ने में फंस चुके होंगे। जो हरामख़ोरी व हरामकारी से तौबा नहीं करेंगे। जिन्हें ऐश परस्ती और लज़्ज़त कोशी राहे ख़ुदा में उठने से रोक लेगी और जो दज्जाल की शुअ़बदा बाज़ियों से बचाने वाले अह्ले हक़ की पुकार को "पसमांदा मिल्लाइय्यत" कहकर ठुकरा देंगे और फिर दज्जाल के साथ दुनिया व आख़िरत की रुसवाई समेटेंगे।

दज्जाले अक्बर के ज़ुहूर से क़ब्ल फ़रेब की दो मुम्किना सूरतें

अगर यह सवाल किया जाए कि ये लोग अक़्ल व फ़ह्म और दीन व ईमान रखते हुए क्योंकर दज्जाल की पैरवी पर राज़ी हो जाएंगे? तो इसका जवाब यह है कि ये लोग दुनिया को उस नज़र से देख रहे होंगे जिस नज़र से मग़रिबी मीडिया उनको दिखाता है। मग़रिबी मीडिया दज्जाल को उनका सबसे बड़ा ख़ैरख़्वाह साबित करेगा। बदआमालियों की नुहूसत के बाइस मुसलमानों की ईमानी बसीरत ख़त्म हो चुकी होगी। ये अस्रे हाज़िर को उन अहादीस की रौशनी में नहीं जांच पा रहे होंगे जिन में दज्जाल, दज्जालियत, और फ़ित्नए दज्जाल (माल व दौलत, हुस्न, ताक़त, टेक्नालोजी) की

हक़ीक़त मुसलमानों को वज़ाहत के साथ ताकीद के साथ और अहमियत के साथ आगाह किया गया है। फिर हदीस शरीफ़ में आता है कि बाज़ लोग कहेंगे कि हम जानते हैं यह दज्जाल ही है मगर हम उसके पास मौजूद सुहूलियात से इस्तिफ़ादा कर रहे हैं। हम उसके मज़हब पर नहीं हैं। हदीस में है कि उनका हश्र भी दज्जालियों के साथ होगा। फ़ित्नए दज्जाल और ज़ुहूरे दज्जाले अक्बर रूए अर्ज़ पर बरपा होने वाले इस सबसे बड़े मर्कज़ के नाम हैं जहां फ़रेब ही फ़रेब और धोका ही धोका है। मगर फ़ित्नए दज्जाले अक्बर दरहक़ीक़त फ़रेब का फ़ित्ना होगा। यह फ़रेब दरअसल फ़रेबे नज़र होगा। मसलन मुस्तक़बिल में ग्लोबल विलेज का प्रज़िडेंट दज्जाले अक्बर सरापा फ़ित्ना होगा लेकिन आम लोगों को नजात दहिंदा नज़र आएगा। यह बात दुरुस्त नहीं कि जब दज्जाले अक्बर ज़ाहिर होगा तो मुसलमान उसे देखते ही पहचान लेंगे। बल्कि हक़ीक़त यह है कि जब वह ज़ाहिर होगा तो यहूद व नसारा और कुफ़्फ़ार की अरबों की तादाद उसकी गर्वीदा होकर उसके पीछे पीछे चलने और उसकी एक आवाज़ पर जान देने को तैयार हो जाएगा। इन हालात में मुसलमानों की भी कसीर आबादी जो बराए नाम मुसलमान होगी और दरअसल वह उन लोगों पर मुशतमिल होगी जो उसके ज़ुहूर से क़ब्ल ही "फ़ुस्तात निफ़ाक़" (निफ़ाक़ के ख़ेमे) में दाख़िल हो चुकी होगी, उसके पीछे लब्बैक कहकर चल पड़ेगी बल्कि उसके झण्डे तले लड़ने और जान देने पर आमादा हो जाएगी। ऐसी सूरत में जो उसकी उस ज़ाहिरी ख़ुशनुमा सूरत व सीरत के बावजूद यह जान लेंगे कि इस मुतअस्सिरकुन सूरत व सीरत के पीछे छिपा शख़्स ईसा इब्ने मरयम नहीं बल्कि "दज्जाले अक्बर" है, वही असलन अह्ले ईमान होंगे। डाक्टर इसरार आलम कहते हैं कि ऐन मुम्किन है कि इब्लीस दज्जाले अक्बर के ज़ुहूर के लिये एक अज़ीम मक्र का भी सहारा ले। इस मक्र व फ़रेब की दो मुम्किना सूरतें हो सकती हैं:

पहली सूरतः

रूए अर्ज़ पर ''दज्जाले अक्बर'' को ज़ाहिर करने से क़ब्ल किसी अच्छे शख़्स को जो मज़लूमों की दादरसी के लिये उठा हो, प्रोपगेन्डे के ज़रीए दज्जाले अक्बर क़रार दिया जाए और उसे खूब बदनाम (Demonise) करने के बाद उसके क़त्ल क़मा के लिये असली दज्जाले अक्बर को ''ईसा इब्ने मरयम अलमसीह'' बना कर ज़ाहिर किया जाए जो मुतअस्सिरकुन सूरत व सीरत लेकर आए और खुद को ''मसीह'' की तरह पेश करे।

दूसरी सूरतः

इसकी दूसरी सूरत यह हो सकती है कि किसी शख़्स को बेइंतिहा ज़ुल्म करने पर उभारा जाए और उससे दुनिया के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में वाक़ई ज़ालिम की तरह बरताव कराया जाए और नौबत ऐसी आ जाए कि लोग उसके ज़ुल्म से पनाह के तलबगार हों और उन्हें कहीं पनाह न मिले और ठीक उस वक़्त वह असली ''दज्जाले अक्बर'' को इस ज़ुल्म के ख़ातमे के लिये ''मसीह'' बना कर ज़ाहिर किया जाए और लोग उसे सच्चा ''मसीह'' और नजात दहिंदा समझने लगें।

फ़ित्नए दज्जाल से बचने के दो ज़राएः

''फ़ित्नए दज्जाले अक्बर'' कोई मामूली फ़ित्ना नहीं। न ही ज़ुहूरे दज्जाल कोई मामूली ज़ुहूर है। यह एक ऐसी आज़माइश होगी जिस की तारीख़ में कोई नज़ीर नहीं। उसके फ़ित्ने ऐसे हमागीर और हैबतनाक होंगे और पूरी इंसानियत इस तरह पे दर पे ज़ेहनी, फ़िक्री, सियासी, मआशी, और अस्करी हमलों से बेदम बना दी जाएगी जिसका अंदाज़ा करना मुश्किल है। यह एक ऐसी घड़ी होगी जब दूसरों की तो बात ही जुदा है खुद इंसान अपने आप पर एतिमाद करना छोड़ देगा। मअरकए दज्जाले अक्बर दरअसल मअरकए क़त्ले अज़ीम (War of Mega death) है। इस तनाज़ुर में ''दज्जाले

अक्बर" के इस शदीद फ़ित्ने से बचने और उसे नाकाम बनाने के दो ही रास्ते बाक़ी रहते हैं:

(1) ऐसे मक़ामात और मवाक़े से बचना जहां हलाकत "क़त्ले अज़ीम" की शक्ल ले सकती है। मसलनः रिहाइश के एतिबार से गुंजान रिहाइशी इलाक़ों (High Concentration Residences) से दूर रहना। इन दोनों में अह्ले ईमान को बड़े शहरों से इज्तिनाब करना और दीहातों पहाड़ों की तरफ़ निकलना मुफ़ीद होगा। शहरों में वैसे भी फ़ित्नों के मवाक़े ज़्यादा और नेकियों का माहौल कम ही होता है। और दज्जालियत नेकियों से दूर गुनाहों की दलदल में जन्म लेती है।

(2) जिहाद के लिये दिल से तैयार हो जाना और यह तै कर लेना कि क़ब्ल इसके कि कोई हमारी जान ले हम अपनी जान फ़िदा कर के अब्दी हयात पा लें। दूसरे लफ़्ज़ों में नागुज़ीर क़त्ले अज़ीम को बेबसी की मौत के बजाए "पसंदीदा शहादत" की सूरत में तब्दील कर देना। यह ईमान वालों की फ़त्हे अज़ीम और दज्जाल व इब्लीसी क़ुव्वतों की वाज़ेह नाकामी होगी।

बेदारी का वक़्त

(3) दज्जाल की ताक़त

दज्जाल की मुआविन क़ुव्वतों और उसके पास मौजूद शैतानी ताक़तों से आगाही हमें दर्ज ज़ेल अहादीस से मिलती है:

हदीस शरीफ़ में आता है:

☆ ......"दज्जाल के साथ अस्फ़हान के सत्तर हज़ार यहूदी होंगे जो ईरानी चादरें ओढ़े हुए होंगे।" (सहीह मुस्लिमः 7034, रिवायत अनस बिन मालिक रज़ि0)

☆ ......रसूले अक्रम सल्ल0 ने दज्जाल के मुतअल्लिक़ कहा: "उसके पास आग और पानी होंगे। (जो) आग (नज़र आएगी वह) ठंडा पानी होगा और (जो) पानी (नज़र आएगा वह) आग (होगी)।" (सहीहुल बुख़ारीः रिवायत हुज़ैफ़ा रज़ि0)

☆ ......"उस (दज्जाल) के पास रोटियों का पहाड़ और पानी का दरिया होगा (मतलब यह कि उसके पास पानी और ग़िज़ा वाफ़िर मिक़्दार में होंगे) नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः इन बातों के लिये वह निहायत हक़ीर है। लेकिन अल्लाह उसे इसकी इजाज़त देगा (ताकि लोगों को आज़माया जा सके कि वह अल्लाह पर यक़ीन रखते हैं या

दज्जाल पर)।" (सहीहुल बुख़ारीः जिल्द 9, सफ़्हा 277, रिवायत मुग़ीरा रज़ि0)

☆ ......"और फिर दज्जाल अपने साथ एक दरिया और आग लेकर आएगा। जो उसकी आग में पड़ेगा, उसको यक़ीनन इसका सिला मिलेगा और उसका बोझ कम कर दिया जाएगा। लेकिन जो उसके दरिया में उतरेगा, उसका बोझ बरक़रार रहेगा और उसका सिला उससे छीन लिया जाएगा।" (सुनन अबू दाऊदः 7232)

☆ ......हम ने पूछाः "ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0! इस ज़मीन पर कितनी तेज़ी से चलेगा।" आप सल्ल0 ने फ़रमायाः "जिस तरह हवा बादलों को उड़ा ले जाती है।" (सहीह मुस्लिमः 7015, रिवायत नव्वास इब्ने समआन रज़ि0)

☆ ......"वह (दज्जाल) एक गधे पर सवार होगा। उस (गधे) के कानों के दर्मियान चालीस हाथों का फ़ासला होगा।" (मुस्नद अहमदः जिल्द 3, सफ़्हा 367, 368)

☆ ......"अल्लाह तआला उसके साथ शयातीन को भेजेगा जो लोगों के साथ बातें करेंगे"। (मुस्नद अहमदः जिल्द 3/367, 368)

☆ ......वह एक बद्दू से कहेगा। अगर मैं तुम्हारे बाप और माँ को तुम्हारे लिये दोबारा ज़िंदा करूं तो तुम क्या कहोगे? क्या तुम शहादत दोगे कि मैं तुम्हारा ख़ुदा हूं। बद्दू कहेगाः हां! चुनांचे दो शयातीन उस बद्दू के मां और बाप के रूप में उसके सामने आ जाएंगे और कहेंगेः हमारे बेटे इसका हुक्म मानो, यह तुम्हारा ख़ुदा है।" (इब्ने माजाः किताबुल फ़ितनः 4077)

"अद्दज्जाल आएगा लेकिन उसके लिये मदीने में दाख़िल होना मम्नूअ़ होगा। वह मदीना के मुज़ाफ़ात में किसी बंजर (सेमज़दा) इलाक़े में ख़ैमाज़न होगा। उस दिन बेहतरीन आदमी या बेहतरीन लोगों में से एक उसके पास आएगा और कहेगाः मैं तसदीक़ करता हूं कि तुम वही दज्जाल हो जिसका हुलिया हमें अल्लाह के नबी

सल्ल0 ने बताया था। अदृदज्जाल लोगों से कहेगाः अगर मैं इसे कृत्ल कर दूं और फिर ज़िंदा कर दूं तो क्या तुम्हें मेरे दावा में कोई शुब्हा रहेगा? वह कहेंगेः नहीं! फिर दज्जाल उसे कृत्ल करे देगा और फिर उसे दोबारा ज़िंदा कर देगा। वह आदमी कहेगाः अब मैं तुम्हारी हकीकृत को पहले से ज़्यादा बेहतर जान गया हूं। अदृदज्जाल कहेगाः मैं इसे कृत्ल करना चाहता हूं लेकिन ऐसा नहीं हो सकता।'' (सहीहुल बुख़ारी 3106 रिवायत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि0)

अब हम इन अहादीस की रौशनी में दज्जाल की कुव्वतों को एक एक कर के देखते हैं:

(1)······उसका कृब्ज़ा तमाम ज़िंदगी बख़्श वसाइल मसलन पानी, आग और ग़िज़ा पर होगा।

(2)······उसके पास बेतहाशा दौलत और ज़मीन के ख़ज़ाने होंगे।

(3)······उसकी दस्तर्स तमाम कुदरती वसाइल पर होगी। मसलनः बारिश, फसलें, कहत और ख़ुश्कसाली वग़ैरा।

(4)······वह ज़मीन पर इस तरह चलेगा जैसे हवा बादलों को उड़ा ले जाती है। उसके गधे (सवारी) के कानों के दर्मियान 40 हाथों का फ़ासला होगा।

(5)······वह एक नक़्ली जन्नत और दोज़ख़ अपने साथ लाएगा।

(6)······उसकी इआनत व मदद शयातीन करेंगे। वह मुर्दा लोगों की शक्ल में भी ज़ाहिर होंगे और लोगों से गुफ़्तगू करेंगे।

(7)······वह ज़िंदगी और मौत पे (ज़ाहिरी तौर पर) कुदरत रखेगा।

(8)······ज़िंदगी और मौत पर उसका इख़्तियार महदूद होगा क्योंकि वह उस मोमिन को दोबारा नहीं मार सकेगा।

अब आइये! इस मौज़ू की सबसे अहम बहस शुरू करते हैं यानी हदीस शरीफ़ में बयान कर्दा दज्जाल की कुव्वतों को अस्रे हाज़िर के तनाज़ुर में तत्बीक़ की अपनी सी कोशिश। आज से पहले हदीस

शरीफ़ में बयान कर्दा अक्सर हक़ाइक़ पर ईमान बिलग़ैब के अलावा चारा न था……मगर जूं जूं हम दज्जाल के दौर की तरफ़ बढ़ रहे हैं ये हक़ाइक़ आलमें ग़ैब से उतर कर आलमे शहूद का हिस्सा बनते जा रहे हैं। दज्जाल माद्दी क़ुव्वतों पर दस्तरस रखता होगा और साइंसे माद्दा में पोशीदा क़ुव्वतों को जानने और काम में लाने का दूसरा नाम है, लिहाज़ा यहूदी सरमायादारों के पैसे और यहूदी साइंसदानों की मेहनत से साइंसी ईजादात जैसे जैसे आगे बढ़ रही हैं, दज्जाल की क़ुव्वतों को समझना आसान होता जा रहा है। आइये! दज्जाल की क़ुव्वतों को एक एक करके अस्रे हाज़िर के तनाज़ुर में देखते हैं:

दौलत और ख़ज़ानेः

यह तो बहुत से लोग जानते हैं कि दुनिया की मईशत को दो इदारे "वर्ल्ड बैंक" और "आइ एम ऐफ़" (इंटरनेशनल मानिट्री फ़न्ड) चला रहे हैं। यह भी लोगों को मालूम है कि उनको आलमी मईशत की नब्ज़ कहा जाता है और दुनिया की मईशत का इन्हिसार इन दोनों इदारों पर माना जाता है। यह भी सब जानते हैं कि ये इदारे किस तरह मक़रूज़ मुल्कों पर दबाव डाल कर वसाइल पर तसर्रुफ़ और मक़ासिद पर अपनी इजारहदारी क़ायम करते हैं……लेकिन यह बहुत कम लोग जानते हैं कि दुनिया के चलाने वाले इन इदारों को कौन चलाता है? इनको "इंटरनेशनल बैंकर्ज़" का गुरूप चलाता है और इस गुरूप को फ़्री मैसन्ज़ी के "बिग बिरादर्ज़" चलाते हैं जो दज्जाल के आलमी इक़्तिदार की राह हमवार करने के लिये दुनिया की मईशत को क़ाबू में रखने के लिये सरगर्म हैं। कुछ अर्से पहले एक किताब छपी थीः "कारपोरेशन्ज़ की हुकूमत" यह एक अमरीकी जोड़े ने लिखी है जो बैरूने अमरीका मल्टी नेशनल कम्पनियों की इंसानियत सोज़ कार्रवाइयों को क़रीब से देखते रहे है और आख़िरकार इस बात पर मजबूर हुए कि नौकरी छोड़छाड़ कर अमरीका वापस जाएं और अपने हम वतनों को "नादीदा क़ुव्वतों"

की कारस्तानियों से आगाह करें। उन्होंने करन्सी नोट के मुतअल्लिक़ लिखा कि आहिस्ता आहिस्ता यह भी ख़त्म हो जाएगा। इसकी जगह क्रेडिट कार्ड ने ले ली। फिर क्रेडिट कार्ड भी ख़त्म हो जाएगा लोग कम्प्यूटर के ज़रीए आदाद ओ शुमार बराबर सराबर करेंगे और बस हाथ में कुछ भी न होगा। बंदा एक अर्से तक इस जादूई तिलस्म के बारे में सोचता रहा कि अगर नम्बरों का खेल ही अश्या व ख़िदमात के हुसूल का ज़रीआ बन जाएगा तो फिर यह दुनिया आसान होगी या मुश्किल? नीज़ इससे यहूद क्या हासिल करना चाहते हैं जो करन्सी के पीछे सोने के ख़ातमे से लेकर स्टाक एक्सचेंज में सूद और जूए की तरवीज तक हर चीज़ में मुलव्विस हैं। तफ़क्कुर और मुतालआ जारी था कि "मास्टर्ज़" का बनाया हुआ यह मंसूबा हाथ लगा। आप भी सोचिये और ग़ौर कीजिये कि उलमाए किराम जब ग़ैर शरई मुआमलात के ख़तरनाक नताइज मुस्लिम दुश्मन ताक़तों की पालीसी से आगाह करें और इसको न माना जाए तो आने वाली दुनिया का मंज़रनामा क्या होगाः

"सैन्ट्रल बैंक, बैंक आफ़ इंटरनेशनल सेटलमेन्ट और वर्ल्ड बैंक" काम करने के मिजाज़ नहीं होंगे। प्राइवेट बैंक ग़ैर क़ानूनी होंगे। बैंक आफ़ इंटरनेशनल सेटलमेन्ट (BIS) मंज़र में ग़ालिब हैं। प्राइवेट बैंक, "बड़े दस बैंकों" की तैयारी में तहलील हो रहे हैं। ये बड़े बैंक दुनिया भर में बैंककारी पर BIS और आइ एम ऐफ़ की रहनुमाई में कंट्रोल करेंगे। उज्रतों के तनाज़ुआत की इजाज़त नहीं दी जाएगी। न ही इन्हिराफ़ की इजाज़त दी जाएगी। जो भी क़ानून तोड़ेगा उसे सज़ाए मौत दे दी जाएगी।

तब्क़ए अशराफ़िया के अलावा किसी के हाथों में नक़्दी या सिक्के नहीं दिये जाएंगे। तमाम लेनदेन सिर्फ़ और सिर्फ़ क्रेडिट कार्ड के ज़रीए होगा (और आख़िरकार इसे माइक्रो चिप प्लान्टेशन के ज़रीए किया जाएगा) "क़ानून तोड़ने वालों" के क्रेडिट कार्ड मुअत्तल

कर दिये जाएंगे। जब ऐसे लोग ख़रीदारी के लिये जाएंगे तो इन्हें पता चलेगा कि इनका कार्ड ब्लैक लिस्ट कर दिया गया है। वे ख़रीदारी या ख़िदमात हासिल नहीं कर सकेंगे। पुराने सिक्कों (यानी मौजूदा करन्सियों) से तिजारत को ग़ैर मामूली जुर्म क़रार दिया जाएगा और इसकी सज़ा मौत होगी। ऐसे क़ानून शिकन अनासिर जो ख़ुद को मख़्सूस मुद्दत के दौरान पुलीस के हवाले करने में नाकाम रहें उनकी जगह सज़ाए क़ैद भुगतने के लिये उनके किसी घर वाले को पकड़ लिया जाएगा।"

इन दोनों पेराग्राफ़ों के आख़िर में "क़त्ल की सज़ा" का तज़किरा पूरी ताकीद और एहतिमाम से है। तो मेरे भाइयो! जब यहूद के जंगल में फंस कर भी आख़िरकार क़त्ल होना या ग़ुलाम बन कर रहना है तो मरने से पहले मरने का इख़्तियार ख़ुद क्यों न इस्तिमाल कर लें??? इस इख़्तियार के इस्तिमाल की एक ही सूरत है यानी पूरे अज़्म और हौसले के साथ शरीअत पर इस्तिक़ामत, ग़ैर शरई और हराम चीज़ों से "कुल्ली इज्तिनाब" और जान व माल, ज़ुबान व क़लम का इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह।

पानी और ग़िज़ाः

आप आजकल देख रहे होंगे कि क़िस्मा क़िस्म मसनूई ग़िज़ाएं क़ुदरती ग़िज़ाओं की जगह ले रही हैं। बिस्किट चाक्लेट, आइसक्रीम, मक्खन, अचार चटनी और जैम व मुरब्बा की ख़ैर थी, कोल्ड ड्रिंक और मसनूई मशरूबात ने तो ऐसा मैदान मारा कि गावों दीहातों में लोग दूध, लस्सी, स्कंजबीन, ठंडाई और तुख़्मे मलींगा को तो भूल ही गए हैं। क़ुदरती दूध दीहात में भी किसी क़िस्मत वाले को मिलता है। अलबत्ता मसनूई दूध बीसियों अक़्साम और ज़ाएक़े का हर वक़्त हर जगह दस्तियाब है। अब तो शहद और दूध के बाद हर क़िस्म के खाने भी टिन पैक में आना शुरू ही गए हैं। दुबई जैसे शहरों में तो क़ुदरती ज़बीहा के लिये इतनी शराइत हैं गोया उन पर एक तरह की

पाबंदी लग गई है। तमाम तर ग़िज़ाएं मसनूई और कीमियावी माद्दों से लबरेज़ हैं। ज़रा तसव्वुर कीजिये! ऐसे शहर के सुहूलत पसंद बाशिंदों का क्या बनेगा जो एक आदमी की ग़िज़ा का बंदोबस्त नहीं रखते और तमाम तर इन्हिसार यहूदी मल्टी नेशनल कम्पनियों पर कर रहे हैं। जानवर मसनूई नस्ल कशी के ज़रीए पैदा किये जा रहे हैं। फ़सलें मसनूई बीजों और खादों से उगाई जा रही हैं। जहां अमरीकी बीज लग जाए वहां कोई दूसरा बीज नहीं चल सकता। आपको हर मर्तबा कम्पनी से बीज ख़रीदना पड़ेगा वरना आपकी ज़मीन में धूल उड़ेगी। पानी का तो कहना ही क्या, दरयाओं और चश्मों का मअदनियात और जड़ी बूटियों की तासीर वाला साफ़ कुदरती पानी तो पीता ही वह है जिस के पास मिनरल वाटर ख़रीदने की सकत नहीं। शहरों में तो फ़ैशन हो गया है कि लोग कहीं मिलने भी जाएं तो मिनरल वाटर की बोतल हाथ में उठाये फिरते हैं। उनके ख़्याल में यह "स्टेटस" की अलामत है जबकि यह दिहाती कुव्वतों की सियासत और ताक़त के मज़ाहिर में से एक मज़हर है। इसका अंदाज़ा दुनिया को उस वक़्त होगा जब इंसान के गले से पेट में उतरने वाली हर चीज़ मसनूई हो जाएगी और मल्टी नेशनल कम्पनियों के हाथ में होगी जो भारी रिश्वत, दबाव और शैतानी हथकंडों के ज़रीए मक़ामी सन्अतों को तबाह करने के लिये कुदरती देसी खूराक की फ़रोख़्त पर पाबंदी लगवा देंगी और फिर दज्जाल उसको पानी का एक क़त्रा या पकी पकाई रोटी का एक टुक्ड़ा भी नहीं देगा जो उसके शैतानी मुतालिबात नहीं मानेगा। पानी और ग़िज़ा को मसनूई बनाने की दज्जाली मुहिम इसलिये जारी है कि मसनूई चीज़ सानेअ़ के हाथ में होती वह जिसको चाहे बेचे न बेचे, दे न दे, जबकि कुदरती चीज़ कुदरत के हाथ में होती है जो कि फूल और कांटों का यक्सां ख़्याल रखती है। शहर तो शहर हैं अब तो दीहातों में भी यह हाल है कि वाटर सप्लाई की स्कीमें और टैंक,

पाइप, पन चक्कियां वग़ैरा एन जी ओज़ लगाकर दे रही हैं जो आगे चलकर इस पर इजारा वारी क़ायम करेंगी। और इस तरह शहरों में तो पानी और ख़ूराक के ज़ख़ीरे तो होंगे ही "आलमी इन्तिज़ामिया" के हाथ में, दीहात में भी कुदरती पानी किसी आम आदमी के बस में न होगा। मुस्तक़्बिल में पानी के मस्ला पर दुनिया भर में होने वाली जंगों के मुतअल्लिक़ तो आप पढ़ते और सुनते ही रहते हैं, दरअसल आगे चल कर दज्जाली कुव्वतों की तरफ़ से पैदा किये जाने वाले मसनूई बुहरान को असली बावर कराने की ज़ेहनसाज़ी और मश्क़ है।

मज़े की बात यह कि कुदरती पानी को मुज़िर्रे सेहत जबकि मिनरल वाटर को सेहत के लिये मुफ़ीद बताया जाता है। हालांकि सूरते हाल यह है कि मिनरल वाटर के ज़रीए अरबों डालर कमाने के साथ साथ हमारी नस्ल को "ज़ंख़ा" बनाया जा रहा है। [इस लफ़्ज़ का मतलब किसी पंजाबी भाई से पूछ लें] हमारे एक मुहतरम दोस्त ने जब देखा कि लोग ग़ैर मेयारी पानी बेच रहे हैं तो उन्होंने मिनरल वाटर बनाने का प्लांट लगाया। उनका इरादा था मेयारी काम करेंगे, चाहे कम नफ़ा मिले। जब वह प्लांट लगा चुके और तमाम तजुर्बात मुकम्मल करने के बाद हुकूमती नुमाइंदा उसकी मंज़ूरी देने आया तो उनके काम और लगन की तारीफ़ किये बेग़ैर न रह सका......लेकिन......उसका सवाल था कि आप इस में "वह" क़तरे मिलाते हैं या नहीं? उनको तअज्जुब हुआ कि कौन से क़तरे पानी में मिलाए जा सकते हैं? कहानी कुछ यूं सामने आई कि इंसान के तौलीदी माद्दे में दो तरह के जरासीम होते हैं। एक को "ऐक्स क्रो मोसूम्ज़" का नाम दिया गया है। पहला ज़्यादा हो तो अल्लाह के हुक्म से मुज़क्कर और दूसरा ज़्यादा हो तो नो मौलूद मुअन्नस पैदा होता है। दूसरी क़िस्म के क़तरे मिलाए बेग़ैर पानी की फ़रोख़्त का लाइसेंस नहीं दिया जाता। अब मुझे नहीं मालूम कि हमारे डाक्टर्ज़ और माहिरीन इस बात की तसदीक़ करेंगे या नावाक़्फ़ियत और

दबाव उनके आड़े आएगा लेकिन बंदा इसका क्या करे कि मैंने इन दोस्त का प्लांट ख़ुद देखा और उनकी बेबसी की दासतान उनके दफ़्तर में बैठ कर ख़ुद सुनी। इसको कैसे झुटला दूं? क्या महज़ मुझे यह कहानी सुनाने के लिये उन्होंने अपना लगा लगाया प्लांट ठप कर दिया होगा?

इस तरह की कहानियां दुनिया के कई हिस्सों में जन्म ले रही हैं। दुनिया भर के इंसान पीने के पानी के बेहरान के नाख़ुशगवार पहलूओं से समझौता कर रहे हैं। वर्ल्ड बैंक की पुश्त पनाही में बैनुल अक़्वामी सतह पर ग़िज़ा और पानी फ़राहम करने वाली मुट्ठी भर कम्पनियों ने इंसानी हमदर्दी के नाम पर पानी को अश्याए सर्फ़ में शामिल कर के मुनाफ़ा ख़ोरी शुरू कर दी है। ये कम्पनियां खुले आम वर्ल्ड बैंक और अक़्वामे मुत्तहिदा में अपना ग़ल्बा रखती हैं। उन्होंने गुज़िश्ता साल मार्च 2005 ई0 में हालैंड के दारुल हुकूमत हीग में मुन्अक़िदा वर्ल्ड वाटर फ़ोरम को स्पान्सर किया था। जिस में क़ुदरती पानी के बारे में मुख़्तलिफ़ बीमारियां फैलने का मन्फ़ी प्रोपगेन्डा और मसनूई पानी को ख़रीदने की अहमियत पैदा करने के लिये नित नए तरीक़े सोचे गए और अरबों डालर की मालियत पर मुश्तमिल मंसूबे मंज़ूर किये गए जिन्हें मुख़्तलिफ़ यहूदी कम्पनियां मिल कर स्पान्सर करेंगी।

क़ुदरती वसाइलः

यानी बारिश, फ़सलें, मौसम और उसके अस्राते क़हत, ख़ुश्क साली वग़ैरा। आप ने महसूस किया होगा कि कुर्रहये अर्ज़ के मौसम में वाज़ेह तब्दीलियों आ रही हैं और मौसम और माहौल संगीन तबाही से दो चार हो रहे हैं। दुनिया भर में इस हवाले से मज़ामीन और साइंसी फ़ीचर्ज़ शाए हो रहे हैं। मज्मूई दर्जे हरारत में इज़ाफ़े से तूफ़ान, सैलाब और बारिशों की शरह ग़ैर मामूली तौर पर मुतग़य्यर हो गई है। अगर्चे इसको फ़ित्री अमल क़रार दिया जा रहा है लेकिन

दरहक़ीक़त यह तसख़ीरे काइनात के लिये की जाने वाली उन शैतानी साइंसी तजुरबात का नतीजा और मौसमों को क़ाबू में रखने की कोशिशों का नतीजा है जो मग़रिब में जगह जगह मौजूद यहूदी साइंसदान हज़रत दाऊद की नस्ल से आलमी बादशाह के आलमी ग़ल्बे की ख़ातिर कर रहे हैं। कुर्रये अर्ज़ का अपना कुदरती दिफ़ाई निज़ाम है जो उसे सूरज की मुहलिक शुआओं और मुख़्तलिफ़ सितारों और सय्यारों से आने वाली ताबकार लहरों को इंसानों तक नहीं पहुंचने देता। इन ख़तरनाक शुआओं को "अल्ट्रा वाइलेट रेज़" कहते हैं। ये निज़ामे कुदरती है और इसे हमारे ख़ालिक व मालिक अल्लाह रब्बुल आलमीन ने वज़अ़ किया है। इसके मुक़ाबले में 1886-88 ई0 में एक अमरीकी यहूदी साइंसदान निकोला टेसला ने ए सी Alternative Current पावर (बिजली) का निज़ाम और उसकी तरसील का निज़ाम ईजाद किया। फ़ी सेकेण्ड 60 इरतिआशात (हट्ज़) की ऐ सी बिजली के पावर गिरड्ज़ ज़मीन पर फैल जाएं तो कुरए अर्ज़ अपनी मामूल की फ़्रीक्वेन्सी 7-8 हट्ज़ की बजाए एक मुख़्तलिफ़ रफ़्तार से उछलने लगेगा और उससे ख़ारिज होने वाली रेडियाई लहरें आयूनी कुर्रह की फ़ज़ा और मौसम को लाज़मी तौर पर तब्दील कर देंगी। आयूनी कुर्रह को गर्म करने के लिये नार्वे में कुत्बे शिमाली के नज़दीक तजुरबात किये जा रहे हैं। इसमें मौसमों में हस्बे मंशा तब्दीली आ जाएगी। इस मंसूबे का इज़्हार मुख़्तलिफ़ पैरायों में मुख़्तलिफ़ यहूदी अथारटियों की तरफ़ से होता रहता है। मसलन 1958 ई0 में व्हाइट हाउस के मुशीर मौसमियात ने बताया कि महकमये दिफ़ा ऐसे ज़राये का जाएज़ा ले रहा है जो ज़मीन और बालाई फ़ज़ा में बर्क़ी ज़र्रात को मौसम पर असरअंदाज़ करने के लिये इस्तिमाल किये जा सकें।

1987-92 ई0 के दौरान "ईस्ट लेंड आर्को पावर टेक्नालोजीज़ इन्कारपोरेटेड" (APTI) के साइंसदानों ने एक ऐसा आला पेटेन्ट

कराया जो ज़मीन के आयूनी कुर्रह या मक़्नातीसी कुर्रह के किसी हिस्सा को तब्दील कर सकता है। अगस्त 1987 ई0 को रजिस्टर होने वाले इस अस्करी हथियार को यहूदी साइंसदान बर्नार्ड जे ईस्ट लेंड ने ईजाद किया था। बिलआख़िर 2001 ई0 को इसे सिस्टम के मुकम्मल तौर पर ज़ेरे अमल लाने का मुजौवज़ा साल क़रार दिया।

इस प्रोजेक्ट के अहदाफ़ ये हैंः

(1) इंसानी ज़ेहन का अमल दरहम बरहम करना।

(2) कुर्रहये अर्ज़ के तमाम ज़राए मुवासिलात को मुन्जमिद करना।

(3) बड़े इलाक़े में मौसम तब्दील करना।

(4) वाइल्ड लाइफ़ की नक़्ल मकानी के अंदाज़ में मुदाख़लत करना (वाइल्ड लाइफ़ के हर प्रोग्राम में इनेमल माइक्रो चिपिंग वाज़ेह देखी जाती है। यह जंगी हयात की तसख़ीर के मंसूबे का एक हिस्सा है।)

(5) इंसानी सेहत को मन्फ़ी अंदाज़ में तब्दील करना। मुख़्तलिफ़ क़िस्म की दवाइयां, क़तरे, वैकसीन वग़ैरा का जब्री इस्तिमाल इसकी एक शक्ल है।

(6) ज़मीनी फ़ज़ा की बालाई सतह पर ग़ैर फ़ित्री असरात मुरत्तिब करना।

1958 ई0 में व्हाइट हाउस के मुशीरे मौसमियात, कैप्टन हावर्ड टी और वैल ने कहा था कि महकमा दिफ़ाअ़ जाइज़ा ले रहा है वे तरीक़े तलाश किये जाएं जिनके ज़रीए ज़मीन और आसमान में आने वाली तब्दीलियों को इस्तिमाल करके मौसमों पर असरअंदाज़ हुआ जा सके। मसलन किसी मख़्सूस हिस्से में फ़ज़ा को एक इलैक्ट्रानिक बीम के ज़रीए आयोनाइज़ या डी आयोनाइज़ किया जा सके।

अमरीकी साइंसदानों ने एक इदारा क़ायम किया है जो मौसमों में तब्दीली से बराहे रास्त तअल्लुक़ रखता है। यह इदारा न सिर्फ़

मौसमों में तग़य्युर का ज़िम्मेदार है बल्कि कुर्रये अर्ज़ में ज़लज़लों और तूफ़ानों के इज़ाफ़े का भी ज़िम्मेदार है। इस प्रोजेक्ट का नाम Haarp यानी "हाई फ्रीक्वेन्सी ऐक्टोआरोरल रिसर्च प्रोजेक्ट" है। इसके तहत 1960 ई0 के अशरे से ये तजुरबात हो रहे हैं कि राकिटों और मसनूई सय्यारों के ज़रीए बादलों पर कीमियाई माद्दे (बेरीम पाउडर वग़ैरा) छिड़के जाएं जिस से मसनूई बारिश की जा सके। यह सारी कोशिशें कुदरती वसाइल को कब्ज़े में लेने की हैं ताकि दज्जाल जिसे चाहे बारिश से नवाज़े, जिसे चाहे कहत साली में मुब्तला कर दे। जिससे वह खुश हो उसकी ज़मीन में हरियाली लहराए और जिस से बिगड़ जाए वहां ख़ाक उड़े। लिहाज़ा मुसलमानों को कुदरती ग़िज़ाओं और कुदरती ख़ूराक को इस्तिमाल करना और फ़रोग़ देना चाहिये। यह हम सब के लिये बेदार होने का वक़्त है कि हम कुदरती ख़ूराक (मसनून और फ़ित्री ख़ूराक) इस्तिमाल करें और मसनूई अशया या मसनूई तरीक़े से महफ़ूज़ कर्दा अशया से खुद को बचाएं जो आगे चल कर दज्जाली ग़िज़ाएं बनने वाली हैं। खुसूसन तीन मसनूई चीज़ें: मसनूई आटा, मसनूई चिकनाई और मसनूई मीठा। तफ़सील किताब के आख़िर में "फ़ित्नए ग़िज़ा से हिफ़ाज़त" के उन्वान के तहत देखें।

दवा और इलाज:

पानी और ख़ूराक पर मुकम्मल क़ाबू पाने का मरहला तो अभी कुछ दूर है लेकिन दवा तो मुकम्मल तौर पर मल्टी नेशनल कम्पनियों के क़ाबू में आ चुकी है। उन्होंने मुख़्तलिफ़ मुमालिक में ऐसे क़वानीन मंज़ूर करवा लिये हैं कि देसी तरीक़ए इलाज अगर्चे आसान और सस्ता हो लेकिन मम्नू है। इन आलमी कम्पनियों के कारिंदे मक़ामी तरीक़ए इलाज (नीज़ मक़ामी दवासाज़ कम्पनियों) के ख़िलाफ़ ऐसा प्रोपेगन्डा करते हैं कि दुनिया आहिस्ता आहिस्ता उनसे मुतनफ़्फ़िर होकर इन बैनुल अक़्वामी यहूदी कम्पनियों के चंगुल में फंस गई है।

कुदरती जड़ी बूटियों पर मुशतमिल इलाज पर आहिस्ता आहिस्ता मुकम्मल पाबंदी लग जाएगी और दुनिया मुकम्मल तौर पर यहूदी मल्टी नेशनल दवासाज़ कम्पनियों के नर्गे में आ जाएगी। यह जब चाहें किसी मुल्क के मरीज़ों को सिसकता तड़पता छोड़ कर उनके मरने का तमाशा देखेंगे। यह दरअसल उस आलमी हुकूमत का नक़्शा है जिसके मुताबिकः

"तमाम ज़रूरी और ग़ैर ज़रूरी अदवियाती मसनूआत, डाक्टरों, डेंटिस्टों और हेल्थ केयर वर्करों को सेन्ट्रल कम्प्यूटर डेटा बैंक में रजिस्टर किया जाएगा और कोई दवाई या इलाज उस वक़्त तक तजवीज़ नहीं किया जा सकेगा जब तक हर शहर, क़स्बा या गावों का ज़िम्मेदार रीजनल कंट्रोलर उसकी तहरीरी इजाज़त नहीं देगा।" (डाक्टर जान कोलमैनः Consirators Hierarchy)

दज्जाल की सवारीः

दज्जाल ऐसी रफ़तार के साथ सफ़र करेगा जो बादलों को उड़ा ले जाने वाली हवा की होती है। ऐसे जहाज़ ईजाद हो चुके हैं जो हवा से कई गुना तेज़ रफ़तार के साथ परवाज़ करते हैं। बिला शुबा यह जैट, कंकोर्डिया सुपर सांक क़िस्म की सवारी होगी। एक ख़लाई शटल बैनतालैसमेंट में पूरी ज़मीन के गिर्द चक्कर लगा लेती है। पुर इसरार उड़न तशतरियों का ज़िक्र भी सुनने में आता रहता है। ये सब दज्जाल की सवारी की मुम्किना शक्लें हैं जो हमें बता रही हैं कि दज्जाल का वक़्त अब दूर नहीं। उसके गधे के कानों के दर्मियान 40 हाथ का फ़ासला होगा। किसी तय्यारे के परों के दर्मियान तक़रीबन इतना ही फ़ासला होता है। हाल ही में इस्राइली माहिरीन ने हेरोन (Heron) नामी एक तय्यारा ईजाद किया है जो इस्राईल के Palmahim नामी एयरपोर्ट पर खड़ा है। यह तय्यारा साज़ी की जदीद तरीन टेक्नालोजी के तहत तय्यार किया गया है। इस तय्यारे की पहली परवाज़ 14/जुलाई 2006 ई० को की गई जबकि इसे

मंज़रे आम पर एक साल बाद जून 2007 ई0 को लाया गया। इसकी बुलंद तरीन परवाज़ 9 हज़ार मीटर (30 हज़ार फुट) है जबकि यह फ़िलहाल 30 घंटे तक मुसलसल 225 किलोमीटर फ़ी घंटा की रफ़्तार से उड़ सकता है। इसके दोनों परों के दर्मियान 16.6 मीटर का फ़ासला है जो 85 फुट बनते हैं। क़ारईन! हदीस शरीफ़ में बयान कर्दा मिक्दार "चालीस हाथ" और इस तय्यारे के परों के दर्मियान फ़ासला "85 फुट" के दर्मियान मुनासिबत को मलहूज़ नज़र रखें। अहम तरीन बात यह है उसकी दुम पर दो उभार बिल्कुल गधे के कानों की तरह उभरे हुए हैं। इन्हें जिस ज़ाविये से भी देखा जाए गधे के दो कानों की तश्बीह साफ़ दिखाई देती है। मुम्किन है इस्राईल की यह टेक्नालोजी मज़ीद तरक़्क़ी करे। इसी तय्यारे की रफ़्तार और सलाहियते परवाज़ में मज़ीद इज़ाफ़ा हुआ और इसका आईंदा माडल हदीस शरीफ़ में बयान कर्दा निशानियों के ऐन मुताबिक़ हो जाए। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

जन्नत और दोज़ख़:

यूरप या अमरीका से बाहर रहने वालों से मग़रिब के बारे में पूछिये वे उसे जन्नत क़रार देते हैं। वे अपने मुल्कों को जहन्नम कहते हैं। दज्जाल के पास कुछ इस तरह की सूरत होगी जिनमें तमाम सहूलतें और आसानियां होंगी और वह उसे जन्नत कहेगा। ऐसे इलाक़े जहां दुन्यावी ऐश व आराम नहीं होगे उन्हें जहन्नम कहा जाएगा।

शैतानों की इआनत:

हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 इंसानों में सबसे बेहतर अफ़ज़ल थे। किसी इंसान की तमाम तर ख़ूबियां उनमें अल्लाह तआला के फ़ज़ल व करम से जमा थीं और इन ख़ूबियों की अलामत "मुहरे नुबुवत" की सूरत में उनके कंधों के दर्मियान पाई जाती थी। बुरे इंसानों की तमाम ख़राबियां दज्जाल में जमा होंगी और उसके

बुरे इंसानों की तमाम ख़राबियां दज्जाल में जमा होंगी और उसके चेहरे से अयां होंगी। उसकी दोनो आंखों के दर्मियाना "काफ़िर" लिखा होगा। उसकी एक आंख उसकी नाक़िस शख़्सियत की अलामत होगी। फ़रिश्तों ने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की मदद की, इसके बरअक्स दज्जाल की मदद शैतान करेंगे। यह मुसलमानों के लिये एक अज़ीम आज़माइश होगी कि क्या वह अद्दज्जाल पे ईमान ले आते हैं या अल्लाह पे ईमान में इस्तिक़ामत दिखाते हैं।

इंसानी आबादी पे इख़्तियारः

जब से इंसान ने झूट बोलने का गुनाह शुरू किया है, इंसानी तारीख़ में ख़ानदानी मंसूबा बंदी के फ़वाइद बयान करने से बड़ा झूट शायद नहीं बोला गया। मग़रिब ने कुर्रहये अर्ज़ के वसाइल चूस लिये, उन पर सांप बन कर बैठ गया और फिर अपना जुर्म छिपाने के लिये दुनिया से कहता है वसाइल कम हैं, आबादी न बढ़ाओ, बच्चे कम पैदा करो......हालांकि आज भी ज़मीन के ख़ज़ाने इस क़दर हैं कि कई गुना ज़्यादा इंसानी आबादी के लिये काफ़ी हैं। पाकिस्तान को ले लीजिये। सिर्फ़ सिंध या बलूचिस्तान के मअदनी ज़ख़ाइर और सिर्फ़ पंजाब की ज़रख़ेज़ तरीन ज़मीन और मिसाली नहरी निज़ाम पूरे पाकिस्तान के लिये काफ़ी हैं और सिर्फ़ पाकिस्तान व सऊदी अरब के वसाइल पूरे आलमे इस्लाम की किफ़ालत कर सकते हैं। लेकिन ग़ज़ब है कि इन वसाइल को इस्तिमाल करके मफ़लूकुल हाल दुनिया के काम आने के बजाए यूरपी कम्पनियां इन पर क़ब्ज़ा जमा रही हैं और मुसलमानों की नई नस्ल को पैदाइश से पहल गला घोंट कर मारने का ज़ुल्मे अज़ीम कर रही है। जब डेन्मार्क, पालैंड वग़ैरा में डेरी मसनूआत ज़्यादा होती हैं तो उन्हें ग़रीब मुल्कों को सस्ता बेचने या क़हत ज़दा मुल्कों को बतौरे इम्दाद देने के बजाए समंदर में डुबो दिया जाता है। इस संगदिर्ली को क्या नाम दिया जाए? दुनिया में फ़ी ऐक्टर पैदावार पहले से चार गुना ज़्यादा हो रही है, एक साल में तीन

तीन फ़स्लें भी हासिल की जा रही हैं लेकिन महज़ ग़ैर यहूदी आबादी कम करने के लिये वसाइल की कमी का ढंढोरा पीटा जा रहा है।

अब दज्जाली कुव्वतों के ज़िंदगी मौत पर इख़्तियार की तरफ़ वापस आते हैं। ज़िंदगी का मतलब किसी जिस्म में रूह की मौजूदगी है। जब यह रूह निकाल ली जाती है जिस्म काम करना छोड़ देता है। हम इस हालत को "मौत" कहते हैं। रूह पे ग़ालिब आना नामुम्किन नहीं क्योंकि रूह का इल्म सिर्फ़ अल्लाह तआला के पास है। कुर्आन करीम में इर्शाद है: "और यह तुम से रूह के बारे में पूछते हैं, कह दो कि रूह तो मेरे रब का हुक्म है और तुम्हें इसके बारे में बहुत मामूली इल्म दिया गया है।" (बनी इस्राईल: 85) दज्जाल कुछ मवाक़े पर (कुछ अर्से के लिये) इस क़ाबिल होगा कि लोगों को हलाक और फिर ज़िंदा कर सके और इस मामूली इल्म की बदौलत होगा। वह यह काम किस तरह करेगा? ग़ालिबन क्लोनिंग से आगे के किसी मरहले के ज़रीए। साइंसदानों ने इंसानी जीनियाती कोड पढ़ लिया है। फ़िलहाल इस साइंसी पेश रफ़्त को जीनियाती अमराज़ के इलाज के तौर पर पेश किया जा रहा है लेकिन जब इसे बाक़ाएदा प्लेटफ़ार्म मिल गया और लोगों ने इसे क़बूल कर लिया तो फिर "हियूमन जीनूम" का क़ानून बिल जब्र नाफ़िज़ कर दिया जाएगा। इसका मतलब एक मुकम्मल जीनियाती बर्थ कंट्रोल है। इसके तहत शादी करना ग़ैर क़ानूनी क़रार दे दिया जाएगा। इस तरह की ख़ानदानी ज़िंदगी नहीं होगी जिस तरह आजकल है। बच्चों को उनके मां बाप से छोटी उम्र में अलाहिदा कर दिया जाएगा। रियासती इम्लाक की तरह सरकारी वार्ड्ज़ में उनकी परवरिश होगी। इस तरह एक तजुर्बा मशरिक़ी जर्मनी में किया गया था। बच्चों को उन वालिदैन से अलग कर दिया जाता था जिन्हें रियासत वफ़ादार नहीं समझती थी। ख़्वातीन को आज़ादिए निस्वां की तहरीकियों के ज़रीए ज़लील कर दिया जाएगा। जिंसी आज़ादी लाज़िम होगी। ख़्वातीन का

बीस साल की उम्र तक एक मर्तबा भी जिंसी अमल से न गुज़रना सख़्त तरीन सज़ा का मूजिब होगा। खुद इस्क़ाते हमल से गुज़रना सिखाया जाएगा और दो बच्चों के बाद ख़्वातीन इसको अपना मामूल बना लेंगी। हर औरत के बारे में यह मालूमात आलमी हुकूमत के इलाक़ाई कम्प्यूटर में दर्ज होंगी। अगर कोई औरत दो बच्चों को जन्म देने के बाद भी हमल से गुज़रे तो उसे ज़बरदस्ती इस्क़ाते हमल के क्लीनिक में ले जाया जाएगा और आईंदा के लिये उसे बांझ कर दिया जाएगा।

जब दज्जाली कुव्वतें बर्थ कंट्रोल पर मुकम्मल उबूर हासिल कर लेंगी तो दुनिया का नक़्शा कुछ यूं होगाः

"एक आलमी हुकूमत और वन यूनिट मानिटरी सिस्टम, मुस्तक़िल ग़ैर मुंतख़ब मौरूसी चंद अफ़राद की हुकूमत के तहत होगा जिसके अरकान क़ुरूने वुस्ता के सरदारी निज़ाम की शक्ल में अपनी महदूद तादाद में से खुद को मुंतख़ब करेंगे। इस एक आलमी वजूद में आबादी महदूद होगी और फ़ी ख़ानदान बच्चों की तादाद पर पाबंदी होगी। वबाओं [यानी एड्ज़ और इस जैसे दूसरे खुद साख़्ता जरासीम] जंगों और क़हत के ज़रीए आबादी पर कंट्रोल किया जाएगा। यहां तक कि सिर्फ एक अरब नुफ़ूस रह जाएंगे जो हुक्मरान तब्क़ा [यह तब्क़ा यहूद के अलावा कौन हो सकता है?] के लिये कारआमद होंगे और उन इलाक़ों में होंगे जिन का सख़्ती और वज़ाहत से तअय्युन किया जाएगा और यहां वे दुनिया की मज्मूई आबादी की हैसियत से रहेंगे।" (डाक्टर जान कोलैमन की किताब Conspirators Hierarchy से माख़ूज़)

ऐ मेरे भाइयो! बेदार होने का वक़्त है। शरीअत के अहकाम समझ में न भी आएं तब भी उन्हें मानने की आदत डालो। मग़रिबी प्रोपेगंडा बाज़ों की ख़िलाफ़े शरअ़ बातों का जवाब समझ में न भी आए फिर भी उन पर यक़ीन न करो। मुसलमानों की नस्लकशी के

लिये ख़ानदानी मंसूबाबंदी जैसी एक नहीं, कई मुहिमें चल रही हैं। एक एक को क्या बयान करें। जो चीज़ ख़िलाफ़े शरीअत है, उसे छोड़ दो......वर्ना दुनिया भर में फैले "बिरादर्ज़ और मास्टर्ज़" अपने हद्फ़ "आलमी दज्जाली हुकूमत" तक पहुंच जाएंगे और हम न जाने किस गिरोह में होंगे और किस अंजाम से दो चार होंगे???

दज्जाल कहां है?

यहूदियत की एक मज़हबी दस्तावेज़ में लिखा है: "मसीह (यानी अद्दज्जाल) की रूह उस जगह जहां वह क़ैद है, रोया करती है, यहूदियों के अह्वाल पर ग़मगीन रहती है और बार बार उन मलाइका से जो उसे क़ैद किये हुए हैं पूछती है कि इसे निकलने की इजाज़त कब मिलेगा?"

यहूदी "मसीह दज्जाल" यानी "दज्जाले अक्बर" जिसे वह मसीह दाऊद कहते हैं, के मौजूदा मक़ाम रिहाइश या मौजूदा पनाहगाह को ज़ाहिर नहीं करते। या तो इब्लीस ने उन्हें भी इसका वाज़ेह और मुतअय्यन इल्म नहीं दिया है या अगर दिया है तो यहूदी अकाबिर उसे बेहद ख़ुफ़्या राज़ की तरह रखने की कोशिश करते हैं। चुनांचे उनकी ख़ुफ़्या तरीन बहसों में इस तअल्लुक़ से जो बात कही जाती है वह निहायत मअनीख़ेज़ होने के साथ साथ पुरअस्रार भी है। उनकी एक मज़हबी दस्तावेज़ "मिशनाह" (Mishnah) में एक नसीहत है:

"मम्नू दर्जों" की बात तीन लोगों के माबैन भी न की जाए। बरअशीत (तक्वियन) की बात दो लोगों के दर्मियान भी न हो; और

"मुरक्कबा" की बात तो कोई शख़्स तन्हा भी न करे, इल्ला यह कि वह ख़ुद "शैख़" हो और उसे अपने इल्म का इल्म हो।"

यह पुरअस्रारियत और राज़दारी की कोशिशें अपनी जगह......लेकिन सच्ची बात यह है कि यहूद को दज्जाल के मक़ाम का सही इल्म है न वह उसके कुछ काम आ सकते हैं। आज तक जितने रूहानी यहूदी (जादूगर, सफ़्ली आमिल) गुज़रे हैं मसलनः सिबाताई ज़ैवी, इस्राईल बिन ईली ज़र, बअल शैम वग़ैरा......न यह अपने जादू, शैतानी इल्म और ख़बीस जिन्नात से राबते के ज़रीए दज्जाल का ठिकाना मालूम कर सके हैं, न इनके अहबार व रुहबान (उलमा और पीर) को इसका कुछ इल्म है और न ही उनके साइंसदान और ख़लानूरदउस की कोई ख़बर ला सके हैं। अल्लाह पाक ने सच्ची किताब और सच्ची नुबुवत के ज़रीए जो और जितना इल्म मुसलमानों को दिया है, उसके अलावा सब ग़लत है। यहूद के ख़्वास इस हवाले से एक दूसरे को जिस राज़दारी की तलक़ीन करते हैं वह यहूदी अवाम के सामने दरहक़ीक़त अपनी जिहालत पर पर्दा डालने की कोशिश है।

जब यहूदियों की बात यक़ीनी तौर पर ग़लत है तो सही बात क्या है?

जिन उमूर का तअल्लुक़ ग़ैबिय्यात या मावराउल तब्इय्यात से होता है उसमें हमारे पास वाहिद ज़रीआ मालूमाते "वह्य" है। इंसानियत के पास इसके इलावा कोई चारह कार नहीं कि जिन चीज़ों को वह मुशाहिदे और ज़ाती तहक़ीक़ से दरयाफ़्त नहीं कर सकती, उनके बारे में ऐसे ज़रीए पर एतिमाद करे जो मुस्तनद भी हो और तसल्ली बख़्श भी। और यह ज़रीआ अक़्ल नहीं, वह्य है। वह्य के नूर के बेग़ैर अक़्ल गुमराह और गुमराही तक ले जाने वाली है। हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम वह हस्ती हैं जिन्हें ज़मानए जाहिलियत के शदीद दुश्मनी रखने वाले मुख़ालिफ़ीन ने भी "अस्सादिकुल अमीन"

का लक़ब दिया। आपने ज़िंदगी भर कभी भी किसी तरह का झूट नहीं बोला। लिहाज़ा आप सल्ल0 की बताई हुई इत्तिलाआत से ज़्यादा मुस्तनद ज़रीअए मालूमात इंसानों के पास कोई और नहीं। आइये! दुनिया की सबसे सच्ची और सब से ज़्यादा क़ाबिले इतमीनान ज़बान से पूछते हैं कि "दज्जाल कहां है?" यह बात दिलचस्पी से ख़ाली न होगी कि ख़ुद इसी हदीस शरीफ़ में जिसमें दज्जाल के मौजूदा मक़ाम का तज़किरा है, ज़िक्र है कि आप सल्ल0 की पेशगोई की तसदीक़ आप की हयाते मुबारका में हो गई थी जिस पर आपने ख़ुशी व मसर्रत का इज़हार फ़रमायाः

"जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 नमाज़ पढ़ चुके तो वह मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और मुस्कुराते हुए फ़रमायाः "तमाम लोग अपनी अपनी जगह बैठे रहें। फिर फ़रमायाः जानते हो मैंने तुम्हें क्यों जमा किया है?" लोगों ने कहाः "अल्लाह और उसका रसूल सल्ल0 बेहतर जानते हैं।" आप सल्ल0 ने फ़रमायाः "अल्लाह की क़सम! मैंने तुम्हें न तो किसी चीज़ का शौक़ दिलाने के लिये जमा किया है और न किसी चीज़ से डराने धमकाने के लिये इकट्ठा किया है, बल्कि मैंने तुम्हें यह बताने के लिये जमा किया है कि तमीम दारी पहले ईसाई थे। वह आया। उन्होंने बैअत की और इस्लाम में दाख़िल हो गये। उन्होंने मुझे ऐसा वाक़िआ सुनाया जो उन बातों से तअल्लुक़ रखता है जो मैं तुम्हें दज्जाल के बारे में बताया करता हूं।

उसने मुझे बताया कि वह लख़्म और जज़ाम क़बीला के तीस आदमियों के हमराह एक बह्‌री जहाज़ में समंदर के सफ़र पर रवाना हुआ। समंदर की लहरें महीना भर उन्हें इधर उधर धकेलती रहीं यहां तक कि वह एक जज़ीरे में पहुंच गए। उस वक़्त सूरज गुरूब हो रहा था। वह एक छोटी कश्ती में बैठ कर जज़ीरे में दाख़िल हुए। जब वह जज़ीरे में दाख़िल हुए तो उनको एक जानवर मिला जिसके जिस्म पर बहुत बाल थे। बालों की कसरत की वजह से उन्हें उसके आगे

पीछे का कुछ पता न चल रहा था। उन्होंने कहाः तेरा नास हो तू क्या चीज़ है? उसने कहा कि मैं जस्सासा हूं। उन्होंने पूछाः "यह जस्सासा क्या है?" उसने कहाः "ऐ लोगो! ख़ानक़ाह में मौजूद उस आदमी की तरफ़ जाओ वह तुम्हारी ख़बरें सुनने का बड़े तजस्सुस से इंतिज़ार कर रहा है।" बयान करने वाला बताता है कि जब उसने आदमी का हम से ज़िक्र किया तो हमें ख़ौफ़ हुआ कि यह जानवर शैतान न हो। फिर हम तेज़ी से चले और ख़ानक़ाह में दाख़िल हो गए। वहां हमने भारी भरकम क़द का एक आदमी देखा जिसके घुटनों से नख़ूनों तक बंधा एक लोहे की ज़ंजीर थी और उसके हाथ उसकी गर्दन के साथ बंधे थे। हमने पूछाः "तेरा नास हो तू क्या चीज़ है।?" उसने कहाः "मेरा पता तुम्हें जल्द चल जाएगा। यह बताओ कि तुम कौन हो?" हमने कहा कि हम अरब से आए हैं। हम जहाज़ में सवार हुए। समंदर में तूफ़ान आ गया। महीना भर लहरें हमें धकेलती रहीं। यहां तक कि इस जज़ीरे के किनारे ले आईं। हम कश्ती में बैठ कर जज़ीरे में दाख़िल हुए। यहां हमें एक जानवर मिला जिसके बदन पर बहुत बाल थे। बालों की कसरत की वजह से उसके आगे पीछे का कुछ पता नहीं चल रहा था। हमने उससे पूछाः "तेरा नास हो, तू क्या चीज़ है?" उसने कहाः "मैं जस्सासा हूं" हमने पूछाः "यह जस्सासा क्या चीज़ है?" उसने कहाः "ख़ानक़ाह में मौजूद उस आदमी की तरफ़ जाओ। वह तुम्हारी ख़बरें सुनने का बहुत शौक़ से इंतिज़ार कर रहा है। हम तेज़ी से तुम्हारी तरफ़ आए। इस डर से कि कहीं यह शैतान न हो।"

उसने कहाः "मुझे बीसान के नख़लिस्तान का हाल बताओ।" हमने कहाः "उस नख़लिस्तान के बारे में कौनसी बात पूछना चाहते हो? उसने कहाः "मैं जानना चाहता हूं कि क्या उसके दरख़्तों पर फल आते हैं या नहीं?" हमने कहाः "हां!" उसने कहाः "मुझे तबरिया की झील के बारे में बताओ।" हमने पूछाः "उसकी कौनसी

बात जानना चाहते हो?'' उसने कहाः ''क्या उसमें पानी है?'' हमने कहाः ''हां! उसमें बहुत पानी है।'' वह बोलाः ''उसका पानी बहुत जल्दी ख़त्म हो जाएगा।'' फिर उसने कहाः ''मुझे ज़ुग़र के चश्मे के बारे में बताओ।'' हमने पूछाः ''कौन सी बात मालूम करना चाहते हो?'' ज़ंजीर में जक्ड़े आदमी ने कहाः ''क्या चश्मा में पानी है और लोग उस पानी से खेतों को सैराब करते हैं?'' हमने कहाः ''उसमें बहुत पानी है और शहर के रहने वाले इससे खेतों की आबयारी करते हैं।'' फिर उसने पूछाः ''मुझे नबीय्ये उम्मी सल्ल0 के बारे में बताओ। उसने क्या किया है?'' हमने कहाः ''वह मक्का से निकलकर यसरिब (मदीना) में आ गए हैं।'' उसने पूछाः ''क्या अरबों ने उसके साथ जंग की?'' हमने कहाः ''हां!'' उसने पूछाः ''उसने उनके साथ क्या किया?'' हमने बताया कि वह इर्दगिर्द के अरबों पर ग़ालिब आ चुके हैं और उन्होंने उनकी इताअत कबूल कर ली है। इस पर उसने कहाः ''क्या वाक़ई ऐसा हो चुका है?'' हम ने कहाः ''हां!'' इस पर उसने कहाः ''उनके लिये यही बेहतर है कि वह उसकी इताअत कबूल कर लें। अब मैं तुम्हें अपने बारे में बताता हूं। मैं दज्जाल हूं। मुझे अंकरीब ख़ुरूज की इजाज़त मिल जाएगी।'' (सही मुस्लिम हदीसः 7208, रिवायत फ़ातिमा बिन्ते कैस रज़िअल्लाहु अन्हा)

इस हदीस शरीफ़से इतना मालूम हो गया कि दज्जाल किसी और सय्यारे में नहीं, न मावराउल अर्ज़ किसी तब्क़े में है, न लाहूत लामकान में है। वह इसी ज़मीन पर किसी जज़ीरे में मुक़य्यद है। अब क़ब्ल इसके कि हम यह सवाल छेड़ें कि वह जज़ीरे कहां हैं? मज़कूरा बाला हदीस शरीफ़ में बयान किये गए दज्जाल के तीन सवालात पर ग़ौर करते हैं। क्योंकि बाहर से आने वाले आदमी से ख़ुसूसियत के साथ इन तीन सवालात का मतलब यह है कि इनमें कोई ख़ास बात पोशीदा है। इनसे दज्जाल का कोई ख़ास तअल्लुक़ है। वह तीन सवालात ये हैं:

दज्जाल के तीन सवालात

(1) बीसान में वाके़ खजूरों के बाग़ में फल आते हैं या नहीं?

(2) तबरिया की झील में पानी है या नहीं?

(3) जुगर के चश्मे से लोग खेतों को सैराब करते हैं या नहीं?

हम इन तीन सवालात पर ग़ौर करते हैं कि ताकि ख़ुरूजे दज्जाल और इन तीन बातों के दर्मियान तअल्लुक को समझ सकें। इसके बाद हदीस शरीफ़ में मज़कूर एक ख़ास नुक्ते पर सोचेंगे यानी जज़ीरे में मौजूद उस शख़्सियत के किर्दार पर जिसे "अलजस्सासा" काम नाम दिया गया है।

(1) बीसान का बाग़

बीसान फ़लसतीन में एक जगह का नाम है। इसे सबसे पहले हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 के दौरे ख़िलाफ़त में मशहूर कमांडर सहाबी हज़रत शरहबील बिन हस्ना रज़ि0 ने फ़तह किया था। 1924 ई0 में ख़िलाफ़ते उस्मानिया के सुकूत के बाद जब जज़ीरतुल अरब के हिस्से बख़े से होते हुए तो यह उर्दुन का हिस्सा बन गया। 1948 ई0 तक यह इस्लामी मुल्क उर्दुन का हिस्सा था। मई 1948 ई0 में इस्राईल ने बीसान समेत इर्दगिर्द के इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया और ता हाल यह इस्राईल के क़ब्ज़ा में है जो दज्जाली रियासत है। यह इलाक़ा क़दीम ज़माने में खजूरों के बाग़ात के लिये मशहूर था जिसकी तसदीक़ सहाबीए रसूल ने की......लेकिन अब यहां फल नहीं पैदा होता। मशहूर मुअर्रिख़ सय्याह अल्लामा याक़ूत हमवी अपनी शुहरा आफ़ाक़ किताब "मुअ़जमुल बुलदान" में फ़रमाते हैंः "मैं कई मर्तबा बीसान गया हूं लेकिन मुझे वहां सिर्फ़ दो पुराने खजूरों के बाग़ ही नज़र आए हैं। "इससे मालूम हुआ कि यहां के बाग़ पहले फल देते थे। 626 हि0 तक जो अल्लामा हमवी की तारीख़े वफ़ात है, इन दरख़्तों ने फल देना बंद कर दिया था। अल्लाहु अक्बर! यह दज्जाल

की इस बात की तसदीक़ है कि "वह ज़माना क़रीब है जब इन दरख़्तों पर फल नहीं आएंगे।" गोया दज्जाल के ख़ुरूज की तीन बड़ी अलामतों में से एक अलामत पूरी हो गई है।

(2) बहीरए तबरिया का पानी:

दज्जाल का दूसरा सवाल यह था कि बहीरए तबरिया का पानी ख़ुश्क हो चुका है या नहीं? गोया उस पानी के ख़ुश्क होने का दज्जाल के ख़ुरूज से ज़रूर कोई तअल्लुक़ है। बहीरए तबरिया इस्राईल के शुमाल मश्रिक़ में उर्दुन की सरहद के क़रीब वाक़े है। इसकी लम्बाई 23 किलोमीटर, ज़्यादा से ज़्यादा चौड़ाई 13 किलोमीटर और इंतिहाई गहराई 157 फुट है। इसका कुल रक़्बा 166 मुरब्बा किलोमीटर है। इस पर उस वक़्त इस्राईल का क़ब्ज़ा है और दिलचस्प बात यह है कि इसका पानी भी बेग़ैर किसी ज़ाहिरी वजह के रफ़्ता रफ़्ता ख़ुश्क होता जा रहा है। इस्राईली हुकूमत ख़लीजे उक़्बा से पानी की पाइप लाइनों के ज़रीए यहां पानी पहुंचाती है, लेकिन बहीरए तबरिया का पानी मीठा और समंदर का पानी कड़वा है। इसलिये इसे मीठा करने के लिये बड़े बड़े प्लांट नसब करने पड़े हैं जिस से बड़े पैमाने पर इख़राजात आते हैं। बहीरए तबरिया के ख़ुश्क होते साहिलों की तसवीरें कई साल पहले उन कालमों के साथ शाए हो चुकी हैं। इसका ख़ुश्क होना इस बात की दलील है कि दज्जाल की ज़बानी इसके ख़ुरूज की दूसरी अलामत भी पूरी हो चुकी है।

(3) ज़ुग़र का चश्मा:

दज्जाल का तीसरा सवाल......जो दरहक़ीक़त इसको ख़ुरूज की इजाज़त मिलने का वक़्त क़रीब आने की तीसरी अलामत है......ज़ुग़र के चश्मे के बारे में था। ज़ुग़र दरअसल हज़रत लूत अलै0 की साहबज़ादी का नाम है। आप की दो साहबज़ादियां थीं। "रबा" और "ज़ुग़र"। बड़ी साहबज़ादी के इंतिक़ाल के बाद जिस जगह दफ़नाया

गया वहां करीब ही एक चश्मा था जिसका नाम "ऐने रब्बा" पड़ गया। अरबी में चश्मे को "ऐनुन" कहते हैं। छोटी साहबज़ादी के इंतिकाल पर उन्हें भी एक चश्मे के करीब दफ़्न किया गया तो उसका नाम "ऐने ज़ुग़र" (ज़ुग़र का चश्मा) पड़ गया। यह जगह भी इस्राईल ही में बह्रे मुर्दार (Dead Sea) के मश्रिक़ में है। दज्जाल की तफ़्तीश और तजस्सुस के ऐन मुताबिक़ यह तीसरी जगह भी इस्राईल में वाक़े है और इसका पानी पूरी तरह ख़ुश्क होते ही इसे ख़ुरूज की इजाज़त मिल जाएगी।

दज्जाल के जासूसः

हदीस शरीफ़ में दज्जाल के इन तीन सवालों के अलावा एक और नुक्ता क़ाबिले ज़िक्र है। सहाबी ने फ़रमायाः "जज़ीरे में हमें एक अजीब व ग़रीब मख़लूक़ मिली जिसके बदन पर बहुत बाल थे। बालों की कसरत की वजह से उसके आगे पीछे का पता नहीं चल रहा था। हमने उससे पूछाः तेरा नास हो। तू क्या चीज़ है? उसने कहा मैं जस्सासा हूं।"

"जस्सासा" जासूसी करने वाले (जासूस या जासूसिया) को कहते हैं। इससे मालूम हुआ कि उस जज़ीरे पर दज्जाल के अलावा जो वाहिद जानदार मौजूद था वह जासूसी पर मुतअय्यन एक अजीब व ग़रीब मख़लूक़ थी। इससे समझ लेना चाहिये कि जासूसी और इत्तिलाआत का हुसूल दज्जाल का अहम तरीन हर्बा होगा। इत्तिलाआत का हुसूले निगरानी और ख़ुफ़्या निगरानी से होता है। दज्जाल दुनिया भर में अपने कुल्ली इक़्तिदार के क़याम व इस्तिहकाम के लिये ख़ुफ़्या निगरानी का जाल बिछाएगा और ज़मीन पर मौजूद किसी मुतनफ़्फ़िस को अपनी इक्लौती आंख के दाइरे से बाहर न जाने देगा। इसके लिये कुछ ऐसी चीज़ें अभी से शुरू हो गई हैं जो दज्जाल के इस हमागीर गिरिफ़्त और जाबिराना जकड़बंदी की राह

हमवार कर रही हैं। मसलनः

1-डेटा इन्फ़ारमेशनः

कुछ अर्से से पूरी दुनिया में हर ज़ी रूह के कवाइफ़ जमा करने का एक निज़ाम मुताआरिफ़ हो रहा है जो धीरे धीरे अपना दाइराकार बढ़ा रहा है। बज़ाहिर इसका उन्वान मुतअस्सिरकुन है। मसलनः मुल्क की सलामती के लिये वतन के असल बाशिंदों के कवाइफ़ जमा करना। चुनांचे रूए ज़मीन पर बसने वाले अक्सर बनी आदम के नाम, पते, तस्वीरें, उंगलियों के निशानात किसी न किसी उन्वान से कहीं न कहीं महफ़ूज़ किये जा चुके हैं। किसी फ़र्द के बारे में मुकम्मल मालूमात उंगली की एक हरकत से स्क्रीन पर लाई जा सकती हैं। कहा जाता है कि यह मुल्की सलामती के लिये ज़रूरी है......लेकिन इसके क्या जाए कि मुल्क की सलामती के लिये अरबों रूपये ख़र्च करके जमा किया जाने वाला यह मवाद बेल्जियम के दारुल हुकूमत बरसल्ज़ भेज दिया जाता है और इस तरह हर हर फ़र्द को नेटो की ज़ेरे निगरानी काम करने वाले एक मास्टर कम्प्यूटर की नकेल डाल दी जाती है। "नादरा" जैसे इदारे इसी लिये वजूद में लाए गए हैं कि कुछ सालों बाद तक कोई भी फ़र्द ख़ुफ़्या निगरानकारों से छिपा न रह सके। वे जहां जाए नादीदा आंखों की ख़ुफ़्या निगरानी के हिसार में रहे। मुख़्तलिफ़ अफ़राद के बारे में मालूमात और इत्तिलाआत मुहय्या करने के लिये डेटा कम्पनियां वजूद में आ गई हैं जो मुख़्तलिफ़ अश्या के गाहकों या इस्तिमाल कुनिन्दगान के नाम पते, फ़ोन नम्बर, ई मैल एडरेस वग़ैरा फ़राहम करती हैं। अपने कारोबार को फ़रोग़ देने के ख़्वाहिशमंद बिज़निसमैन इन सर्वे कम्पनियों की जानिब से मुहय्या की गई मालूमात पर इन्हिसार करते हैं। इसे "कन्ज़्यूमर सर्वे" कहा जाता है। इसी तरह हेल्थ सर्वे और दीगर सर्वे होते रहते हैं। इनके नतीजे में हासिल होने वाली मालूमात भी बराहे रास्त बरसल्ज़ पहुंच जाती हैं। आपकी नज़रों से कई मर्तबा इस क़िस्म के सर्वे फ़ारम गुज़रे होंगे जिन्हें

आपने मामूल की कार्रवाई समझ कर नज़रअंदाज़ कर दिया होगा। "बिरादरी" यही चाहती है। अवाम को इस्तिमाल करने का जदीद तरीक़ा यही है। उन्हें हर चीज़ नार्मल और मामूल के मुताबिक़ महसूस हो।

जब एक फ़र्द किसी बड़े स्टोर, टेस्को, मेक्रो या सेन्ज़बरी में शापिंग के लिये जाता है तो उसे लायलटी कार्ड पेश किया जाता है जो उसको डिस्काउंट दिलाता है। इस लायलटी कार्ड में ख़रीदार के बारे में मालूमात दर्ज होती हैं। मसलनः उसका एडरेस, फ़ोन नम्बर, वह शापिंग जो उसने कर रखी है और वह ब्रान्ड जो उसे पसंद हैं वग़ैरा वग़ैरा। स्टोर्स में नसब कैमरे ख़रीदार की हर हरकत महफ़ूज़ करते रहते हैं। इन कैमरों के ज़रीए ख़रीदार की नक़्ल व हरकत और दिलचस्पी का भी पता चलता रहता है। कौनसी मस्नूआत उसने फ़ौरन उठा लीं और किन मस्नूआत के बारे में वह मुतज़बज़ब रहा? और किन को उसने नापसंद करके मुताबादिल की तरफ़ हाथ बढ़ाया? बिलआख़िर काईज़ में दर्ज मालूमात भी सुपर कम्प्यूटर में महफ़ूज़ करने के लिये रवाना कर दी जाती हैं।

यहूदी मीडिया सरकारी और अवामी सर्वे रिपोर्ट्स के ज़रीए दहशतगर्दी की वहशत खेज़ कार्रवाइयां, बढ़ते हुए जराइम और तशद्दुद में इज़ाफ़ों की तशहीर.करता है। इसलिये कि ये ऐसी चीज़ें हैं जो अवाम में एहसासे हमदर्दी पैदा करती हैं और निगरानी की नागवार तदाबीर और नामानूस तकनीक की ताइद करती हैं, जिसके ज़रीए मज़ीद तरक़्क़ी याफ़्ता टैक्नालोजी मुताआरिफ़ कराई जा सकती है और फ़र्द की मानीट्रिंग करने के लिये निगरानी के लेवल को इस हद तक बढ़ाया जा सकता है जो "एक मौज़ूं इज्तिमाई रियासत" (Totalitarian State) यानी "आलमी दज्जाली रियासत" के मेयार के मुताबिक़ हो। मतलब यह है कि एक बहुत बड़े डेटाबेस में अवाम और सोसाइटी के अफ़राद की तमाम शख़्सी मालूमात

(Personal information) को महफ़ूज़ करके मानीटर करने का काम रूबए अमल है। तेज़तर तहरीकात पूरी दुनिया के अफ़राद की शख़्सी मालूमात को प्लास्टिक में महफ़ूज़ कर रही हैं, जैसेः बैंकिंग डीटेल, ड्राइविंग लाइसेंज़ इन्फ़ारमेशन और नेशनल इंशोरेंस डीटेल हैं। इन तफ़सीलात को मख़सूस कार्ड्ज़ में महफ़ूज़ किया जाता है ताकि तमाम मालूमात को एक शनाख़्ती कार्ड में ज़म किया जा सके जिसकी मंसूबाबंदी जारी है। नतीजा यह होगा कि हर फ़र्द की ख़रीद व फ़रोख़्त, मुआमलात और शख़्सी इन्फ़ारमेशन की मुकम्मल निगरानी एक बटन के दबाने से हासिल हो जाएगी। 1992 ई0 में ब्रिटिश सुप्रीम कोर्ट के वाइस कोन्सलर Nicholos Brown Mukinson (निकोलस ब्राउन मुकिनसन) ने हाई कोर्ट को बताया कि पुलीस और ऐजेन्सीस के पास मौजूद मालूमात अगर एक ही फ़ाइल में हों तो अफ़राद की आज़ादी बड़ी हद तक पुर ख़तर हो जाएगी। ताहम फ़री मैसंज़ रियासती बालादस्ती के ज़रीए अवाम के बारे में बहुत मुरत्तब अंदाज़ में मालूमात तक रसाई रखती है और अवाम इसके मक़ासिद के हवाले से धोके का शिकार हैं। इन मालूमात के ज़रीए "बिरादरी" के ग्रेन्ड मास्टर पहले ही से पता लगा सकते हैं कि आप किस से टेलीफ़ोन पर बात करत हैं? कहां काम करते हैं? कहां ख़रीदारी करते हैं? क्या खाते हैं? कितने क़ाबिल हैं? क्या हासिल करते हैं और इसी तरह की पूरी फ़ेहरिस्त, एक शनाख़्ती कार्ड "इन्तिहाई क़रीबी निगरान" की हैसियत से हर फ़र्द की मुकम्मल नफ़्सियाती प्रोफ़ाइल की सूरत में ज़ाहिर कर देगा। इन मालूमात के ज़रीए मुस्तक़बिल में पेश आमदा "नागवार इक़्दामात" की रोकथाम करना आसान हो जाएगा।

मग़रिब के निगरानकारों के पास शर्क़ के बासियों का डेटा जमा करने का एक ज़रीआ "एन जी ओ" हैं। यक़ीन न आए तो शाहिद हमीद की कहानी सुन लीजिये।

"शाहिद हमीद" जज़्बए हुब्बुल वतनी से सरशार एक नौजवान था जो पाकिस्तान के लिये कुछ करना चाहता था। इस शौक़ की तक्मील के लिये वह एकाउंटेंट की हैसियत से अपनी तवील मुलाज़िमत को ख़ैरबाद कहके एक एन जी ओ में शामिल हो गया। इसका काम शहरों के मज़ाफ़ात में रहने वाले हर ऐसे फ़र्द के बारे में मालूमात इकट्ठी करना था जो कम अज़ कम दस अफ़राद पर असरअंदाज़ हो सके। यह मालूमात मुतअल्लिक़ा फ़र्द के मर्तबा, तालीम, मज़हब, औलाद और दिलचस्पियों पर मुशतमिल थीं। यह समझते हुए कि मज़कूरा मालूमात ग़रीब लोगों के मसाइल हल करने के लिये ज़रूरी हैं वह दिन रात जोश व जज़्बे के साथ काम करता रहा। उसे क़तअन इल्म नहीं था कि वह एक ऐसा Data इकट्ठा करने के लिये इस्तिमाल हो राह है जो एक आलमी हुकूमत के TSP के लिये सुपर कम्प्यूटर को फ़ीड किया जाएगा। TSP से मुराद Total Surveillance Program (मुकम्मल निगरानी) है। उसने महसूस किया कि वह जितनी मालूमात इर्साल कर रहा है उसे एन जी ओज़ के डायेरेक्टर्ज़ ख़ामोशी से वसूल किये जा रहे हैं जबकि अमल दरामद के लिये कुछ नहीं किया जा रहा। सूरते हाल जारी रही, यहां तक कि उसने बार बार इस्तिफ़सार किया कि इन मालूमात का इस्तिमाल क्या होगा? इस इसरार को समझने के लिये बार बार कोशिश के बावजूद नाकाम होने पर वह दिल बर्दाश्ता होकर वापस अपनी पुरानी मुलाज़िमत में आ गया। खुशक़िस्मती से उसका बास इन मुआमलात को अच्छी तरह समझता था। चुनांचे उसने ख़ंदा पेशानी के साथ उसे वापस मुलाज़िमत में ले लिया। उसे मालूम हुआ कि "बिरादरी" के लोग न सिर्फ़ एन जी ओज़ के ज़रीए ज़रूरी मालूमात इकट्ठी करते हैं बल्कि पर्सनल डेटा डिस्क चोरी करके भी हासिल कर लेते हैं। इसकी एक मिसाल नर्सों के रिकार्ड की चोरी है जिसे रोज़नामा जंग के रिपोर्टर ने दर्जे ज़ेल रिपोर्ट में आश्कार किया

लेकिन किसी के कान पर जूं तक न रेंगी:

"इस्लाम आबाद (जंग रिपोर्टर) बावसूक़ ज़राए के मुताबिक़ पाकिस्तान नर्सिंग कोंसिल हेडक्वाटर्ज़ से एक हार्ड डिस्क और कम्प्यूटर रेम चोरी हो गई है जिस में हज़ारों नर्सों का डेटा मौजूद है। बताया गया है कि पाकिस्तान नर्सिंग कोंसिल की एक्ज़िक्यूटिव कमेटी का एक इजलास मिसेज़ फ़ैज़ आलम की सरबराही में हुआ। जिसने इस्लाम आबाद पुलीस को इस चोरी की मज़ीद तफ़तीश करने से रोक दिया है।"

(रोज़नामा जंग लंदन, 29 अगस्त, 2000 ई0)

हैरत है कि पुलीस को इस चोरी की तफ़तीश से आख़िर क्यों रोक दिया गया? यह काम औरतों में दिलचस्पी रखने वाले किसी जुनूनी का नहीं। यह मुकम्मल साज़िश है। 1998-99 ई0 में एक अमरीकी कम्पनी पाकिस्तान की सड़कों गलियों की पेमाइश एक एक इंच के हिसाब से कर रही थी। इस कम्पनी ने अपना काम मुकम्मल किया। अपना सामान बांधा और परवाज़ कर गई। पाकिस्तान में किसी सरकारी या ग़ैर सरकारी फ़र्द ने उनसे यह पूछने की ज़हमत गवारा नहीं की कि इतनी बारीक पेमाइश का मक़सद क्या है?

कैनेडा लाटरी एक और दाम है जिसे तीसरी दुनिया से डेटा इकट्ठा करने के लिये फ़्री मेसज़ी इस्तिमाल करती है। जंत अर्ज़ी में जाने की ख़्वाहिश रखने वाले उम्मीदवारों के फ़िंगर प्रिंट्स भी हासिल किये जाते हैं। हर साल इस लाटरी में तीन मुल्क शामिल किये जाते हैं। इन मुमालिक के हज़ारों अफ़राद के कवाएफ़ जमा कर लिये जाते हैं। इनमें से किसी एक का भी नाम मंज़रे आम पर नहीं आता······लेकिन ये वे ख़ुशनसीब हैं जिन से वादा किया जाता है कि उन्हें अर्ज़े मौऊद, मवाक़े की सरज़मीन, फ़्री मेसनों की रियासत, कैनेडा आफ़ अमरीका की शहरियत मिलेगी।

2-निगरां कैमरे:

दुनिया भर में निगरानी का "फ़रीज़ा" अंजाम देने वाले कैमरे जा बजा नसब हो गए हैं और तेज़ी से हर जगह फैल रहे हैं। कराची में बड़ी शाहराहों के अलावा हबीब चोरंगी जैसी जगह में भी कैमरों से लदा हुआ बुलंद व बाला टावर नसब है जिसे देख कर अपने मुल्क की "तेज़ रफ़्तार तरक़्क़ी" पर रश्क आता है।

आम तौर पर कैमरों की मौजूदगी का जवाज़ यह पेश किया जाता है कि जराइम से तहफ़्फ़ुज़, लोगों की जान व माल की हिफ़ाज़त और शाहराहों पर तेज़ रफ़्तार ड्राइविंग रोकने में मदद मिलती है लेकिन असल मक़्सद "निगरानी" है और इस मक़्सद के लिये कुर्रहये अर्ज़ के इर्दगिर्द दर्जनों सेटलाइट्स (मसनूई सय्यारे) हैं। यह सेटलाइट अपने कैमरों के ज़रीए ज़मीन के एक एक मुरब्बा गज़ की वाज़ेह तरीन तस्वीर हासिल करके खोई हुई सूई भी तलाश कर लेते हैं लेकिन वह अभी तक घरों के अंदर होने वाली सरगर्मियां नहीं देख सकते। छतों के नीचे होने वाली सरगर्मियों में नसब कैमरों, दुकानों, बसों, रेल गाड़ियों में नसब कैमरों के ज़रीए आप की नक़्ल व हरकत पर नज़र रखी जाती है। ट्रांसपोर्ट कैमरे तो निहायत हस्सास और बटन के साइज़ के होते हैं। मतलब यह कि बिरादरी के "बिग बिरादर" आप को हर जगह देख रहे हैं।

3-चैनल और कम्प्यूटर:

जब आप वापस घर आ जाते हैं तो सेटलाइट चैनल सब्सक्रिपशन और Pay as you watch के ज़रीए "उन्हें" मालूम होता है कि आप कौन से चैनल्ज़ में दिलचस्पी रखते हैं? आप के टेलीफ़ोन रिकार्ड के ज़रीए "वे" आप के ख़ानदान और दोस्तों के बारे में भी जानते हैं। आप के कम्प्यूटर के ज़रीए उन्हें इल्म है कि आप कौनसी वेबसाइट्स विज़िट करते हैं। कौनसी ई मैल आप को मिलती है और आप के कम्प्यूटर लिंक क्या हैं? कुछ क्लीडी लफ़्ज़

Key Words हैं जो मशकूक हैं। उन्हें कम्यूनिकेशन सिस्टम (मुवासिलाती निज़ाम) में फ़ीड कर दिया गया है, मसलनः उसामा बिन लादिन। आप उन्हें आन लाइन लिखें या अदा करें। खुसूसी निगरानी अज़ खुद आप को अपने फ़ोकस में ले लेती है। आप चाहे फ़ोन पर हों, ई मैल करें या कोई वेबसाइट विज़िट कर लें। आप की जासूसी शुरू हो जाएगी। यह है जस्सासा......

4-सफ़री टिकटः

आजकल टिकट बनवाने के लिये ज़ाती मालूमात देने पड़ती हैं। फ़ोन नम्बर लिखवाना पड़ता है। अंदरून मुल्क परवाज़ों के लिये भी शनाख़्ती कार्ड लाज़मी होता जा रहा है। उम्रा या हज पर जाना और बैरूने मुल्क सफ़र करना तो अपने आप को हर लम्हे नादीदा इक्लौती आंख के आलाकारों की निगरानी में देने की मुतरादिफ़ है। यह दरअसल बाशिंदगान कुर्रये अर्ज़ के गिर्द हमा वक़्त निगरानी का हिसार सख़्त करने की तरफ़ पेश रफ़्त है।

5-रुकूम की मुंतक़लीः

दज्जाली कुव्वतों ने सरमाया की मुंतलक़ी पर किस क़दर गहरी नज़र रखी हुई है? इसका अंदाज़ा इससे करें कि बैरूने मुल्क से कोई शख़्स किसी फ़र्द या इदारे को रक़म भेजना चाहे तो यह उस वक़्त तक मुम्किन नहीं जब तक न्यूयार्क से उसकी किल्यरेंस न हो जाए। अंदरून मुल्क रुकूम भिजवाने के लिये भी बीसियों सवालात का सामना करना पड़ता है। न सिर्फ़ अवाम की ज़िंदगी तंग होती जा रही है बल्कि उनके गिर्द दज्जाल की जासूस ताक़तों का घेरा भी तंग हो रहा है।

6-इलैक्ट्रोनिक करन्सीः

आने वाले दिनों में फ़री मेसज़ एक ख़ला को पुर करना चाहते हैं। वह यह है कि Hard currency (काग़ज़ी करन्सी) को इस्तिमाल करने वाले शख़्स का सुराग़ नहीं लगाया जा सकता चुनांचे

तब से ऐसे इक़्दामात हो रहे हैं कि काग़ज़ी करन्सी को एक ऐसे निज़ाम से बदल दिया जाए जिसका मुकम्मल तौर पर इलैक्ट्रोनिक फन्ड्ज़ ट्रान्सफर पर इन्हिसार करे, बअलफ़ाज़ दीगर एक ऐसा निज़ाम जिसका मुकम्मल इन्हिसार काड्र्ज़ पर हो। बर्तानिया में मुल्की सतह पर Smarts Cards (स्मार्ट काड्र्ज़) और electronic money (इलैक्ट्रोनिक मनी) को मुतआरफ़ कराने के लिये एक क़दम आज़माइशी तौर पर उठाया गया है। mondex scheme (मोनडेक्स स्कीम) को western midland banks (वेस्टर्न मिडलैंड बैंक्स) और British telecom (ब्रिटिश टेलिकोम) की सरपरस्ती हासिल है और यह बरतानिया में स्मार्ट कार्ड की पहली आज़माइश है। स्मार्ट कार्ड के अंदर एक micro chip (माइक्रो चिप) होती है जो कि न सिर्फ़ Financial transaction (माली मुआमलात) को रिकार्ड करती है बल्कि हर उस चीज़ को रिकार्ड करती है जिसके लिये उसे इस्तिमाल किया गया है। यह स्मार्ट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, लाइब्रेरी कार्ड, सफ़री कार्ड, फ़ोन कार्ड और मुम्किना तौर पर एक शनाख़्ती कार्ड के तौर पर इस्तिमाल किया जा सकता है। अगर्चे शनाख़्ती कार्ड में काफ़ी तफ़सील मौजूद होती है मगर इसके ज़रीए किसी ख़ास वक़्त में, किसी शख़्स का सही तौर पर किसी मक़ाम पर होने का पता नहीं लगाया जा सकता इसके लिये ऐसे सुराग़ रसां आला (tracking device) की ज़रूरत है जिसको कार्ड में डाला जा सके और मुतअल्लिक़ा फ़र्द ज़मीन में जहां भी मौजूद हो, उस कार्ड के ज़रीए उसका सही महल्ले वक़ूअ़ जाना जा सके। यह सुराग़ रसां एक ऐसा शनाख़्ती आला भी हो सकता है जिस में माइक्रो चिप लगी हो और उससे बहुत काम लिये जा सकें। उसे जिल्द के नीचे बर्क़ी पियोंदकारी के ज़रीए चिपकाया जा सकता है। मोबाइल फोन में पहले से ऐसी चिप इस्तिमाल हो रही है और हमारे एक साबिक़ा सदर ने अपनी किताब में एतिराफ़ किया है कि इसके

ज़रिये 95 फ़ीसद मतलूबा अफ़राद का सुराग़ लगाने में कामयाबी हासिल हुई है। यह फ़िर गर्म सिग्नल छोड़ती है जिन्हें Low earth orbit (ज़मीन का सबसे निचला मदार) पर कोई सेटलाइट वसूल कर सकता है। इस तरह किसी चीज़ के महल्ले वक़ूअ को जानना और उसकी शनाख़्त करना मुमकिन हो सकती है। अगर्चे यह अफ़साना सा लगता है बहरहाल यह एक हक़ीक़त बनती जा रही है। क्योंकि इस वक़्त तक़रीबन 48 ग्लोबल पोज़ीशनिंग सेटलाइट मदार में मौजूद हैं जो कि अमरीका और उसके इत्तिहादियों के ज़ेरे इस्तिमाल हैं। ये सेटेलाइट्ज़ आने वाले सिग्नल्ज़ पर अमल करने और और सिग्नल्ज़ देने वाले आले की तरफ़ सही इन्फ़ारमेशन पहुंचाने की सलाहियत रखते हैं। फ़िल वक़्त यह टेक्नीक टैंक, जंगी बहरी जहाज़ों, तय्यारों या दस्ती आलात (मोबाइल, लेपटॉप) में इस्तिमाल हो रही है। अगला क़दम यह हो सकता है कि ऐसे आला मुतआरफ़ कराए जाएं जो हर एक फ़र्द पर Source signal (सोर्स सिग्नल) पैदा करें। हाल ही में एक क़िस्म इन आलात की ख़ास तौर पर बनाई गई है। यह एक electronic tag (बर्क़ी टेग) है। इसको बर्तानिया में उन अफ़राद पर इस्तिमाल किया जा रहा है जिनकी निगरानी मतलूब है। इसकी वजह यह पेश की जाती है कि जेलों में मौजूद मुजरिमों को कंट्रोल करने के लिये यह चीज़ ज़रूरी है। इस टेग को मुजरिम की कलाई के गिरिफ़्त किया जाता है और फिर उसकी निगरानी की जाती है कि कोई मुजरिम जेल के ज़ाबते की ख़िलाफ़ वर्ज़ी न करे। आइंदा सालों में इस स्कीम को दूसरे मुमालिक में भी फैलाने का इरादा है। 13 नवम्बर 1997 ई० में रोज़नामा टेलिग्राफ़ के एक आर्टिकल में बर्तानिया के होम सेक्रेटरी जैक स्ट्रा ने बयान दिया: "पिछले चंद सालों में लोगों के एतिमाद की वजह से "इलैक्ट्रोनिक टेकिंग" बहुत तेज़ी से परवान चढ़ी है। इसमें कोई शुब्हा ही नहीं है कि इसमें (यानी टेकिंग की स्कीम में) तरक़्क़ी की वसी सलाहियात मौजूद है।"

यानी लोगों को अपनी देखने वाली इक्लौती आंख के नीचे रख कर मेसंज़ अब पूरी दुनिया को कंट्रोल करने के मंसूबों को आगे बढ़ा सकते हैं और यह काम किसी भी ऐसे ज़रीए से कर सकते हैं जो इस ज़रूरत को पूरा करे।

दज्जाल का मक़ाम

अब हम असल सवाल की तरफ़ लौटते हैं। दज्जाले अक्बर कहां है? किस जगह रूपोश है? अगर इसी ज़मीन पर है जिसका चप्पा चप्पा छान मारा जा चुका है, जिसका ज़र्रा ज़र्रा सेटेलाइट की निगरानी में है तो इसका इंकिशाफ़ क्यो नहीं होता? इस तक पहुंचा क्यों नहीं जा सकता?

यहूदी उलमा (अह्बार व रुह्बान) "दज्जाले अक्बर" के मौजूदा मस्कन के हवाले से निहायत तज़ाद बयानी का शिकार हैं। कभी कहते हैं कि दज्जाले अक्बर "कुन" या "क़नम" में है। "क़नम" के मअनी कभी चिढ़या का घौंसला करते हैं। कभी लकड़ी का ताबूत और कभी पहाड़ का ग़ार। कभी उसका क़ैदख़ाना, मावराउल अर्ज़ तबक़ात में बताते हैं, कभी ज़मीन के क़रीब सय्यारों में कभी ख़ला के नामालूम मक़ाम में......इसे वह "जबल" या "ज़बल" कहते हैं। उनके मुताबिक़ यह मसीहुद्दज्जाल की मौजूदा रिहाइशगाह है। जहां उनका नजातदहिंदा इस वक़्त रहता है। यही रिहाइशगाह उसके ज़ुहूर के वक़्त रूए अर्ज़ पर आकर योरोशलम में क़ायम हो जाएगी। यहूद के बद दियानत और अफ़साना साज़ उलमाए सूअ के मुताबिक़

असल हैकल और कुर्बानगाह भी वहीं है जहां अलमसीहुद्दज्जाल रूपोश है। मसीह का आना दरअसल इस हैकल को रूए ज़मीन पर क़ायम करने के लिये होगा। यह सब अपनी जिहालत पर पर्दा डालने की कोशिश और टामक टोइय्यां हैं। सच्ची बात वह है जो नबी सल्ल0 ने बता दी है कि वह इसी ज़मीन पर है। मश्रिक़ की जानिब में है। एक जज़ीरे में है। फ़रिश्तों की क़ैद में है और वक़्त से पहले सारी दुनिया के सेटेलाइट मिल कर उसे तलाश कर सकते हैं न पूरी दुनिया के यहूदी मिल कर उसे छुड़वा सकते हैं।

यह बात मुकम्मल तौर पर सही नहीं कि सेटेलाइट के ज़रीए ज़मीन के चप्पे चप्पे को छान मारा गया है और ख़ुश्की व समंदर की मुकम्मल स्केनिंग हो चुकी है। अभी हाल ही में ख़बर आई थी कि ब्राज़ील के जंगलों में ऐसे वह्शी क़बीले का इंकिशाफ़ हुआ है जहां जदीद दौर के इंसान के क़दम आज तक नहीं पहुंचे। लिहाज़ा यह बात बईद अज़ क़्यास नहीं कि दुनिया में अब भी बहुत दुश्वार गुज़ार जगह हैं जहां "नादीदा आंख" अब तक नहीं पहुंच सकी।

इब्लीसी समंदर और शैतानी तिकौनः

हदीस शरीफ़ में आता है:

(यह वाक़िआ सुनाने के बाद) रसूलुल्लाह सल्ल0 ने असा मिंबर पर मार कर फ़रमायाः "यह है तैबा। यह है तैबा (यानी मदीना मुनव्वरा) फिर आप सल्ल0 ने फ़रमायाः "मैं तुम को यही बताया करता था। जान लो कि दज्जाल शाम के समंदर (बहीरए रूम) में है या यमन के समंदर (बह्रे अरब) में है। नहीं! वह मश्रिक़ में है! मश्रिक़ में! और अल्लाह के नबी सल्ल0 ने अपने हाथ से मश्रिक़ की तरफ़ इशारा किया।" (सही मुस्लिमः हदीस 7208)

अब जज़ीरतुल अरब से मश्रिक़ की जानिब देखा जाए तो वे जगह ऐसी हैं जिन्हें मग़रिब के ईसाइयों के हां भी "शैतानी समंदर", "शैतानी जज़ीरे" या "जहन्नम का दरवाज़ा" कहा जाता है और मज़े

की बात यह है कि दोनों का आख़िरी सिरा अमरीका से जा मिलता है।

(1) मश्रिक़े बईद में बह्रुल काहिल के वीरान और ग़ैर आबाद जज़ाइर आते हैं……इनके इर्दगिर्द के गहरे और ख़ौफ़नाक पानियों का नाम ही "शैतानी समंदर" (Devils Sea) है। यह जुनूबे मश्रिक़ी जापान, आयू जियाती यूनियन और जज़ाइर मारयाना के क़रीब है। सोचने की बात यह है कि वहां कोई भी इस्लामी मुल्क नहीं फिर इसे "शैतानी समंदर" का आलमी नाम किसने दिया? मुसलमान ऐसी नुक्ता तराज़ी करें तो समझ में आती है, ग़ैर मुस्लिमों ने इसे क्यों इब्लीसी ठिकाना क़रार दिया?

यहां यह बात भी मद्दे नज़र है कि मश्रिक़ की जानिब वाक़े समंदर में अमरीका की एक समंदरी रियासत भी मौजूद है। अमरीका की पचास रियासतें है जैसा कि उसके परचम पर मौजूद पचास सितारों से ज़ाहिर होता है। इनमें से अड़तालीस तो इकट्ठी हैं। दो ज़रा फ़ासले से हैं:

1- अलास्का। इसके और अमरीका के बीच में कैनेडा हाइल है। यह 1867 ई0 तक रूस के पास थी। इसके और रूस के बीच में सिर्फ़ दुर्रए बैरंग नामी तंग समंद्री गुज़रगाह है जो 170 डिग्री शुमालन जुनूबन पर वाक़े है। जुग़राफ़ाई एतिबार से यह शुमाली अमरीका की हुदूद में आती थी और अमरीकी बर्रे आज़म में एशियाई रूस की मौजूदगी अमरीकियों को निहायत खलती थी।

अमरीका के सत्तरहवीं सदर एंडरीव जान्सन की ज़िंदगी में सबसे बड़ी कामयाबी यह थी कि उसने 18 अक्तूबर 1867 ई0 को अलास्का का 5 लाख 86 हज़ार मुरब्बा मील पर फैला हुआ बर्फ़िस्तान ज़ारे रूस इलैक्ज़ेन्डर रूम (1855 ई0-1881ई0) से सात मिलियन डालर की मालियत के बराबर होने के बदले ख़रीद कर अमरीकी वजूद को रूसी दाग़ से पाक कर लिया। इस तरह अलास्का

अपने वसी रक्बे और कीमती मअदनियात के साथ उन्चासवीं रियासत की हैसियत से मुशर्रफे बा अमरीका हुआ।

2- जज़ाइरे हवाई जिसका सदर मक़ाम "हानोलू" है। इसका रक्बा ग्यारह हज़ार मुरब्बा मील है। यह 1898 ई0 में पचासवीं रियासत के तौर अमरीका में शामिल हुआ। बहरुल काहिल के बीच में है और बहरुल काहिल वही समंदर है जिसका एक मक़ाम "मारियाना ट्रेंच" दुनिया की गहरी तरीन जगह है, जिसकी तह में ख़ौफ़नाक आतिश फ़शां हैं, जिसमें ज़ेरे आब ज़लज़ले आते रहते हैं......और......जिसका एक हिस्सा "शैतानी समंदर" के नाम से मशहूर है।

(2) और फिर......बहरुल काहिल के पार अमरीका के क़रीब समंदर में एक ऐसा तिकोनी ख़ित्ता है जिसके मुतअल्लिक़ अजीब व ग़रीब क़िस्से कहानियां मशहूर हैं। उनमें हक़ीक़त कम और अफ़साना ज़्यादा है। हक़ीक़त इतनी है कि यह "शैतानी तिकोन है। "तिकोन" से आप के ज़ेहन में क्या बात आती है। तिकौन कहां इस्तिमाल होती है? किस फ़िर्क़े का मख़्सूस निशान है? किस मुल्क के नोट पर एहराम नुमा तिकोन छपी हुई है?

"बरमूदा ट्राइंगल" आज की तरक़्क़ी याफ़्ता साइंस के लिये भी एक मुअम्मा है। जदीद तरीन तय्यारों और बहरी जहाज़ों के आलात इस ख़ित्ते में दाख़िल होते ही बेकार हो जाते हैं। क़रीब पहुंचते ही मुतअस्सिर होने लगते हैं। इसके अंदर अल्लाह पाक किसी को अपनी कुदरत से ले जाए ताकि वह दुनिया वालों को आगाह कर सके तो इसकी खुसूसियत है। आम आदमी के बस की बात नहीं। ज़मीन चूंकि गोल है इसलिये अगर दज्जाल के मक़ाम को मुब्हम रखने के लिये मश्रिक़ की तरफ़ इशारा किया जाए जो कि आगे जाकर बहरहाल (ज़मीन के गोल होने की वजह से) मग़रिब तक पहुंचेगा तो

यह दर्जे बाला हदीस शरीफ की एक मुम्किना तावील हो सकती है। वल्लाह आलम बिस्सवाब। इससे ज़्यादा क़वी तावील वह है जो एक मिस्री मुहक्क़िक़ ईसा दाऊद ने अपनी किताब "मुसल्लस बरमूदा" में की है कि पहले दज्जाल बह्रुल काहिल के उन वीरान जज़ाइर में क़ैद था। हुज़ूर सल्ल0 की वफ़ात पर उसे बेड़ियों से तो रिहाई मिल गई। वह ज़ंजीरों से आज़ाद हो गया है और अपने ख़ुरूज की राह हमवार कर रहा है, लेकिन उसे अभी ख़ुरूज की इजाज़त नहीं मिली, लिहाज़ा वह "शैतानी समंदर" से "शैतानी तिकोन" तक राबते में है जिसके क़रीब शैतानी तहज़ीब परवान चढ़ कर नुक्तए उरूज को पहुंचने ही वाली है।

बह्रे शैतान से मुसल्लस शैतान तकः

बह्रुल काहिल के शैतानी समंदर और बहरे ओकियानूस की "शैतानी तिकोन" में कई ख़ुसूसियात के एतिबार से मुमासिलत पाई जाती है जो यह सोचने पर मजबूर करती है कि इन दोनों में कोई ऐसा तअल्लुक़ ज़रूर है जो दुनिया की नज़र से पोशीदा है और यह तअल्लुक़ लाज़िमन शैतानी है, रहमानी या इंसानी नहीं। मसलनः

1- दुनिया में यह दोनों ऐसी जगह हैं जहां क़ुतुब नुमा काम करना छोड़ देता है। दोनों में मुतअद्दिद हवाई और बह्री जहाज़ ग़ायब हो चुके हैं। बह्रे शैतान में कम और मुसल्लस शैतान (बरमूदा) में ज़्यादा। इंतिहाई तअज्जुब ख़ेज़ बात यह है कि इन दोनों जगहों के दर्मियान ऐसे जहाज़ों को सफ़र करते देखा गया है जो बहुत पहले ग़ायब हो चुके थे।

2- दोनों के अंदर ऐसी मक़्नातीसी या बर्क़ी लहरें या लेज़र शुआएं क़िस्म की चीज़ मौजूद है जो हमारी बिजली से हज़ार गुना ताक़तवर हैं हवाई या बह्री जहाज़ों को तोड़ मरोड़ कर, निगल कर उनका नाम व निशान मिटा देती हैं।

3- दोनों के दर्मियान उड़न तशतरियां उड़ती हैं जिन्हें अमरीकी मीडिया की मख़्सूस "नावेदा ताक़तें" ख़लाई मख़्लूक़ की सवारी क़रार देती हैं जबकि वह दज्जाल की तेज़ रफ़्तार सवारी बनने की सलाहियत रखती है। हदीस शरीफ़ में आता है: "दज्जाल के गधे के दोनों कानों के दर्मियान चालीस गज़ का फ़ासला होगा और उस गधे का एक क़दम तीन दिन की मसाफ़त के बराबर होगा और वह अपने गधे पर सवार होकर समंदर में ऐसे घुस जाएगा जैसे तुम अपने घोड़े पर सवार होकर छोटी नाली में घुस जाते हो।" (किताबुल फ़ितन, नुऐम बिन हम्माद: रिवायत हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0)

तीन दिन की मसाफ़त एक क़दम पर तक़्सीम की जाए तो तक़रीबन 82 किलोमीटर फ़ी सेकेण्ड बनते हैं। उड़न तशतरियां जहां इंतिहाई तेज़ रफ़्तार होती हैं वहां वह फ़ज़ा की तरह समंदर की गहराई में भी घुस कर सफ़र कर लेती है नीज़ अपना हज्म छोटा या बड़ा करने और फ़ज़ा में ठहर जाने या ज़मीन में कहीं भी उतर जाने की सलाहियत रखती हैं। अमरीका का यहूदी मीडिया इनके मुतअल्लिक़ सामने आने वाले हक़ाइक़ छिपाता रहता है। कुछ माहिरीन ने इन्हें मंज़रे आम पर लाने की कोशिश की तो उन्हें क़त्ल कर दिया गया। यह मौज़ू तफ़सील चाहता है। इस पर इंशा अल्लाह अलग से लिखा जाएगा।

4- दोनों जगहों को ख़्वास व अवाम क़दीम ज़माने से शैतान की तरफ़ मंसूब करते हैं और यहां ऐसी क़ुव्वतों की कारस्तानियों के क़ायल हैं जो इंसानियत की हमदर्द नहीं, ख़ौफ़नाक, पुर असरार और जान लेवा हैं......लेकिन इनके गिर्द असरार के ऐसे पर्दे आवेज़ां कर दिये गये हैं कि बाल की खाल उतारने वाले मग़रिबी मीडिया और च्योंटी के बिलों में कैमरे फ़िट करके उनके तर्ज़े ज़िंदगी पर तहक़ीक़ करने वाले मग़रिबी साइंसदान मुहर बा लब हैं......बल्कि यह बात रिकार्ड पर है कि इन दोनों जगहों के दर्मियान सफ़र करती नज़र

आने वाली उड़न तशतरियों की हक़ीक़त तक पहुंचने वाले दो साइंसदानों डाक्टर मोरीस जेसूब और डाक्टर जेम्स ई मेक्डोनल्ड को हलाक कर दिया गया और उनकी हलाकत को खुदकशी का नाम देकर इस राज़ को दुनिया से छिपाने और दफ़न करने की कोशिश की गई।

हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने दज्जाल की क़ैदगाह के बारे में तीन जगहों का नाम लिया। दो की नफ़ी की और एक की ताईद की कि दज्जाल वहां मुक़य्यद है। इन तीनों में समंदर का नाम आता है। इसकी तशरीह एक दूसरी हदीस से होती है जिसे इमाम मुस्लिम ने हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत किया है। फ़रमाते हैं मैंने नबी सल्ल0 को फ़रमाते सुनाः "इब्लीस अपना तख़्त समंदर पर लगाता है। लोगों को फ़ित्ने में डालने के लिये अपना लशकर रवाना करता है। जो इसके लशकर में सबसे ज़्यादा फ़ित्ना परवर होता है वह इब्लीस के सबसे ज़्यादा क़रीब होता है।" मुस्लिम शरीफ़ के शारह अल्लामा नववी रहि0 फ़रमाते हैं कि इस से मुराद इब्लीस का मर्कज़ है यानी इब्लीस का मर्कज़ समंदर में है।

इससे हमें दज्जाल के मक़ाम को समझने में कुछ मदद मिलती है। वह इस तरह कि दज्जाल इब्लीस के तर्कश का सबसे कारआमद और ज़हर में बुझा हुआ तीर है। अल्लाह की सच्ची खुदाई के मुक़ाबले में झूटी खुदाई क़ायम करने के लिये इब्लीस का सबसे अहम हथियार और कारआमद हर्बा दज्जाल है। इन दोनों की बाहमी मुलाक़ात और शैतानी कुव्वतों की दज्जाल के साथ भरपूर इम्दाद अहादीस से साबित है। क्या अजब कि इब्लीस के मर्कज़ में ही दज्जाल मुक़य्यद हो और अल्लाह तआला ने उसे शैतानी समंदर और शैतानी जज़ाइर में मक़्नातीसी कशिश पैदा करके आम इंसानों से मख़्फ़ी कर रखा हो।

दज्जाल सब से पहले कहां ज़ाहिर होगा?

हदीस में आता है वह अस्फ़हान के एक मक़ाम ''यहूदिया'' से निकलेगा। अस्फ़हान ईरान का मशहूर शहर है। अल्लामा याक़ूत हम्वी ने मुअजिमुल बुलदान में लिखा है कि बुख़्ते नस्सर बादशाह के ज़माने में जब यहूदियों को बैतुल मुक़द्दस से निकाला गया तो उनकी एक जमाअत अस्फ़हान में जाकर आबाद हो गई। यहां उन्होंने मकानात वग़ैरा तामीर किये और यहीं उनकी नस्ल फैलती रही। इस मक़ाम का नाम ''यहूदिया'' पड़ गया। एक दूसरी हदीस में है दज्जाल शाम व इराक़ के दर्मियान निकलेगा। हदीस की शारिहीन के मुताबिक़ यह पहली हदीस के ख़िलाफ़ नहीं। मुम्किन है वह पहले शाम व इराक़ के दर्मियान निकले मगर उस वक़्त उसका ख़ुरूज नुमायां न हो। फिर अस फ़हान के इलाक़े यहूदिया से नमूदार हो और यहां के यहूदियों की मदद से जो उसके इंतिज़ार में बेचैन हैं, उसके ख़ुरूज का आलमी एलान हो।

दज्जाली शोबदों की दो तशरीहात:

अहादीस में दज्जाल के जिन मुहैरूल उक़ूल शोबदों का ज़िक्र आता है, ऐसा लगता है कि इनका तअल्लुक़ भी उन्ही मक़्नातीसी लहरों या लेज़र शुआओं से है जो बरमूदा तिकोन में पाई जाती हैं। इन शुआओं के ज़रीए वे काम किये जा सकते हैं जिनको देखकर कमज़ोर ईमान और नाक़िस इल्म वाले झूटे ख़ुदा को सच्चा मानने में देर नहीं करेंगे। यह काम दो तरह हो सकते हैं:

(1) बअज़ में तो हक़ीक़त वह होगी जो दिखाई दे रही है। यानी इन शुआओं के किसी इंसान या इंसानों के हुजूम पर डाला जाए तो वे पिघल कर ग़ायब हो जाएगा। खेतों पर डाला जाए तो सरसब्ज़ खेत जल कर राख हो जाएं और बंजर खेत लहलहाने लगें। मादर ज़ाद अंधे की बीनाई लौटा देना, लाइलाज अमराज़ का इलाज कर देना, जानदार को मार डालना या ग़ायब कर देना वग़ैरा वग़ैरा, ये

सब कुछ शुआओं के ज़रीए पलक झपकते में मुम्किन होगा।

(2) दूसरी क़िस्म वह है जिस में नज़रबंदी है। हक़ीक़त वह नहीं होगी जो नज़र आ रही है। मसलनः कसीरुल मंज़िला इमारतों, देवहैकल जहाज़ों को ग़ायब कर देना। समंदर की तह में या ज़मीन की गहराई में मौजूद प्लेटों को हिलाकर ज़लज़ला पैदा करना। ज़िंदा इंसान को दो टुक्ड़ें करना और फिर ज़िंदा कर देना।

यहूदी सांइसदानों ने इन शुआओं को जो उन दो शैतानी जज़ाइर में पाई जाती हैं, महफ़ूज़ करने और हस्बे मंशा इस्तिमाल करने में इब्तिदाई कामयाबी हासिल कर ली है। यह इस क़दर ताक़तवर ज़रीअए तवानाई है कि मौजूदा साइंस की तमाम इजादात इसकी गिर्द को भी नहीं पहुंच सकतीं। हवाई जहाज़ को तो छोड़ें, अगर इसको कार में इस्तिमाल किया जाए तो वह मुरव्वजा रिवायती तवानाई से चलने वाली कारों से लाखों गुना......हज़ारों नहीं लाखों गुना......तेज़ रफ़्तार से चलेगी। दज्जाल जिस क़िस्म की उड़न तशतरियों पर सवारी करेगा उसमें यही तवानाई इस्तिमाल होगी। उसकी हैरतअंगेज़ शोबदा बाज़ियों की पुश्त पर यही तवानाई कारफ़रमा होगी और कमज़ोर ईमान वालों को गुमराह कर छोड़ेगी। आज कल यहूद आख़िरी मअरके की तैयारी कर रहे हैं और दुनिया का ज़ेहन बना रहे हैं कि "नजात दहिंदा" की आमद क़रीब है। अंक़रीब जैसे ही वह इस तवानाई पर हस्बे मंशा कंट्रोल हासिल करेंगे, इंसानियत के ख़िलाफ़ फ़ैसलाकुन जंग का एलान कर देंगे। उनके ख़्याल में यह नाक़ाबिले शिकस्त टेक्नोलोजी है जो दज्जाल की "आलमी हुकूमत" के क़्याम में हाइल हर रुकावट को बहा ले जाएगी......बल्कि वह तो इससे भी आगे की सोच रहे हैं कि यह लेज़र टेक्नोलोजी उनको मौत पर क़ाबू दिलवा देगी क्योंकि मौत उनके लिये यक़ीनी तौर पर जहन्नम का दरवाज़ा है......और सुनिये! हक़ीक़त यह है कि वे इससे भी आगे की सोच रहे हैं कि मआज़ अल्लाह सुम्मा मआज़ अल्लाह,

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को क़त्ल करके ज़मीन व आसमान की बादशाहत अपने नाम कर लें। लेकिन उनकी ग़लती यह है वे उस मौके पर भूल जाते हैं सब ताक़तों के ऊपर एक ताक़त मौजूद है। शैतानी माद्दी ताक़तों की जहां इंतिहा तोती है, वहां रहनुमाइये रूहानी ताक़त की इब्तिदा होती है। अल्लाह को अपनी मख़्लूक़ से मुहब्बत है खुसूसन उसे सज्दा करने और उसकी ख़ातिर जान देने वाले बेलोस जाँनिसारों से उसे इश्क़ है। वह उनकी क़ुर्बानियों को राएगां नहीं जाने देगा। वह उन शुआओं के मुक़ाबले में मुजाहिदीन के अमीर हज़रत मसीह अलै0 को ऐसी शुआओं की ताक़त देगा कि जहां तक उनकी नज़र जाएगी काफ़िर मरते जाएंगे और दुनिया को बरमूदा की शुआओं का शोबदा दिखाने वाला दज्जाल तो उनको देखते ही पिघलने लगेगा। उसके साथ मौजूद यहूदियों को क़लील तादाद और बेसर व सामान मुजाहिदीन हर पत्थर और दरख़्त के पीछे से पकड़ पकड़ कर बरआमद कर लेंगे और चुन चुन कर ख़त्म करेंगे। यहूदियत, शयतनत, और दज्जालियत हमेशा इस हक़ीक़त को भूल जाती है। उसको माद्दी ताक़त का ज़ुअम रहता है और दुनिया भी उनकी ताक़त से मरऊब होकर ख़ुदाई अहकाम और जिहाद फ़ी सबी लिल्लाह से मुंह मोड़ लेती है। यह इंसानियत की बदक़िस्मती है। जो हश्रे होशरुबा यहूदी और उसकी हमनवा सहीवनी ताक़त का अफ़ग़ानिस्तान में हो रहा है, वही हश्र दज्जाल की "नाक़ाबिले शिकस्त टेक्नालोजी" का आरमेगाडोन के मैदान में "अफ़ीक़" की घाटी में होगा।

दज्जाली शोबदों को नाकाम बनाने का तरीक़ाः

हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने इब्ने सय्याद से फ़रमायाः "إِخْسَأْ! لَنْ تَعْدُوَ قَدْرَكَ" यानीः "मर्दूद! तू अपनी औक़ात से आगे नहीं बढ़ सकता।" इब्ने सय्याद जैसा दज्जाले असग़र हो या यहूदियों का मसीहाए मुंतज़िर दज्जाले अक्बर, दोनों को रब तआला एक हद

से आगे की न ताक़त देंगे न अपनी मख़्लूक़ के लिये उसे एक हद के बाद आज़माइश बनाएंगे। दज्जाल की यह शुआएं उस मुसलमान के आगे क़तअन बेकार होंगी और उसको न नुक़्सान पहुंचा सकेंगे न उसकी नज़रबंदी कर सकेंगी जो:

(1) सूरए कहफ़ की (या उसकी इब्तिदाई या आख़िरी दस आयात की) तिलावत करेगा।

(2) तसबीह व तमहीद और तक्बीर व तह्लील (तीसरा और चौथा कलिमा) का विर्द करेगा।

(3) और जो दज्जाल के मुंह पर थूक कर उसके ख़िलाफ़ अलमे जिहाद बुलंद करेगा।

जिहाद वह बेमिसाल टेक्नालोजी है जो यहूद की सदियों की मेहनत से हासिल कर्दा साइंसी टेक्नालोजी को एक हल्ले में बहार कर ले जाएगी और उनके पल्ले सिवाए ज़िल्लत व रुसवाई के कुछ न छोड़ेगी। जब तमाम दुनिया ने अमरीका से शिकस्त खाई थी तो तालिबान ने जिहाद की बदौलत उसे उसकी औक़ात याद दिला दी। अंक़रीब जब तमाम रौशन ख़्याल दुनिया दज्जाल को ख़ुदा तसलीम कर चुकी होगी कि ख़ुरासान के काले झंडे वाले मुजाहिदीन उसकी झूटी ख़ुदाई का पर्दा चाक कर डालेंगे। काश! मुसलमान उस दिन की तैयारी अभी से करें। तक़्वा और जिहाद। तक़्वा और जिहाद। तक़्वा और जिहाद......ऐ अह्ले इस्लाम! तक़्वा और जिहाद। इन दो चीज़ों को कोई माद्दी ताक़त शिकस्त नहीं दे सकती।

बात यह है:

दज्जाल कहां है? यह सवाल इसरारो रुमूज़ के दबीज़ परदे के पीछे छिपा था। अब जैसे जैसे इसके ज़ुहूर का वक़्त क़रीब आ रहा है, ऐसा लगता है अल्लाह तआला इब्लीसी और दज्जाली कुव्वतों के ठिकाने को कुछ कुछ नाआश्कार करना चाहते हैं। बहरहाल इसका मक़ाम मालूम हो या नामालूम, वाज़ेह हो या मुब्हम, मालूम होकर भी

नामालूम रहे या बिल्कुल मजहूल रहे, बात यह है जिस चीज़ का हदीस शरीफ़ में जितना बताया गया है, उससे ज़्यादा जानने में यक़ीनन हमारा फ़ाइदा न था इसलिये उसे मुब्हम रखा गया। हमें इस इब्हाम की तशरीह के पीछे पड़ने की बजाए इस मक़सद पर नज़र रखनी चाहिये जो इब्हाम का मंशा था। यानी दज्जाल के मसकन की तअय्युन के बजाए दज्जाली फ़ित्ने के मुक़ाबले की तैयारी। आज अगर हमें इसका मसकन मालूम हो भी जाए तो न कोई क़ब्ल अज़ वक़्त उसे क़त्ल कर सकता है न उस जज़ीरे तक पहुंच सकता है, अलबत्ता जब दज्जाल निकलेगा और पूरी दुनिया में दंदनाएगा तो जिसने उसके मुक़ाबले के लिये दुनिया की मुहब्बत से जान छुड़ा कर मौत की तैयारी की आदत न डाली होगी, अल्लाह की मुलाक़ात का शौक़ दिल में पैदा न किया होगा और जिहाद से ग़ाफ़िल रहा होगा, वह उसके फ़ित्ने का शिकार होने से न बच सकेगा। फ़ित्ने का मर्कज़ मालूम होना इतना अहम नहीं जितना फ़ित्ने का शिकार होने से बचने की तैयारी करना; और फ़ित्ने से बचना इतना क़ाबिले क़दर नहीं जितना इसके ख़ातमे के लिये फ़ैसलाकुन जद्दो जेहद का अज़्म करना। अल्लाह तआला हमें ईमान व इस्तिक़ामत का आला दर्जा और जद्दो जेहद व जिहाद का लाज़वाल जज़्बा नसीब फ़रमाए। आमीन।

दज्जाल कब बरआमद होगा?

इस बहस का तीसरा और आख़िरी सवाल......जो पहले दो सवालों से ज़्यादा नाज़ुक, तहक़ीक़ तलब और हत्मी जवाब से बईद तरीन है......यह है कि दज्जाल कब निकलेगा? उसे ज़ंजीरों से आज़ादी तो शायद मिल चुकी है, क़ैद से रिहाई कब मिलेगी? और दज्जाल का रास्ता हमवार होने, स्टेज तैयार होने और दज्जाली कुव्वतों की माद्दी तरक़्क़ी के नुक़्ताए उरूज पर पहुंचने के बाद वह कौनसा लम्हा है जब वह ख़ुरूज करके दुनिया को तारीख़े इंसानी की सबसे बड़ी आज़माइश से दो चार करेगा?

हमें क़ुरआन मजीद से इस तरह के सवालात के दो जवाब मिलते हैं:

(1) पहला जवाब तो वही है जो सूरह बनी इस्राईल की आयत नम्बर 51 में वारिद हुआ है:

"قُلْ عَسٰى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا"

तर्जुमाः "ऐ नबी! (सल्ल०) कह दीजिये कि ऐन मुम्किन है कि वह (लम्हए मौऊद) बिल्कुल ही क़रीब आ गया हो।"

बिल्कुल इसी तरह की एक आयत सूरतुल मआरिज में भी वारिद हुई है:

"اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا، وَّنَرَاهُ قَرِيْبًا."

यानी "ये लोग इसे दूर समझ रहे हैं जबकि हम इसे बिल्कुल करीब देख रहे हैं।"
(आयात: 6, 7)

(2) और दूसरा वह उमूमी जवाब है जो कुर्आन मजीद में मुतअद्दिद बार आया है यानी:

"وَاِنْ اَدْرِىْ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ."

यानी "(ऐ नबी सल्ल0) कह दीजिये कि मैं नहीं जानता कि जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जा रहा है वह करीब आ चुकी है या अभी दूर है।" (सूरतुल अंबिया: 109)

"قُلْ اِنْ اَدْرِىْ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّىْ اَمَدًا."

यानी (ऐ नबी सल्ल0) कह दीजिये मैं नहीं जानता जिस चीज़ का वादा तुम से किया जा रहा है वह अंकरीब पेश आने वाली है या अभी मेरा रब इसके ज़िम्न में कुछ ताख़ीर फरमाएगा।" (सूरतुल जिन्न: 25)

ख़ुलासा यह कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने जिन ख़ास हिक्मतों के तहत क़्यामत का इल्म किसी को नहीं दिया, उसे सौ फ़ीसदी रखा है, इसी तरह अलामाते क़्यामत के ज़ुहूर के वक़्त की हत्मी तअय्युन भी नामुम्किन ही जैसी है। अलबत्ता बाज़ क़राईन व शवाहिद की बिना पर हमारे अकाबिर या इस मौज़ू से दिलचस्पी रखने वाले अहले इल्म ने अब तक जो कुछ फरमाया है, ज़ेल में हम इसे बिला तब्सिरा नक़्ल करते हैं:

(1)......बर्रेसग़ीर के मशहूर आलमे दीन और दज्जालियत से ख़ुसूसी दिलचस्पी रखने वाले और उस पर मुफ़स्सल किताब के

मुअल्लिफ़ हज़रत मौलाना सय्यद मनाज़िरा हसन गीलानी अपनी मअरकतुल आरा किताब "दज्जाली फ़ित्ना के नुमायां ख़द व ख़ाल" के मुक़द्दमें में लिखते हैं:

"मग़रिब का जदीद तमद्दुन बज़ाहिर ऐसा मालूम होता है कि "अलमसीहुद्दज्जाल" के ख़ुरूज की ज़मीन तैयार कर रहा है, क्योंकि अपनी इक़्तिदारी कुव्वतों से वही काम यूरप की उस निशाते जदीदा में भी लिया जा रहा है जिस में "अलमसीहुद्दज्जाल" अपनी इक़्तिदारी कुव्वतों को इस्तिमाल करेगा। ख़ुदा बेज़ारी या ख़ुदा के इंकार को हर दिल अज़ीज़ बनाने की राह यूरप साफ़ कर रहा है या कर चुका है, लेकन बजाए ख़ुदा के ख़ुद अपनी ख़ुदाई के एलान की जुर्अत उसमें अभी पैदा नहीं हुई। अलमसीहुद्दज्जाल इसी क़िस्से की तक्मील कर देगा। कुछ भी हो, सही और साफ़ जची तुली बात जिसमें ख़्वाह नुबुवत के अलफ़ाज़ में खींचतान और रकीक तावीलों की ज़रूरत नहीं होती, यही है कि "अलमसीहुद्दज्जाल" के ख़ुरूज का दावा तो क़ब्ल अज़ वक़्त है, मगर "अलमसीहुद्दज्जाल" जिस फ़ित्ने में दुनिया को मुब्तला करेगा, उस फ़ित्ने के ज़ुहूर की इब्तिदा किसी न किसी रंग में मान लेना चाहिये कि हो चुकी है। दूसरे लफ़्ज़ों में चाहें तो कह सकते हैं कि दज्जाल आया हो न आया हो, लेकिन "दज्जालियत" से पहले "दजाजिला" का ज़ुहूर होगा। बाज़ रिवायतों में इनकी तादाद तीस और बाज़ों में सत्तर, छिहत्तर तक बताई गई है। "दज्जाल" से पहले उन "दजाजिला" की तरफ़ "दज्जालियत" का इंतिसाब बिला वजह नहीं किया गया है। बज़ाहिर यही मालूम होता है कि "अलमसीहुद्दज्जाल" जिस फ़ित्ने को पैदा करेगा कुछ उसी क़िस्म के फ़ित्नों में इससे पहले होने वाले "दजाजिला" दुनिया को मुब्तला करेंगे।" (स0 24, 25)

(2)......मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी साहब रहिमहुल्लाह तआला सूरह कहफ़ और दज्जास से

इस सूरत की ख़ुसूसी तअल्लुक़ पर लिखी गई किताब "मअरकए ईमान व माद्दियत" में तहरीर फ़रमाते हैं:

"अहद आख़िर में यहूदियों ने (मुख़्तलिफ़ असबाब की बिना पर जिन में बाज़ उनके नस्ली ख़साइस से तअल्लुक़ रखते हैं, बाज़ तालीम व तरबियत से, बाज़ सियासी मक़ासिद और क़ौमी मंसूबों से) इल्म व फ़न और ईजादात व इख़्तिराआत के मैदान में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। उन्होंने एक तरह से तहज़ीबे जदीद पर पूरा कंट्रोल कर लिया और अदब व तालीम, सियासत व फ़लसफ़ा, तिजारत व सहाफ़त और क़ौमी रहनुमाई के सारे वसाइल उनके हाथ में आ गए। इसका नतीजा यह हुआ कि उन्होंने मग़रिबी तहज़ीब (जो मग़रिबी माहौल में पैदा हुई) के एक अहम तरीन अन्सुर की हैसियत हासिल कर ली। जदीद तग़य्युरात का जाइज़ा लेने से हमें अंदाज़ा होगा कि बैनुल अक़्वामी यहूदियत का असर व रुसूख़ मग़रिबी मुआशरे में किस क़दर बढ़ चुका है? अब यह तहज़ीब अपने तमाम सरमायए इल्म व फ़न के साथ अपने मन्फ़ी अंजाम की तरफ़ बढ़ रही है और तख़रीब व फ़साद और तलबीस व दज्ल के आख़िरी नुक़्ता पर है और यह सब उन यहूदियों के हाथों हो रहा है जिनको अहले मग़रिब ने सर आंखों पर बिठाया और उनके दूर रस ख़ुफ़्या मक़ासिद, इंतिक़ामी तबीअत और तहज़ीबी मिज़ाज से ग़ाफ़िल व बेपरवाह होकर उनकी जड़ों को अपने मुल्कों में ख़ूब फैलने और गहरा होने का मौक़ा दिया और उनके लिये ऐसी सहूलतें और मवाक़े फ़राहम किया जो तवील सदियों से उनके ख़्वाब व ख़्याल में भी न आ सके होंगे। यह इंसानियत का सबसे बड़ा इब्तिला है और न सिर्फ़ अरबों के लिये (जवान को भुगत रहे हैं और न सिर्फ़ उस महदूद रक़्बे के लिये जहां मौत व ज़ीस्त की यह कशमकश बरपा है) बल्कि सारी दुनिया के लिये सबसे बड़ा ख़तरा है।" (स0 10, 11)

(३)......आलमे अरब के मशहूर आलिम, दाई और मुहक़्क़िक़ शैख़

सफ़र बिन अब्दुर्रहमान अलहवाली अपनी किताब "यौमुल ग़ज़ब" में कहते हैं:

"रहा आख़िरी मुश्किल सवाल कि ग़ज़ब वाला दिन कब नाज़िल होगा? अल्लाह तआला "वीराने की गंदगी" को कब तबाह करेगा? बैतुल मुक़द्दस की ज़ंजीरें कब कटेंगी? इसका जवाब हमने ज़िम्नन पहले ही दे दिया है। पहले गुज़र चुका है कि दानियाल ने कर्ब और कशाइश के दर्मियान 45 बरस का तअय्युन किया है। हम देख रहे हैं कि दानियाल की निशानदही के मुताबिक़ पलीद रियासत 1967 ई0 में क़ायम हुई [यानी इस्राईल का बैतुल मुक़द्दस पर कब्ज़ा 1967 ई0 में हुआ। राक़िम] तो इस सूरत में उसका ख़ातमा......या उसके ख़ातमे का आग़ाज़......(45+1967) 2012 ई0 में होगा। इस साल उसके वुक़ू की तवक़्क़े है, लेकिन जब तक वाक़िआत तसदीक़ नहीं करते हम कोई क़तई बात नहीं कह सकते।" (स0 122)

(4)......जामिआ अज़हर के उस्ताद, और मेहदवियात के मशहूर मिस्री मुहक़्क़िक़, अलउस्ताज़ अमीन मुहम्मद जमालुद्दीन अपनी मअरकतुल आरा किताब "हिरमज्दून" (आरमेगाडोन) के सफ़्हा 33 पर रक़्म तराज़ हैं:

"नुऐम बिन हम्माद ने रिवायत की है कि कअब ने कहा: "ज़ुहूरे मेहदी की अलामत मग़रिब से आने वाले झण्डे हैं जिनकी क़्यादत कुंदता (केनैडा) का एक लंगड़ा आदमी करेगा।"

मुझे गुमान तक न था कि अमरीका एक लंगड़े का इंतिख़ाब कर के उसे कमांडर इन्चीफ़ के मंसब पर फ़ाइज़ करेंगे बल्कि मैं अपने दिल ही दिल में समझता था कि اعرج के लफ़्ज़ से मुराद एक कमज़ोर शख़्स है जिसकी राए में कोई वज़न न होगा। मेरे तो वहम व गुमान में भी न था कि वे एक लंगड़े को दुनिया की फ़ौज का सिपहसालार बनाना दुरुस्त समझेंगे। बदशगूनी के तौर पर कहा जा सकता है कि यह फ़ौज अपने क़ाइद की तरह आजिज़ व दरमांदा

होगी। जब मैंने देखा कि केनैडा से तअल्लुक़ रखने वाला जिज़्ल रिचर्ड माइर्ज़ बेसाखियों पर चल कर आ रहा है ताकि वह अमरीकी अवाम के सामने अफ़ग़ानिस्तान के ख़िलाफ़ बर्री, बह्री और फ़ज़ाई आपरेशन का ऐलान करे तो मेरे मुंह से निकल गयाः "अल्लाहु अक्बर! ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल0 आप ने सच फ़रमाया है।"

इत्तिहादी फ़ौज के झंडों (सलीबी झंडों) का केनैडा के लंगड़े जरनैल की ज़ेरे क़्यादत ख़ुरूज कश्त व ख़ून के आग़ाज़ की अलामत है और हय्य व क़य्यूम की क़सम! यही ज़ुहूरे मेहदी की अलामत है। अगर हम लंगड़े अमरीकी कमांडर रानचैफ़ पर हैरान हो रहे हैं तो हमें एक और इबादत पर भी हैरान होना चाहिये जिसको नुऐम बिन हम्माद ने ही रिवायत किया है। इसमें इसी लंगड़े का वस्फ़ बयान हुआ कि फिर लंगड़ा कैनेडियन ख़ूबसूरत बेज लगा कर ज़ाहिर होगा। जब तो लंगड़े को ख़ूबसूरत फ़ौजी वर्दी, तमग़ों और बेजों में देखेगा तो बेसाख़्ता तेरे मुंह से निकलेगाः "सुब्हान अल्लाह! वाक़ई मेहदी का ज़ुहूर क़रीबतर है, क्योंकि कैनेडियन लंगड़ा जरनैल ज़ाहिर हो चुका है।"

थोड़ा आगे चलकर सफ़्हा 36 पर कहते हैंः

"1400 हि0 की दहाइयों (दो या तीन दहाइयों) में मेहदी अमीन का ख़ुरूज होगा। वह सारी दुनिया से जंग करेगा। सब गुमराह और अल्लाह के ग़ज़ब के मारे उसके ख़िलाफ़ इकट्ठे हो जाएंगे और उनके साथ वे लोग भी जो इसरा और मेराज के मुल्क में निफ़ाक़ की हद्दे कमाल तक पहुंचे हुए हैं। ये सब मज्दून नामी पहाड़ के क़रीब जमा होंगे। सारी दुनिया की मक्कार और बदकार मलिका जिसका नाम अमरीका है, उसके मुक़ाबले के लिये निकलेंगे। उस दिन वे पूरी दुनिया को गुमराही और कुफ़्र की तरफ़ वरग़लाएगी। उस ज़माने में दुनिया के यहूदी उरूजे कमाल तक पहुंचे होंगे। बैतुल मुक़द्दस और पाक शह्रान के क़ब्ज़े में होगा। बर व बह्र और फ़ज़ा से सब

मुमालिक आ धमकेंगे सिवाए उन मुमालिक के जहां ख़ौफ़नाक बर्फ़ पड़ती है या ख़ौफ़नाक गर्मी पड़ती है। मेहदी देखेगा कि पूरी दुनिया बुरी बुरी साज़िशें करके उसके ख़िलाफ़ सफ़ आरा है और वह देखेगा कि अल्लाह की तदबीर सबसे ज़्यादा कारगर होगी। वह देखेगा कि पूरी काइनात अल्लाह की है और सब ने उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। सारी दुनिया बमंज़िला एक दरख़्त के है जिसकी जड़ें और शाख़ें उसी दज्जाल की मिल्कियत हैं......और उन पर इंतिहाई कर्बनाक तीर फैंकेगा और ज़मीन व आसमान और समंदर को उन पर जला कर राख कर डालेगा। आसमान से आफ़तें बरसेंगी। ज़मीन वाले सब काफ़िरों पर लानत भेजेंगे। और अल्लाह तआला हर कुफ़्र को मिटाने की इजाज़त दे देगा।"

(5)......बर्रेसग़ीर की एक मशहूर बुज़ुर्ग शख़्सियत जिनकी अलामाते क़्यामत के बारे में मंज़ूम पेशगोइयां मअरकतुल आरा रही हैं यानी मौलाना नेमतुल्लाह शाह अलमारूफ़ शाह वली नेमत अपनी पेशगोइयों में फ़रमाते हैं:

-ऐसे मुस्लिम रहबर भी होंगे जो दर पर्दा मुसलमानों के दुश्मनों के दोस्त होंगे और अपने फ़ाजिज़ाना अहद व पैमान के मुताबिक़ उनकी इम्दाद करेंगे।

-फिर माह मुहर्रम में मुसलमानों के हाथ में तलवार आ जाएगी। उस वक़्त मुसलमान जारिहाना इक़्दाम शुरू कर देंगे।

उस वक़्त मुसलमान जिहाद का मुसम्मम इरादा करेगा।

-साथ ही साथ अल्लाह का एक हबीब जो अल्लाह की तरफ़ से साहबे कुर्आन का दर्जा रखेगा, अल्लाह की मदद से अपनी तलवार नियाम से निकालकर इक़्दाम करेगा।

-सरहद के बहादुर ग़ाज़ियों से ज़मीन मरक़द की तरह हिलने लगेगी जो अपने मक़्सद में कामयाबी के लिये परवाना वार आएंगे। ये च्यूंटियों मकोड़ों की तरह रातों रात ग़ल्बा करेंगे और हक़ बात यह

है कि क़ौमे अफ़ग़ानिस्तान बराबर फ़तहयाब हो जाएगी।

-दीने इस्लाम के तमाम बदख़्वाह मारे जाएंगे और अल्लाह तबारक व तआला अपना लुत्फ़ नाज़िल फ़रमाएगा।

यूरप की क़िस्मत ख़राब हो जाएगी और तीसरी जंगे अज़ीम फिर छिड़ जाएगी।

-जिन अल्फ़ों का मैंने ज़िक्र किया है उनमें से एक अलफ़ (अमरीका) बदलगाम घोड़े की तरह अलफ़ यानी सीधा होकर शरीके जंग होगा और रूस अल्फ़े मग़रियाना यानी इंगलिस्तान पर हमला कर देगा।

-शिकस्त खूर्दा जैम (यानी जर्मनी) रूस के साथ शरीक होकर और जहन्नमी अस्लहा आतिश फ़शां तैयार कर के हमराह लाएगा।

-अलफ़ (यानी इंगलिस्तान) ऐसे मिटेंगे कि उनका एक लफ़्ज़ भी सफ़्हए हस्ती पर बंजर तारीख़ों में उनकी याद के और उनके कुछ बाक़ी न रहेगा।

-ग़ैब से सज़ा मिलेगी, गुनहगार नाम पाएगा और फिर कभी ईसाई तर्ज़े सर न उठाएगा।

-बेईमान सारी दुनिया को ख़राब कर देंगे। आख़िरकार हमेशा के लिये जहन्नमी आग का नज़राना हो जाएंगे।

वे राज़ बस्ता हैं जो मैंने कहा है और मोतियों की तरह पिरो दिया है। तेरी नुसरत व कामयाबी के लिये इस्नादे ग़ैबी का काम देगा।

अगर तू जल्दी चाहता है और फ़तह चाहता है तो खुदा के लिये अहकामे इलाही की पैरवी कर। जब आईदा كان زهوقا का साल शुरू होगा तो हज़रत मेहदी अपने मेहदवियाना उहदा पर जलवा फ़रमा होंगे।

"नेमत ख़ामोश हो जा! और ख़ुदा के राज़ों को आश्कारा मत कर।"

"کنت کنزاً" (745 हिज्री) में मैंने ये अशआर लिखे हैं।"

(6)......सदर दारुल उलूम कराची हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद रफ़ी साहब उस्मानी दामत बरकातुहुम माहनामा "अलबलाग़" में शाए शुदा अपने एक इंटरव्यू में फ़रमाते हैं:

सवालः रसूलुल्लाह सल्ल0 की मुस्तक़्बिल के बारे में बशारतें और उनकी तत्बीक़ी सूरते हाल के बारे में रहनुमाई फ़रमाएं।

जवाबः इस सिलसिले में आंहज़रत सल्ल0 ने पेशगी ख़बरें दी हैं उनकी रू से अगर देखा जाए तो ऐसा मालूम होता है कि मौजूदा पूरी दुनिया की सियासत, जुग़राफ़िये और हालात में जो तबदीलियां बड़ी तेज़ी से रूनुमा हुई हैं और हो रही हैं, ये सब उस दौर की तरफ़ दुनिया को ले जा रही हैं जो हज़रत मेहदी के ज़ुहूर से सामने आने वाला है और यह सारा मैदान उसके लिये तैयार हो रहा है। और रिवायत से यह बात भी साबित होती है कि हज़रत मेहदी के ज़माने में मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ उरूज पर पहुंचा हुआ होगा। इख़्तिलाफ़ का ख़ातमा वही करेंगे और दोबारा ख़िलाफ़ते इस्लामिया क़ायम होगी। जिसके सरबराह हज़रम मेहदी होंगे। बज़ाहिर वह वक़्त अब ज़्यादा दूर नज़र नहीं आता।

सवालः हज़रत मेहदी के ज़ुहूर के पहलू दज्जाल का ज़ाहिर होना भी आता है?

जवाबः वह पूरी उम्मत के लिये आज़माइश का वक़्त होगा। बस इतनी बात है कि इस्लाम की ज़िल्लत का वक़्त नहीं होगा इसलिये कि मुसलमान एक अमीर के झंडे के नीचे मुत्तहिद होंगे और हक़ उनके सामने खुला हुआ होगा। हज़रत मेहदी का क़ौल हक़ होगा और उनके ख़िलाफ़ जो होगा वह बातिल होगा। उस मुश्किल में वह दो चार नहीं होंगे जिस मुश्किल में अब हम रहते हैं कि किस बात को हम सही कहें किस को ग़लत कहें? ठीक है! जानें बहुत जाएंगी, क़ुर्बानियां बहुत दी जाएंगी लेकिन कशमकश नहीं होगी, ज़िल्लत नहीं

होगी, मुसलमान की मौत होगी तो इज़्ज़त की मौत होगी।
(अलबलाग़: जि0 6, शुमारा 11, जनवरी 2004 ई0)

यह तो इस सिलसिले में हज़रत का इंटरव्यू था। आप का एक मज़मून "अंबिया की सरज़मीन में चंद रोज़" भी "अलबलाग़" में क़िस्तवार शाए हुआ है, इसकी पांचवीं क़िस्त में आप तहरीर फ़रमाते हैं:

"उर्दुन में जिन जिन तारीख़ी मक़ामात पर जाना हुआ, अक्सर इस्राईल के मक़्बूज़ात भी साथ ही नज़र आए जो उन्होंने मुसलमानों से छीने हैं। ज़ाहिर है कि यह हमारी शामते आमाल का नतीजा है। दिल जो शामते आमाल से पहले ही ज़ख़्मी है, इन मनाज़िर को बचश्मे खुद देख देखकर और भी चोट पर चोट खाता रहा, लेकिन पूरी दुनिया जिस तेज़ी से बदल रही है और जिस तरह बदल रही है, ख़ुसूसन शर्क़े औसत (Middle East) में तक़रीबन साठ साल से जो इन्क़िलाबात रूनुमा हो रहे हैं, उन्हें अगर रसूलुल्लाह सल्ल0 की बयान फ़रमूदा अलामात की रौशनी में देखा जाए तो साफ़ पता चलता है कि दुनिया अब बहुत तेज़ी से क़्यामत की तरफ़ रवां दवां है।

उर्दुन और शाम के इस सफ़र में क़दम क़दम पर नज़र आता है कि यह हज़रत मेहदी के ज़ुहूर और दज्जाल से उनकी होने वाली जंग का मैदान तैयार हो रहा है। और इसी जंग के दौरान हज़रत ईसा अलै0 के नुज़ूल के फ़ौरन बाद उनके हाथों दज्जाल के क़त्ल और साथ ही यहूदियों के क़त्ले आम का जो वाक़िआ होने वाला है उसकी तैयारी में खुद यहूदी......नादानिस्ता ही सही......पेश पेश हैं।

रसूल सल्ल0 की बेअ़सत से काफ़ी पहले "बुख़्ते नसर" बादशाह ने जब यहूदियों पर ज़र्बकारी लगाई तो ये तितर बितर होकर पूरी दुनिया में ज़िल्लत के साथ बिखर गए थे। अब से तक़रीबन साठ साल पहले तक इनका यही हाल था। अब हज़ारों साल बाद इनका पूरी दुनिया से खिंच खिंच कर फ़लस्तीन में आकर......दूसरे लफ़्ज़ों में

अपने मक़्तल में आकर......जमा हो जाना यही ज़ाहिर करता है कि यह हज़रत ईसा अलै0 और उनके लशकर का काम आसान करने में लगे हुए हैं। वर्ना बक़ौल हज़रत वालिद माजिद (मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब) रहि0 कि हज़रत ईसा अलै0 उनको पूरी दुनिया में कहां कहां तलाश करते फिरते?

ऐसा मालूम होता है कि यहूदी दज्जाल को अपना पेशवा मानते हैं और अजीब बात यह है कि उसकी आमद के उसी मक़ाम पर मुंतज़िर जहां पहुंचकर उसका क़त्ल होना रसूलुल्लाह सल्ल0 की पेशगी ख़बर के मुताबिक़ मुक़द्दर हो चुका है।

हमारे एक मेज़बान हसन यूसुफ़ जिनका ज़िक्र पहले भी कई बार आ चुका है, यह असल बाशिंदे फ़लस्तीन के हैं। वहां से हिज्रत करके तक़रीबन 25, 30 साल से अमल में मुक़ीम हैं। उन्होंने बताया कि अब से कई बरस पहले वह तब्लीग़ के सिलसिले में फ़लस्तीन गए तो वहां के एक शहर "लुद" भी जाना हुआ, जो बैतुल मुक़द्दस के क़रीब है। वहां एक बड़ा गेट देखा जो "बाबुल लुद" (लुद का दरवाज़ा) कहलाता है। उस पर इस्राईली इंतिज़ामिया ने लिखा है: "هنا يخرج ملك السلام" "सलामती का बादशाह (दज्जाल) यहां ज़ाहिर होगा।"

अब रसूलुल्लाह सल्ल0 की एक हदीस देखिये जिस में आप सल्ल0 ने क़ुर्बे क़यामत में हज़रत ईसा अलै0 के नाज़िल होने की तफ़सीलात इर्शाद फ़रमाई हैं। यह हदीस आला दर्जा की सही सनदों के साथ आई है और इसे तीन सहाबा किराम और एक उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु अन्हा व अन्हुम) ने रिवायत किया है। इसमें आंहज़रत सल्ल0 का इर्शाद है: "فَيَطْلُبُهُ حَتّٰى يُدْرِكَهُ بِبَابِ لُدٍّ، فَيَقْتُلُهُ" (सही मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा व मुस्नद अहमद)

तर्जुमा: "पस ईसा (अलै0) दज्जाल को तलाश करेंगे यहां तक

कि उसे "बाबुल लुद" (लुद के दरवाज़े) पर जा लेंगे और कत्ल करेंगे।"

हमारे एक और मेज़बान जनाब अली हसन अहमद अलबय्यारी जो "इर्बिद" (Irbid) के मअरूफ़ ताजिर हैं और तबलीग़ी काम से भी वाबस्ता हैं। हमारा "उमान" से "इर्बिद" का सफ़र उनही की गाड़ी में हुआ था। उनके वालिद भी असल बाशिंदे फ़लस्तीन के थे, बल्कि ख़ास शहर "लुद" ही के रहने वाले थे। 1948 ई0 में हिज्रत करके यहां आ गए थे। यहीं 1951 ई0 में अली हसन अहमद अलबयारी साहब पैदा हुए। उन्होंने आज सयाहत से वापसी पर अपनी आलीशान कोठी में ज़ियाफ़त का एहतिमाम किया था। उस पुरलुत्फ़ मज्लिस में उन्होंने अपना यह वाक़िआ सुनाया कि 1980 ई0 में यह दस रोज़ अपने आबाई वतन "लुद" में जाकर रहे। उन्होंने बताया कि वहां "बाबुल लुद" ही के मक़ाम पर एक कुंवा है। यहूदी शहरी इंतिज़ामिया ने वहां से एक सड़क गुज़ारने के लिये उस कुंवे को ख़त्म करना चाहा, मगर बुल्डोज़रों और तरह तरह की मशीनों से भी उस कुंवें को ख़त्म न किया जा सका। मजबूरन सड़क वहां से हटाकर गुज़ारनी पड़ी। वहां अब यह लिखा हुआ था कि "هذا مكان تاريخي" (यानी यह एक तारीख़ी मक़ाम है)।

इन्ही अली हसन बय्यारी साहब ने बताया कि उनके एक मामूंज़ाद भाई भी जो "अलामाते क़यामत" की तहक़ीक़ व जुस्तजू में ख़ास दिलचस्पी रखते हैं, लुद गए थे। वहां उन्होंने एक महल देखा जो इस्राईली इंतिज़ामिया ने अपने "मिल्कुस्सलाम" (सलामती के बादशाह यानी दज्जाल) के लिये बनाया है।"

(7)......अलामाते क़यामत, आख़िरी ज़माने के फ़ित्नों और उनकी अस्री तत्बीक़ पर काम करने वाले एक और साहबे बसीरत आलिम हज़रत मौलाना आसिम उमर फ़ाज़िल दारुल उलूम देवबंद अपने मक़्बूले आम किताब "तीसरी जंगे अज़ीम और दज्जाल" में फ़रमाते

हैं:

"जहां तक तअल्लुक़ वसाइल पर कब्ज़े का है तो अगर आज से पचास साल पहले जंगों के बारे में यह कहा जाता कि दुनिया के वसाइल पर क़ब्ज़ा करने के लिये हैं, तो किसी हद तक दुरुस्त था लेकिन उस दौर में जंगों को तेल और मअदनी वसाइल की जंग कहना, इसलिये दुरुस्त नहीं कि अमरीका पर हुक्मरानी करने वाली असल कुव्वतें अब तेल और दीगर दौलत के मरहले से बहुत आगे जा चुकी हैं। अब उनके सामने आख़िरी हद्फ़ है और वे अपनी चौदह साला जंग के आख़िरी मरहले में दाख़िल हो चुकी हैं।" (स0: 29)

मौलाना मौसूफ़ "सदाए उम्मत" में "तिलिस्म कशाई" के नाम से बरमूदा तिकोन पर लिखे गए कालम में फ़रमाते हैं:

"यह फ़ित्नए दज्जाल है जिसको याद कर के सहाबा रज़िअल्लाहु अन्हुम रोने लगते थे। ख़ुद नबी करीम सल्ल0 इतने फ़िक्रमंद रहते कि मदीना मुनव्वरा में एक लड़के (इब्ने सय्याद) की पैदाइश की ख़बर आप सल्ल0 को मिली जिसमें दज्जाल की निशानियां पाई जाती थीं तो आप सल्ल0 ख़ुद उसके घर तशरीफ़ ले जाते और छिप छिप कर उसके बारे में तहक़ीक़ात करते थे। फिर क्या वजह है कि मुहम्मद सल्ल0 की बातों को सच्चा मानने वाली उम्मत अपने गिर्दो पेश के तमाम ख़तरात से बेनियाज़, नामालूम सिम्तों में भटकती फिर रही है। होना तो यह चाहिये था कि हम उड़न तशतरियों और बरमूदा तिकोन के वाक़िआत की भनक लगते ही संजीदगी से इस मौज़ू की तरफ़ तवज्जुह करते, लेकिन यूं है कि दज्जाल के निकलने का वक़्त क़रीब है कि उलमा ने भी इसका तज़किरा मिंबर व मेहराब से करना छोड़ दिया है।"

(8)......दज्जालियत के मशहूर मुहक़्क़िक़ डाक्टर इसरार आलम ने अपनी किताब "दज्जाल" की तीनों जिल्दों पर तक़रीबन एक जैसा

मुक़द्दमा लिखा है। फ़रमाते हैं:

"बीसवीं सदी ईसवी की आख़िरी दहाई तक आते आते वाज़ेह तौर पर महसूस होने लगा है कि यह उम्मत तारीख़े इंसानी के उस मरहले में दाख़िल हो चुकी है जिसकी ख़बर देते हुए रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया थाः "अंक़रीब क़ौमें तुम पर टूट पड़ने के लिये बुलावा देंगी जैसे भूके (जानवर) खाने पर टूट पड़ने के लिये बुलावा देते हैं।" (अबू दाऊद व बैहक़ी)

इस अंदोहनाक सूरते हाल से ज़्यादा कर्ब की बात यह है कि उम्मते मुस्लिमा......जो दुनिया की वह वाहिद गिरोह है जिसे माज़ी, हाल और मुस्तक़्बिल का काफ़ी इल्म (ما كان وهو كائن) दिया गया......आज हैरान और नावाक़िफ़ राह भटक रही है और दुनिया की तारीकियों से रौशनी की भीक मांग रही है। चौदह सदियों बाद अब आसारे क़्यामत के ज़ाहिर होने की रफ़्तार तेज़ होती हुई महसूस होती है गोया कोई हार टूट जाए और यके बाद दीगरे दाने गिरने लगें।"

(देखियेः दज्जाल नामी किताब की जिल्द अव्वल, दोम व सोम का मुक़द्दमा)

मौसूफ़ की किताब "फ़ित्नए दज्जाले अक्बर" के मुक़द्दमें में भी बिऐनिही यही अल्फ़ाज़ दर्ज हैं, वाज़ेह हो कि मौसूफ़ अपनी इन किताबों में कई जगह जम्हूर के मसलके एतिदाल से हट गए हैं। लेकिन उनके दर्दे दिल और मौज़ू पर नज़र और गिरिफ़्त से इंकार नहीं किया जा सकता। अल्लाह तआला उनको अपनी इस्लाह और उम्मत की फ़लाह के लिये बेहतरीन काम की तौफ़ीक़ दे।

डाक्टर साहब मौसूफ़ अपनी एक और किताब "मअरकए दज्जाले अक्बर" के मुक़द्दमें में लिखते हैं:

"सूरते हाल की नज़ाकत बढ़ती जा रही है और इसके साथ साथ उम्मत की ज़िम्मेदारियां भी। सूरते हाल की नज़ाकत इसकी

मक़्नातीसी है कि इस किताब के मज़ामीन से उम्मत का हर ख़ास व आम ज़्यादा से ज़्यादा और जल्द से जल्द वाक़िफ़ हो जाए, लिहाज़ा उम्मीद की जाती है कि क़ारईन और बिल ख़ुसूस अह्ले हिमम हस्बे इस्तिताअत इसे आम करने की सई फ़रमाएंगे। अल्लाह तआला इस कोशिश को क़बूल फ़रमाए और इसमें बरकत अता फ़रमाए।" (स0:6)

(9)......कामरान रअद अपनी किताब "फ़्री मेसज़ी और दज्जाल" के मुक़द्दमे में लिखते हैं "मैंने यह तहक़ीक़ी काम इख़्लासे नियत के साथ इस साज़िश को मुसलमानों के सामने लाने के मक़्सद से किया है जो 1095 ई0 में शुरू हुई। इस साज़िश ने इंसानी ज़िंदगी के हर उस शोबे को अपनी गिरिफ़्त में ले लिया है जिस पे ख़ुदाई क़वानीन का इतलाक़ होना चाहिये। यह मंसूबा एक मुहलिक ज़हरीले गिरोह ने तैयार किया जो नाइट्स के रूप में उभरा और अपने मंसूबा पर अब इस तरह अमल पैरा है जिस तरह "ख़ाकी वर्दी वाले लोग" मुस्तअद होते हैं। उनका मक़्सद लोगों को ख़ुदा के रास्ते से मुंहरिफ़ करके शैतान के ग़ैर इंसानी रास्ते पर गामज़न करना है ताकि उन्हें ठीक वह मौज़ू हालात मयस्सर आ जाएं जिन में अलमसीहुल कज़्ज़ाब, अद्दज्जाल की आमद मुम्किन हो सके। वह वक़्त ज़्यादा दूर नहीं है कि जब हम कुछ कर सकने के क़ाबिल नहीं रहेंगे। हम न्यू वर्ल्ड आर्डर के शिकंजे में बुरी तरह जकड़े जाएंगे जो हमारी तरफ़ अय्यारी और ख़ामोशी से मुसलसल बढ़ता चला आ रहा है।" (स0 7, 8)

(10)......मौलवी महमूद बिन मौलाना सुलैमान बारडोली मुदर्रिस जामिआ इस्लामिया डाभेल, भारत अपनी किताब "ज़ुहूरे मेहदीः कब? कहां? कैसे?" में फ़रमाते हैंः

"अहादीस में बहुत ही ताकीद के साथ हज़रत मेहदी की तशरीफ़ आवरी और उसके बाद उम्मते मुस्लिमा के उरूज व तरक़्क़ी

की यक़ीनी ख़बरें दी गई हैं......लेकिन साथ ही किस वक़्त, किस साल, किस माह में आपका ज़ुहूर होगा, इसकी तायीन नहीं की गई। हां! अहादीस से जिस ज़माना में आपका ज़ुहूर होने वाला है उस वक़्त के उम्मते मुस्लिमा के अह्वाल का काफ़ी हद तक अंदाज़ा हो सकता है, जिस से यह पता चल सकता है कि अब ज़ुहूर का ज़माना क़रीब है।" (स0: 78)

(11)......आख़िर ज़माना के फ़ित्नों के हवाले से उम्मत को मुसलसल दावत देने वाले एक और दर्दमंद और साहबे दिल मुसलमान ज़कीउद्दीन शर्फ़ी मशहूर अमरीकी मुसन्निफ़ा ग्रीस हाल सेल की किताब के तर्जुमे पर दीबाचा लिखते हैं:

"अब बात सदियों, सालों या दहाइयों की नहीं, दिनों और महीनों की रह गई है। अल्लाह के लिये जागिये और आंखें खोल कर हालात को देखिये! अल्लाह तआला हम सब की रहनुमाई फ़रमाए और आलमे इस्लाम और मिल्लते इस्लामिया का हामी व नासिर हो।" (स0: 3)

(12)......डाक्टर इसरार अहमद अपने बयानात पर मुशतमिल किताब "साबिक़ा और मौजूदा मुसलमान उम्मतों का माज़ी, हाल और मुस्तक़्बिल और मुसलमानाने पाकिस्तान की ख़ुसूसी ज़िम्मेदारी" के मुक़द्दमे में कहते हैं:

"बैनुल अक़्वामी हालात जिस तेज़ी के साथ तबदील हो रहे हैं और तारीख़ जिस बर्क़ रफ़तारी से करवटें बदलने लगी है, इसके पेशे नज़र मुल्क व मिल्लत का दर्द रखने वाला हर शख़्स यह सोचने पर मजबूर रहे कि उम्मते मुस्लिमा और इस्लाम का मुस्तक़्बिल क्या होगा? बादीयुन्नज़र में तो यही दिखाई देता है कि इस्लाम मुख़ालिफ़ तमाम कुव्वतें अब वाहिद सुपर पावर अमरीका जिसे एक एतिबार से "सुप्रीम पावर" कहना भी ग़लत न होगा, के झंडे तले मुसलमानों और इस्लाम के ख़िलाफ़ मुत्तहिद हो चुकी हैं और सितम ज़रीफ़ी यह

कुव्वत व ताक़त के नशे में सरशार इस सुपर पावर के सर पर "यहूदी" सवार है जिस की मुसलमान दुश्मनी मुहताजे बयान नहीं। इस तनाज़ुर में साफ़ नज़र आता है कि उम्मत का मुस्तक़्बिल निहायत तारीक है और शदीद अंदेशा है कि दज्जाली फ़ित्ने का यह सैलाब मुसलमानों को ख़स व ख़ाशाक की तरह बहा कर ले जाएगा।" (स0: 3)

इसी किताब में आगे चलकर अपने तअस्सुरात का खुलासा यूं बयान करते हैंः

"हाल ही में एक और कामयाबी उन्हें ख़लीज की जंग के बाद हासिल हुई है और वह यह कि फ़लस्तीनियों समेत तमाम अरब मुमालिक ने इस्राईल को इस हद तक तों तसलीम कर ही लिया कि उसके साथ मुज़ाकरात की मेज़ पर बैठने के लिये तैयार हो गए। अब ज़ाहिर है कि उनकी आख़िरी मंज़िले मक़्सूद "दो चार हाथ जबकि लबे बाम रह गया!" की मिस्दाक़ कामिल बन चुकी है और वह है अज़ीम तर इस्राईल का क़्याम और हैकले सुलैमानी की तामीरे नो। इस आख़िरी मंज़िल तक पहुंचने के लिये यहूद का साज़िशी ज़ेहन ऐसी तदाबीर इख़्तियार करेगा कि "मुस्लिम फ़ंडामेंटलिज़्म" का हव्वा दिखाकर मग़रिब की ईसाई दुनिया को मुसलमानों खुसूसन अरबों से लड़वा दे। चुनांचे यही सिलसिलए "मलाहम" का असल पसमंज़र होगा और इसके ज़िम्न में जब इस्राईली यहूदी देखेंगे कि हज़रत मेहदी की क़्यादत में मुसलमानों का पलड़ा भारी होने लगा है तो कोई इस्राईली लीडर "أنا المسيح" का नारा लगाकर मैदान में कूद जाएगा। चुनांचे यही "अलमसीहुद्दज्जाल" होगा जिसके हाथों मुसलमानों को शदीद हज़ीमत उठानी पड़ेगी और एक बार तो अज़ीम तर इस्राईल कायम हो ही जाएगा। यह दूसरी बात है कि फिर अल्लाह तआला असल हज़रत मसीह अलै0 को भेज कर यहूदियों का क़ला क़मा कर देगा और वही अज़ीम तर इस्राईल उनका अज़ीम तर

क़ब्रिस्तान बन जाएगा। "وَمَا ذَالِكَ عَلَى اللّٰه بِعَزِيز!!!" (स0: 130)

इन दर्जन भर हवालों में जो बात मुश्तरक है वह यह कि इस मौज़ू से दिलचस्पी रखने वाले अरब व अजम के अह्ले इल्म अब इस वक़्त को कुछ ज़्यादा दूर नहीं समझते। इन सबका विज्दान, शुऊर और इदराक यह कहता है कि उम्मत को इस मुश्किल वक़्त के लिये खुद को तैयार कर लेना चाहिये जो इंतिहाई ख़ौफ़नाक फ़ित्नों को अपने जल्व में लेकर अंक़रीब उन पर आ पड़ने वाला है। एक आफ़त का हत्मी वक़्त मालूम हो तो उसकी तैयारी इतनी मुश्किल नहीं जितना कि उस चीज़ की जो क़रीब आकर दूर चली जाए और फिर दूर रहकर क़रीब दिखाई दे। अल्लाह तआला उम्मते मुस्लिमा के क़ुलूब को ख़ैर की क़बूलियत की सलाहियत दे और उसे हक़ के दिफ़ा व ग़ल्बे के लिये जान माल लुटाने की तौफ़ीक़े आम अता करे।

وآخر دعوانا ان الحمد لله ربّ العالمين۔

करना क्या चाहिये?

यहां पहुंचकर इंसान का ईमान और ज़मीर उस से पूछता है: "अब करना क्या चाहिये?"

हमारे सबसे बड़े और सच्चे ख़ैरख़्वाह जनाब नबी करीम सल्ल0 ने अपनी सच्ची अहादीस में हमें इस ख़तरनाक दौर में अपने दिफ़ाअ और इक़्दाम के हवाले से कुछ नसीहतें इर्शाद फ़रमाई हैं। हमारे लिये इनसे बढ़कर तो कोई चीज़ ढाल या हथियार नहीं हो सकती। हम पहले रूहानी तदाबीर को ज़िक्र करेंगे। उसके बाद इनकी अस्रे हाज़िर पर तत्बीक़ करते हुए कुछ तज़वीराती तदाबीर पेश करेंगे। फ़ित्नए दज्जाल से इन दो क़िस्म की तदाबीर के बग़ैर नहीं बचा जा सकता। लेकिन इन तदाबीर के तज़किरे से पहले इनका ख़ुलासा समझ लीजिये तो बेहतर होगा।

फ़ित्नए दज्जाले अक्बर के तीन मुख़्तलिफ़ मरहले हैं: शदीद, अशद्द और नाक़ाबिले तहम्मुल अशद्द। उम्मते मुस्लिमा इस वक़्त पहले मरहले (शदीद) में दाख़िल हो चुकी है। दूसरे व तीसरे मरहले (अशद्द और नाक़ाबिल तहम्मुल अशद्द) का इसे अंक़रीब सामना

है। इन तमाम मराहिल से सरखुरूई के साथ निमटने और पूरी बनी नोअ् आदम को नजात व कामियाबी से हमकिनार करने का एक ही तरीक़ा है और वह है "जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह"......जिहाद से मुराद एलाए कलिमतुल्लाह के लिये क़िताल फ़ी सबीलिल्लाह है। इसके अलावा कोई तदबीर कोई हीला कारगर नहीं हो सकता। बाक़ी सब चीज़ें तालीम व तबलीग़, सियासत, तहरीक, इल्म व टेक्नालोजी उसके ताबेअ् और मातहत हों तो ख़ैर ही ख़ैर हैं......लेकिन इससे लातअल्लुक़ी और किनारा कशी की क़ीमत पर तो यह सब ग़ैर मुअस्सिर हैं। आज तक मुसलमानों की तरक़्क़ी व कामयाबी का राज़ यही रहा है और आइंदा भी अल्लाह का क़ानून तबदील नहीं हो सकता। अस्रे हाज़िर के मुसलमानों का सब से बड़ा मसला यह है कि वह मग़रिब की हैरानकुन माद्दी तरक़्क़ी का मुक़ाबला उतनी ही माद्दी ताक़त हासिल करके करना चाहते हैं......जबकि यह मुम्किन नहीं है। इस मैदान में मग़रिब हमसे इतना आगे है कि उसका तआक़ुब खेलों में भी मुम्किन नहीं, ज़िंदगी की अमली हक़ीक़तों में ऐसा कहां मुम्किन होगा? पिछले ओलम्पिक गेम्ज़ (बीजिंग 2008ई0) में पाकिस्तान ज़ोर लगाकर भी एक तमग़ा नहीं जीत सका। पूरा आलमे इस्लाम मिलकर भी लातीनी अमरीका के एक छोटे से मुल्क "जमैका" जितने तमग़े नहीं जीत सका। दुबई की एक शहज़ादी को जूडो कराटे का शौक़ चढ़ आया लेकिन जब पहला ही मुक़ाबला जुनूबी कोरिया की चैम्पियन से पड़ा तो यह शौक़ महंगा पड़ा। तो जब खेलों में यह हाल है हुज़ूर! तो आप रहते किस दुनिया में हैं कि मग़रिब से मत्था लेने चले हैं......अलबत्ता मैदान में पंजा लड़ाने का मुक़ाबला हो तो मग़रिब हमसे नहीं निकल सकता। जिस तरह आलमे इस्लाम के तीस चालीस मुल्क मिलकर एक छोटे से अमरीकन मुल्क से नहीं जीत सकते, उसी तरह "अज़ीम तरीन अमरीका" चालीस मुल्कों को साथ लेकर निहत्ते तालीबान के आगे बेबस है। ऐ

मुसलमानो! अल्लाह के लिये सोचो! आंखों से देखने के बाद क्या बाक़ी रह जाता है। अब तो समझ लो! अब तो मान लो! तालीम व टेक्नोलोजी के बलबूते पर दुनिया के तरक़्क़ी याफ़्ता मुल्कों में से किसी एक का मुक़ाबला तुम न कर सके लेकिन जिहाद के मुबारक अमल की बदौलत दुनिया के पसमांदा तरीन मुल्क के ग़ैर मुनज़्ज़िम मुजाहिदीन ने दुनिया के तमाम सुपर पावर्ज़ और मिनी सुपर पावर्ज़ को वक़्त डाला हुआ है। यह क्या करिश्मा है? तरक़्क़ी का यह कैसा कारआमद गुर है जो हुज़ूर सल्ल0 हमें सिखा कर गए हैं? ज़ेल में ज़िक्र की जाने वाली सारी तदबीरें इसी एक नुक्ते के गिर्द घूमती हैं।

रूहानी तदाबीर

अल्लाह तआला जो बीमारी नाज़िल करता है, उसका इलाज भी बताता है। अहादीस में जिस तरह आख़िर ज़माने के फ़ित्नों और ख़ूरेज़ मअरकों की तफ़सील बयान हुई है उसी तरह उनसे नजात की राहों की भी उतनी दक़ीक़ तफ़सील है कि कोई चीज़, कोई तदबीर बाक़ी नहीं छोड़ी गई। नबी करीम सल्ल0 ने हमारे लिये हर आने वाले फ़ित्ने और वाक़िए के बारे में मालूमा छोड़ी हैं......लेकिन जिस तरह आख़िरी ज़माने के फ़ित्नों और उनमें होने वाली हलाकतों के बारे में अहादीस और आसार ग़ैर मअरूफ़ हैं और लोगों की नज़रों से ओझल हैं। हमें इस मौक़े पर अकाबिर उलमाए अह्ले हक़ का शुक्रगुज़ार होना चाहिये कि वे हमें इनसे आगाह करते और मुत्तला रखते हैं। उनकी यह कोशिश न हो तो हमारी जहालत और बेहिसी हमें ले डूबे।

राहे नजात के बारे में नबी करीम सल्ल0 की हिदायात रास्ते के रौशन निशानात हैं जिनकी रौशनी में इंसान आने वाले फ़ित्नों की तारीकियों में मंज़िल तलाश कर सकता और मुहलिक व ख़ूँरेज़ मअरकों में नजात हासिल कर सकता है। ज़ेल में अहादीस की

रौशनी में वह हिदायात दर्ज की जाती हैं। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें इन पर अमल की तौफ़ीक़ दे और हमें छोटे बड़े, ज़ाहिरी और बातिनी हर तरह के फ़ित्नों से बचाए। आमीन।

पहली हिदायतः

आख़िरी ज़माना के फ़ित्नों और हादसात के बारे में जानना और उनसे बचने के लिये नबवी हिदायात सीखना और उन पर अमल करना हर मुसलमान पर लाज़िम है। इनका ख़ुलासा यह है कि अल्लाह पर यक़ीन को मज़बूत किया जाए, अपने रब के साथ मज़बूत बुन्यादों पर तअल्लुक़ात उस्तवार किये जाएं, दीन के लिये फ़िदाइय्यत और फ़नाइय्यत का जज़्बा पैदा किया जाए और फ़ित्नों के हवाले से हदीस शरीफ़ में बयान की जाने वाली नसीहतों का आख़िरी तदबीर समझ कर उन पर सख़्ती से अमल किया जाए। क्योंकि ये फ़ित्ने किसी को भी मुतअस्सिर किये बेग़ैर नहीं छोड़ेंगे। जो उन को पहले से जानता होगा बच जाएगा और जिस का ईमान क़वी होगा और अल्लाह पर यक़ीन पुख़्ता होगा वह कामयाब हो जाएगा।

दूसरी हिदायतः

हर मुसलमान पर लाज़िम है कि दिल की गहराइयों से अल्लाह तआला से दुआ करे कि अल्लाह तआला उसे फ़ित्नों का शिकार होने से बचाए और हक़ की मदद के वक़्त बातिल वालों के साथ खड़े होने के अज़ाब से महफ़ूज़ रखे।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल0 ने फ़रमायाः "फ़ित्नों के दर्मियान सब से ज़्यादा ख़ुशनसीब वह होगा जो छिपा रहे और पाक व साफ़ रहे। अगर सामने आए तो कोई उसे पहचान न सके और अगर सामने न हो तो कोई उसका हाल अह्वाल न पूछे। और लोगों में सब से ज़्यादा बदनसीब वह ख़तीब होगा जो बुलंद आवाज़ से फ़सीह व बलीग़ ख़ुत्बा देगा और वह सवार होगा

जो सवारी को तेज़ दौड़ने पर मजबूर करेगा। इन फ़ित्नों के शर से वही नजात पाएगा जो समंदर में डूबने वाले की तरह ख़ुलूस से दुआ मांगेगा।''

लिहाज़ा हर साहबे ईमान पर अव्वलन तो यह लाज़िम है कि दिल को बातिनी गंदगियों से पाक करे और उसे रियाकारी व शह्वत परस्ती, बुख़्ल व तकब्बुर और हसद व हिर्स जैसे अमराज़ से साफ़ करे। ये बीमारियां दिलों को मुर्दा कर देती हैं और ऐसे लोग फ़ित्नों के दौरान इस्तिक़ामत नहीं दिखा पाते। नुमूद व नुमाइश की चाहत, क़द्र व मंज़िलत की तमन्ना सरासर बदनसीबी है और अपने आप को दूसरों से बड़ा समझना, दूसरों की तरक़्क़ी पर जलना, अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के बजाए मज़ीद की हिर्स करना तबाही का बाइस है। फिर इसके बाद उसे चाहिये कि गिड़गिड़ाकर ख़ुलूस के साथ ऐसे दिल से दुआ मांगे जो दर्द में डूबा हुआ हो। ऐसी दुआ जो समंदर में डूबने वाला मांगता है। यह दुआ उसके दिल व दिमाग़ से बल्कि उसके हर हर अज़्व और हर बाल की जड़ से निकल रही हो। यही दुआ वह ढाल है जो फ़ित्नों में काम आएगी। ये दुआएं पाबंदी के साथ मांगना चाहिये जैसा कि ख़ुद हुज़ूर सल्ल0 उम्मत को फ़ित्नों से बचने का तरीक़ा सिखाने के लिये मुख़्तलिफ़ फ़ित्नों का नाम लेकर दुआ मांगा करते थे।

तीसरी हिदायतः

उन तमाम गिरोहों और नित नई पैदा शुदा जमाअतों से अलग रहना जो उलमाए हक़ और मशाइख़े इज़ाम के मुत्तफ़क़ा और मअरूफ़ तरीक़े के ख़िलाफ़ हैं और अपनी जिहालत या ख़ुद पसंदी की वजह से किसी न किसी तरह की गुमराही में मुब्तला हैं।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि0 की रिवायत हैः ''एक वक़्त आएगा कि मुसलमानो का बेहतरीन माल वे भेड़ बकरियां होंगी जिनको लेकर वह पहाड़ की चोटी और बारिश के मक़ामात पर चला

जाएगा ताकि वह अपने दीन को लेकर फ़ित्नों से भाग जाए।" इस हदीस की तशरीह करते हुए अल्लामा इब्ने हजर ने अपनी मशहूर तसनीफ़ "फ़त्हुल बारी" में लिखा है: "सलफ़े सालिहीन में इस बारे में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है कि फ़ित्नों के ज़माने में साहबे ईमान आदमी आलिम लोगों से किनारा कश होकर अलाहिदगी इख़्तियार करे या ना? बाज़ हज़रात ईमान बचाने के लिये गोशा नशीनी या पहाड़ों में निकल जाने की इजाज़त देते हैं और बाज़ फ़रमाते हैं कि शहरों में रहकर फ़ित्नों के ख़िलाफ़ डट जाना चाहिये......लेकिन यह इख़्तिलाफ़ उस सूरत में है जब फ़ित्ना आम न हो, लेकिन अगर फ़ित्ना आम हो जाये तो फिर फ़ित्नाज़दा लोगों से अलाहिदगी और तन्हाई को तर्जीह दी गई है।" यानी क़ाबिले बर्दाश्त हालात में इंसान को मुआशरे के दर्मियान ही रहना चाहिये और इनके ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद करनी चाहिये......अलबत्ता जब फ़ितनों का ऐसा ज़ोर हो कि अपना ईमान बचाना मुश्किल हो जाए तो फिर अज़ाबे इलाही आने से पहले गुनाहों भरे मुआशरे से अलग हो जाना चाहिये।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमायाः "ऐ अब्दुल्लाह बिन उमर! अगर तू अदना दर्जे के लोगों के दर्मियान रह गया तो फिर क्या करेगा? ये वे लोग होंगे जिन्होंने अपने अहद व पैमान और अमानतों को ज़ाए कर दिया, फिर वे ऐसे हो गए।" और आप सल्ल0 ने हाथों से इशारा करते हुए अपनी उंगलियों को आपस में पैवस्त कर लिया। उन्होंने पूछाः "ऐसे वक़्त मेरे लिये क्या हुक्म है?" आप सल्ल0 ने फ़रमायाः "आम लोगों को छोड़कर ख़ास लोगों के साथ मिल जाना।"

हमारे ज़माना में अहद व पैमान का कोई ख़्याल नही रखता। लोग वादे करके साफ़ मुकर जाते हैं। यहां तक कह देते हैं: "यह कोई कुर्आन व हदीस थोड़ी ही है।" अमानतों का कोई ख़्याल नहीं रखता। ख़यानत और करपशन आम है और सिवाए उनके जिन पर

अल्लाह की रहमत है, सब के मिज़ाज बिगड़ चुके हैं। ये ख़राबियां मज़ीद बढ़ती जाएंगी और अंक़रीब एक ऐसा वक़्त आएगा कि अवाम में रहना अपनी आख़िरत को बर्बाद करने के मुतरादिफ़ होगा। अल्लाह वाले ख़्वास (उलमा व मशाइख़, इस्लाही हल्के मदारिस, ख़ान्काह) की सोहबत के अलावा कोई जाएपनाह न होगी।

चौथी हिदायतः

जब हज़रत मेहदी का ज़ुहूर हो तो उनके ख़िलाफ़ निकलने वाले लशकर में कोई साहबे ईमान हर्गिज़ शामिल न हो, बल्कि हज़रत मेहदी की बैअत में (जब उनको अहादीस में बयानकर्दा अलामात के मुताबिक़ पाए) जल्दी करे।

पहले बताया जा चुका है कि जो बदनसीब लशकर हज़रत मेहदी के साथ लड़ने के लिये पहले पहले जाएगा वह कुफ़्फ़ार का नहीं, मुसलमानों का लशकर होगा। उनमें से कुछ तो ऐसे होंगे जिनको लड़ाई पर मजबूर किया गया होगा लेकिन कुछ इरादतन सोच समझ कर लड़ने के लिये आएंगे। यह वह नाम निहाद मुसलमान होंगे जो "फ़िक्री इर्तिदाद" का शिकार हो चुके होंगे और उनको हज़रत मेहदी के रुफ़क़ा, दहशतगर्द, शिद्दत पसंद, बुनियाद परस्त वग़ैरा नज़र आ रहे होंगे। इन सबको ज़मीन में धंसा दिया जाएगा। फिर इनका हश्र अपनी अपनी नियतों के मुताबिक़ होगा। हर मुसलमान इसकी एहतियात करे कि उसका ख़ातमा इस मनहूस तरीक़े से नहीं होना चाहिये। अल्लाह के रसूल सल्ल0 फ़रमाते हैं: पनाह लेने वाला [यानी हज़रत मेहदी] बैतुल्लाह में पनाह लेगा, उसकी तरफ़ फ़ौज भेजी जाएगी। जब वह बयाबान (खुले मैदान) में पहुंचेगा तो ज़मीन में धंस जाएगी।"

जब हज़रत मेहदी के ज़ुहूर की इत्तिला मिले और उनमें सच्चे मेहदी की अलामात पाई जाएं जो पीछे बयान हो चुकी हैं तो उनकी मुख़ालिफ़त के बजाए उनके हाथ पर जिहाद की बैअत में सब्क़त ले

जाने की कोशिश की जाए। उस ज़माने में हर मुसलमान पर वाजिब होगा कि हज़रत मेहदी के हल्कए मुजाहिदीन में शामिल होकर एलाये कलिमतुल्लाह के लिये अल्लाह के रास्ते में अपनी जान व माल पेश करे। हज़रत मेहदी की पहचान का एक ज़रीआ तो वे अलामात हैं जो अहादीस में बयान हुईं। दूसरा ज़रीआ अमीरे जिहाद की सच्ची तलब है। उसकी बरकत से भी अल्लाह मदद करेगा, दिल में ख़ैर का इल्क़ा करेगा और सच्चे मेहदी और उनके साथियों की पहचान हो जाएगी, वर्ना जिनको तलब न होगी वे अलामात देखकर भी उनका साथ न देंगे बल्कि घरों में बैठे बैठे उलमा, तालिबान और मुजाहिदीन पर तब्सिरे करते रहेंगे। इस्लाम की सरबुलंदी के लिये अमीरे जिहाद की सच्ची तलब और जुस्तजू आख़िरी ज़माने के लोगों के लिये सआदत की अलामत और आख़िरत का सरमाया साबित होगी।

आप सल्ल0 फ़रमाते हैं: "जब तुम उसे देखो तो उसकी बैअत करो, ख़्वाह तुम्हें बर्फ़ पर से घुटनों के बल चल कर आना पड़े, क्योंकि वह अल्लाह का ख़लीफ़ा मेहदी होगा।"

पांचवीं हिदायतः

अमरीका और मग़रिबी मुमालिक के गुनाहों भरे शहरों के बजाए हरमैन, अर्ज़े शाम, बैतुल मुक़द्दस वग़ैरा में रहने की इम्कानी हद तक कोशिश करना। ख़ूनी मअरकों में ज़मीन के यह ख़ित्ते अहूले ईमान की जाए पनाह हैं। दज्जाल इनमें दाख़िल न हो सकेगा।

नुऐम बिन हम्माद ने किताबुल फ़ितन में रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमायाः "बेशक दज्जाल चार मस्जिदों, मस्जिदे हराम, मस्जिदे नबवी, मस्जिदे तूर सीना और मस्जिदे अक़्सा के सिवा हर घाट पर पहुंचेगा।"

छटी हिदायतः

पाबंदी से तसबीह व तहमीद और तहलील व तक्बीर की आदत डाली जाए। (ये चारों चीज़ें तीसरे कलिमे में मौजूद हैं) जिसको ज़िक्र

की लज़्ज़त से आशनाई होगी, उनको ज़िक्र से ऐसा मज़ा आएगा कि खाने पीने से बेनियाज़ हो जाएंगे। दज्जाल के फ़ित्ने के उरूज के दिनों में जब वे मुख़ालिफ़ीन पर ग़िज़ाई पाबंदियां लगाएगा, उन दिनों ज़िक्र व तसबीह ग़िज़ा का काम देगा। लिहाज़ा हर मुसलमान सुबह शाम मसनून तसबीहात (दरूद शरीफ़, तीसरा या चौथा कलिमा और इस्तिग़फ़ार) की आदत डाले और सूरह कहफ़ की इब्तिदाई या आख़िरी दस आयतें याद करके उनके विर्द का मामूल बनाए। दज्जाल के फ़ित्नों के दिनों में यह चीज़ निहायत बरकत वाली और रूहानी दवा के साथ जिस्मानी ग़िज़ा भी साबित होंगी।

एक अज़ीमुश्शान हदीस में जिसे हज़रत अबू उमामा रज़ि0 ने हमारे लिये रिवायत किया है, इसमें अल्लाह के रसूल सल्ल0 हमें सिखाते हैं कि दज्जाल के ज़माना में हम भूक और प्यास का कैसे सामना करें? रावी कहता है पूछा गयाः "ऐ अल्लाह के रसूल! (सल्ल0) उन दिनों कौनसी चीज़ लोगों के लिये हयात बख़्श होगी?" आप सल्ल0 ने फ़रमायाः "तसबीह (सुब्हानल्लाह कहना), तमहीद (अलहम्दु लिल्लाह कहना), तक्बीर (अल्लाहु अक्बर कहना) खाने पीने की जगह उनके अंदर सरायत कर जाएगी।"

यह हदीस लोगों को ज़ेहन नशीन कर लेनी चाहिये और इसे अपने अमल की बुन्याद बनाना चाहिये। दज्जाल के ज़माना में इस हदीस से भूक और प्यास के फ़ित्ने का सामना किया जा सकता है। पस आज से अल्लाह के ज़िक्र और क़ुर्आन मजीद की तिलावत का मामूल बनाएं। अभी से "क़्यामुल लैल" (रात को उठ कर नमाज़ पढ़ने और ज़िक्र व वज़ाएफ़) की आदत डालें। दज्जाल के ज़माना में यह आदत ऐसे ख़ुशनसीबों के लिये आबे हयात साबित होगी।

सातवीं हिदायतः

सूरह कहफ़ की तिलावतः

एक मशहूर हदीस जो अबू दाऊद, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, नसाई,

अहमद, बैहक़ी वग़ैरा जैसे अज़ीम मुहद्दिसीन की किताबों में पाई जाती है, में बयान किया गया है कि दज्जाल के फ़ित्ने से जो महफ़ूज़ रहना चाहता हो उसको चाहिये कि सूरह कहफ़ की इब्तिदाई या आख़िरी दस आयतों की तिलावत करे। इसकी तिलावत दज्जाल के फ़ित्ने में मुब्तला होने से बचा लेती है। इसमें कुछ ऐसी तासीर और बरकत है कि जब सारी दुनिया दज्जाल की धोका बाज़ियों और शोबदा तराज़ियों से मुतअस्सिर होकर उसकी ख़ुदाई तक तसलीम कर चुकी होगी, इस सूरत की तिलावत करने वाला अल्लाह की तरफ़ से ख़ुसूसी हिसार में होगा और यह दज्जाली फ़ित्ना उसके दिल व दिमाग़ को मुतअस्सिर न कर सकेगा। मुस्तनद रिवायतों में यह भी है कि जो बंदा जुमा के दिन सूरह कहफ़ पढ़ता है वह अगले जुमा तक नूर और रौशनी में रहता है। बाज़ रिवायतों में है कि इस जुमा से आईंदा जुमा तक उसके गुनाह बख़्श दिये जाएंगे। यह भी है कि सूरह कहफ़ जिस घर में पढ़ी जाती है, उसमें शैतान दाख़िल नहीं होता। दज्जालियात के मुहक़्क़िक़ मौलाना मनाज़िर अहसन गीलानी साहब अपनी किताब "फ़ित्नए दज्जाल के नुमायां ख़द व ख़ाल" में फ़रमाते हैं:

"मुसलमानों का आम दस्तूर भी है कि उनमें मुत्तक़ी और परहेज़गार लोग हर जुमा को सूरह कहफ़ ज़रूर तिलावत करते हैं। मस्जिदों में इसी लिये इस सूरत के मुतअद्दिद नुस्ख़ों के रखने का आम रिवाज है। साहबे ख़ैर लोगों को यह भी करना चाहिये कि सूरह यासीन की तरह सूरह कहफ़ के मुस्तनद नुस्ख़े भी छपवाकर मसाजिद में रखवाए जाएं।" (स0: 15)

मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी साहब सूरह कहफ़ और दज्जाल के तअल्लुक़ पर लिखी जाने वाली अपनी तहक़ीक़ी किताब "मअरकए ईमान व माद्दियत" में फ़रमाते हैं: "जुमा के रोज़ जिन सूरतों के पढ़ने का शुरू से मामूल है, उनमें सूरह कहफ़ पढ़ने और उसको याद करने की तरग़ीब दी गई

है। इसको दज्जाल से हिफ़ाज़त का ज़रीआ बताया गया है। मैंने अपने दिल में सोचा कि क्या इस सूरत में वाक़ई ऐसे मआनी व हक़ाएक़ और ऐसी तंबीहें या तदबीरें हैं जो इस फ़ित्ना से बचा सकती हैं जिस से रसूलुल्लाह सल्ल0 ने खुद बार बार पनाह मांगी है और अपनी उम्मत को भी उससे पनाह मांगने की सख़्त ताकीद फ़रमाई है और जो सब से बड़ा आख़िरी फ़ित्ना है जिसके बारे में हुज़ूर सल्ल0 का इर्शाद है: "مَا بَيْنَ خَلْقِ آدَمَ إِلَى قِيَامِ السَّاعَةِ أَمْرٌ أَكْبَرُ مِنَ الدَّجَّالِ۔" (आदम की पैदाइश से क़्यामत तक दज्जाल से बड़ा कोई वाक़िआ नहीं है।) मैंने सोचा कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने (जो किताबुल्लाह और इसके असरार व उलूम से सब से ज़्यादा वाक़िफ़ थे) क़ुर्आन की सारी सूरतों में आख़िरी सूरत का इंतिख़ाब क्यों फ़रमाया है? मुझे महसूस हुआ कि मेरा दिल उस राज़ तक पहुंचने के लिये बेताब है। मैं यह जानना चाहता था कि इस ख़ुसूसियत का सबब क्या है और इस हिफ़ाज़त और बचाव का जिसकी ख़बर रसूलुल्लाह सल्ल0 ने दी है, सूरत से क्या मअनवी तअल्लुक़ है? क़ुर्आन मजीद में छोटी बड़ी (क़िसारे मुफ़स्सल और तिवाले मुफ़स्सल) हर तरह की सूरतें मौजूद थीं। क्या वजह है इन सबको छोड़कर इस सूरत का इंतिख़ाब क्या गया? और यह ज़बरदस्त ख़ासियत इसी सूरत में रखी गई। मुजमलन मुझे इसका यक़ीन हो गया कि यह सूरत क़ुर्आन की ज़रूर ऐसी मुंफ़रिद सूरत है जिस में अह्द आख़िर के उन तमाम फ़ित्नों से बचाव का सबसे ज़्यादा सामान है जिसका सब से बड़ा अलमबरदार दज्जाल है। इसमें इस तिर्याक़ का सबसे बड़ा ज़ख़ीरा है जो दज्जाल के पैदा कर्दा ज़हरीले असरात का तोड़ कर सकता है और उसके बीमार को मुकम्मल तौर पर शिफ़ायाब कर सकता है। अगर कोई इस सूरत से पूरा तअल्लुक़ पैदा कर ले और इसके मआनी को अपने दिल व जान में उतार ले (जिसका रास्ता इस सूरत का हिफ़्ज़ और कसरते तिलावत है) तो वह इस अज़ीम

और क़्यामतख़ेज़ फ़ित्ना से महफ़ूज़ रहेगा और इसके जाल में हर्गिज़ गिरिफ़्तार न होगा।

इस सूरत में ऐसी रहनुमाई, वाज़ेह इशारे बल्कि ऐसी मिसालें और तसवीरें मौजूद हैं जो हर अहद में और हर जगह दज्जाल को नामज़द कर सकती हैं और इस बुन्याद से आगाह कर सकती हैं जिस पर इसका फ़ित्ना और इसकी दावत व तहरीक क़ायम है। मज़ीद बरआं यह कि यह सूरत ज़ेहन व दिमाग़ को इस फ़ित्ना के मुक़ाबला के लिये तैयार करती है। इसके ख़िलाफ़ बग़ावत पर उक्साती है। इसमें एक ऐसी रूह और इस्प्रिट है जो दज्जालियत और उसके अलमबरदारों के तर्ज़े फ़िक्र और तरीक़ए ज़िंदगी की बड़ी वज़ाहत और कुव्वत के साथ नफ़ी करती है और उस पर सख़्त ज़र्ब लगाती है।" (स0: ३)

लिहाज़ा अह्ले ईमान को चाहिये कि या तो पूरी सूरह कहफ़ हिफ़्ज़ कर लें या कम अज़ कम उसकी पहली दस या आख़िरी दस आयात (या दोनों) याद कर लें ताकि दज्जाल के ख़ुरूज के वक़्त उनकी तिलावत हर एक के लिये मुम्किन हो। याद रहे कि आख़िरी दस आयात से वह नौ आयतें मुराद हैं जो इस सूरत के आख़िरी रुकू में आती हैं। इन नौ आयात को मजाज़न व तग़लीबन दस कह दिया जाता है। इन आयात में ऐसी कुदरती तासीर है कि ऐसे लोगों को दज्जाल कोई नुक़्सान न पहुंचा सकेगा और दज्जाली फ़ित्ने के ज़ुहूर से पहले इन आयात के विर्द का फ़ाइदा होगा कि दज्जाली कुव्वतों के मन्फ़ी प्रोपेगन्डे का असर इंसान के दिल व दिमाग़ और ईमान व अमल पर कम से कम होगा। इब्ने ख़ुज़ैमा का क़ौल है: "मैंने अबुलहसन अत्तनाफ़ुसी को कहते सुना फ़रमा रहे थे, मैंने अब्दुर्रहमान अलमहारबी को कहते सुना: "इस हदीस को (यानी जिस में जुमा के दिन सूरह कहफ़ पढ़ने की तरग़ीब दी गई है) हर उस्ताद के तरबियती निसाब में शामिल करना चाहिये ताकि वह मक्तब के तमाम बच्चों

को सिखा दे।" अंदाज़ा कीजिये इतने ज़माना पहले हमारे अकाबिर को फ़ित्नों से बचने का इस क़दर एहतिमाम था। आज हम फ़ित्नों के भंवर में फंसे हाथ पावं मार रहे हैं और मज़ीद अज़ीम फ़ित्ने हमाने सर पर खड़े हैं......हमें तो इन चीज़ों का बहुत एहतिमाम करना चाहिये। बिलग़र्ज़ अगर हक़ीक़ी अज़ीम फ़ित्ने हमारे दौर में ज़ाहिर न हुए तो इन आयात की बर्कत हमें झूटे दज्जालों के झूटे प्रोपेगन्डा से और उनकी मीडिया वार से ज़रूर महफ़ूज़ रखेगी और उन जरासीम से बचा लेगी जो दज्जाली फ़ित्ने में मुब्तला होने की सब से बड़ी अलामत यानी "फ़िक्री इर्तिदाद" को जन्म देती हैं।

आठवीं हिदायतः

इराक़ में दरयाए फ़ुरात का पानी रुकने से उसकी तह से जो सोना बरआमद होगा, उसकी लालच कोई मुसलमान न करे।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 का फ़रमान हैः "क़रीब है की फ़ुरात के सोने के पहाड़ से पीछे हट जाए। चुनांचे जो भी उस वक़्त मौजूद हो उसमें से कुछ भी न ले। एक और रिवायत में हैः "इस पहाड़ पर मुसलमान एक दूसरे से दस्त व गिरेबान होंगे तो सौ में से निन्नानन्वे क़त्ल हो जाएंगे और उनमें से हर आदमी कहेगाः "हो सकता है कि मैं बच जाऊं।"

खुलासा यह कि हर मुसलमान हिर्स व हवस और तम्अ़ व लालच के बजाए इंफ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह का मिज़ाज बनाये और लेने और लूटने के बजाए देने और लुटाने की आदत डाले......वर्ना दुन्यावी हिर्स कहीं का न छोड़ेगी।

तज़्वीराती तदाबीर

रूहानी तदाबीर के बाद अब हम ज़ाहिरी असबाब के तहत की जाने वाली अम्ली तदाबीर की तरफ़ आते हैं। फ़ित्नए दज्जाले अक्बर और दज्जाली निज़ाम का मुक़ाबला करने की तदाबीर और हज़रत

मेहदी व हज़रत ईसा अलै0 का इस्तिक़्बाल करने के लिये की जाने वाली तैयारी के बुन्यादी खुतूते कार दर्जे ज़ेल होंगे:

(1) सहाबा किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम अजमईन जैसे मलकूती अख़्लाक़ फैलाना।

(2) जिहाद को नुक़्तए कमाल पर ले जाना यानी जिहाद को इल्मी व अमली, दाख़िली व ख़ारिजी एतिबार से अमीक़ तर और वसी तर करना।

(3) माल और औलाद के फ़ित्ना में पड़ने से बचने की पूरी पूरी कोशिश करना।

(4) जिंसी बेराह रवी को मुम्किना हद तक कम से कम करने के लिये पूरी कोशिश सर्फ़ करना।

(5) ग़िज़ा, लिबास और रिहाइश को कुदरती, फ़ित्री और मसनून सतह पर ले जाना।

इन पांच तदाबीर को इख़्तियार किये बेग़ैर न दज्जाली मैकानिज़्म से बचा जा सकता है न उसको तोड़ा जा सकता है और न उसका मुक़ाबला किया जा सकता है। जो शख़्स इन पांच में से किसी एक चीज़ पर अमल से महरूम है वह इंतिहाई दज्जाली मैकानिज़्म का शिकार या शरीककार है और जो मोमिन फ़र्द, मुआशरा, तन्ज़ीम, तहरीक या हुकूमते दज्जाली मैकानिज़्म का जितना शिकार या शरीक कार है, उसकी बहैसियत मोमिन ख़त्म हो जाने के अंदेशा उसी क़दर ज़्यादा हैं। सूरतुल बक़रा में मज़कूर हज़रत तालूत की जालूत के साथ जंग के वाक़िआ की उम्दा मिसाल सामने रख लीजिये। बनी इस्राईल के लशकर के कम हौसला और बेसब्र सिपाहियों की तरह दज्जाली निज़ाम के बहते दरिया जो जितना पानी पियेगा उसके अंदर दज्जाल से लड़ने की ताक़त उसी क़दर कम हो जाएगी और जो जितना तक़्वा व तहारत इख़्तियार करके शह्वत परस्ती और ऐशपरस्ती से दूर रहेगा उस पर दज्जाली हर्बे उतने ही कम असर अंदाज़ हों।

आइये! इन पांचों तदाबीर की कुछ तफ़सील ज़ेहन नशीन करते हैं।

पहली तदबीर - इत्तिबाए सहाबाः

नबी आख़िरुज़्ज़मा हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने रूए अर्ज़ पर एक अज़ीमुश्शान फ़िक्री, ज़ेहनी, इल्मी और तख़लीकी इस्लाह पर मुशतमिल बेमिसाल इन्क़लाब बरपा किया। और वह इन्क़लाब था "सुन्नते अल्लाह" को "सुन्नते नबवी" की शक्ल में अमलन जारी, सारी और नाफ़िज़ कर देना।

हज़रात सहाबए किराम रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन वह आला तरीन, अरफ़ा तरीन और जामे तरीन अशख़ास हैं जो रूए अर्ज़ पर बरपा होने वाले इस अज़ीमुश्शान फ़िक्री, ज़ेहनी, इल्मी और तख़लीकी रहमानी इन्क़लाब का शाहकार नमूना, उसके दस्त व बाज़ू और उसकी बेमिसाल निशानी थे। रूए अर्ज़ पर बरपा इस अज़ीमुश्शान इन्क़लाब का जो नमूना सहाबए किराम रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन ने पेश किया वह यहूद और उनके बरपा कर्दा दज्जाली निज़ाम के मुक़ाबला और उस पर फ़तह पाने के लिये हमारे पास मौजूद "वाहिद हल" है। सहाबए किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम की तीन सिफ़ात ऐसी हैं जिन्हें अपनाने वाले ही मुस्तक़्बिल क़रीब में बरपा होने वाले अज़ीम रहमानी इन्क़लाब के लिये कारआमद अन्सुर साबित हो सकते हैं। ये तीनों सिफ़ात एक रिवायत में बयान की गई हैं। इनके मुताबिक़ सहाबए किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम अजमईन दिलों की पाकीज़गी, इल्म की हक़ीक़त और तकल्लुफ़ से इज्तिनाब में तमाम उम्मत से ज़्यादा बुलंद मक़ाम पर थे। इन तीनों सिफ़ात की तफ़सील कुछ यूं है:

(1) اَبَــرُّهَــا قُلُوْبــاً (सहाबए किराम के दिल "बिर्र" के आला तरीन मक़ाम पर पहुंच गए थे) "बिर्र" से मुराद है इंसानी दिल का ख़ालिस व मुख़लिस हालत व सूरत में आ जाना, बीमारियों और रूहानी आलाइशों से बिल्कुल पाक साफ़ हो जाना। "आदमियत" का

ऐसी हालत को बाज़याफ़्त कर लेना जो हर तरह की आलूदगी और ख़राबी से पाक हो।

(2) اَعْمَقُهَا عِلْمًا (वह इल्म के एतिबार से उस आलम इम्कान में इल्मियत और हक़ीक़त शनासी की आख़िरी गहराइयों तक पहुंच गए थे।) इल्म की हक़ीक़त हासिल करने, और काइनात यानी आफ़ाक़ व अन्नफ़्स की हक़ीक़त को जान लेने के एतिबार से आलमे इम्कान में जो आख़िरी दर्जा हो सकता है सहाबए किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम उस तक पहुंच गए थे। वह उस इल्मी मक़ाम और बुलंद रूहानी मर्तबे तक पहुंच गए थे जहां तक उनसे पहले अंबिया को छोड़ कर न कोई इंसान पहुंच सका और न आईंदा पहुंच सकता है। याद रखिए! असल इल्म अशया की हक़ीक़त का इल्म है। यह इल्म साइंसी लैबारेट्रियों में पेशाब और ख़ून के तजुर्बे, चूहे और मेंढक पर तजुर्बात से नहीं, नूरे मअरफ़त से हासिल होता है और यह चीज़ सफ़्फ़ा के चबूतरे पर बटती थी। लिहाज़ा जो मिज़ाज नबवी से जितना क़रीब होगा उसे काइनात और उसमें मौजूद अशया व अनासिर की हक़ीक़त का इल्म इंतिहाई ज़्यादा नसीब होगा। मग़रिब के माद्दा परस्त साइंसदानों को इसकी हवा भी नहीं लगी।

(3) اَقَلُّهَا تَكَلُّفًا (वह रूए अर्ज़ पर कम तरीन तकल्लुफ़ के हामिल बनने में कामयाब हो गए।) इससे मुराद है कि सहाबए किराम उस नुक्ता को पा गए कि रूए अर्ज़ पर मक़्सदे रब्बानी की तक्मील करने, निहायत आसानी से यहां की आज़माइशों और इब्तिला से गुज़रने और इब्लीस और दज्जाले अक्बर के मकर व फ़रेब को नाकाम करने के लिये "बेहतरीन राह" यह कि कि इंसान हलाल में तकल्लुफ़ न करे और हराम में मुलव्विस न हो। ऐसा उस वक़्त होगा जब वह अपनी इंफ़िरादी व इज्तिमाई सहूलियात व तअय्युशात को कम से कम सतह पर ले आए। सहूलियात का आदी न बने, जफ़ाकशी इख़्तियार करे। ऐश परस्त न हो, सख़्त जान और

ईसार व कुर्बानी का आदी हो।

अलग़र्ज़! फ़ित्नए दज्जाले अक्बर का मुक़ाबला करने की अहल एक ऐसी "सालेह उम्मत" बनने के लिये......जो एक जानिब अपनी तवानाइयों को यक्सू करके ग़ल्बए इस्लाम की ऐसी तलबगार और सरापा तलब बन जाए कि अल्लाह तआला उसके अंदर हज़रत मेहदी अलै0 जैसी क़्यादत पैदा करें और उसकी हज़रत ईसा इब्ने मरयम से नुसरत करें......और दूसरी जानिब वह हज़रत मेहदी और हज़रत ईसा अलै0 को अपने क़ाइद की तरह क़बूल और जज़्ब कर सके......लाज़िम है कि उम्मते मुस्लिमा इन तीन सिफ़ात को ज़िंदा करके सहाबए किराम जैसे फ़िक्री, ज़ेहनी, इल्मी और तख़्लीक़ी इस्लाह व इर्तिक़ा को फिर से हासिल करे। इसके बेग़ैर न उरूज पर पहुंची हुई मग़रिबी माद्दियत का मुक़ाबला हो सकता है न उसके सहर अंगेज़ सिस्टम की मरऊबियत से निकला जा सकता है।

लिहाज़ा फ़ित्नए दज्जाले अक्बर का मुक़ाबला करने के लिये लाज़िम है कि अह्ले ईमान सहाबा किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम अजमईन की मुबारक सुन्नत पर अमल करते हुए:

☆ ......अपने दिल व दिमाग़ और ज़ुबान व अमल की मुकम्मल इस्लाह की फ़िक्र करें। ज़ाहिर को सुन्नत के मुताबिक़ बनाने और बातिन को नफ़्स की ख़बासतों से पाक करने की कोशिश करते रहें। यह दौलत मदारिस और ख़ानक़ाहों में उलमाए किराम और मशाइख़े इज़ाम की सोहबत की बरकत से मिलती है। किसी सच्चे अल्लाह वाले मुत्तबए सुन्नत बुज़ुर्ग की ख़िदमत में अपने आप को पामाल किये बेग़ैर इंसान के अंदर का अंधेरा ख़त्म नहीं होता और मरते दम तक उसे नफ़्स की गंदगियों और बातिन की आलाइशों से नजात नसीब नहीं होती।

☆ ......रूहानी और रहमानी इल्म की जुस्तजू करें। यह इल्म सच्चे अल्लाह वालों की सोहबत के बेग़ैर हासिल नहीं होता और इस

इल्म के बेग़ैर काइनात और उसमें मौजूद अशया की हक़ीक़त समझ में नहीं आ सकती।

☆ ......बेतकल्लुफ़ी, सादगी और जफ़ाकशी इख़्तियार करें। मग़रिब की ईजाद कर्दा तरह तरह की सहूलियात और तअय्युशात से सख़्ती के साथ बचें। सेहरा, पहाड़, वादी, यख़बस्ता इलाक़ों और तपते सेहराओं में हर तरह के हालात में रहने, खाने, पीने और पहनने की आदत डालें। दौड़ने, तैरने, घुड़सवारी करने, पहाड़ों पर चढ़ने और वर्ज़िशों के ज़रीए ख़ुद को चाक व चौबंद रखने का एहतिमाम करें। तहख़ानों और ग़ारों में रहने से न कतराएं।

मग़रिब की कोशिश है कि मुसलमानों को सहाबियाना सिफ़ात से आरी करके गुनाहों, सहूलत पसंदी और ऐश परस्ती में मुब्तला किया जाए। मल्टी नैशनल कम्पनियां हमें तरह तरह की राहतों, लज़्ज़तों और तअय्युशात में मुब्तला करने के लिये नित नई ईजादात की तशहीर करती हैं। दुगना पैसा भी कमाती हैं और दज्जाल के ख़ारिश ज़दा टिस्टू तैयार करने के लिये मरहले पर भी तेज़ी से अमल कर रही हैं। इंसान अपने जिस्म को राहत पहुंचाने के लिये कहां तक जा सकता है? कितना गिर सकता है? कितनी फ़ुज़ूल ख़र्ची कर सकता है? रूह से तवज्जे हटा कर नफ़्स के फंदों में कितना गिरिफ़्तार हो सकता है? इन चीज़ों का जितना तसव्वुर किया जा सकता है, मल्टी नेशनल कम्पनियों ने इस से आगे की लज़्ज़त परस्तियों को बाक़ाइदा मंसूबे के तहत हक़ीक़त की शक्ल दे रखी है और वह दुनिया को बिलख़ुसूस अह्ले इस्लाम को काहिल, सुस्त, आराम पसंद, ऐश परस्त और इतना लज़्ज़त कोश बनाना चाहते हैं वे फ़ारमी मुर्ग़ियों की तरह किसी काम के न रहें। दज्जाल और दज्जाली फ़ित्नों का मुक़ाबला न कर सकें और यहूद की मंज़िल आसान हो जाए। आप सड़कों के किनारे लगे बड़े बड़े इश्तिहारात पर नज़र डालिये, अशयाए तअय्युश से भरे हुए शापिंग माल्ज़ में चमकदार

दुकानें और चमचमाते शो केस मुलाहिज़ा कीजिये। मुराआत याफ़्ता तबक़ों की लज़्ज़तों, शह्वतों, नवाबी नख़्रों और अमीराना चौंचलों को कभी देखिये। दज्जाली फ़ित्ने में मुलव्विस होने के आसार हर जगह वाज़ेह नज़र आएंगे। इनसे बचकर सादा, जफ़ाकश और बेतकल्लुफ़ ज़िंदगी गुज़ारने वाला ही अपनी सेहत, ईमान और आख़िरत को बचा सकेगा।

दूसरी तदबीर - जिहादः

जिहाद इस्लाम को चोटी पर ले जाने वाली वाहिद सबील और मुसलमानों की तरक़्क़ी का वाहिद ज़ामिन है। यहूद इस हक़ीक़त को खूब जानते हैं। यहूद की कोशिश है कि मुसलमानों के अंदर अज़ खुद पैदा शुदा अज़्मे जिहाद का रुख़ फेर कर उन्हे ग़ैर हक़ीक़ी मैदाने कार फ़राहम कर दिया जाए। यह मैदाने कार बज़ाहिर हक़ीक़ी और मुफ़ीद लेकिन दर हक़ीक़त फ़र्ज़ी और क़त्अन ग़ैर मुफ़ीद हो। रेगूलर हो, सेकूलर क़त्अन न हो। यह Megalothymia मग़रिबी इस्तिलाह में तामीरी हो तख़रीजी न हो। यानी इसके नतीजे में उम्मते मुस्लिमा अपनी मर्ज़ी से हंसी ख़ुशी, फ़िक्री और इल्मी बहस व मुबाहिस व तबादलए ख़्याल करने लगे। उसको अज़ीम कारे ख़ैर तसव्वुर करे। अस्री तालीमी तरक़्क़ी के लिये कोशां हो जाए। मसनून आमाल को ज़िंदगी का जज़्बा बनाने के बजाए इस्लाम को मग़रिबी तहज़ीब से ज़्यादा सूदमंद और कार आमद साबित करने की कोशिश में लगी रहे। इल्मी इदारों, तहक़ीक़ी, ज़ाती और फ़न्नी और माली सलाहियतों के बढ़ाने में ऐसी मशग़ूल हो जाए और उन मैदानों में मग़रिब की तरक़्क़ी तक पहुंचने और उससे आगे निकलने में इतनी मुस्तग़रक़ हो जाए कि उसे जिहाद के ज़रीए हासिल होने वाली बेमिसाल, तेज़ रफ़्तार हो रुबा तरक़्क़ी का ख़्याल ही न रहे। वह मग़रिब का पीछा करते करते सरगर्दां फिरे और अल्लाह रब्बुल आलमीन ने इसको मग़रिब की होश रुबा तरक़्क़ी और हैरानकुन माद्दी ताक़त पर ग़ल्बे

का जो बेबहा नुस्ख़ा दिया है उससे ग़ाफ़िल रहे, उसकी तन्क़ीस करे, तर्दीद का इर्तिकाब करे हत्ता कि "فـرار مـن الزحف" या "تـولى الادبـــار" [जिहाद से पीठ फेर कर दूसरी चीज़ों में फ़लाह व नजात तलाश करना] की मुर्तकिब होकर अल्लाह तआला के ग़ज़ब व इंतिक़ाम का शिकार हो जाए।

याद रखिये! बेमक़्सद और सतही इल्मी तहक़ीक़, साइंस व टैक्नालोजी में नाम निहाद पेशरफ़्त वग़ैरा ये सारे उमूर यहूदियत की इस्तिलाह में "तामीरी" हैं। इनसे बिला वास्ता या बिलवास्ता यहूदियत को इस्तिहकाम नसीब होता है और उनके ख़तरे कम होते हैं या अगर ख़तरे पैदा हों भी तो यहूदियत इसके कंट्रोल पर पूरी तरह क़ादिर है। लिहाज़ा वह इसके लिये आलमे इस्लाम को मुशावरत, तकनीकी मुआविनत और फ़न्ड फ़राहम करने पर भी तैयार होते हैं। नाम निहाद इस्लामिक इंस्टिट्यूट और रिसर्च सेन्ट्रज़ का क़्याम उनके लिये निहायत इतमीनान का बाइस है। अलबत्ता जिहाद का नाम लेने वालों का दाना पानी बंद करने से कम किसी चीज़ पर इक्तिफ़ा नहीं करेंगे। यहूदियत के नज़दीक "तख़रीबी उमूर" से मुराद जिहाद है। जिहाद वह अमल है जिस से यहूदियत बदहवास हो जाती है। क़ौमे यहूद के हवास उससे मुख़्तल हो जाते हैं। इसकी वजह है कि तामीरी उमूर को कंट्रोल करने के लिये उनके पास मैकानिज़्म है। जिहाद को कंट्रोल करने के लिये उनके पास कोई मैकानिज़्म नहीं। सिवाए इसके कि वह दुशमन को (over kill) बेतहाशा क़त्ल करें। लेकिन वह जानते हैं कि वे ऐसा नहीं कर सकते, यह उनके बस की चीज़ नहीं, मुजाहिदीन उनके लिये हमेशा मुश्किल बल्कि नामुम्किन हदूफ़ साबित हुए हैं। नीज़ बेतहाशा जान लेना उनके मसाइल में इज़ाफ़ा करता है कमी नहीं......जबकि मुसलमानों को जदीद टैक्नालोजी के हुसूल में मसरूफ़ करके ख़ुद ऊंची चोटी पर खड़े होकर उनकी बेबसी का तमाशा देखना उनके लिये निहायत

फ़रहतबख़्श अमल है। उनको पता है कि वे इस मैदान में इतने आगे हैं कि सारी मुसलमान हुकूमतें मिल कर भी उनके पाए का एक तालीमी इदारा बना सकती हैं न उनके तैयार कर्दा साइंसदानों जैसे साइंसदान तैयार कर सकती हैं। लिहाज़ा इस मैदान में हमारी कछवे की चाल वाली तरक़्क़ी से उन्हें कोई ख़तरा नहीं। अलबत्ता यहूद और यहूदियत ज़दा मग़रिबी दुनिया जज़्बए जिहाद और शौक़े शहादत का कोई मुतबादिल नहीं रखती। यह चीज़ रब तआला ने मुसलमानों को बख़्शी है। और इसका कोई तोड़ यहूदी साइंसदानों और मग़रिबी थिंक टैंक्स के पास नहीं। लिहाज़ा मुसलमानों की बक़ा व फ़लाह इस में है कि अपनी नई नस्ल में जज़्बए जिहाद की रूह फूंक कर इस दुनिया से जाएं। फ़लसफ़ए जिहाद को उनके अंदर कूट कूट कर भर दें और उनका ऐसी ज़ेहन बना दें कि वे इस पर किसी क़िस्म के समझौते को ख़ारिज अज़ इम्कान क़रार दें, नीज़ हर मुसलमान अपने मुतअल्लिक़ीन और अपने जवानों के दिल व दिमाग़ में यह बात रासिख़ कर दे कि जिहाद के अलावा किसी और चीज़......चाहे वह जदीद तालीम हो या टैक्नालोजी......कम्प्यूटर साइंस हो या ख़लाई तसख़ीर......गले में टाई बांधना हो या कमर में पैंट कसना......किसी चीज़ को अपनी तरक़्क़ी व कामयाबी का ज़रीआ न समझें। जज़्बए जिहाद और शौक़े शहादत में फ़नाइय्यत के बेग़ैर मुसलमानों की बक़ा व तरक़्क़ी का तसव्वुर पहले था न आईंदा हो सकता है।

तीसरी तदबीर – फ़ित्नए माल व औलाद से हिफ़ाज़त

फ़ित्नए दज्जाले अक्बर के पांच सुतूनों में से एक सुतून "फ़ित्नए माल व औलाद" है बल्कि फ़ित्नए दज्जाल दरअसल है ही माल और माद्दियत का फ़ित्ना। इस फ़ित्ना के नतीजे में पहले पहल "निज़ामे रिज़्क़े हलाल" मुंहदिम होता है फिर "निज़ामे ज़कात" का इंहिदाम शुरू हो जाता है और आख़िर में "निज़ामे इंफ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह" ही मुकम्मल तौर पर मुंहदिम हो जाता है। इन निज़ामों

के इंहिदाम से माल हलाल और रिज़्क़ तय्यब नहीं रहता, ख़बीस हो जाता है और ख़बीस रिज़्क़ से मिलने वाले अज्साम दज्जाली फ़ित्ना का आसान हिद्फ़ और मरग़ूब शिकार होंगे।

"फ़ित्नए माल व औलाद" से ख़ुद को निकाले बग़ैर अह्ले ईमान का फ़ित्नए दज्जाले अक्बर से निकलना मुहाल है। फ़ित्नए दज्जाले अक्बर से निकलने या उस से बचने की अव्वलीन शर्त है "निज़ामे इंफ़ाक़ (ज़कात, सदक़ात, अतयात) का क़्याम" और "निज़ामे रिबा (सूद) का इंहिदाम" इसके लिये ज़रूरी है कि मुसलमान हलाल व हराम का इल्म हासिल करें। हर तरह के हराम से कुल्ली इज्तिनाम का एहतिमाम करें। सिर्फ़ और सिर्फ़ हलाल माल कमाएं और फिर उसमें से अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने की आदत डालें और बच्चों को उसकी आदत डलवाने के लिये उनके हाथ से भी फ़ी सबीलिल्लाह ख़र्च करवाया करें। बच्चों के दिल में हलाल की अहमियत और हराम से नफ़रत पैदा करें। रिज़्क़ कमाने के दौरान......चाहे मुलाज़िमत हो या कारोबार......शरीअत के अहकाम पर सख़्ती से अमल किया जाए ताकि हलाल तय्यब हासिल हो और जिस्म व जान में जो कुछ जाए, ख़ैर की तरफ़ रग़बत और नेकी की तौफ़ीक़ का सबब बने। कस्बे हलाल के शरई अहकाम उसूली हों या फ़िरोई, दाख़िली हों या ख़ारजी, उनका भरपूर एहतिमाम किया जाए। मसलन एक फ़रई या ख़ारजी हुक्म यह है कि जुमा की पहली अज़ान से ले कर जुमा की नमाज़ के ख़त्म होने तक तमाम मुसलमान ख़रीद व फ़रोख़्त मौक़ूफ़ कर दें और अल्लाह की याद के लिये मस्जिद चल पड़ें। ऐसा करने के लिये ज़रूरी है कि आंबादियों में जुमा का दिन (चौबीस घंटे) पूरी तरह छुट्टी का हो। जुमा के दिन पहली अज़ान तक सारा शहर मस्जिद में दाख़िल हो जाए ताकि दूसरी अज़ान से ले कर नमाज़ ख़त्म होने तक मुसलमान सब कुछ छोड़ छाड़ कर बारगाहे इलाही में हाज़िर हों। इस तरह वह अल्लाह की नज़र में मक़्बूल हो

जाएंगे और इन यहूदियों का मुक़ाबला करके इन पर ग़ालिब हो सकेंगे जो यहूदियों के मुक़द्दस दिन हफ़्ते के दिन दुन्यावी कामों में मशगूल होकर अल्लाह के ग़ज़ब का शिकार हुए।

चौथी तदबीर - फ़ित्नए जिन्स से हिफ़ाज़तः

फ़ित्नए दज्जाले अक्बर के पांच अनासिर में से एक अहम अंसुर "फ़ित्नए जिन्स" है। दज्जाली निज़ाम को दुनिया पर ग़ालिब करने वालों की कोशिश है कि पूरे रूए अर्ज़ पर जिन्स के फ़ित्री और बा बरकत निज़ाम यानी "निज़ामे इज़्दिवाज" को दरहम बरहम कर दिया जाए। इसके बाद रूए अर्ज़ पर फ़ित्री तौलीद के निज़ाम को दरहम बरहम कर देना आसान हो जाएगा।

फ़ित्नए दज्जाले अक्बर का मुक़ाबला करने की अहम तरीन तदबीर "सुन्नते निकाह" का क़्याम और इक्माल है यानी निकाह की सुन्नत को दर्जए कमाल तक पहुंचाना। मर्द व औरत के हलाल मिलाप को रिवाज देना और आसान बनाना। हराम पर सज़ा देना और उसे मुश्किल तर बनाना। आजकल तक़रीबे निकाह के हवाले से की जाने वाली फ़ुजूल रुसूमात की बिना पर हलाल मुश्किल है और हराम आसान। हम जिसे मसनून निकाह कहते हैं, वह निकाह तो है लेकिन "मसनून" नहीं। इसमे इतनी रुसूमात, फ़ुजूल ख़र्ची और रियाकारी शामिल हो गई है कि नाम तो "निकाहे मसनून" और "वलीमए मसनूना" का होता है लेकिन तक़रीबात में अक्सर काम ग़ैर शरई और ख़िलाफ़े सुन्नत होते हैं जिस से निकाह मुश्किल और फ़ह्हाशी (ज़िना) आसान होती जा रही है।

"इस्तिक्माले सुन्नते निकाह" की कोशिश के अहम निकात दर्जे ज़ेल हैं:

(1) हमाजिहत जिंसी अलाहिदगी, यानी मर्द व औरत का मुकम्मल तौर पर अलाहिदा अलाहिदा माहौल में रहना जो शरई पर्दे के ज़रीए ही मुम्किन है।

(2) औरतों को ज़्यादा से ज़्यादा शरई मराआत देना और उनकी मख़्सूस ज़िम्मेदारियों के अलावा दीगर ज़िम्मेदारियों से उन्हें सुबुकदोश करना जो उन की फ़ित्रत और शरीअत के ख़िलाफ़ हैं।

(3) निकाह को ज़्यादा से ज़्यादा आसान और फ़स्ख़े निकाह को ज़्यादा से ज़्यादा मुनज़बित बताना।

(4) किसी भी उम्र में जिन्सी व नफ़्सियाती महरूमी को कम से कम वाक़े होने देना, लिहाज़ा बड़ी उम्रों के मर्दों और औरतों को भी पाकीज़ा घरेलू ज़िंदगी गुज़ारने के लिये निकाह सानी की आसानी फ़राहम करना।

(5) कसरते निकाह और कसरते औलाद को रिवाज देना। एक से ज़्यादा निकाह और दो से ज़्यादा बच्चों को ख़ूबी और क़ाबिले तारीफ़ बात बनाना। एक निकाह और दो बच्चों पर इक्तिफ़ा की हिम्मत शिक्नी करना। वर्ना उम्मत सुकड़ते सुकड़ते दज्जाली फ़ित्ने के आगे सर निगों हो जाएगी।

''तक्मीले सुन्नत निकाह'' के ये वह उन्वानात थे जिनको इस्लाम ने क़ायम किया। दज्जाल का ज़माना क़रीब होने की एक अलामत यह है कि उन में से बेशतर आज दरहम बरहम हो चुके हैं। इसकी नागुज़ीर ज़रूरत है कि इन तमाम उमूर को अज़सरे नो नाफ़िज़ुल अमल बनाया जाए।

फ़ित्नए दज्जाले अक्बर से बचने के इक़्दामात में से एक यह भी है कि हर क़िस्म के हराम जिन्सी अमल और हराम तौलीद से मुआशरे को पाक किया जाए। कंडोम फ़राहम करके हराम जिन्सी अमल और हरामी बच्चों के लिये फ़ुटपाथों पर झोले और पालने रखकर हराम तौलीद में आसानियां फ़राहम करने से गुरेज़ किया जाए। हराम जिन्स और हराम तौलीद से फ़ित्नए दज्जाले अक्बर के ज़माने में फ़र्द और मुआशरे को बचाना तक़रीबन मुहाल होता जाएगा। इससे बचने की वाहिद सूरत यह है कि हलाल जिन्स और

हलाल तौलीद की सूरतों और सहूलतों को आसान से आसान तर बनाना और ज़्यादा से ज़्यादा इस्तिफ़ादा करना। इसकी दर्जे ज़ेल सूरतें हो सकती हैं जिनको सालेह मर्द और ख़्वातीन को ज़्यादा से ज़्यादा कबूल और राइज करना होगाः

☆ ......बालिग़ होने के बाद मर्दों और औरतों की शादी में देर न करना

☆ ......मर्दों की एक से ज़्यादा शादी

☆ ......बेवागान व मुतल्लका औरतों की शादी को ख़र्च के एतिबार से आसान तर बनाना और हर तरह की मुआशरती पाबंदियों और ग़ैर मशरूअ़ शराइत का ख़ातिमा करना

☆ ......मुआशरे में आसान निकाह की हिम्मत अफ़ज़ाई और मुश्किल निकाह से नापसंदीदगी का इज़्हार हत्ता कि इसका बाईकाट करना।

जो लोग हटधर्मी का मुज़ाहिरा करते हुए शादी की राइज ग़ैर शरई रुसूम जारी रखें या महज़ नुमाइश के लिये आसान और मसनून निकाह करें और दर पर्दा राइजुल वक़्त रुसूमात और फ़ुजूल ख़र्ची से भरपूर शादी को जारी रखें, उनका सख़्त बाईकाट किया जाए। फ़ित्नए दज्जाले अक्बर के मुक़ाबले और जिन्सी बेराहरवी के ख़ातमे के लिये लाज़िम है कि शरई तौर पर सुन्नते निकाह की अदाइगी का एहतिमाम किया जाए और यह उसी वक़्त होगी जब अक़्द निकाह की तक़रीब को रुसूमात, मुन्करात और लुग़वियात से बिल्कुल पाक किया जाए। इसके नतीजे में बेहूदा रसमों का ख़ातमा होगा, निकाह पर कम से कम ख़र्च होगा, हराम जिन्सी मिलाप का सद्देबाब होगा और मसनून निकाह के अमल को ज़िंदा करने से पाकीज़ा मुआशरा वजूद में आएगा।

फ़ित्नए दज्जाले अक्बर से मुक़ाबला के लिये यह भी लाज़िम है कि ज़चगी या तो उन इदारों और हास्पिटलों में कराई जाए जहां

अल्लाह के दीन के मुताबिक़ ज़चगी हाती है। मसीहा के रूप में मंडलाते भेड़िये नुमा डाक्टर और डाक्टरनियां फीस और कमीशन की लालच में फ़ित्री तौलीद को रोक कर ग़ैर ज़रूरी आपरेशन पर ज़ोर देते और उम्मते मुस्लिमा की माओं को तौलीदी सलाहियत से बतदरीज महरूम करते हैं। चूंकि अंदेशा इसी बात का है कि अक्सर जगहों में ऐसा ही होता है, इसलिये उम्मत में इसका एहतिमाम होकर ज़चगी माहिर और तर्जुबाकार दवाइयों की ज़ेरे निगरानी घरों में हो। ज़चगी के लिये (Caeserion) आपरेशन से हत्ती उलूसा इज्तिनाब किया जाए। औलाद के हुसूल के लिये "तग़य्युरे ख़ल्क़" (पैदाइश के फ़ित्री तरीक़ों में तबदीली) के तमाम रास्तों से कुल्ली इज्तिनाब किया जाए। औलाद के हुसूल के लिये ग़ैर फ़ित्री तरीक़ों का इस्तिमाल क़तअन क़तअन न किया जाए, मसलन माद्दए मन्विया को मुंजमिद तौर पर महफ़ूज़ रखना, मसनूई तौर पर मनी का रहम में डालना, टेस्ट ट्यूब के ज़रीआ अफ़ज़ाइश करना, रहम का आरयतन इस्तिमाल करना और कराना।

फ़ित्नए दज्जाले अक्बर के मुक़ाबले के लिये लाज़मी है कि अह्ले ईमान ख़ालिस और मुख़्लिस नहीं। हलाल नसब और हलाल रिज़्क़ के अलावा किसी चीज़ को रिवाज न पाने दें और रूए अर्ज़ पर बरसरे पैकार दज्जाली अफ़वाज के मुक़ाबले में अल्लाह का सिपाही बनने की तैयारी करें।

पांचवीं तदबीर - फ़ित्नए ग़िज़ा से हिफ़ाज़त

फ़ित्नए दज्जाले अक्बर का मुक़ाबला करने वाली मुवस्सिर तदाबीर में से ग़िज़ाई तदाबीर बहुत अहमियत की हामिल हैं और इसके बरख़िलाफ़ फ़ित्नए दज्जाले अक्बर के रोज़ बरोज़ बढ़ते तूफ़ान के मुक़ाबले में अह्ले ईमान को कमज़ोर तर हत्ता कि बिल्कुल बेबस कर देने बल्कि आलाकार बना देने वाली चीज़ ग़िज़ाई सतह पर हराम से चश्मपोशी और हलाल से इंहिराफ़ है।

फ़ित्नए दज्जाले अक्बर से बचने और अपने अहल व अयाल को बचाने की सबसे मुवस्सिर तदबीर तय्यब व हलाल तरीक़े से हासिल कर्दा गिज़ा से जिस्म की परोश है। फ़ित्नए दज्जाले अक्बर के सामने सब से ज़्यादा और आसान शिकार (Soft Target) हलाल व तय्यब के बजाए हराम माल और ख़बीस गिज़ा से परवर्दा जिस्म होता है। लिहाज़ा वे चीज़ें जिन्हें कुर्आन और सुन्नते नबवी सल्ल0 ने हराम क़रार दिया है उनसे अपने आपको सख़्ती से बचाया जाए। अपने जिस्म में हराम लुक़्मा या हराम घूंट दाख़िल न होने दिया जाए। न हराम लिबास से खुद को आलूदा किया जाए। नीज़ मसनूई तौर पर Cross-Pollination और Hybridization के ज़रीए पैदा कर्दा गिज़ाओं से बचा जाए। मसनूई गिज़ाएं तैयार करने वाली यहूदी कम्पनियां आहिस्ता आहिस्ता पूरी दुनिया की खूराक को दज्जाल के क़ब्ज़े में देने के लिये रफ़्ता रफ़्ता आगे बढ़ रही हैं। यह दरअसल दज्जाल की मसनूई खुदाई को मनवाने के लिये ज़ख़ीरए खूराक के संगदिल निगरान का किर्द इरादा कर रही हैं। डब्बा बंद गिज़ाई अशया अब कुदरती गिज़ाओं से ज़्यादा क़ाबिले इतमीनान समझी जाती हैं और मुंफ़रिद मक़ाम की हामिल हैं। कुछ इस्लामी शहरों मसलन दुबई, दोहा वग़ैरा का तो इंहिसार ही इन पर है। यह क़ाबिले इतमीनान नहीं, इंतिहाई तश्वीशनाक अम्र है। दूसरे लफ़्ज़ों में यह अपने आप को और अपनी नस्लों को दुशमन के हाथ में गिर्वी रखने के मुतरादिफ़ है। मसनूई तौर पर पैदा कर्दा गिज़ाओं से ज़्यादा फ़साद आलूदा वे गिज़ाएं हैं जो जीनयाती तौर पर पैदा कर्दा हैं। इसके अलावा कीमियावी तौर पर तैयार कर्दा गिज़ाओं से भी बचा जाए। फ़ित्नए दज्जाले अक्बर से बचने के लिये इन सब तरह की गिज़ाओं से कुल्ली इज्तिनाब लाज़मी है।

उम्मते मुस्लिमा अपने इलाक़ों में फ़ित्री और कुदरती गिज़ा के हुसूल के लिये ज़िराअत व शज्रकारी पर तवज्जे दे। पेड़ पोदों

बिलखुसूस फलदार दरख़्तों के लगाने, घास की अफ़ज़ाइश पर खुसूसी ध्यान दे। इसी तरह जंगलात की कटाई को हत्तुलवुसअ़ रोका जाए बल्कि जंगलात लगाए जाएं।

मसनूई ग़िज़ाओं से बचा जाए। खुसूसन तीन मसनूई चीज़ों सेः

(1) मसनूई आटा यानी सफ़ेद आटा (मैदा और फ़ाइन) जिससे भूसी निकाल ली गई हो। बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत सहल बिन सअद रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने सारी उम्र छने हुए आटे की रोटी नहीं खाई। बल्कि छना हुआ आटा और छाननी देखी तक नहीं। (देखियेः किताबुल अतइमा, मा कानन नबी सल्ल0 वअसहाबिही याकुलूनाः जि0 2 स0 813) सफ़ेद रोटी, डबल रोटी और बेकरी के तमाम आइटम सफ़ेद आटे से बने होते हैं और बदहज़्मी, सुस्ती व काहिली, ब्लड प्रेशर व शूगर और मोटापे जैसे अमराज़ का सबब हैं। ये अमराज़ इंसान को आहिस्ता आहिस्ता कमज़ोर व ना अहल बनाते और रफ़्ता रफ़्ता जिहाद से मजबूर व माज़ूर करते हैं।

(2) मसनूई चिकनाई यानी केमिकल्ज़ और मुज़िर सेहत कीमियावी अज्ज़ा से बने हुए घी और तेल, जो कोलेस्ट्रोल की मिक्दार बढ़ाते और बीमारियां पैदा करते हैं। इनकी जगह ज़ैतून या सरसों का तेल और कुदरती चिकनाई, देसी मक्खन, देसी घी वग़ैरा इस्तिमाल करनी चाहिये।

(3) मसनूई मीठा यानी चीनी और उससे बनी हुई अशया। कोल्ड ड्रिंक (खुसूसन पेप्सी कोला, कोका कोला वग़ैरा) मसनूई शर्बतें, मसनूई मशरूबात वग़ैरा। दुनिया में ऐसा आदमी न होगी जो मसनूई मीठे या चीनी का कोई फ़ाएदा बता सकता हो, लेकिन शूगर से माज़ूर होने से पहले उसे सब इस्तिमाल करते हैं और एक वक्त ऐसा आता है कि छोड़ने पर मजबूर हो जाते हैं लेकिन तब कोई फ़ाइदा नहीं होता। इससे बेहतर यह है कि अपनी मर्ज़ी से इस मसनूई ज़हर

को छोड़ें और कुदरती मीठी चीज़ों पर इक्तिफ़ा करें। मसनूई मीठा छोड़ने के तीन से सात दिनों के अंदर हर चीज़ का अपना ज़ाइक़ा महसूस होना शुरू हो जाता है, तर्जुबा शर्त है।

उम्मते मुस्लिमा मसनूई तरीक़ए तौलीद से जानवर पैदा करने के बजाए कुदरती अफ़ज़ाइशी नस्ल पर तवज्जोह दे। ऊंटनियों, गायों, भेड़ों और बकरियों की अफ़ज़ाइश पर खुसूसी ध्यान दे। मसनूई तरीक़े से पैदा शुदा मवेशी और उनके बीच अंक़रीब उन यूरपी कम्पनियों की मर्ज़ी के कुल्ली तौर पर ताबेअ़ होंगे जो नबातात की तरह हैवानात को भी अपने क़ब्ज़े में लेने के लिये नित नए तजुरबात कर रही हैं।

☆ ...... ☆ ...... ☆

ये वे तदाबीर हैं जो फ़ित्नए दज्जाल से हिफ़ाज़त और उसके ख़िलाफ़ जद्दो जेहद के लिये कारआमद व मुवस्सिर हैं। इनकी फ़ेहरिस्त कुर्आन व हदीस पर गहरे ग़ौर व फ़िक्र ज़रीए तरतबीब दी गई है। जो मुसलमान चाहता है कि इस अज़ीम फ़ित्ना के ख़िलाफ़ बरसरे पैकार अज़ीमुल मरतबत लोगों की सफ़ में शामिल हो जाए, उसे चाहिये कि इनको अपना ले। अपनी ज़िंदगी में दाख़िल कर ले और इन पर सख़्ती से कारबंद होकर अपने अहल व अयाल से भी इनकी पाबंदी करवाए। दूसरे मुसलमानों में भी इसकी दावत चलाता रहे। फ़ित्नए दज्जाल से खुदा तआला को जितनी नफ़रत है, इस फ़ित्ने के ख़िलाफ़ किसी तरह की जद्दो जहद करने वाले अल्लाह रब्बुल आलमीन के हां इतने ही मक़्बूल, उसकी रहमत के इतने ही मुस्तहिक़ और क़ाबिले अज्र व सवाब हैं।

आख़िरी बात

यहां चूंकि किताब का भी इख़्तिमाम है और किताब के पैग़ाम का भी। लिहाज़ा यहां हम अपनी बात का फिर से ख़ुलासा करना चाहेंगे। फ़ित्नए दज्जाल से मर्दाना वार दिफ़ाअ़ और उसके ख़िलाफ़ जारिहाना इक़्दाम के लिये की जाने वाली तदाबीर के आग़ाज़ में अर्ज़ किया था कि यह सारी तदाबीर सिर्फ़ एक नुक्ते के गिर्द घूमती हैं और वह है......जिहाद......जिहाद......जिहाद......माली जिहाद, ज़ुबानी जिहाद, क़ल्मी जिहाद और अस्करी जिहाद। यानी एलाए कलिमतुल्लाह के लिये क़िताल फ़ी सबीलिल्लाह! अल्लाह के रास्ते में क़त्ल होना और क़त्ल करना। ज़ुबानी और क़ल्मी जिहाद उस वक़्त जिहाद होगा जब क़िताल के मौज़ू पर लिखा और बोला जाए। मच्छरों भरे जोहड़ पर दवाई छिड़कने की तरग़ीब को क़ल्मी जिहाद कहना हिमाक़त की चोटी पर चढ़ कर औंधे मुंह लुढ़कने वाली बात है। अब आख़िर में फ़ित्नए दज्जाल से बचने के दो तरीक़े अहादीस की रौशनी में बयान करके अपने पैग़ाम का ख़ुलासा करने में क़ारईन की मदद करते हैं।

फ़ित्नए दज्जाल से बचने के दो तरीक़ेः

फ़ित्नए दज्जाल के ज़माने में जो मुसलमान ज़िंदा होंगे और तारीख़े इंसानी के उस अज़ीम और हौलनाक फ़ित्ने का सामना करेंगे, उनको हमारे और आपके, सारी इंसानियत के मुहसिने आज़म सल्ल0 ने दो हिदायात दी हैं। एक हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्ल0 ने ईमान वालों को दज्जाल से एलानिया बग़ावत करते हुए उसके ख़िलाफ़ अपनी तमाम ताक़त सर्फ़ करने का हुक्म फ़रमाया। इर्शाद हैः "तुम में से जिस किसी के सामने दज्जाल आ जाए तो उसको चाहिये कि वह उसके मुंह पर थूक दे और सूरह कहफ़ की इब्तिदाई आयात पढ़े।" (तिबरानी, हाकिम)

दज्जाल जैसी अज़ीम ताक़त के मुंह पर थूकना कितने मज़बूत ईमान और जुर्अत मुत्तक़ाज़ी होगा? इसका अंदाज़ा आप सल्ल0 से ज़्यादा किस को हो सकता है? इसलिये आप ने इसके इंतिक़ाम से बचने की ढाल और हिसार अपने उम्मती को बताते हुए फ़रमाया कि सूरह कहफ़ की इब्तिदाई आयात पढ़ने में ऐसी तासीर है कि दज्जाल का कोई वार उस साहबे ईमान पर कारगार न होगा।

एक दूसरी रिवायत में आप सल्ल0 ने फ़रमायाः "तुम में से जो कोई दज्जाल के आने की ख़बर सुने तो उससे दूर भाग जाए। अल्लाह की क़सम! एक शख़्स उसके पास आएगा......वह ख़ुद को मोमिन समझ रहा होगा। [लेकिन उसके मनघड़त दलाइल और शोबदों से मुतअस्सिर होकर] उसकी पैरवी शुरू कर देगा।" (अबू दाऊद, तबरानी)

इन दो अहादीस को मिलाकर पढ़ने से मालूम हुआ कि फ़ित्नए दज्जाल से बचने के दो तरीक़े हैंः

(1) एक यह कि अल्लाह पर तवक्कुल करके पूरे अज़्म और हौसले के साथ दज्जाल से खुल कर और एलानिया बग़ावत की जाए। उसके सामने उसके मुंह पर थूक दिया जाए और कमर कस

कर उस फ़ित्ने के ख़िलाफ़ मैदान में उतर लिया जाए। जन्नत अल्लाह तआला ने ऐसे ही लोगों के लिये बनाई है।

नुऐम बिन हम्माद की रिवायत है: "जो लोग दज्जाल के या उसके लोगों के हाथों शहीद होंगे, उनकी क़ब्रें तारीक अंधेरी रातों में चमक रही होंगी।" एक और रिवायत है उनका शुमार अफ़ज़ल तरीन शुहदा में किया जाएगा।

(2) जो ऐसा नहीं कर सकता वह दज्जाल के ज़ेरे क़ब्ज़ा मुल्कों और दज्जाली हुकूमतों के ज़ेरे असर इलाक़ों से हिज्रत कर जाए। दीहातों, पहाड़ों और जदीद दुनिया की शैतानी सहूलतों से हट कर उन इलाक़ों की तरफ़ निकल जाए जहां दज्जाल की झूटी ख़ुदाई का बोलबाला न हो। इस फ़ित्ना ज़दा ज़माने में अपने घर, वतन, कारोबार और ऐश व आराम को अल्लाह की ख़ातिर छोड़ने वाला ही अल्लाह की रहमत और मग़फ़िरत का मुस्तहिक़ होगा। इन चीज़ों की मुहब्बत में उन शहरों में पड़ा रहने वाला जहां दज्जाल की ख़ुदाई तसलीम की जाती हो, अपने ईमान की हिफ़ाज़त न कर सकेगा।

अलग़र्ज़......जिहाद या हिज्रत......हिज्रत या जिहाद......ये दो ही चीज़ें हैं जो इस फ़ित्नए आख़िरुज़्ज़मा से हिफ़ाज़त की ज़ामिन हैं। इनके बेग़ैर तो मग़रिबी मीडिया के रौंदे हुए बनासपती लोग जो पहले से इर्तिदादी फ़िक्र का शिकार होंगे, इस फ़ित्ने के आलाकार या इसके शिकार तो बन सकते हैं, इससे बच नहीं सकते।

मेहदवियात और दज्जालियात के बारे में एक अहम सवाल

खातिमा......या......खातिमे का आगाज़, एक काइनाती वाकिए की मुम्किना साइंसी तौजीहात

मुहतरम मुफ़्ती साहब! अस्सलामु अलैकुम!

हमारा ख़त लिखने का मक्सद कुछ बातों के बारे में रहनुमाई हासिल करना है। उम्मीद है आप तसल्ली बख़्श जवाब देंगे।

(1)......आपने हज़रत दानियाल अलै0 का किस्सा बताया है। उसमें जो आपने 2300 साल बाद एक रियासत के क़्याम का बताया था वह समझ में तो आ गया था लेकिन आपने 333 साल निकाले थे वह बात सही समझ में नहीं आई। उस बात का सिकंदरे आज़म के एशिया के फतह करने से क्या तअल्लुक है? क्या यह यूनान का सिकंदरे आज़म है?

(2)......आपने एक जगह ज़िक्र किया है कि यहूदियों ने ज़मीन के कुदरती निज़ाम के साथ जो छेड़छाड़ शुरू कर रखी है उससे ज़मीन की कशिश खत्म हो जाएगी और ज़मीन रुक जाएगी। इसके बाद ज़मीन मुतज़ाद सिम्त में घूमना शुरू हो जाएगी। जिसकी वजह

से सूरज मग़रिब से तुलू होगा। जबकि कहा जाता है कि हज़रत मसीह अलै0 के नुजूल और फिर इसके बाद उनकी वफ़ात के काफ़ी अर्सा बाद सूरज मग़रिब से तुलू होगा और तब तौबा का दरवाज़ा बंद हो जाएगा। क्या जब दज्जाल के ख़ुरूज से पहले सूरज मग़रिब से तुलू होगा तो क्या तब ही तौबा का दरवाज़ा बंद हो जाएगा? क्या सूरज दो बार मग़रिब से तुलू होगा?

वस्सलाम······कुछ मुसलमान बच्चियां

(1)······मज़मून में बात कुछ मुब्हम रह गई है। इसका पसमंज़र कुछ यूं है कि हज़रत दानियाल अलै0 ने नफ़रत की रियासत (यानी इस्राईल) के क़्याम की तारीख़ बताते हुए फ़रमाया थाः "फिर मैंने दो मुक़द्दस ग़ैबी आवाज़ों को यह कहते सुनाः "यह मुआमला कब तक इसी तरह चलेगा कि मेज़बान औ मुक़द्दस मक़ाम को क़दमों तले रौंद दिया जाए?" इस पर दूसरी आवाज़ ने जवाब दियाः "दो हज़ार तीन सौ दिनों तक के लिये। फिर मुक़द्दस मक़ामे पाक साफ़ कर दिया जाएगा।" इससे मालूम हुआ कि नफ़रत की रियासत 2300 दिनों बाद क़ायम होगी। (दानियालः बाबः 8, आयतः 13, 14) एक पेशगोई में है कि यह 45 दिनों बाद ख़त्म हो जाएगी। (दानियालः बाबः 12, आयतः 8-13) अब इन 2300 साल का आग़ाज़ कब से होगा और यह 45 दिनों में कैसे ख़त्म होगी? शारिहीन के मुताबिक़ इन 2300 साल का आग़ाज़ यूनानी बादशाह सिकंदर (यह यूनान का इलैक्ज़ेन्डर है, क़ुर्आन करीम का जुलक़रनैन नहीं।) के एशिया यानी ईरान पर हमले से होता है। यह हमला 333 क़ब्ल मसीह में हुआ। इसको 2300 1967 ई0 में पूरे होंगे। (2300−333=1967) इस्राईल अगर्चे क़ायम 1948 ई0 में हुआ लेकिन उसने अलक़ुद्स पर क़ब्ज़ा 1967 ई0 में किया। 1967 ई0 के 45 साल बाद (तौरात की एक आयत के मुताबिक़ कलामे इलाही में दिन से मुराद साल होते हैं) यानी 2012 ई0 में इस्राईल रियासत का ख़ातमा······या ख़ातमे का

आग़ाज़......हो जाएगा। इसकी तफ़सील डाक्टर अब्दुर्रहमान अलहवाली की किताब यौमुल ग़ज़ब, तर्जुमाः रज़िउद्दीन सय्यद में देखी जा सकती है।

(2) लगता है कि यहूद की इस मुदाख़िलत और काइनात की तसख़ीर की फ़ुज़ूल कोशिशों से दो असरात रुनुमा होंगेः

1: ज़मीन की गर्दिश में गड़बड़ से दिन रात के बनने में तीन दिन के लिये फ़र्क़ आ जाएगा। पहला दिन एक साल, दूसरा एक महीने और तीसरा हफ़्ते हो जाएगा। यह दज्जाल के ख़ुरूज के वक़्त होगा।

2: ज़मीन की मह्वरी गर्दिश रुक जाएगी फिर मुतज़ाद सिम्त में घूमेगी। ऐसा एक दिन के लिये होगा फिर इसके बाद यह गर्दिश मामूल के मुताबिक़ हो जाएगी। यह दज्जाल की हलाकत के बाद क़ुर्बे क़यामत में होगा और इसके बाद तौबा के दरवाज़े बंद हो जाएंगे। यह दो अलग अलग वाक़िआत हैं जिनकी मुम्किना साइंसी वुजूह आलमी सतह पर किये जाने वाले वे तजुर्बात हैं जो यहूदी सरमाए के बलबूते पर पूरी दुनिया के साइंसदान यहूदी साइंसदानों की सरबराही में कर रहे हैं। यह इन उलूम की रौशनी में एक इम्कानी तौजीह है जिन तक आज की दुनिया पहुंच सकी है, कोई हत्मी तहक़ीक़ी या आख़िरी राए नहीं। हक़ीक़त का इल्म सिर्फ़ अल्लाह तआला को है।